ख्रीष्ट का उद्देश्य पाठ

एलन जी. व्हाइट

New Covenant Publications: Hindi

ISBN: 359-2-85933-609-1

ISBN: 359-2-85933-609-1

प्रकाशन डेटा में कैटलॉगिंग

संपादित और डिज़ाइन किया गया: न्यू कोवेनेंट पब्लिकेशन्स इंटरनेशनल ग्रुप

यूनाइटेड किंगडम में मुद्रित।
पहली छपाई 26 मई 2020

द्वारा प्रकाशित: New Covenant Publications International Ltd.,

Kemp House, 160 City Road, London, EC1V 2NX

वेबसाइट पर जाएँ:: www.newcovenant.co.uk

मसीह के दष्टान्त में उसी सिद्धान्तों को सिखाते है जो दुनियां के अपने मिशन के रूप में देखा जाता है कि हम उनके दिव्य चरित्र और जीवन से परिचित हो सकते है। मसीह ने हमारे स्वभाव को ग्रहण किया है और हमारे बीच में रहने लगे। मानवता मे देवतत्व का पता चला, दश्यमान मानव रूप में अदष्य्य महिमा। पुरूष ज्ञात के माध्यम से अज्ञात के बारे में जान सकता था। सांसारिक चीजों का पष्थ्वी के माध्यम से पता चला था, पुरूषों की समानता में ईश्वर को प्रकट किया गया था। इसलिये ये मसीह के शिक्षण में हैं, अज्ञात को अज्ञात द्वारा चित्रित किया गया था, सांसारिक बातों से दिव्य सत्य जिसके साथ लोग सबसे परिचित थे।

यह पृष्ठ स्वेच्छा से खाली छोड़ा गया है।

New Covenant Publications



International Ltd.

सुधारित पुस्तकें, परिवर्तित मन

New Covenant Publications International Ltd.,
Kemp House, 160 City Road, London, EC1V 2NX

मेल पता: newcovenantpublicationsintl@gmail.com

आभार

यह पुस्तक ईश्वर को समर्पित है।

प्रस्तावना

अंतर्राष्ट्रीय न्यूकॉवेनेंट प्रकरशन परठक को स्वर और् पथृवी को जोड़नेवरली दिव्य योजनर सेपनुः जोड़तर हैऔर् प्रेम केव्यवस्थर की अनंततर को मजबतू कर्तर है। यह लोगो, वाचा का संदूक, मसीह यीशुऔर् उनके लोर्ो ं के बीि की घदनष्ठतर और् पर्मेश्वर् केव्यवस्थर की कें द्रीयतर कर प्रतीक है। (2) जैसा लिखा है, परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। (यिर्मयाह अध्याय 31:31-33; यिर्मयाह अध्याय 8:8) इसदलए, नई वरिर उन लोर्ो ं को लें लर्रती हैदजनकेदिलों मेंउसकर प्रेम और् दनयम एकजटु और् अंदकत होतेहैं, यहरं तक दक दहसं क संघर्ा, व्यदिरिर् और वह भी ऐसे विरोध के बीच, जिसका सामना करना असंभव प्रतीत होता है।

असंख्य शताब्दियों से, कई लोगों ने कष्टदायक यातनाएं, अकल्पनीय उत्पीड़न और आक्रामक युद्धों का सामना किया है, जो सत्य को मिटाने और परमेश्वर के ज्ञान को समाप्त करने के लिए रचे गए थे। विशेष रूप से अंधकार युग में, सत्य को मानव परंपराओं और लोकप्रिय अज्ञानता द्वारा काफी हद तक छिपा दिया गया था, क्योंकि दुनिया के निवासियों ने ज्ञान को तुच्छ समझा और वाचा का उल्लंघन किया। बुराइयों के साथ समझौते की इस बीमारी ने इस तरह की असीम पतनशीलता और शैतानी अमानवीयता को उकसाया, कि कई लोगों के जीवन को अन्यायपूर्वक बलिदान कर दिया गया, जिन्होंने विवेक के अधिकार को छोड़ने से इनकार कर दिया। फिर भी, खोया हुआ ज्ञान पुनः प्राप्त किया गया, विशेष रूप से सुधार काल के दौरान

इतिहास, विशेष रूप से 16 वीं शताब्दी के सुधार युग के दौरान, सत्य के एक महत्वपूर्ण क्षण, मौलिक परिवर्तन और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न अशांति को दर्शाता है, जैसा कि प्रतिशोधी सुधार (काउंटर-रेफॉर्मशन) आंदोलन में परिलक्षित होता है। हालांकि, इस ग्रंथ के माध्यम से, सुधारकों और अन्य प्रत्यक्षदर्शियों के दृष्टिकोण से इस अद्वितीय क्रांति के अचूक महत्व को फिर से खोजा जा सकता है। उनकी नज़रों से,, इन विध्वंसकारी लड़ाइयों और ऐसी असाधारण प्रतिरोध की गहन कारणों को समझा जा सकता है। कोई भी व्यक्ति इस दौरान उत्पन्न अपार रहस्यों, कटु विवादों और अलौकिक हस्तक्षेपों की गहराई में जा सकता है।

हमारा उद्देश्य: “सुधारित पुस्तकें, परिवर्तित मन," उस विशिष्ट साहित्य की शैली को उजागर करता है, जो एक महत्वपूर्ण युग में लिखा गया था और उसके प्रभाव को दर्शाता है। यह व्यक्तिगत सुधार, पुनर्जन्म और परिवर्तन की अनिवार्यता को भी प्रतिध्वनित करता है। जिस प्रकार लगभग 500 साल पहले गुटेनबर्ग की प्रिंटिंग प्रेस और अनुवाद के माध्यम से सुधारित विश्वास के सिद्धांतों का प्रसार हुआ था, उसी प्रकार डिजिटल प्रेस, ऑनलाइन पुस्तकालयों और सोशल मीडिया के माध्यम से इन अंतिम समयों में सत्य का प्रकाश हर भाषा में प्रसारित होगा।

विषयसूची

अध्याय 1 - दृष्टान्तों में अध्यापन

मसीह के दष्टान्त में उसी सिद्धान्तों को सिखाते है जो दुनियां के अपने मिशन के रूप में देखा जाता है कि हम उनके दिव्य चरित्र और जीवन से परिचित हो सकते है। मसीह ने हमारे स्वभाव को ग्रहण किया है और हमारे बीच में रहने लगे। मानवता मे देवतत्व का पता चला, दश्यमान मानव रूप में अदष्य्य महिमा। पुरूष ज्ञात के माध्यम से अज्ञात के बारे में जान सकता था। सांसारिक चीजों का पष्थ्वी के माध्यम से पता चला था, पुरूषों की समानता में ईश्वर को प्रकट किया गया था। इसलिये ये मसीह के शिक्षण में हैं, अज्ञात को अज्ञात द्वारा चित्रित किया गया था, सांसारिक बातों से दिव्य सत्य जिसके साथ लोग सबसे परिचित थे। COLHin 10.1

शास्त्र कहता है, "यह सभी चीजे यीशु को बहु-राशियों के दृष्टान्तों के लिये उकसाती है, कि यह पूरी हो सकती है, जो नबी द्वारा बोली गई थी, कह रही है, मैं दृष्टान्तों में अपना मुँह खोलूंगा, मैं उन चीजों का उच्चारण करूंगा, जिन्हें गुप्त रखा गया है। दुनिया की नींव से।" (मत्ती 13:34, 35) प्राकृतिक चीजें अध्यात्मिक के लिये माध्यम थी, प्रकृति की बातें और उनके श्रोताओं का जीवन अनुभव लिखित शब्द की सच्चाईयों से जुड़ा था। इस प्रकार प्राकृतिक से अध्यात्मिक राज्य की ओर ले जाना। मसीह के दृष्टान्त सत्य की श्रृंखला में जुड़े हैं, जो मनुष्य को ईश्वर के साथ, और स्वर्ग के साथ-पृथ्वी की एक जुट करते है। COLHin 10.2

प्रकषत से अपने शिक्षण में, मसीह उन चीजों के बारे में बात कर रहे थे जो उनके अपने हाथों ने बनाई थी, और जिनमें वो गुण और शक्तियाँ थी, जिन्हें उन्होंने स्वयं ही आरम्भ किया था। अपनी मूल पूर्णत मे सभी ने ऐसी शक्तियाँ बनाई जिन्हें उसने स्वयं धारण किया था। अपनी मूल पूर्णता में सभी निर्मित चीजे ईश्वर के विचार की अभिव्यक्त थी। आदम और हवा में अपने अदन के घर में ईश्वरीय विचार के साथ ईश्वर के ज्ञान से भरा था। बुद्धि ने आंख से बात की और दिल में प्राप्त हुई, क्योंकि उन्होंने बनाये कार्यो में परमेश्वर के साथ साम्य किया था। जैसे ही पवित्र जोड़ी ने परमेश्वर के नियम का उल्लंघन किया, ईश्वर के चेहरे की चमक प्रकति के चेहरे से चली गयी। पष्थ्वी को अब पाप द्वारा मार डाला गया और अपवित्र कर दिया। फिर भी अपनी खिल-खिलाती हई अवस्था में भी यह सन्दर अवशेष है। ईश्वर के वस्तु पाठ को तिरस्कप्त नहीं किया जाता है, ठीक ही समझा जाता है, प्रकपत उसके निर्माता की बात करती है। COLHin 10.3

मसीह के इन दिनों में इन पाठों की दषष्ट खो गई थी। पुरूषों ने अपने कामों में ईश्वर को समझना बन्द कर दिया था। मानवता के पापीपन ने सष्जन के निष्पक्ष चेहरे पर एक पलड़ा डाला था। और ईश्वर की महिमा करने के बजाय उनकी रचनायें एक बाधा बन गयी जिसने उसे छुपा दिया। पुरूष सषष्टकर्ता से अधिक प्राणी की पूजा और सेवा करने लगे। इस प्रकार मूर्तिपूजा उनकी कल्पनाओं में व्यर्थ हो गयी और उनका मूर्ख लक्ष्य काला हो गया। (रोमियों 1:25, 21:1)। इसलिये परमेश्वर के स्थान पर मनुष्य की शिक्षा दी गयी थी। न केवल प्रकषत की चीजें बल्कि

बलिदान सेवा और स्वंय पवित्रशास्त्र-सभी को ईश्वर को प्रकट करने के लिये दिये गये इतने विकष्त कि वे इसे छुपाने के साधन बन गये। COLHin 11.1

मसीह ने उस सच्चाई को दूर करने की कोशिश की। वह घूघंट जिस पाप ने प्रकति के चेहरे पर डाल दिया है, वह एक तरफ आकर्षित होने के लिये आया। अध्यात्मिक गौरव को देखने के लिये कि सभी चीजें प्रतिबिबंत करने के लिये बनाई गई थीं। उनके शब्दों ने प्रकृति की शिक्षाओं के साथ-साथ बाइबल को भी नये सिरे से पेश किया और उन्हें एक नया रहस्याद्घाटन किया। COLHin 11.2

यीशु ने सुन्दर सोसन को तोडा और उसे बच्चों और युवाओं को दिया और जैसे कि उन्होंने स्वयं को युवा चेहरे में देखा, अपने पिता की ताजा प्रतिभा को और धूप के साथ, उन्होंने उन्हें सबक दिया, "क्षेत्र की सूसन पर विचार करे, वे कैसे बढ़ते हैं। (प्राकषतक सुन्दरता परिश्रम की ताजगी में) वे न तो परिश्रम करते है, न ही वे स्पिन और फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि उसकी महिमा में भी सुलैमान को एक की तरह नहीं बनाया गया था। "फिर मीठे आश्वासन और महत्वपूर्ण सबक का पालन किया, "यदि ऐसा है, तो यदि ईश्वर ने खेत की घास को जोता है, जो आज है कल आग में झोके जोते है, क्या वो तुम्हे कपड़ो से नही ढांकेगा, क्या तुम विश्वास में कमजोर हो गये? COLHin 11.3

पर्वत पर उपदेश में यह शब्द बच्चों और युवाओं के अलावा दूसरे से भी बोले गये थे। वे उस भीड से बाते करते थे जिनके मन में चिंता दविध गायें थी और वो निराश और दुखी थे। यीशु ने जारी रखा, "इसलिये बिना सोचे समझे, यह कहते हुये कि हम क्या खोयेगे? या हम क्या पियेगें? या हम क्या कपड़े पहनेंगे? इन सब चीजों की अन्य जातियों को तलाश है। अपने स्वर्गीय पिता जानते है कि तुम्हें इसकी आवश्यकता होगी। इन सभी चीजों की "फिर अपने हाथों को आसपास की भीड़ में फैलाते हुये, उन्होंने कहा, "लेकिन तुम पहले परमेश्वर के राज्य की तलाश करो और धार्मिकता की, फिर ये सब तुम्हें दिया जायेगा।" (मत्ती 6:28—33) COLHin 12.1

इस प्रकार मसीह ने उस संदेश की व्याख्या की जो उसने स्वयं गेंदे और खेत की घास को दिया था। वह चाहता है कि हम हरेक गेंदे और घास के तिनके में पढ़े। उसके शब्द आश्वासन से भरे है और ईश्वर में विश्वास की पुष्टि करते हैं। COLHin 12.2

सत्य के प्रति मसीह का दषष्टिकोण व्यापक था इसलिये उन्होंने अपने शिक्षण को बढ़ाया कि प्रकर्षत के प्रत्येक चरणों को सचित्र चित्रण में नियोजित किया गया था। वे दष्ष्य जिन पर प्रतिदिन आंखे टिकी थी, वे सभी किसी अध्यात्मिक सत्य से जुड़े थे, इसलिये प्रकषत को गुरू के दृष्टान्तों से अलंकप्त किया जाता है। COLHin 12.3

अपने सेवकाई पहले भाग में, मसीह ने लोगों से इतने सादे में शब्दों में बात की थी कि उनके सभी श्रोताओं को शायद सच्चाई का सामना करना पड़ा जो उन्हें उद्धार के लिये बुद्धिमान बना

देगा। लेकिन कई दिलों में सच्चाई ने कोई जड़ नहीं ली थी और यह जल्दी से दूर हो गया था। “इसलिये मैं उनसे दृष्टान्तों में बात करता हूँ, “उन्होंने कहा, क्योंकि वे देख रहे है और वे जो सुनते है, और न ही समझते हैकृकृकृइस कारण लोगों का हृदय स्थल है, और उनके कान सुनने में सुस्त है, और उनकी आंखे बन्द हो गयी है। (मत्ती 13:13-15) COLHin 12.4

यीशु ने जांच को जगाना चाहा। उन्होंने लापरवाही को जगाने और दिल पर सच्चाई को प्रभावित करने की कोशिश की। दष्टान्त शिक्षण लोकप्रिय था, और न केवल यहूदियों, बल्कि अन्य राष्ट्रों के लोगों के सम्मान और ध्यान को निर्देशित किया। निर्देश का कोई अधिक प्रभावी तरीका वह नियोजित नहीं कर सकता था, यदि उनके श्रोताओं को दिव्य चीजों का ज्ञान था, तो वे उनके शब्दों को समझ सकते थे, क्योकि वो हमेशा उनकी इमानदार जिज्ञासा को समझने के लिये तैयार था। COLHin 12.5

फिर मसीह के पास ऐसी सच्चाईयाँ थी जिन्हें लोग स्वीकार करने या समझने के लिये भी तैयार नही थे। इस कारण भी उन्होंने उन्हें दृष्टान्तों में पढ़ा। उसकी शिक्षाओं को जीवन, अनुभव या प्रकर्षत के दष्श्यों से जोड़कर, उन्होंने अपना ध्यान आर्कषित किया और उनके दिलों को प्रभावित किया। बाद में जैसा कि उन्होंने उन वस्तुओं को देखा, उन्होंने उसके पाठों को चित्रित किया, उन्होंने दिव्य शिक्षक के शब्दों को याद किया। पवित्र आत्मा के लिये खुले मन के लिये, उद्धारकर्ता के शिक्षण का महत्व अधिक से अधिक प्रकट हुआ। रहस्य स्पष्ट हो गये, और जिसे समझ पाना कठिन था, वह स्पष्ट हो गया। COLHin 13.1

यीशु ने हर दिल को एक मौका दिया। विभिन्न प्रकार के चित्रो का उपयोग करके, उन्होंने न केवल सत्य को विभिन्न चरणों में प्रस्तुत किया, बल्कि विभिन्न श्रोताओं से बिनती की। उनकी रूचि उनके दैनिक जीवन के प्रवेश में खींची गई आकषतयो से थी। उद्धारकर्ता की बात सुनने बाला कोई भी महसूस नहीं कर सकता था कि वे उपेक्षित थे, भूल गये थे। सबसे पापी, नम्र ने अपनी आवाज में एक शिक्षा दी जो उसे सहानुभूतिपूर्ण कोमलता में बोली। COLHin 13.2

उसके पास दृष्टान्तों में पढ़ाने का एक और कारण था। जो भीड़ उसके आस-पास इकटठी होती थी। इनमें बहरूपिये, पुजारी और रब्बी, शास्त्री और बुजुर्ग हेरोडिमन और शासक, दुनिया-प्रेमी, बड़े महत्वकांक्षी पुरूष थे, जो उनके चीजों से ऊपर थे। जो उनके खिलाफ कुछ आरोप लगाने के लिये वांछित थे। उनके जासूसों ने दिन रात उनके कदमों का अनुसरण किया, उनके होठों से कुछ ऐसा पकड़ा जो उनकी निन्दा का कारण बने, और हमेशा के लिये दुनिया को आकर्षित करने वाले व्यक्ति को चुप करा दिया। उद्धारकर्ता ने इन लोगों के चरित्र को समझा, और उन्होंने इस तरह से सत्य को निर्धारित किया कि वे कुछ भी नहीं पा सके। जिसके द्वारा अपने मामलों को सन्देहीन के सामने लाया जा सके। दृष्टान्तों में उच्च पदों पर आसीन लोगों के पांखड और दुष्ट कार्यो को झिड़क दिया, और लाक्षणिक भाषा में ऐसा चरित्र काटने की सच्चाई का गला

घोंट दिया, जो प्रत्यक्ष अवमानना में बोला गया था, उन्होंने उनके शब्दों को नहीं सुना होगा, और तेजी से डाल दिया होगा। उनके सेवकाई उनके शब्दों को जब उन्होंने जासूसों को उकसाया, तो उन्होंने सच्चाई को इतना स्पष्ट कर दिया कि त्रटि प्रकट हो गई और दिल में इमानदारी उनके सबक से प्रभावित हुयी। ईश्वरीय ज्ञान, अनन्त अनुग्रह, ईश्वर की रचना की चीजों द्वारा सादे बन गये थे। प्रकषत और जीवन के अनुभवों के माध्यम से, पुरूषों को ईश्वर के विषय में सिखाया गया था। “दुनिया के निर्माण के बाद से उसकी अदष्श्य चीजें, उन माध्यम से माना जाता है, जो बनाई जाती है, यहाँ तक कि उनकी चिरस्थायी शक्ति और दिव्यंता।” (रोमियों 1:20) COLHin 13.3

उद्धारकर्ता के दष्टान्त शिक्षण में इस बात का संकेत है कि “उच्च शिक्षा’ क्या है। मसीह के विज्ञान की गहरी सच्चाईयों को पुरूषों के लिये खोला जा सकता है। हो सकता है कि उसने अनौपचारिक रहस्यों को जनम दिया हो, जिसने कई शताब्दियों के परिश्रम की आवश्यकता होती है और खोज के लिये अध्ययन किया जाता है। उन्होंने वैज्ञानिक पक्तियों मे सुझाव दिये होगें जो समय के करीब आने के लिये आविष्कार और प्रोत्साहन के लिये भोजन का खर्च उठा सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने कहा कि जिज्ञासा को शान्त करने के लिये या सांसारिक महानता के लिये दरवाजे खोलकर मनुष्य की महत्वकांक्षा को पूरा करने के लिये कुछ भी नहीं किया। अपने सभी उपदेशों में, मसीह अनन्त मन के सम्पर्क में मनुष्य के मन को लाया। उन्होंने लोगों को ईश्वर, उनके शब्द या उनके कार्यो के बारे में पुरूषों के सिद्धान्तों का अध्ययन करने के लिये निर्देशित नही किया। उसने उन्हें अपने कामों में, अपने वचन में ओर अपनी भविष्य वाणियों के अनुसार उन्हें निहारना सिखाया। COLHin 14.1

मसीह ने अमूर्त सिद्धान्तों से व्यवहार नहीं किया, लेकिन उस मे जो चरित्र के विकास क लिये आवश्यक है, जो कि ईश्वर को जानने के लिये मनुष्य की क्षमता को बढ़ायेगा, और अच्छा करने के लिये, उसकी दक्षता में वर्षद्ध करेगा। उन्होंने उन सच्चाईयों के पुरूषों से बात की जो जीवन के आचरण से संबधित है और जो अनन्त काल तक धारण करते हैं। COLHin 14.2

यह वो मसीह था जिसने इस्राएल की शिक्षा का निर्देशन किया था। प्रभु के आदेशों और अध्यादेशों के बारे में उन्होंने कहा, और ये आज्ञायें जो मैं आज तुमको सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें। और तू इन्हें अपने बाल—बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बांधना और ये तेरी आंखों के बीच में टीके का काम दे। और इन्हे अपने-अपने घर के चौखट की बाजओं और अपने फाटकों पर लिखना। (व्यवस्था विवरण 6:6—91) अपने स्वंय के शिक्षण में यीशु ने दिखाया कि इस आज्ञा को कैसा पूरा किया जाता है, परमेश्वर के राज्य के नियमों और सिद्धान्तों को कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है, ताकि उनकी सुन्दरता और अनमोलता का पता चल सके। जब प्रभु इस्राएल को स्वंय के विशेष प्रतिनिधि बनने के लिये प्रशिक्षित कर रहे थे, तो उन्होंने उन्हें पहाड़ियों की और घाटियों के बीच घर दिये। उनके ग्रह जीवन और उनकी धार्मिक सेवा मे उन्हें

प्रकर्षत और ईश्वर के शब्द के साथ निरंतर सम्पर्क में लाया गया। इसलिये मसीह ने अपने शिष्यों को झील के किनारे, पहाड़ी पर, खेतों और उपलों में पढ़ाया, जहाँ वे प्रकर्षत की उन चीजों के देख सकते थे जिनके द्वारा उन्होंने उनकी शिक्षाओं का वर्णन किया था। और जैसा के उन्होंने मसीह को सीखा, उन्होंने अपने काम में उनके साथ काम करने के लिये अपने ज्ञान का इस्तेमाल किया। COLHin 14.3

इसलिये सपष्ट के माध्यम से हमें सष्टिकर्ता से परिचित होना है। प्रकषत की पुस्तक एक महान सबक पुस्तक है जो पवित्र-शास्त्र के सम्बन्ध | में है जिसे हम उसके चरित्र के बारे में दूसरों को सिखाने में उपयोग करते है और खोई हुई भेड़ों को ईश्वर के बाडे में वापिस भेज देते है। जैसे-जैसे परमेश्वर के कार्यो का अध्ययन किया जाता है, पवित्र आत्मा मन में दष्द विश्वास प्रकार करता है। यह तर्क नहीं है जो कि तर्क पैदा करता है, लेकिन जब तक मन ईश्वर को जानने के अवाकारमय नहीं हो जाता, आंखे उसे देखने के लिये बहुत मंद हो जाती है, उसकी आवाज सुनने के लिये कान भी सुस्त हो जाते है, एक गहरा अर्थ समझ में आता है और लिखित शब्द की अध्यात्मिक, हष्दय पर प्रभाव डालते है। COLHin 15.1

प्रकत से प्रत्यक्ष पाठों में एक सरलता और पवित्रता है जो उन्हें उच्चतम मूल्य प्रदान करती है। सभी को इस स्रोत से प्राप्त होने वाले शिक्षण की आवश्यकता है। अपने आप में प्रकर्षत की सुन्दरता आत्मा को पाप और संसारिक आकर्षण से दूर करती है और पवित्रता, शांति ईश्वर की ओर ले जाती है। बहुत बार छात्रों के दिमाग पर पुरूषों के सिद्धान्तों और कथनों का कब्जा होता है, जिन्हें विज्ञान और दर्शन कहा जाता है। उन्होंने प्रकत के साथ निकट सम्पर्क में लाने की आवश्यकता है। उन्हें यह जानने दे कि सष्जन और मसीहत है। उन्हें अध्यात्मिक प्रकर्षत के सांमजस्य को देखना सिखाया जाये। COLHin 15.2

जो कुछ भी उनकी आंखे देखती है या अपने हाथों को संभालती है, उन्हें चरित्र निर्माण में एक सबक दिया जाना चाहिये। इस प्रकार मानसिक शक्तियाँ लड़खड़ा जायेगी, चरित्र विकसित हो जायेगा, पूरा आनन्दमय हो जायेगा। COLHin 16.1

सब्बत के उद्देश्य के दष्टान्त शिक्षण में मसीह का उद्देश्य पाप की सीधी रेखा है। ईश्वर ने पुरूषों को उनकी रचनात्मक शक्ति का स्मारक दिया, कि वे उनके हाथ के कामों में उन्हे समझे। सब्बत की बोली हमारे द्वारा बनाये गये उनके रचनाकार की महिमा का बखान करती है। यह इसलिये था क्योंकि उसने हमें ऐसा करने के लिये चाहा था कि यीशु प्राकतिक वस्तुओं की सुन्दरता के साथ अपने अनमोल सबक को बांधे। पवित्र आराम के दिन, अन्य सभी दिनों के ऊपर, हमें उन संदेशों का अध ययन करना चाहिये जो परमेश्वर ने प्रकत में हमारे लिये लिखे है। हमें उद्धारकर्ता के द्दष्टान्तों का अध्ययन करना चाहिये जहाँ उसने उन्हें बोला, खेतों और पेड़ों मे, खुले आसमान के नीचे, घास और फूलों के बीच । जैसे-जैसे हम प्रकत के दिल के करीब आते हैं, मसीह अपनी

उपस्थिति हमे वास्तविक बनाते है और हमारे दिल को शांति और प्यार से बोलते हैं। COLHin 16.2

और मसीह ने अपने शिक्षण को न केवल आराम के दिन के साथ परिश्रम के सप्ताह के साथ जोड़ा है। उसके पास ज्ञान है जो हल चलाता और बीज बोता है। एक जुताई में, बोना और जोतना और फिर से भरना। वह हमें हृष्दय में अनुग्रह के अपने कार्य का दष्टान्त देखना सिखाता है। इसलिये उपयोगी श्रम और जीवन की हर संगति की हर पक्ति में, वह हमें दिव्य सत्य का पाठ खोजने की इच्छा रखता है। तब हमारा परिश्रम अब हमारा ध्यान आकर्षित नही करेगा और हमें ईश्वर को भूलने के लिये प्रेरित करेगा। यह हमें लगातार हमारे निर्माता और उद्धारक की याद दिलाता रहेगा। ईश्वर का विचार हमारे सभी घरेलू देखभाल लिये उसके चेहरे की महिमा फिर से प्रकषत के चेहरे पर आराम करेगी। हम कभी भी स्वर्गीय सत्य के नये पाठ सीख रहे हैं और उसकी पवित्रता की छवि में बढ़ रहे है। इस प्रकार हमें, "प्रभु की शिक्षा दी जानी चाहिये, और जिस स्थान पर हमें बुलाया जाता है। हम ईश्वर के साथ रहते है।" (यशायाह 54:13, 1 कुरिन्थियों 7:24) COLHin 16.3

अध्याय 2 - बीज बोने वाला बीज बोने गया

“यह अध्याय आधारित है-(मत्ती 13:1-19, मत्ती 13:18-23, मरकुस 4:1-20, लूका 8:4-15)

बोने वाला और बीज

बोने वाले के दृष्टान्त से, मसीह स्वर्ग के राज्य की बातों और अपने लोगों के लिये महान काश्तकार के काम को दिखाता है। मैदान में एक बोने वाले की तरह, वह सच्चाई के स्वर्गीय अनाज को बिखेरने के लिये आया था। उनका दृष्टान्त शिक्षण ही वो बीज था जिसके साथ उनकी कृष्पा के सबसे पूर्व सत्य को बोया गया था। इसकी सरलता के कारण, बोने वाले के दृष्टान्त को वैसा नहीं माना गया था, जैसे कि उसे होना चाहिये। मिट्टी में डाले गये प्रकर्षतक बीज में मसीह हमारे मन को सुसमाचार के बीज की ओर ले जाने की इच्छा रखता है, जिसके फलस्वरूप मनुष्य अपनी ईश्वर के प्रति निष्ठा वापस लाता है। वह जो छोटे बीज का दृष्टान्त देता है, वह स्वर्ग का महान प्रभु होता, और धर्मी कानून जो सांसारिक बीज बोते हैं, जो सत्य के बीज बोते है। COLHin 18.1

गलील समुद्र के किनारे भीड़ इकट्ठा होयी थी, यीशु को देखने सुनने के लिये, उत्सुक और आशा के मुताबिक । वहाँ बीमार थे, चटाई पर लेटे हुये थे, उसके सामने अपनी परेशानियों को लाने का इन्तजार कर रहे थे। यह मसीह का ईश्वर प्रदत्त अधिकार था जो एक पापी जाति की पीड़ा को ठीक करता था और उसने अब बीमारों को झिड़क दिया और उसके जीवन और स्वास्थ्य और शान्ति चारों ओर फैल गयी। COLHin 18.2

जैसे-जैसे भीड़ बढ़ती गयी, लोगों में मसीह के और नजदीक आ गई कि उनके पास कोई जगह नहीं थी। फिर मछली पकड़ने वाली नाओं में पुरूषों के एक शब्द बोलते हुये, उसने उस नाव मे कदम रखा जो उसे झील के पार ले जाने के लिये इन्तजार कर रही थी, और बोली लगाते हुये उसके चेलों ने जमीन से थोड़ा धक्का दिया, उसने किनारे पर भीड़ से बात की। COLHin 18.3

पास समुद्र के पास सुन्दर मैदान देखने लायक था। जो पहाड़ियों से परे था और पहाड़ी पर और मैदान पर दोनों बीज बोने और काटने वाला व्यस्थ थे, एक बीज बो रहा था दूसरा पहली फसल काट रहा था। इस दष्य्य को देखते हुये मसीह ने कहा एक बोने वाला बीज बोने निकला। बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। कुछ पथरीली भूमि पर गिरे, जहाँ उन्हें मिट्टी न मिली और गहरी मिटटी न मिलने के कारण वे जल्द उग आये, पर सूरज निकले पर वे जल गये और जड़ न पकड़ने से सूख गये। कुछ झाड़ियों में गिरे, और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा डाला, पर अच्छी भूमि पर गिरे और फल लाये, कोई सा गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना। COLHin 19.1

मसीह के मिशन को उनके समय के लोगो ने नहीं समझा। उनके आगमन का तरीका उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं था। यीशु मसीह पूरी यहूदी अर्थ व्यवस्था की नींव था। इसकी लागू करने वाली सेवायें दिव्य नियुक्ति की थी। उन्हें लोगों को यह सिखाने के लिये डिजाइन किया गया था कि नियुक्ति किये गये समय पर वे लोग आयेंगे जिन्हें उन सम्राटों ने इशारा किया था। लेकिन यहूदियों ने रूपों और सम्राटों को बढ़ा दिया था और अपनी वस्तु को खो दिया था पुरूषों की परम्परायें, अधिकतमता और अधिनियमितियाँ उन पाठों से छिपी है जिन्हें ईश्वर ने व्यक्त करने का निश्चय किया था। ये कहावते और परम्पराये उनकी समझ और सच्चे धर्म के अभ्यास के लिये एक बाधा बन गयी। और जब तक वास्तविक समय आया, तो मसीह के व्यक्ति में, वे अपने सभी प्रकार की पूर्ति के लिये, उनकी सभी छाया के पदार्थ को पहचान नहीं पाये। उन्होंने प्रतिरूप को अस्वीकार कर दिया और उनके प्रकारों और बेकार सम्राटों में लगे रहे। ईश्वर का बेटा आया था, लेकिन उन्होंने उसके संकेत के लिये पूछना जारी रखा। "मन फिराओं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है (मत्ती 3:2)। उन्होंने चमत्कार की मांग की। मसीह का सुसमाचार उनके लिये एक अड़चन था क्योंकि उन्होंने उद्धारकर्ता के बजाय संकेत की मांग की थी। वे उम्मीद करते थे कि मसीह विजय के शक्तिशाली कार्यो द्वारा अपने दावों को साबित करने के लिये, सांसारिक राज्यों के खंडहरों पर अपना साम्राजय स्थापित करेगा। यह अपेक्षा मसीह ने बोने वाले के दृष्टान्त से दी, हथियारों के बल पर नहीं, हिंसक अतविरोधी से नहीं ईश्वर के साथ को प्रबल करने के लिये, लेकिन पुरूषों के दिलों में नये सिद्धान्तों निहितार्थ द्वारा। COLHin 19.2

उसने उनके उत्तर दिया कि अच्छे बीज बोने वाला मनुष्य का पुत्र है। (मत्ती 13:37) मसीह एक राज के रूप में नहीं आया था बल्कि एक बोने वाले के रूप मे, राज्यों को उखाड़ फेकने के लिये नहीं बल्कि बीज बिखेरने के लिये आया अपने अनुयायियों को पष्थ्वी की विजय की ओर इशारा करने के लिये नहीं बल्कि बीज को बिखेरने के लिये, अपने अनुयायियों की पष्थ्वी की विजय की ओर इशारा करने के लिये नहीं, राष्ट्रीय महानता, लेकिन एक फसल के लिया। COLHin 20.1

फरीसियों ने मसीह के दष्टान्त का अर्थ समझा, लेकिन उन्हें सिखाने के लिये कि इसका पाठ अवांछित था। उन्होंने इसे न समझने के लिये प्रभावित किया। नये शिखक के उद्देश्य में यह अभी भी अधिक रहस्य में शामिल भीड़ के लिये, शब्दों की इतनी अजीब तरीके से उनके दिलों को हिला दिया था और इसलिये उनके महत्वकांक्षी को निराश किया। शिष्यों ने स्वयं को दष्टान्त नहीं समझा था, लेकिन उनकी रूचि जागष्त थी। वे यीशु के निजीकरण में आये और उन्होंने स्पष्टीकरण मांगा। COLHin 20.2

यही वह इच्छा थी जिसे मसीह ने चाहा था कि वह उन्हें अधिक निश्चित निर्देश दे सके। उसने उन्हें समझा दिया क्योंकि वह उन सभी को स्पष्ट रूप से अपना वचन देगा जो उसे दिल से इमानदारी से चाहते है। जो लोग परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं, वे पवित्र आत्मा के ज्ञान को खोलते है, शब्द के रूप में अंधेरे में नहीं रहेगे। "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो

वह इस उपदेश के विषय में जान जायेगा कि वह परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से कहता हूँ (यहून्ना 7:17) सत्य के स्पष्ट ज्ञान के लिये सभी मसीह के पास आयेंगे । वह उन्हें स्वर्ग के राज्य के रहस्यों को उजागर करेगा और इन रहस्यों को दिल से समझा जायेगा जो सच्चाई को जानने की लालसा रखते है। एक स्वर्गीय प्रकाश मन्दिर की आत्मा में चमक जायेगा और दूसरों को अंधेरे रास्तों पर दीपक के उज्जवल चमक के रूप से प्रकट किया जायेगा। COLHin 20.3

बोने वाला और निकल गया। "पूर्व में मामलों की स्थिति इतनी अस्थिर थी, और हिंसा से इतना बड़ा खतरा था कि लोग मुख्य रूप से दीवारों वाले शहरो में रहते थे, और पति रोजाना अपने भ्रम के लिये दीवारों से बहार चले जाते थे। इसलिये, यीशु स्वर्गीय बोने वाला, बोने के लिये आगे गया। उसने अपनी सुरक्षा और शान्ति का घर छोड़ दिया, दुनिया से पहले पिता के पास जो महिमा थी, उसे छोड़ दिया और ब्रहमाण्ड के सिंहासन पर अपनी स्थिति को छोड़ दिया। आदमी एकान्त में चला गया, आंसू में बोने के लिये, अपने खून से पानी पिलाया, दुनिया के लिये जीवन का बीज खो दिया। COLHin 21.1

उनके सेवकों को इस तरह से बोना चाहिये। जब सच्चाई के बीज को बोने के लिये कहा जाता है, तो अब्राहाम ने प्रतिबन्ध लगा दिया, "यहोवा ने अब्राहाम से कहा, अपने देश और अपनी जन्मभूमि और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा, जो मैं तुझे दिखाऊंगा। (उत्पत्ति 12:1) और वह नहीं जानता था कि वह कहां जायेगा। (इब्रानियों 11:8) इसलिये प्रेरित पौलुस, येरूशलेम में मंदिर में प्रार्थना करते हुये, ईश्वर से संदेशवाहक आया, यहा से जा क्योंकि मैं तुम्हें अन्य जातियों में भेजूंगा। (प्रेरितों के काम 22:21) इसलिए जिन लोगों को मसीह के साथ एक जुट होने के लिए कहा जाता है, उन्हे उनका अनुसरण करने के लिए छोड़ देना चाहिये। पुरानी संगति को तोड़ा जाना चाहिये, जीवन की योजनाओं को त्यागना चाहिये, सांसारिक आशाओं को आत्मसमपर्ण करना चाहिये परिश्रम और आंसू मे, एकान्त मे और बलिदान के माध्यम से बीज बोना चाहिये। COLHin 21.2

बोने वाले ने शब्द बोला, "मसीह सत्य के साथ दनिया को बोने आया था। यहाँ तक कि मनुष्य के पतन के बाद मे, शैतान बुराई के बीज बो रहा है। यह एक जुट से था कि उसने पहले पुरूषों पर नियंत्रण प्राप्त किया और इस प्रकार वह अभी भी पलटने का काम करता है। पृथ्वी में ईश्वर का राज्य और उसकी शक्ति के तहत पुरूषों को लाने के लिये । एक उच्च दुनिया से एक बोने वाला, मसीह सत्य के बीज बोने आया था। वह ईश्वर की परिषदों में खड़ा रहा था, जो अनन्त के अन्तरम अमयारण्य में डूब गये थे। पुरूषों को सत्य के शुद्ध सिद्धान्तों करने वाला व्यक्ति था। अजेय बीज द्वारा "ईश्वर का शब्द जो हमेशा के लिये जीवित और संयम रखता है, पुरूषों के लिये संप्रेषित होता है। (पतरस 1:23) अदन में हमारी गिरी हुई किरण से बोले गये पहले वचन में, मसीह सुसमाचार के बीज बो रहा था। लेकिन ये पुरूषों के बीच उनके व्यक्तिगत सेवकाई और उस कार्य

के लिये हैं, जिसे उन्होंने स्थापित किया है कि बोने वाला दृष्टान्त स्पष्ट रूप से लागू होते है। COLHin 21.3

ईश्वर का शब्द बीज है। हर बीज अपने आप में एक अंकुरण सिद्धान्त है। इसमें पौधे का जीवन बताया गया है। इसलिये परमेश्वर के वचन में जीवन है। मसीह कहते हैं, "जो शब्द मैं तुमसे कहता हूँ वे आत्मा है और वे जीवन है। (यहून्ना 6:63) वह मेरा शब्द सुनता है, उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, हमेशा की जिन्दगी। (यहून्ना 5:24) प्रत्येक आज्ञा में और परमेश्वर के वचन के प्रत्येक वचन में शक्ति, परमेश्वर का जीवन है, जिसके द्वारा आज्ञा पूरी हो सकती है और वचन साकार हो सकता है। वह जो विश्वास से वचन प्राप्त कर रहा है और वचन साकार है। वह जो विश्वास से शब्द प्रबल करता है, वह परमेश्वर का जीवन और चरित्र प्राप्त करता है। COLHin 22.1

हर बीज अपनी किस्म के बाद फल लाता है। सही परिस्थितियों में बीज बोना और यह पौधे में अपना जीवन विकसित करेगा। विश्व में पवित्र बीज को विश्वास के द्वारा प्राप्त करना है और ये चरित्र और ईश्वर के अनुकरण के बाद एक अमयारण्य और जीवन को प्रभावित करेगा। COLHin 22.2

इस्राएल के शिक्षक परमेश्वर के वचन का बीज नहीं बो रहे थे। सत्य के शिक्षक के रूप में मसीह का कार्य उसके समय के रब्बियों के विपरीत था। वे परम्पराओं पर, मानव सिद्धान्तों और क्यासों पर कम हुये। शब्द के विषय में आदमी ने जो सिखाया और लिखा था। वे शब्द के स्थानों पर रखे गये थे। उनकी शिक्षा में आत्मा को तेज करने की कोई शक्ति न थी। COLHin 22.3

मसीह के उपदेशों का विषय ईश्वर का वचन था। उन्होंने सादे से प्रश्नकर्ताओं से मुलाकात की। "यह लिखा है" "शास्त्र क्या कहते हैं? तुम कितने तत्पर हो? प्रत्येक असर पर, जब किसी दोस्त या दुश्मन द्वारा रूचि जाग्रत की जाती थी, तो उसने शब्द का बीज बोया। वह जो रास्ता है, सत्य और जीवन स्वंय जीवित शब्द, शास्त्रों की ओर इशारा करते हुये कहता है, वे वे है जो मेरी गवाही देते है। और मूसा और सभी भविष्यवक्ताओं पर शुरूआत, "उसने अपने चेलों के लिये खोला, सभी शास्त्रों में खुद के बारे में बताये। (यहून्ना 5:39, लूका 24:27) COLHin 22.4

मसीह के सेवकों को भी यही काम करना है। हमारे दिन में ईश्वर के शब्द के पुराने सत्य के रूप में मानव सिद्धान्तों और व्यासों के लिये अलग सेवक है। सुसमाचार के कई प्रचारित याजक पूरी बाइबल को प्रेरित शब्द के रूप में स्वीकार नहीं करते है। एक बुद्धिमान व्यक्ति एक भाग को अस्वीकार करता है, एक और सवाल और एक हिस्सा। उन्होंने अपने फैसलों को शब्द से बेहतर रूप में स्थापित किया, और पवित्र शास्त्र जिसका वे प्रचार करते है वह अपने अधिकार पर टिका हुआ है। इसकी दिव्य प्रमाणिकता नष्ट हो जाती है। बेवफाई के बीज प्रसारित होते हैं, लोगों को भ्रम हो जाता है कि कोई ऐसा नहीं है जो विश्वास करे। कई मान्यतायें है कि मन को मनोरंजन का

कोई अधिकार नहीं है। मसीह के दिनों में रब्बियों ने पवित्र शास्त्र के कई हिसाव पर एक मजबूर, रहस्यमय निर्माण किया गया। क्योंकि परमेश्वर के वचन की सादा शिक्षा ने उनकी प्रथाओं की निन्दा की, उन्होंने इसके बल को नष्ट करने का प्रयास किया। आज भी वहीं किया जाता है। परमेश्वर के वचन को रहस्यवादी और अस्पष्ट दिखाने के लिये बनाया गया है ताकि उसके कानून के प्रतिगमन का बहाना किया जा सके। मसीह ने अपने दिन में इन प्रथाओं का खंडन किया। उसने सिखाया कि परमेश्वर के वचन को सभी को समझना चाहिये। उन्होंने शास्त्रों को निर्विवाद अधिकार के रूप में इंकगत किया और हमें भी ऐसा करता चाहिये । बाइबल को अनन्त परमेश्वर के शब्द के रूप में प्रस्तुत किया जाना है सभी विवादों की समाप्ति और सभी विश्वासों की नींव के रूप में। COLHin 23.1.

बाइबल से उसकी शक्ति को लूट लिया गया, और परिणाम अE यात्मिक जीवन के स्वर को कम करते हुये देखे गये है। आज के कई दलितों के धर्मोपदेशों में वह दिव्य प्रकटीकरण नहीं है जो अन्तरात्मा को जाग्रत करता है और आत्मा को जीवन देता है। सुनने वाले यह नहीं कह सकते है, "क्या हमारा हृदय हमारे भीतर नहीं जलता था। जबकि वह हमारे साथ बात करता था, इस तरह के एक शास्त्रार्थ उसने हमारे लिये खोला (लूका 24:32)। ऐसे कई लोग है जो जीवित परमेश्वर के लिये रो रहे हैं, दिव्य उपस्थिति के लिये तरस रहे है। दार्शनिक सिद्धान्त या साहित्यक निबन्ध, हालांकि शानदार, दिल को सन्तुष्ट नहीं कर सकते पुरूषों की कथन और करनी का कोई महत्व नहीं है। परमेश्वर का वचन लोगों से बोले। जिन्होंने केवल परम्पराओं और मानवीय सिद्धान्तों और कहावत को सुना है, उनकी आवाज को सुने जिनके शब्द आत्मा को हमेशा के लिये नवीनीकृत कर सकते है। COLHin 23.2

मसीह का पंसदीदा विषय परमपिता परमेश्वर की कोमलता और प्रचुर कष्पा थी, उन्होंने अपने चरित्र और उनके कानून की पवित्रता पर बहुत कुछ किया, उन्होंने खुद को लोगों के लिये मार्ग, सत्य और जीवन के रूप में प्रस्तुत किया। मसीह के मंत्रियों के विषय होने चाहिये। सच्चाई को वैसा ही पेश करो, जैसे कि मसीह में है। कानून और सुसमाचार की आवश्यकता को स्पष्ट करे। आत्मा इन्कार और बलिदान के मसीह के जीवन के लोगों को बताये, उनके अपमान और मत्यु की, उसके जी उठने और उदगम की, परमेश्वर की अदालतों में उनके लिये उनकी हिमायत, उसके वचन के अनुसार, "मैं फिर से आऊंगा, और उन्हे स्वंय को प्राप्त करूंगा।" (यहून्ना 14:3) COLHin 24.1

गलत सिद्धान्तों पर चर्चा करने या सुसमाचार के विरोधियों का मुकावला करने की कोशिश करने के बजाय, मसीह के उदाहरण का पालन करे। ईश्वर के खजाने के घर से ताजा सच्चाई को जीवन में उतरने दे । "शब्द का प्रचार करे।" सभी पानी के पास बोओ। "मौसम में तुरन्त, मौसम से बाहर हो।" "वह मेरा वचन सुनता है, उसे मेरा वचन विश्वासपूर्वक बोलने देता हूँ। गेहूँ का जत्था क्या है? प्रभु ने कहा "ईश्वर का हर शब्द हैकृकृतुम उसके शब्दों को मत जोड़ो, ऐसा न हो कि वह

तुम्हें फटकार दे और तुम एक झूठे हो। (2 तीमुथियुस 4:2, यशायाह 32:20, यिर्मयाह 23:28, नीतिवचन 30:5,6) COLHin 24.2

“बोने वाला शब्द बोता है।’ यहाँ उस महान सिद्धान्त को प्रस्तुत किया गया है जिसे सभी शैक्षिक कार्य को पूरा करना चाहिये। “बीज ईश्वर का शब्द है। लेकिन हमारे दिन के बहुत से स्कूलों में परमेश्वर का वचन अलग रखा गया है। अन्य विषय मन पर कब्जा कर लेते है। काफिर लेखकों का अध्ययन शैक्षिक प्रणाली में एक बड़ा स्थान रखता है। संशयपूर्ण भावनायें स्कूली पुस्तकों में रखे गये मामले से परस्पर जुड़ी है। वैज्ञानिक अनुसाधन भ्रामक हो जाता है, क्योंकि इसकी खोजों को गलत और विकृत किया जाता है। ईश्वर शब्द की तुलना विज्ञान की कथित शिक्षाओं से की जाती है और इसे अनिश्चित और अविश्वासी कहा जाता है। इस प्रकार युवाओं के मन में संदेह के बीज रोपे जाते है और प्रलोभन के समय में वे वंसत में आते है। जब परमेश्वर के वचन में विश्वास में खो जाता है, तो आत्मा के पास कोई मार्गदर्शक नहीं होता, कोई सुरक्षा नहीं, युवाओं को उन रास्तों में खींचा जाता है जो ईश्वर से और अनन्त जीवन से दूर रहते है। COLHin 24.3

इस कारण से आज हमारी व्यापक असमानता को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। जब परमेश्वर के वचन को एक तरफ रख दिया जाता है, तो प्राकतिक हष्दय के लिये बुरे जुनुन को रोकने की उसकी शक्ति को अस्वीकार कर दिया जाता है। पुरूष मांस को बोते है और उस मांस से भ्रष्टाचार को जन्म देते है। COLHin 25.1

और यहां भी, मानसिक कमजोरी और दक्षता में महान कारण है। ईश्वर के वचन से हटकर अनपढ़ आदमियों के लेखन पर ध्यान देने से मन बोना और सस्ता हो जाता है। यह शाश्वत सत्य के गहरे, व्यापक सिद्धान्तों के सम्पर्क में नहीं लाया गया है। समझ अपने आप को उन चीजों की समझ के साथ जोड़ देती है, जिनके साथ वह परिचित है, इसकी शक्ति अनुबंधि त होती है, और एक समय के बाद इसका विस्तार करने में असमर्थ हो जाती है। COLHin 25.2

यह सब झूठी शिक्षा है। प्रत्येक शिक्षक का काम प्रेरणा के शब्द के अनुदान सत्य पर युवाओं के दिमाग को जांचना हैं। यह इस जीवन के लिये और आने वाले जीवन के लिये आवश्यक शिक्षा है। COLHin 25.3

यह न सोचा जाये कि यह विज्ञान के अध्ययन को रोक देगा, या शिक्षा में अलवर मानक का कारण बन सकता है। ईश्वर का ज्ञान स्वर्ग के समान और ब्रहमांड की तरह व्यापक है। महान विषयों को अध्ययन के रूप में करते हैं। युवाओं को ईश्वर प्रदत्त सच्चाईयों को समझने की कोशिश करनी चाहिये। तब उनके दिमाग का विस्तार होगा और प्रयास मजबूत होंगे। यह प्रत्येक छात्र को लायेगा, जो शब्द का कर्ता है विचार के व्यापक क्षेत्र में, और उसके लिये सुरक्षित है जो ज्ञान का खजाना है। COLHin 25.4

धर्मग्रन्थों की खोज करके हासिल की जाने वाली शिक्षा युक्ति की योजना का एक प्रयोगात्मक ज्ञान है। इस प्रकार की शिक्षा आत्मा में ईश्वर की छवि को बहाल करेगी। यह प्रलोभान के खिलाफ मन को मजबूत और दष्ढ़ करेगा और शिक्षार्थी को मसीह के साथ दुनिया में दया के अपने मिशन मे सहयोगी बनने के लिये फिर करेगा। यह उसे स्वर्गीय परिवार का सदस्य बना देगा, और प्रकाश में संतो को विरासत को साझा करने के लिये उसे तैयार करें। COLHin 25.5

लेकिन पवित्र सत्य का शिक्षक केवल बही अनुभव कर सकता है कि वह स्वंय अनुभव से जानता है। "बोने वाले ने अपना बीज बोया' मसीह ने सच्चाई सिखाई क्योंकि वो सच्चाई थी। उनका अपना विचार, उनका चरित्र, जो लोग इस वचन को सिखायेगें। वे इसे एक निजी अनुभव से अपना बना लेंगे। COLHin 26.1

उन्हें पता होना चाहिये कि मसीह ने उन्हें ज्ञान और धार्मिकता और पवित्र करने और छुटकारे के लिये क्या किया है। दूसरों को ईश्वर का वचन प्रस्तुत करने में, वे इसे ऐसा या ऐसा करने के लिये नहीं बना सकते है। उन्हें प्रेरित पतरस के साथ घोषणा करनी चाहिये, "जब हमने आपको प्रभु यीशु मसीह की शक्ति और आने के बारे में जाना जाता है, तो हमने चालाकी से तैयार किये गये दंतकथाओं का पालन नहीं किया है, लेकिन उनकी महिमा के चश्मदीद गवाह थे।" (2 पतरस 1:16) मसीह के प्रत्येक याजक और प्रत्येक शिक्षक को प्रिय यहून्ना के साथ कहने में सक्षम होना चाहिये, "जीवन प्रकट हुआ था, और हमने इसे देखा, और गवाही देते हैं, और आपको बताते है कि शाश्वत जीवन जो पिता के साथ था और हमारे लिये प्रकट हुआ था। (यहून्ना 1:2) COLHin 26.2

रास्ते के किनारे की भूमि

वह जिसके साथ मुख्य रूप से बोने वाले बीजों का दष्टान्त यह होता है कि मिट्टी के द्वारा बीज के विकास पर प्रभाव डाला जाता हैं। इस दष्टान्त से मसीह वस्तुतः अपने सुनने वालों से कह रहे थे, मेरे काम के आलोचकों के रूप में खड़े रहना या निराशा को शान्त करना। आपके लिये सुरक्षित नही है क्योंकि ये आपके विचारों को पूरा नहीं करता है। आपके लिये सबसे बड़ा महत्व का प्रश्न यह है कि आपके विचारों को पूरा नहीं करता है। आपके लिये सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि आप मेरे संदेशों को कैसे मानते हैं? आपके स्वागत या इसे अस्वीकार करने पर आपका अनन्त भाग्य निर्भर करता है। COLHin 26.3

रास्ते से गिरे बीज के विषय में बताते हुये उन्होंने कहा, जब कोई भी राज्य के शब्द को गर्भ करता है और उसे नहीं समझता है, तो दुष्ट आकर, और जो उसके दिल में बोया गया था, उसे दूर कर देता है। यही वह बीज है जो रास्ते के किनारों, सड़क के किनारे बोया गया बीज ईश्वर के वचन का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि इसका असर एक असावधान सुनने वाले के दिल पर पड़ता है। कठोर मार्ग की तरह, पुरूषों और श्रेष्ठ लोगों के पैरो से नीचे गिरते हये, वह दिल है जो दुनिया के

यातायात, उसके सुख और पापों के लिये एक राजमार्ग बन जाता है। स्वार्थी उद्देश्यों और पापपूर्ण भोगों में लीन, आत्मा "पाप के छल से कठोर हो जाती है।" (इब्रानियों 3:13) अध्यात्मिक संकायो को लकवा मार गया है। पुरूष वचन सनते है, लेकिन समझते नहीं है। वे यह नहीं समझते कि यह स्वंय पर लागू होता है। उन्हें अपनी जरूरत या अपने खतरे का एहसास नही है। वे मसीह के प्रेम का अनुभव नहीं करते हैं, और वे उनकी कृपा के संदेश के रूप में कुछ ऐसा करते है जो उन्हे चिंतित नहीं करता है। COLHin 26.4

चूंकि पक्षी बीज को पकड़ने के लिये तैयार है, इसलिये आत्मा से दिव्य सत्य के बीज को पकड़ने के लिये तैयार है। उसे डर है कि ईश्वर का परवाह हम लोगों को जगा सकता है, और वचन कठोर हष्दय पर प्रभाव डाल सकता है। शैतान और उसके स्वर्गदूत उन सभाओं में है, जहाँ सुसमाचार प्रचार किया जाता है। स्वर्ग के स्वर्गदूत परमेश्वर के साथ दिलों को प्रभावित करने का प्रयास करते है, लेकिन दुश्मन बिना किसी प्रभाव के शब्द बनने के लिये अलर्ट पर हैं। अपने द्वेष के साथ बराबरी के साथ, वह परमेश्वर की आत्मा के कार्य को विफल करने की कोशिश करता है। जबकि मसीह आत्मा को, अपने प्रेम से आकर्षक कर रहा है। शैतान उस व्यक्ति का ध्यान हटाने की कोशिश करता है, जिसे उद्धारकर्ता की तलाश में ले जाया जाता है। वह मन को सांसारिक योजनाओं से जोड़ देता है। वह आलोचना को उत्तेजित करता है, या संदेह और अविश्वास को उकसाता है। बोलने वाले की भाषा या उसके तरीके का चयन सुनने वालों को खुश नहीं कर सकता है, और वे इन दोषों पर ध्यान केंद्रित करते है। इस प्रकार उन्हें जिस सत्य की आवश्यकता है और जिसे ईश्वर ने अनुग्रहपूर्वक भेजा है, कोई स्थायी धारणा नहीं बनाता है। COLHin 27.1

शैतान के कई मददगार है। कई जो मसीह होने का दावा करते हैं, वे अन्य दिलों से सच्चाई के बीज को पकड़ने के लिये सहायता कर रहे हैं। कई लोग ईश्वर के वचन के उपदेश को सुनते हैं, वे इसे घर पर आलोचना का विषय बनाते हैं। वे धर्मोपदेश के फैसले पर बैठते हैं क्योकि वे एक व्याख्यता या राजनीतिक वक्ता के शब्दों पर कहते हैं। जिस सन्देश को उनके लिये प्रभु का शब्द माना जाना चाहिये, वह तुच्छ या व्यग्यात्मक टिप्पणी से सरोबार है। मंत्र के चरित्र, उद्देश्यों और? कार्यो और चर्च के साथी सदस्यों के आचरण की स्वतन्त्र रूप से चर्चा की जाती है। गंभीर निर्णय सुनाया जाता है, गपशप या गालियों को दोहराया जाता है। और यह गैर मसीह की सुनवाई में होता है। अक्सर ये बाते माता-पिता अपने बच्चों की सुनवाई में बोलते हैं। इस प्रकार परमेश्वर के दूतों के प्रति सम्मान और उनके सन्देश के प्रति श्रद्धा नष्ट हो जाती है। और बहुतों को सिखाया जाता है कि वे परमेश्वर के वचन को हल्के से समझें। COLHin 27.2

इस प्रकार मसीहो को मसीहों के घरों में कई युवाओं को काफिर होने के लिये शिक्षित किया जाता है। माता-पिता सवाल करते हैं कि उनके बच्चो को सुसमाचार में इतनी कम दिलचस्पी क्यों है और इसलिये बाइबल की सच्चाई पर संदेह करने के लिये तैयार है। वे आश्चर्य करते है कि नैतिक और धार्मिक प्रभावों के साथ उन तक पहुँचना इतना मुश्किल है। वे ये नहीं देखते कि उनके स्वयं

के उदाहरण ने उनके बच्चों के दिलों को कठोर बना दिया है। अच्छे बीज को जड़ लेने के लिये कोई जगह नहीं मिलती है और शैतान इसे पकड़ लेता है। COLHin 28.1

पत्थर के टुकड़ों में

जो बीज पथरीले स्थानों में गिरता है, वही वह है जो वचन को सुनता है और जल्दी ही खुशी प्राप्त करता है, अभी तक वह अपनी जड़ में नहीं है। लेकिन थोड़ी देर के लिये, जब उसके कारण, क्लेश के कारण क्लेश या उत्पीड़न उत्पन्न होता है, तो वह नाराज होता है। COLHin 28.2

पथरीली जमीन पर बोया गया बीज मिट्टी की गहराई को कम करता है। यह पौधा जल्दी उगता है, लेकिन इसकी वर्षद्ध को बनाये रखने के लिये, पोषक तत्व खोजने के लिये जड़ चट्टान में प्रवेश नहीं कर सकती है, और यह जल्दी ही नष्ट हो जाती है। धर्म का पेशा बनाने वाले कई पथ प्रदर्शक है। पष्थ्वी परन्तु पर अंतनिहित चट्टान की तरह, प्राकषतक हष्दय का स्वार्थ उनकी अच्छी इच्छाओं और आकांक्षाओं की मिट्टी को कमजोर करता है। स्वयं का प्रेम वश में नहीं है। उन्होंने पाप की अधिकता को नहीं देखा हैं, और इसके अपराध की भावना के तहत दिल को विनम्र नहीं किया गया है। यह वर्ग आसानी से आश्वस्त हो सकता है, और उज्जवल रूपांतरित हो सकता है, लेकिन उनके पास केवल एक सच्चा धर्म है। COLHin 28.3

ऐसा इसलिये नहीं है कि पुरूष तरन्त शब्द प्राप्त करते है, इसलिये नहीं कि वे इसमें आनन्दित होते हैं कि वे दूर हो जाते है। जैसे ही मत्ती ने उद्धारकर्ता की पुकार सुनी, तुरन्त वह उठ गया, सभी को छोड़ दिया और उसके पीछे चला गया। जैसे की दिव्य वचन हमारे दिल में आता हैं, ईश्वर हमें प्राप्त करने की इच्छा रखते है, और इसे खुशी के साथ स्वीकार करना सही है। "खुशी एक पापी के ऊपर स्वर्ग में होगी पश्चाताप करता है।" (लूका 15:7) और आत्मा में आनन्द है जो मसीह पर विश्वास करता है, लेकिन जो लोग दृष्टान्त में है उन्हें तुरन्त शब्द प्राप्त करने के लिये कहा जाता है, लागत की गणना नहीं करते है। वे इस पर विचार की सभी आदतों को सामने नहीं लाते हैं और अपने आपको इसके नियंत्रण के लिये पूरी तरह से उपज देते है। COLHin 29.1

पौधे की जड़ मिट्टी में गहराई से टकराती है, और दषष्ट से छिपी हुई पौधे के जीवन को पोषण देती है। तो मसीही के साथ आत्मा के अदष्श्य मिलन से है, विश्वास के माध्यम से, कि अध्यात्मिक जीवन का पोषण होता है। लेकिन पथरीली जमीन, सुनने वाले मसीह के बजाय स्वयं पर निर्भर करते हैं। वे अपने अच्छे कामों और अच्छे आवेत्रों पर भरोसा करते है. और अपनी धार्मिकता से मजबूत होते है, वे प्रभु में मजबूत नहीं हैं, और उनकी धारणा है कि उनकी शक्ति में हो सकता है। इस तरह वे खुद में निहित नहीं है "क्योंकि वो मसीह के साथ नहीं जुड़े हैं।" COLHin 29.2

गर्म, गर्मी का सूरज, जो कठोर अनाज को मजबूत करता है और नष्ट कर देता है, जो कि जड़ की गहराई नहीं है। तो वह जो, "अपने आप में जड़ नहीं है, थोड़ी देर के लिये, लेकिन "जब क्लेश या उत्पीड़न शब्द के कारण उत्पन्न होता है, तब तक वह नाराज होता है। कई लोग पाप से मुक्ति

के बजाये दुख से बचने के तरीके के रूप में सुसमाचार प्राप्त करते हैं। वे एक मौसम के लिये आनन्दित होते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि ६ गर्म उन्हें कठिनाई और परीक्षण से मुक्त करेगा। जबकि जीवन उनके साथ सहजता से चलता है, COLHin 29.3

वे लगातार मसीही बन सकते हैं। लेकिन वे प्रलोभन के उग्र परीक्षण के नीचे बेहोश हो गये। मसीह के लिये तिरस्कार सहन नही कर सकते । जब परमेश्वर का वचन कुछ पोषित पाप को इंगित करता है या आत्म इन्कार या बलिदान की आवश्यकता होती है, तो वे नाराज होते है। इससे उन्हें अपने जीवन में आमूलचूल परिवर्तन करने के लिये बहुत अधिक प्रयास करने पड़ेगे। वे वर्तमान असुविधा और परीक्षण को देखते हैं, और शाश्वत वास्तविकताओं को भूल जाते हैं। यीशु को छोड़ने वाले शिष्यों की तरह, वे कहने के लिये तैयार है, "यह एक कठिन कहावत है? कौन इसे सुन सकता है?" (यहून्ना 6:60) COLHin 30.1

इसके अलावा बहुत से लोग जो ईश्वर की सेवा करने का दावा करते है, लेकिन जिन्हें उनके बारे में कोई प्रयोगात्मक ज्ञान नहीं है। उनकी इच्छा को करने की, उनकी इच्छा अपने स्वयं के झुकाव पर आधारित है, न कि पवित्र आत्मा के गहरे विश्वास पर। उनके आचरण को ईश्वर के कानून के साथ सद्भाव में नहीं लाया जाता है। वे मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते है, लेकिन वे ये विश्वास नहीं करते कि वह उन्हें उनके पापों को दूर करने के लिये शक्ति देगा। एक जीवित उद्धारकर्ता के साथ उनका कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं है, और उनके पात्रों में वंशानुगत और खेती दोनों के दोषों का पता चलता है। COLHin 30.2

पवित्र आत्मा की ऐजेन्सी के लिये एक सामान्य तरीके से आश्वासन देना एक बात है, और पश्चाताप के लिये बुलावा करने वाले एक प्रतिनिधि| के रूप में, उनके काम को स्वीकार करने के लिये एक ओर चीज है। कई लोग ईश्वर से व्यवस्था की भावना महसूस करते है, आत्मा और पाप के लिये उनके बन्धन का एहसास करते है, वे सुधार के लिये पुतले बनाते है लेकिन वे स्वयं को कूस पर नहीं चढ़ाते। वे खुद को पूरी तरीके से मसीह के हाथों में नहीं देते हैं, उनकी इच्छा को करने के लिये दैवीय शक्ति की तलाश करते है। वे ईश्वरीय अनुकरण के बाद ढलने को तैयार नहीं है। सामान्य तरीके से अपनी खामियों को स्वीकार करते हैं, लेकिन वे अपने विशेष पापों को नहीं छोड़ते। प्रत्येक गलत कार्य के साथ पुराना स्वार्थी स्वभाव मजबूत हो रहा है। COLHin 30.3

इन आत्माओं के लिये एक मात्र आशा खुद को मसीह के निकोदिमस के शब्दों की सच्चाई का एहसास है, "आपको फिर से पैदा होने के अलावा वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता है। (यहून्ना 3:7) COLHin 30.4

सच्ची पवित्रता परमेश्वर की सेवा में पूर्णत है। ये सच्चे मसीही जीवन की स्थिति है। अविभाजित सेवा के लिये मसीह एक अनारक्षित अभिषेक के लिये कहता है। वह दिल, दिमाग, आत्मा ताकत

की मांग करता है। स्वयं को पोषित नहीं करता है। वह जो खद के वह जो खद के साथ रहता है, वह मसीह नहीं है। COLHin 31.1

प्रेम क्रिया का सिद्धान्त होना चाहिये। प्रेम, स्वर्ग और पष्थ्वी में परमेश्वर की सरकार का अंतनिहित सिद्धान्त है और हममें मसीह के चरित्र की नींव होना चाहे। यह अकेले ही बना सकता है और उसे स्थिर रख सकता है। यह अकेले उस परीक्षण और प्रलोभन झेलने में स्वयं को सक्षम कर सकता है। COLHin 31.2

और त्याग में प्रेम प्रकट होगा। छुटकारे की योजना बलिदान में रखी गयी थी-एक बलिदान इतना व्यापक गहरा और उच्च होता है कि वह अमीर हो। मसीह ने सभी को बल दिया, और जो लोग मसीह को प्राप्त करते है वे अपने उद्धार के लिये सभी बलिदान करने के लिये तैयार होंगे। उसके सम्मान और गौरव का विचार किसी और चीज से पहले आयेगा। यदि हम यीशु से प्यार करते हैं तो हम उसके लिये जीना पसन्द करेंगे, उसके लिये धन्यवाद का दान भेंट करेंगे, उसके लिये श्रम करेंगे। श्रम बहुत हल्का होगा। उनकी खातिर हम पीड़ा और कष्ट और बलिदान को स्वीकार करेंगे। हम पुरूषों के उद्धार के लिये उनकी लालसा के प्रति सहानुभूति रखेंगे। हम आत्माओं के लिये वही कोमल तष्णा महसूस करेंगे जो उन्होंने महसूस की है। COLHin 31.3

यह मसीह का धर्म है। इससे कम कुछ भी एक धोखा है। सत्य का कोई सिद्धान्त या शिष्यत्व का पेशा किसी भी आत्मा को नहीं बचायेगा। हम मसीह से तब तक नहीं मिल सकते, जब तक हम उनके पूर्ण नहीं होते। मसीही जीवन में आधे मन से पुरूष कमजोर और अपनी इच्छा में परिवर्तनशील हो जाते है। स्वंय और मसीह की सेवकाई दोनों की सेवा करने का प्रयास व्यक्ति को पथ-प्रदर्शक बना देता है और जब वो परीक्षा में आता है तो सहन नहीं कर पाता है। COLHin 31.4

काँटो के बीच में

"उन्होंने कांटो के बीच भी प्राप्त किया, ये वो बीज है जो वचन को सुनाता है। और इस दुनिया की देखभाल, और वह धन की धोखेबाजी करता है, वचन को चोक करता है, और वह अधूरा है।" COLHin 32.1

सुसमाचार का बीज प्रायः और विषैले खरपतवारों के बीच पडता है. और अगर मानव हष्दय में नैतिक परिवर्तन नहीं होता है, अगर पुरानी आदतों, प्रथाओं और पाप के पूर्ण जीवन को पौधे नहीं छोड़ा जाता है, तो गेहूं की फसल काटी जायेगी। कांटे फसल बनकर आयेंगे और गेहूँ को बाहर निकाल देंगे। COLHin 32.2

अनुग्रह केवल उस हृष्दय में पनप सकता है, जो सत्य के बीज के लिये निरंतर तैयार किया जा रहा है। किसी भी मिट्टी में पाप के कांटे उगेंगे, उन्हें कोई साधना की आवश्यकता नहीं है, लेकिन अनुग्रह की सावध पानी से खेती की जानी चाहिये । बाधाओं और कांटे हमेशा बसन्त के लिये तैयार होते है, और शुद्धिकरण का काम लगातार आगे बढ़ना चाहिये। यदि हृष्दय को परमेश्वर के नियंत्रण में नही रखा जाता है। यदि पवित्र आत्मा व चरित्र को परिष्किप्त करने और COLHin 32.3

उसे बढ़ाने के लिये बिना रूकावट के काम नहीं करता है, तो पुरानी आदतें जीवन में खुद को प्रकट करेगी, पुरूष सुसमाचार पर विश्वास करने के लिये प्रोफेसर हो सकते हैं। लेकिन जब तक वे सुसमाचार से पवित्र नहीं हो जाते हैं, तो पाप उन पर विजय प्राप्त कर रहा है। जिन कांटो को काट दिया गया है, लेकिन उखाड़ नहीं सकते है, जब तक कि आत्मा उनके साथ फैलती है। COLHin 32.4

मसीह ने उन चीजों को निर्दिष्ट किया जो आत्मा के लिये खतरनाक है। जैसे कि मरकुस द्वारा दर्ज किया गया था, उन्होंने इस दुनिया की कारों, धन की धोखेवाजी और अन्य चीजों की लालसा का उल्लेख किया है। लूका इस जीवन की देखभाल, धन और सुख को निर्दिष्ट करता है। ये वही है जो दुनियां को बढ़ाते है, बढ़ते अध्यात्मिक बीज को। आत्मा मसीह से पोषण करना बंद कर देती है, और आत्मिकता दिल से मर जाती है। COLHin 32.5

“इस दुनिया की परवाह करता है। कोई भी वर्ग सांसारिक देखभाल के मोह से मुक्त नहीं है। गरीबों और वांचितों के लिये और चाहने का डर और बोझ लाते है। अमीरों को नुकसान कर डर है और चिंतित लोगों की भीड़ है। मसीह के कई अनुयायी सबक को भूल जाते है। उसने हमें मैदान के फूलों से सीखने पर प्रतिबंध लगा दिया है। उन्हें उसकी निरंतर देखभाल पर भरोसा नहीं है, मसीह उनका बोझ नहीं क्योंकि उन्होंने इसे अपने ऊपर नहीं डाला। इसलिये जीवन की परवाह किये बिना जो उन्हें मदद और आरम्भ के लिये उद्धारकर्ता के पास ले जाना चाहते है वह उन्हें उससे अलग कर देगा। COLHin 32.6

जो लोग परमेश्वर की सेवा में फलदायी हो सकते है, वे धन प्राप्त करने पर तुले हुये है। उनकी पूरी ऊर्जा व्यवसायिक उद्यमों में अवशोषित हो जाती है, और वे आध्यत्मिक प्रकर्षत की चीजों की उपेशा करने के लिये बाध्य हो जाते है। इस प्रकार वे स्वयं को ईश्वर से अलग कर लेते है। हम शास्त्र में “व्यापार में सुस्त नहीं है’ से जुड़े है। (रोमियों 12:11) हम श्रम करने के लिये है कि हम इस प्रदान कर सकते हैं जिसे जरूरत है। मसीहों को काम करना चाहिये, उन्हें व्यवसाय में संलग्न होना चाहिये, और वे पाप किये बिना ऐसा कर सकते है। लेकिन कई लोग व्यवसाय में इतने अधिक व्यस्त हो जाते है कि उनके पास प्रार्थना के लिये समय नहीं है, बाइबल के अध्ययन के लिये समय नहीं है, ईश्वर की तलाश करने और उनकी सेवा करने का कोई समय नहीं है। कभी-कभी आत्मा की लालसा पवित्रता और स्वर्ग के लिये निकल जाती है। लेकिन ईश्वर की आत्मा के राजसी और

अधिकारिक वचन को सुनने के लिये, दुनिया के वैभव से अलग होने का समय नहीं है। अनन्त काल की चीजों के गोण बना दिया जाता है, दुनिया की चीजों को सर्वोच्च वचन के बीज के लिये फल लाना असंभव है, आत्मा के जीवन के लिये दुनियादारी के कांटों को पोषण देने के लिये दिया जाता है। COLHin 33.1

और कई जो बहुत अलग उद्देश्य के साथ काम कर रहे हैं, एक त्रुटि में पड़ जाते है। वे दूसरों के भले के लिये काम कर रहे हैं, उनके कर्तव्यों को दबाया जा रहा है, उनकी जिम्मेदारियां कई है, और वे अपने श्रम को भक्ति की भीड़ के लिये अनुमति देते है। प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर के साथ सम्बन्ध और उसके वचन का अध्ययन उपेक्षित है। वे भूल जाते है कि मसीह ने कहा है, "मेरे बिना आप कुछ नहीं कर सकते। (यहून्ना 15:5) वे मसीह से अलग चलते है, उनका जीवन उनकी कष्पा व्यापत नहीं है, और स्वयं की विशेषताओं का पता चलाते है, उनकी सेवा वर्चस्व की इच्छा से विवाहित है, और कठोर हष्दय के असहनीय लक्षण। यहां मसीही धर्म में विफलता के प्रमुख रहस्यों में से एक है। यही कारण है कि इसके परिणाम इतने कम है। COLHin 33.2

"धन की कपटपूर्णता" धन के प्यार में एक मोहक और भ्रमक शक्ति है। बहुत बार जो लोग सांसरिक खजाने के अधिकारी होते है, वे भूल जाते है कि ईश्वर ही हैं जो उन्हें धन पाने की शक्ति देते हैं। वे कहते हैं, "मेरी शक्ति और मेरे हाथ की ताकत ने मुझे यह धन दिया।" (व्यवस्थाविवरण 8:17) उनके धन, ईश्वर के प्रति कृतज्ञता जगाने के बजाय स्वयं के उत्थान की ओर ले जाते है। उन्होंने परमेश्वर पर अपनी निर्भरता और अपने साथी पुरूषों के प्रति अपने दायित्व के बारे में खो दिया। ईश्वर की महिमा और मानवता के उत्थान के लिए एक प्रतिभा के रूप में धन के सम्बन्ध में, वे इसे स्वम की सेवा के साधन के रूप में देखते हैं। मनुष्य में ईश्वर की विशेषताओं के विकास के बजाय, इस प्रकार उपयोग किये जाने वाले धन उसे शैतान के गुर्गों में विकसित कर रहे हैं। शब्द का बीज कॉटो से भरा होता हैं। "और इस जीवन का सुख ।" आमोद-प्रमोद में खतरा है जो केवल आत्म सन्तुष्टि के लिए मांगा जाता है। भोग की समी आदतें जो शरीरिक शक्तियों को कमजोर करते है, जो कि मिनट को बताती है या जो अध यात्मिक अनुभूतियो को छोड़ती है, वे है "शरीरिक रूप से वासनाये, जो आत्मा के खिलाफ युद्ध करती है। पतरस 2:11 | COLHin 34.1

"अन्य चीजों की वासना, ये जरूरी नहीं कि चीजें अपने आप में पापपूर्ण हो, कछ ऐसा जो ईश्वर के राज्य के बजाय पहले किया जाता है। जो कछ भी ईश्वर से मन की आकर्षित करता है, जो कुछ भी मसीह से दूर स्नेह को आर्काषित करता है, वह आत्मा का दुश्मन COLHin 34.2

जब मन युवा और जोरदार और तेजी से विकास के लिये अति संवेदनशील होता है, तो स्वंय की सेवा करने के लिये, महत्वकक्षी होने का बहुत प्रलोभन होता है। यदि संसारिक योजनायें सफल होती है, तो एक पंक्ति में जारी रहने के लिये झुकाव होता है, जो विवेक को मष्त करता है और एक सही अनुमान को रोकता है कि चरित्र की वास्तविक उत्कष्टता का गठन क्या होता है। जब

परिस्थियाँ इस विकास का पक्ष लेती है, तो विकास को परमेश्वर के वचन से निषिद्ध दिशा में देखा जाता है। अपने बच्चों के जीवन के इस प्रांरभिक समय में, माता पिता की जिम्मेदारी बहुत महान है। युवाओं को सभी प्रभावों के साथ घेरना उनका उद्देश्य होना चाहिये, जो उन्हें जीवन के सही विचारों को एक सफलता प्रदान करेगा। इसके बजाय, कितने माता-पिता इसे अपने बच्चों की सांसरिक समषद्ध के लिये सुरक्षित करना पहली वस्तु बताते है। उनके सभी संघ इस वस्तु के सन्दर्भ में चनें गये हैं। कई माता-पिता के लिये अपने घर कछ बड़े शहर में बनाते है, और अपने बच्चों को फैशन के समाज में प्रस्तुत करते हैं। वे उन्हें उन प्रभावो से घेरते हैं, जो दुनियादारी और गर्व को प्रोत्साहित करते हैं। इस वातावरण में मन और आत्मा बौना हो जाती है। जीवन के महान उद्देश्य दषष्ट खो देते हैं। अनन्त काल के ईश्वर के पुत्र होने का विशेषाधि कार, सांसरिक लाभ के लिये है। COLHin 34.3

कई माता-पिता अपने प्यार के मनोरंजन के लिये अपने बच्चों की खुशी को बढ़ावा देना चाहते हैं। वे उन्हें खेल में सलंग्र होने और आनन्द की पार्टियों में भाग लेने की अनुमति देते है, और उन्हें प्रदर्शन और बात संतुष्टि में स्वंत्रत रूप से उपयोग करने के लिये पैर प्रदान हैं। आनन्द की अभिलाषा का भोग किया जाता है, यह डतना ही मजबूत हो जाता है। इन युवाओं की रूचि आमोद-प्रमोद में अधिक अनुपस्थित है, जब तक कि वे इसे जीवन की महान वस्तु के रूप में नही देखते है। वे आलस्य और स्वभोग की आदते बनाते है जो उनके लिये कभी भी स्थिर मसीही बनाने के लिये लगभग असंभव बना देते हैं COLHin 35.1

यहाँ तक कि चर्च, जो सत्य का स्तम्भ और आधार होना चाहिये, की सुखी के स्वार्थी प्रेम को प्रोत्साहित करते हुये पाया जाता हे। तब धन ६ पार्मिक उद्देश्यो के लिये जाना है तो कई चर्चा का क्या मतलब है ? बाजारों, रात के खाने, फैंसी मेले, यहाँ तक कि उपकरणों जैसे लाटरी के लिये। अकसर ईश्वर की पूजा के लिये निर्धारित स्थान को दावत और पीने, खरीदने, बेचने ओर मनोरंजन के स्थान बना दिसा जाता है। ईश्वर के घर प्रति सम्मान और उनकी पूजा श्रद्धा' युवाओं के मन में कम होती है। आत्म संयम के बधाओं को कमजोर किया जाता है। स्वार्थ, मूख, प्रदर्शन के प्यार के लिये अपील की जाती है और वे भोग के रूप में मजबूत होते हैं। COLHin 35.2

शहरों में आनन्द और मनोरंजन केद्रों की खोज। कई माता-पिता जो अपने बच्चों के लिये एक शहर का घर चुनते हैं। उन्हें अधिक से लाभ देने के लिये सोचते है निराशा के साथ मिलते हैं ओर बहत देर से अपनी भयानक गलती पर पश्चाताप करते हे आज के शहर तेजी से संदोम और अमोरा की तरह बन रहे हैं। कई छुटियां आलस्य को प्रोत्साहित करती हैं। रोमांचक खेल-थियेटर जाना, घुड़दौर, जुआ, शराब पीना और खुलासा करना-हर जुनून को तीव्र गतिविधि के लिये प्रेरित करता हैं, युवा लोकप्रिय धारा में बह गये हैं। जो लोग अपनी मर्जी से मनोरंजन करना सीखते हैं, वे प्रलोभनो के द्वार को खोलते हैं। वे खुद को सामाजिक उल्लास और विचार गीन मिथ्य तर्क देते हैं। और आनन्द प्रेमियों के साथ उनके संभोग कहे मन पर एक नशीला प्रभाव पड़ता है। जब तक वे

इच्छा और प्रेमियों के क्षमता दोनों को नहीं खो देते है, तब तक वे एक प्रकार की अपव्यय से दूसरे तक पहुंच जाते है। उनकी धार्मिक आपेक्षाये ठंडी हैं, उनका अध्यात्मिक जीवन अंधकारमय है। आत्मा के सभी कुलीन संकाय, अध्यात्मिक दुनिया के साथ मनुष्य के जोड़ने वाले सभी विवादित है। COLHin 35.3

यह सच है कि कुछ लोग अपनी मूर्खता के और पश्चाताप देख सकते है। ईश्वर उन्हें क्षमा कर सकते हैं। लेकिन उन्होंने अपनी आत्माओं को घायल कर दिया, और खुद को एक आजीवन संकट में डाल दिया है। विवेक की शक्ति जिसे कभी भी और गलत के बीच अंतर करने के निये उत्सुक और संवेदनशील बनाये रखा जाता है, एक महान उपाय है। वे पवित्र आत्मा की मार्गदर्शक आवाज को पहचाने या शैतान के उन करणों के समझने के लिये जल्दी नहीं है। बहुत बार खतरे के समय वे प्रलोभन में पड़ जाते है और ईश्वर से दूर हो जाते हैं। उनके सुखमय जीवन का बन्त इस दुनिया के लिये और और दुनिया के आने के लिये वर्बाद है। COLHin 36.1

मानव आत्मा के लिये जीवन का खेल खेलने में शैतान, धन सुख और सभी का उपयोग किया जाता है। चेतावनी दी गई हैं, "दुनिया से प्यार नहीं दुनिया मे जो चीज है। अगर कोई दुनिया प्यार करता है तो पिता का प्यार इसके अन्दर नहीं है' दुनिया में तो कुछ भी है उसके लिये मॉस की लालसा है। और ऑखो की वासना और जीवन का गौरव, पिता का नहीं है परन्तु दुनिया का है। (यहूना 2:15,16) जो वह एक खुली किताब के रूप में पुरूषों के दिलो को पड़ता है, "अपने आप को ध्यान में रखे, किसी भी समय अपने दिलो में इस जीवन की खुशी और लापरवाइयो से बचाने के साथ खत्म कर देना चाहिये' (लूका 21:34)। और पवित्र आत्मा द्वारा पौलुस लिखते हे, "वे अमीर है, परीक्षा और प्रलोभनो में गिर जायेंगे और कई मूर्ख और आहत वासनाओं में, तो विनाश और पुरूषों को विनाश में डुबा देते हैं। पैसा बुराई की सबसे बड़ी जड़ है। जो विश्वास से मिट जाने के बाद कुछ प्रतिष्टत और कई दुखों के माध्यम से खुद को छलनी कर लिया है। (1 तिभुथियुस 6:9,10) COLHin 36.2

भूमि की तैयारी

बीज बोने वाले के दष्टान्त के अनुसार, मसीह मिट्टी पर बुआई परिणामों का प्रतिविधित्व करता है। हर मामले में बोने वाला और बीज समान होता हे। इस प्रकार वह यह सिखाता है कि यदि परमेश्वर का वचन हमारे दिलो और जीवन में अपना काम पूरा करने में विफल रहता है तो इसका कारण स्वंय को मुर्ख बनाना है। लेकिन परिणाम हमारे नियंत्रण से परे नहीं है और सच है, हम खुद को बदल नहीं सकते, लेकिन पसन्द की शक्ति है और तय करने के लिये हमारे साथ रहता है कि हम क्या बनेगें। सड़क के किनारे, पथरीले मेदान, कंटीलें मैदान वाले, सुनने वालो को ऐसा रहने की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर की आत्मा कभी भी सांसरिक मोह का जादू तोड़ने के लिये

और सांसरिक खजाने के लिये एक इच्छा को जगाने के लिये, मोह का जादू तोड़ने की कोशिश कर रही है। यह आत्मा का विरोध | करने से है कि परूष परमेश्वर के वचन के प्रति असावधान या उपेक्षित हो जाते है। वे स्वंय की कठोरता के लिये जिम्मेदार हैं जो अच्छे बीज की जड़ लेने से रोकता और इसके विकास जांच करने वाले बुरे विकास के लिये। COLHin 37.1

दिल के बगीचे में खेती करनी चाहिये। पाप के लिये गहरी पश्चाताप से मिट्टी को तोड़ना चाहिये। जहरीले, शैतानी पौधो को उखाड़ना चाहिये। एक बार कांटो द्वारा उखड़ी गई मिट्टी को केवल महेनत श्रम द्वारा ही पुनः प्राप्त किया जा सकता है। इसलिये प्राकृतिक हदय की दुष्ट प्रवृतियां केवल यीशु के नाम और सातर्थ्य के प्रयास से ही दूर हो सकती है। यहोवा ने भविष्यवकता से कहा, “अपने परती जीवन को तोड़ो और काटो के बीज मत बोओ। ” अपने आप को धार्मिकता में बोओ, दया से काटो। (यिर्मयाह 4:3, होशे 10:12)। यह काम वह हमारे लिये पूरा करना चाहता है और वह हमें उसके साथ सहयोग करने के लिये कहता हे COLHin 37.2

बीज बोने वाले के पास सुसमाचार प्राप्त करने के लिये दिलों को तैयार करने का एक काम है। उनकी सेवकाई बहुत बधिक उपदेश देने वाला है और वास्तविक दिल से दिल का बहुत कम है, खोई हुई आत्माओं के लिये व्यक्तिगत श्रम की आवश्यकता है। मसीह के समान सहानुभूति में, हमें व्यक्तिगत रूप से करीबी लोगों को लाना चाहिये, अनन्त जीवन की महान चीजो में उनकी रूची जाग्रत करने के लिये। प्रमुख मार्ग कठोर हो सकता है, और जाहिर तौर पर यह उनके लिये उद्वारकर्ता को पैशे करने लिये एक बेकार प्रयास हो सकता है। तर्क को समझाने के लिये शक्तिहीन हो सकता है, निजी सेवकाई में मसीह के प्यार का खुलासा हो सकता है, अपने दिल को नरम करें तांकि सत्य का बीज जड़ ले सके। COLHin 38.1

सो बीज बोने वोलों को कुछ ऐसा करना चाहिये कि बीज मिट्टी के उभलेपन के कारण कॉटो नष्ट होने बन्द न हो। मसीह जीवन के बहुत शुरूआत में हर आस्तिक को इसकी आधर शिला सिखाई जानी चाहिये। उसे सिखाया जाना चाहिये कि वह केवल मसीह के बलिदान से नहीं बचाया जा सकता है, बल्कि यह कि उसे मसीह के जीवन और मसीह के चरित्र को उसके चरित्र के रूप में बनाना है। सभी को सिखया जाये कि वे बोझ को सहन करें और प्राकृतिक झुकाव को नकारे। उन्हें आत्म-वंचना में उसका अनुसरण करने अच्छे सैनिको के रूप में कठोरता का पालन करने के, मसीह के लिये काम करने का आशीर्वाद सीखने दें। उन्हें अपने प्यार पर भरोसा करने और अपनी परवाह करने की सीख दे। उन्हें उनके जीतने वाली आत्माओ के आनन्द का स्वाद लेने दे। अपने प्यार में एक खोये हुये व्यक्ति के लिये, वे स्वंय की दष्टि खो देगे। दनिया के सुख अपनी शक्ति को आर्कषित करने के लिये और इसके बोझ को निराश करने के लिये खो देगें। सत्य को प्रतिज्ञा अपना काम करेगी। यह परती जमीन को तोड़ देगा। यह न केवल कांटो के शीर्ष को काट देगा, बल्कि उन्हें जड़ से निकाल देगा। COLHin 38.2

बोने वाले को हमेशा अच्छी भूमि में निराशा से मिलना नही होता है। बीज मे ' से जो अच्छी भूमि में गिर गया, उद्धारकर्ता ने कहा, " क्या वो वचन को गर्म कर रहा है, वह इसे समझता हैं, जो फल को भी सहन करता है, और फल लाता है, कुछ सौ, कुछ साठ, कुछ तीस । "अच्छी जमीन पर है जो, ईमानदार और अच्छे दिल से, वचन सुना, इसे रखने के लिये वो ६ पीरज का फल लाता है।" COLHin 38.3

"ईमानदार और ईश्वर का दिल, "जिसमें दष्टान्त बोलता है, पाप के बिना दिल नहीं है। सुसमाचार के लिये खो जाने का उपदेश देना है। मसीह ने कहा, "मैं धर्मियो को नहीं, पापियो को पश्चाताप करने के लिये आया है (मरकुस 2:17)। उसके पास एक ईमानदार दिल है जो पवित्र आत्मा के दष्ट विश्वास को उपज है। वह अपने अपराध को स्वीकार करता है, ईश्वर को दया और प्रेम को अपनी आवश्यकता को महसूस करता है। उसे सच जानने की सच्ची इच्छा है कि वह इसका पालन करे। अच्छा दिल एक विश्वास का दिल है, वह है पिसे परमेश्वर के वचन में विश्वास है। उसे सच जानने की इच्छा है। कि वह उसका पालन करे। वह अच्छे दिल पर विश्वास कि कला है, वह जो परमेश्वर के वचन में विश्वास रखता है। विश्वास के बिना वचन को प्राप्त करना असम्भव है। "वह ईश्वर के पास जो आता है उसे विश्वास होना चाहिये कि वह है, और उनका प्रतिज्ञापत्र है जो मेहनत से उसकी तलाश करता है।" (इब्रानियों 11:6) COLHin 39.1

यह "वह है जो वचन को गर्म करता है और इसे समझता है" मसीह के दिनों में फरीसियों ने अपनी आंखे बन्द कर दी ऐसा नहीं कि देखे, और उनके कानों को ऐसा लगे कि वह सुने, इसलिये उनके दिलों तक नहीं पहुँच सकी। COLHin 39.2

उन्हें अपनी विलक्षण अज्ञानता और आत्मा में लाये अंधेपन के लिये प्रतिशोध का सामना करना पड़ा, लेकिन मसीह ने अपने शिष्यों को सिखाया कि वे अवने दिमाग के निर्देश देने के लिये खोले और विश्वास करने के लिये तैयार रहें। उन्होंने उन पर एक आर्शीवाद का उच्चारण किया, क्योंकि उन्हें आंखो और कानों से देखा और सुना था जो विश्वास करते थे। COLHin 39.3

अच्छे-अच्छे सुनने वालों को "पुरूषों के वचन के रूप में नहीं परन्तु ग्रन्थों को प्राप्त करने के लिये ईश्वर का वचन है।" (1 थिस्सलुनीकियों 2:13) केवल वह जो धर्म ग्रन्थों को प्राप्त करता है, जो स्वयं को बोलने वाले परमेश्वर की वाणी है, एक सच्चा शिक्षार्थी है। वह वचन पर कांपता है, उसके लिये एक जीवित वास्तविकता है। वह उसे पाने की अपनी समझ और अपने दिल को खोलता है। इस प्रकार के सुनने वाले कोर्नेलियस और उनके मित्र थे, जिन्होंने प्रेरित पतरस से कहा, "अब इसलिये हम ईश्वर के सामने यहां उपस्थित है, उन सभी बातों को सुनने के लिये जो आपकी परमेश्वर की आज्ञा देती है। (प्रेरित के काम 10:33) COLHin 39.4

सत्य का ज्ञान बुद्धि की शक्ति पर इतना निर्भर नहीं करता है जितना उद्देश्य की शुद्धता पर, एक सरलता पर निर्भरता की सादगी पर । उन लोगों कि लिये जो हृदय की विनम्रता में ईश्वरीय

मार्गदर्शन चाहते है, परमेश्वर के स्वर्गदूत निकट आते है। पवित्र आत्मा उन्हें सम्य के समृद्ध खजाने को खोलने के लिये दिया है। COLHin 40.1

अच्छी भूमि सुनने वाले, इस वचन को सुनते हुये, इसे बनाये रखे। शैतान अपनी बुराई की ऐजसियों को पकड़ नहीं पा रहा है। COLHin 40.2

वचन सुनने या पढ़ने के लिये पर्याप्त नहीं है। वह जो शास्त्रों द्वारा प्रवीण हाने की इच्छा रखता है, उसे उस सत्य का ध्यान करना चाहिये जो उसे प्रस्तुत किय गया है। बयान ध्यान और प्रार्थना से सोचा कि उसे सच्चाई के वचन का अर्थ सीखना चाहिये, और पवित्र आत्मा को अपनाना चाहिये। COLHin 40.3

ईश्वर हमें महान विचारों और शुद्ध विचारों से भर देता है। वह हमें अपने प्रेम और दया पर ध्यान देने की इच्छा करता है ताकि मुक्ति की महान योजना में हम अपने अद्भुत काम का अध्ययन कर सकें। फिर स्पष्ट और अभी भी स्पष्ट सत्य, उच्च पवित्र, हमारे दिल की शुद्धता और विचार की स्पष्टता के लिये हमारा ध्यान होगा। पवित्र विचार के शुद्ध वातावरण में रहने वाली आत्मा, ईश्वर के विचार से धर्मशास्त्र के अध्ययन के साथ साम्य द्वारा परिवर्तित हो जायेगी। COLHin 40.4

"और आगे फल लाओं' जो लोग इस शब्द को सुनते हैं, वे इसे मानते हैं, आज्ञाकारिता में फल लायेंगे। आत्मा में प्राप्त, परमेश्वर का वचन, अच्छे कामों में प्रकट होगा। इसके परिणाम एक मसीही चरित्र और जीवन मे दिखाई देगें। मसीह ने खुद से कहा, "मैं तेरा वशीकरण में प्रसन्न हूँ, हे मेरे पिता तेरा नियम मेरे दिल के भीतर है।" (भजन संहिता 40:8) COLHin 40.5

मैं अपनी मर्जी नहीं चाहता, लेकिन पिता ने मुझे भेजा है। (यहून्ना 5:30) और पवित्र शास्त्र कहता है, "उसने कहा कि जो उसमें बसा है उसे वैसे की चलना चाहिये जैसे वो चला। (यहून्ना 2:6) COLHin 40.6

ईश्वर शब्द अक्सर मनुष्य के वंशानुगत और चरित्र के लक्षण और जीवन की आदतों के साथ टकराव मे आता है। लेकिन वचन प्राप्त करने में अच्छी भूमि, में सुनने वाला अपनी सभी शर्तों और आवश्यकताओं को स्वीकार करता है। उसकी आदतों, रीति रिवाजों को ईश्वर के वचन में प्रस्तुत किया जाता है। उनके विचार में परिमित की आज्ञा, मनुष्य को अनन्त ईश्वर के व्रत के बगल में तुच्छता में डूबे देता हैं। पूरे दिल से अविभाजित उद्देश्य के साथ, वह जीवन को शश्वत की खोज कर रहा है और नुकसान, उत्पीड़न या मृत्यु की कीमत पर वह खुद सच्चाई का पालन करेगे। COLHin 40.7

और वह "धैर्य के साथ फल लाता है। परमेश्वर के वचन को करने वाला कोई भी व्यक्ति कठिनाई और परीक्षण से मुक्त नहीं है, जब विपत्ति आती है, तो सच्चा मसीह बेचैन, अविश्वास या निराश नहीं होता है। हालांकि हम मामलों के निश्चित परिणाम नहीं देख सकते है, या परमेश्वर की

भविष्यवाणियों के उद्देश्य जो समझ नहीं आते है। प्रभु की कीमत अनुकंपाओं को या करते हुये, हम उसकी देखभाल करते है, और उसकी देखभाल के लिये उसके उद्धार की प्रतीक्षा करते है। COLHin 41.1

संघर्ष के माध्यम से आध्यत्मिक जीवन को मजबूत किया जाता है, परीक्षायें भली-भांति से वहन चरित्र और कीमत अध्यात्मिक अनुग्रह की निरंतरता में विकास होगा। विश्वास, नम्रता और प्यार का सही फल अवसर तूफान के बादलों और अंधेरे के बीच सबसे अच्छा होता है। COLHin 41.2

“किसान ने पष्थ्वी के अनमोल फल की प्रतीक्षा की, इसके लिये लम्बे समय तक धैर्य रखा, जब तक वह जल्दी और बाद की वर्षा प्राप्त नहीं कर लेता। (याकूब 5:7) इसलिये एक मसीही को अपने जीवन में फल लाने के धैर्य के साथ प्रतीक्षा करनी है। परमेश्वर के वचन के लिये । अक्सर जब हम आत्मा के अनुग्रह के लिये प्रार्थना करते है, तो ईश्वर इन फलों को विकसित करने के लिये हमें परिस्थितियों में रखकर हमारी प्रार्थनाओं का जबाव देने के लिये काम करते हैं, लेकिन हम उनके उद्देश्य और आश्चर्य को नहीं समझते है, और नष्ट हो जाते है। COLHin 41.3

विकास और फल के असर की प्रक्रिया को छोड़कर इन को विकसित करते है। हमारा हिस्सा ईश्वर के वचन को प्राप्त करना है और इसे अपने पास रखना है, अपने आप को पूरी तरह से अपने नियंत्रण के लिये पूरी तरह से उपज देता है और इससे हमारा उद्देश्य पूरा होगा। COLHin 41.4

“अगर एक आदमी मुझसे प्यार करता है”, मसीह ने कहा, “वह मेरे वचन को रखेगा, और माता-पिता उसे प्यार करेंगे, और हम उसके पास आयेगे और उसके साथ हमारा निवास बनायेगे। “एक मजबूत, एक सम्पूर्ण मन का बोझ हमारे ऊपर होगा, क्योंकि हमारे पास सभी स्थायी शक्ति के स्रोत के साथ एक जीवित सम्बन्ध है। हमारे दिव्य जीवन में हमें यीशु मसीह की कैद में लाया जायेगा। अब हम स्वार्थ का सामान्य जीवन नहीं जीयेगे, लेकिन मसीह हम में जीवित रहेगा। उसका चरित्र हमारे स्वभाव में पुनरूत्पादित होगा। इस प्रकार हम पवित्र आत्मा के फलों को इकट्ठा करेगे- “कुछ तीस, कुछ और कुछ सौ' ।

अध्याय 3 - पहले अंकुर, फिर कोपलें

"यह अध्याय मरकुस 4:26-29 पर आधारित है"

बीज बोने वाले दष्टान्त ने बहुत पूछताछ की। कुछ सुनने वाले इक्ट्ठा हुये कि मसीह एक सांसारिक सम्राज्य स्थापित करने के लिये नहीं आया था और कई लोग उत्सुक और हैरान थे। उनकी स्पष्टता को देखकर मसीह ने अन्य दृष्टान्तों का उपयोग किया, फिर में आत्मा में ईश्वर की कष्पा के कार्य के लिये सांसारिक राज्य की आशा से मोड़ने की कोशिश की। COLHin 43.1

"और उन्होंने कहा, तो ईश्वर का राज्य है, जैसे कि एक आदमी भूमि में बीज डालता है और सो जाता है और दिन में उठने है बौर बीज को पौधों में बढ़ना चाहिये, कैसे? यह वह नहीं जानता है। भूमि क्योंकि जब फसल पक जाती है तो दराती से काटी जाती है। COLHin 43.2

किसान "जो दराती का इस्तेमाल करते है क्योंकि फसल पकी है मसीह के अलावा और कोई नहीं हो सकता है। यह वह जो अंतिम महान दिन पर पष्थ्वी की फसल काटेगा। लेकिन बीज को बोने वाला उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो मसीह के पालन में श्रम करते है। बीज को बढ़ने और बड़े होने को कहा जाता है। मसीह अपने आरोप पर नहीं सोता है लेकिन दिन-रात चौकसी करता है। वह इस बात से अनभिज्ञ नहीं है कि बीज कैसे बढ़ता है। COLHin 43.3

बीज की दष्टान्त से पता चलता है कि ईश्वर प्रकत में काम पर है। बीज अपने आप में एक अंकुरित करने वाला सिद्धान्त है जिसे ईश्वर ने प्रत्यारोपित किया है, अभी तक अगर खुद को छोड़ दिया जाता है तो बीज में वसन्त तक कोई शक्ति नहीं होगी। अनाज के विकास को बढ़ावा देने के लिये मनुष्य के पास काम करने के लिये अपना हिस्सा है। उसे मिट्टी तैयार करके उसके बीज डालना चाहिये। उसे खेतों तक जान होगा। लेकिन एक बिन्दु है जिसके आगे वह कुछ भी नहीं कर सकता है। मनुष्य की कोई भी शक्ति या बुद्धि, जीवित पौधे से आगे नहीं ला सकती है। मनुष्य ने अपने प्रयासों को सबसे अधिक सीमा तक आगे बढ़ाया है, उसे अभ भी उसी पर निर्भर होना चाहिये जिसने अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति के चमत्कारिक लिंक द्वारा बुआई और फिर से जुड़ाव को जोड़ा है। COLHin 43.4

बीज में जीवन है, मिट्टी में शक्ति है, लेकिन जब तक दिन और रात में एक अनन्त शक्ति का प्रयोग नहीं किया जाता है तब तक बीज को कोई लाभ नहीं मिलेगा। बारिश की बौछार प्यासे खेतों को नमी देने के लिये भेजी जाती है, सूरज गर्मी प्रदान करना है, दफन बीज को बिजली से अवगत कराया जाता है। निर्माता ने जिस जीवन को निहित किया होता है, ईश्वर की शक्ति से। COLHin 44.1

"जैसे कि पष्थ्वी उसकी कली को आगे लाती है, और जैसा कि बगीचे में आने वाली चीजो को बसन्त ऋतु में बोया जाता है इसलिये ईश्वर पवित्रता वसन्त की प्रशंसा करेंगे। (यशायाह 61:11)

जैसे की प्रकपत में है इसलिये अध्यात्मिक बुआई में, सतय के शिक्षक को दिल की मिट्टी तैयार करने की कोशिश करनी चाहिये, उसे बीज बोना चाहिये, लेकिन वह शक्ति जो अकेले जीवन का उत्पादन कर सकती है, वह ईश्वर से है। ऐसा बिन्दु है जिसके आगे मानवीय प्रयास व्यर्थ है। जब हम वचन का प्रचार करते है, तो हम उस शक्ति को नहीं प्रदान कर सकते है जो आत्मा को जकड़ लेगी, और धार्मिकता और वसन्त की प्रशंसा करेगी। वचन के प्रचार में किसी मानव शक्ति से परे एक एजेन्सी का कार्य होना चाहिये, केवल दिव्य आत्मा के माध्यम से वचन यह वही है जो मसीह ने अपने शिष्यों को प्रभावित करने की कोशिश की। उन्होंने सिखाया कि ये कुछ भी नहीं है, जो उनके पास था, जो अपने मजदूरों के लिये बहुत बड़ी सफलता हासिल करते है, लेकिन यह ईश्वर की चमत्कारिक शक्ति है जो उनके अपने जीवन की दक्षता प्रदान करता है। COLHin 44.2

बोने वाला का काम विश्वास का काम है। बीज के अंकुरण और वषद्ध का रहस्य वह नहीं समझ सकता। लेकिन उन्हें उन ऐजन्सियों पर भरोसा है जिनके द्वारा ईश्वर बनस्पति को पनपने का कारण बनाते है। जमीन में अपना बीज डालने में वह स्पष्ट रूप से कीमती अनाज को फेंक रहा है जो उसके परिवार के लिये रोटी प्रदान कर सकता है। लेकिन वह केवल एक बड़ी वापसी के लिये एक अच्छा वर्तमान दे रहा है। वह बीज को दूर फेंक देत है और भरपूर फसल में इसे कई गुना इकट्ठा करने की उम्मीद करता है। इसलिये मसीह के सेवक अपने बोये गये बीज से फसल की उम्मीद करते है। COLHin 44.3

अच्छे बीज एक समय के लिये ठंडे स्वार्थी सांसारिक दिल में झूठ बोल सकता है, इस बात का कोई सबूत नहीं है कि ये जड़ तो पकड़ चुका है, लेकिन बाद में जैसा कि ईश्वर की आत्मा पर सांस लेती है, छिपे हुये बीज झरते है, और आखिरी बाद ईश्वर की महिमा के लिये फल देते है। हमारे जीवनकाल में हम जानते है कि यह समष्द्ध नहीं होगा। यह हमारे लिये कोई सवाल नहीं है। हमें अपना काम करना है और परिणामों को ईश्वर पर छोड़ना है। COLHin 45.1

सुबह अपना बीज बोओ और शाम को हाथ मत रोको (सभोपदेशक 11:61) परमेश्वर की महान वाचा यह बताती है कि “जबकि पृथ्वी रहती है, बीज समय और फसलकृकृकृसंघर्ष नहीं करेगा। (उत्पत्ति 8:22) इस वायदे के विश्वास में, किसान झुकता और बोता है। विश्वास से कम नहीं, हम आत्मिक श्रम के लिये आत्मा सर्पण कर रहे है, उनके आवश्वासन पर भरोसा करते हुये, “तो क्या मेरा वचन मेरे मुँह से निकल जायेगा। ये मेरे पास वापिस नहीं आयेगा, लेकिन यहां वही होगा जो मैं चाहता हूँ, और पूरा होगा जो चीज मैं ने भेजी थी, उसमें समृद्धि है” (यशायाह 126:6) “वह आगे बढ़ता है और रोता है, अनमोल बीज बोता है, निरसंदेह फिर से आनन्दित होकर आयेगा अपने साथ गटठा लेकर आयेगा। (भजन संहिता 126:6) COLHin 45.2

बीज का अंकुरण अध्यात्मिक जीवन की शुरूआत को दर्शाता है, और पौधे का विकास मसीही विकास का एक सुन्दर आंकड़ा है। जैसे कि प्रकृति में, इसलिये अनुग्रह में, विकास के

बिना जीवन नही हो सकता है। पौधे को यू तो बढ़ना चाहिये या मरना चाहिये। जैसे कि इसका विकास चुप और अंसगत है, लेकिन निंरतर है, इसलिये मसीह जीवन का विकास है। विकास के प्रत्येक चरण में हमारा जीवन परिपूर्ण हो सकता है, फिर भी यदि हमारे लिये परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हो जाता है, तो नित्य उन्नत होगी। पवित्रीकरण जीवन भर काम है। जैसे-जैसे हमारे अवसर बढ़ेंगे, हमारा अनुभव बढ़ेगा और हमारे ज्ञान में वृद्धि हागी। हम जिम्मेदारी उठाने के लिये मजबूत हो जायेंगे, और हमारी परिपवक्ता हमारे विशेषाधिकारों के अनुपात में होगी। COLHin 45.3

वह पौधा तब तक बढ़ता है जो ईश्वर ने उसे जीवन देने के लिये दिया। यह अपनी जड़ो को पष्थ्वी में भेजता है। यह धूप, ओस और वर्षा में होता है। यह हवा से जीवन देने वाले गुण प्राप्त करता है। तो मसीही की दिव्य एजेन्सियों के साथ सहयोग करके विकसित करना है। हमारी असहायता को महसूस करते हुये, हमें एक पूर्ण अनुभव प्राप्त करने के लिये दिये गये सभी अवसरों में सुधार करना है। जैसे पौधे मिट्टी में जड़ लेता है, वैसे ही हम मसीह में गहरी जड़े जमाते है। जैसे ही पौधे को धूप, ओंस और बारिश मिली, हमें अपने दिलों को पवित्र आत्मा के लिये खोलना है। काम "शक्ति द्वारा नहीं बल्कि मेरी आत्मा के द्वार किया जाना है, सेनाओं के यहोवा का वही वचन है। (जर्कयाह 4:6) अगर हम मसीह पर अपनी सोच रखते है, तो वह हमारे पास "वर्षा के रूप में, वह हम पर आयेगा वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती है। धर्म के सूर्य के रूप में वह हमारे ऊपर उठेगा। "अपने पंखों मे चिकित्सा के साथ" (मलाकी 4:2) हम लिली के रूप में विकसित होगें। हम 'मकई के रूप में फिर से जीवित करेगे, ओर बेल के रूप में विकसित होगे' (होशे 14:5, 71) हमारे व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में मसीह पर लगातार भरोसा करके, हमे उन सभी चीजो में विकसित होगें, जो हमारे प्रमुख हैं। COLHin 46.1

गेहूँ विकसित होता है, "पहले ब्लेड, फिर बाले और उसके बाद मकई, बीज की बुआई में किसान का उद्देश्य और बढ़ता हुआ पौधा अनाज का उत्पादन है। वह भूखे लोगों के लिये रोटी और भविष्य की फसल के लिये बीज की इच्छा करता है इसलिये दिव्य किसान अपनी श्रम और बलिदान के पुरस्कार के रूप में फसल की तैयारी करता है। मसीह पुरूषों के दिल में खुद को पुनः उत्पन करने की कोशिश कर रहा है और वह ऐसा उन लोगों के माध यम से करता है जो उस पर विश्वास करते हैं। मसीह जीवन का उद्देश्य फल असर है-आस्तिक में मसीह के चरित्र का प्रजनन, कि यह दूसरों में पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है। COLHin 46.2

पौधे अपने लिये फल नहीं उगाता, न ही आगे लाता है, बल्कि "बोने वाले को बीज देता है और खाने वाले को रोटी देता है" (यशायाह 55:10) इसलिये कोई भी आदमी अपने आप के लिये नहीं जीता है। इसलिये दुनिया में अन्य आत्माओं के उद्धार के लिये, मसीह के प्रतिनिधि के रूप में है। COLHin 46.3

स्वयं में केन्द्रित जीवन में कोई विकास या फल नहीं हो सकता है। यदि अपने मसीह को एक व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है, तो आप खुद को टटोलना चाहते है, और दूसरों की सहायता करने का प्रयास करते है। मसीह के प्रेम की बात है, उसकी अच्छाई के बारे में बताओं हर वह कर्तव्य करे, जो स्वंय को प्रस्तुत करते है। अपने दिल पर आत्माओं का बोझ लादें, और अपनी शक्ति के द्वारा हर तरह से खोये हुओ को बचाना चाहते है। जैसे कि आप मसीह की आत्मा प्राप्त करते है-दूसरों के लिये निस्वार्थ प्रेम और श्रम की आत्मा-आप आगे बढ़ेगे और फल लायेंगे । आपके चरित्र में आत्मा की पकड़ बढ़ेगी। आपका विश्वास बढ़ेगा, आपका विश्वास ओर गहरा होगा, आपका प्यार परिपूर्ण हो जायेगा। अधिक से अधिक आप सभी में मसीह की समानता को प्रतिबिंबित करंगे, जो शुद्ध महान और प्यारा है। COLHin 47.1

“आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, सोम्यता, भलमनसाहत, विश्वास, संयम है।” (गलतिया 5:22,23) यह फल कभी नष्ट नहीं हो सकता, लेकिन अनन्त जीवन के लिये अपनी तरह की फसल के बाद पैदा होगा। COLHin 47.2

“जब फल को सामने लाया जाता है, तुरन्त उसे दराती से काटते हैं, क्योंकि फसल तैयार है। मसीह अपनी कलासिया में स्वयं के प्रकट होने की लालसा के साथ प्रतीक्षा कर रहा है। जब मसीह के चरित्र को उसके लोगों में पूरी तरह से पुनः पेश किया जायेगा, तो वह उन्हें अपने रूप में दावा करने के लिये आयेगा। COLHin 47.3

यह हर मसीही का विशेषाधिकार है, जो न केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने की जल्दबाजी करता है, बल्कि (2 पतरस 3:12) सभी जो अपने नाम को उसकी महिमा के फल मानते है, कितनी जल्दी पूरी दुनिया में बोये जायेंगे। सुसमाचार के बीज के साथ, जल्दी से अंतिम महान फसल पक जायेगी, और मसीह कीमती अनाज इकटठा करने के लिये आयेगा। COLHin 47.4

अध्याय 4 - खरपतवार

"यह अध्याय मत्ती 13:24-30, मत्ती 13:37:43 पर आधारित है"

उन्होंने, "एक और दृष्टान्त उनके सामने प्रस्तुत किया, स्वर्ग का राज्य एक ऐसी आदमी की तुलना में है, जिसने अपने क्षेत्र में एक अच्छा बीज बोया था, लेकिन जब लोग सोते थे तो उसका दुश्मन आया और गेहूँ के बीज में जहरीले बीज भी बोकर चला गया। लेनिक जब अंकुर आया और उस पर बाले आयी, फिर खरपतवार भी दिखने लगे। COLHin 48.1

"खेत" मसीह ने कहा, "दुनिया है, "लेकिन हमें इसे दुनिया में मसीह की कलीसिया को दर्शाने के रूप में समझना चाहिये। दृष्टान्त उसका वर्णन है जो परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित है, पुरूषों के उद्धार का, उनका कार्य, यह काम कलीसिया के माध्यम से किया जाता है। सच है, पवित्र आत्मा सारी दुनिया में चला गया है, हर जगह यह पुरूषों के दिलों में काम कर रहा है, लेकिन यह कलीसिया में है कि हम ईश्वर के अनाज के खेतों के लिये विकसित और परिपक्व हों। COLHin 48.2

"उन्होंने कहा अच्छा बीज मनुष्य का पुत्र हैकृकृकृकृअच्छा बीज राज्य के बच्चे है, लेकिन खरपतवार दुष्टों के बच्चे है। अच्छा बीज उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो ईश्वर और सत्य के वचन से पैदा हुये है। ख्रपतवार एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता हे जो गलत सिद्धान्तों के फल या अवतार के लिये त्रुटि है। जिस दुश्मन ने उन्हें बोया वह शैतान है।" न तो परमेश्वर और न ही उसके स्वर्गदूतों ने कभी ऐसा बीज बोया जो खरपवार का उत्पादन करे। ईश्वर और इंसान के दुश्मन, शैतान ने हमेशा ताने बोये है। COLHin 48.3

पूर्व में, कभी-कभी पुरूषों ने दुश्मन के नये खेतों कुछ हानिकारक बोये खरपतवार के बीजों के साथ फेंक कर बदला लिया, जब कि बढ़ते समय, गेहूँ के समान । गेहूँ के साथ बढ़ते हुये ये फसल को नष्ट करता है और खेत के मालिक के लिये परेशानी और नुकसान लाता। इसलिये ये दुश्मनी के लिये है कि शैतान राज्य के अच्छे अनाज के बीज में अपने बुरे बीजों को बिखेरता है। उसकी बुआई का फल, परमेश्वर के पुत्र को देता है। जब वे अपने चरित्र अस्वीकार करते है तो कलीसिया के नाम को मसीह के नाम धारण करते है, जब कि वे उनके चरित्र को अस्वीकार करते है, दुष्टता एक कारण है कि ईश्वर के नाम को बदनाम किया जाये, उद्धार का काम गलत तरीके से किया जाता है और आत्माओं को पूर्ण किया जाता है। COLHin 48.4

मसीह के सेवक दखी है क्योंकि वे चर्च में सच्चे और झठे विश्वासियों को देखते है। वे कलीसिया को साफ करने के लिये लम्बे समय से है। गष्हस्थ के सेवकों की तरह हो खरपतवार को उखाड़ने के लिये तैयार है। लेकिन मसीह उनसे कहता है, "जब खरपतवार निकाल रहे हो, ऐसा न कि तुम गेहूँ को भी उखाड़ दो, दोनों को फसल पकने तक साथ रहने दो। COLHin 49.1

मसीह ने स्पष्ट रूप से सिखाया है कि जो लोग खुले पाप में बने रहते हैं, उन्हें कलीसिया से अलग होना चाहिये, लेकिन उन्होंने हमें सौंपने के लिये हमारी प्रकर्षत को अच्छी तरह से जाना है। क्या हमें कलीसिया से उखाड़ फेकने की कोशिश करनी चाहिये, जिन्हें हम सयमशील ईसाई मानते है, हमें गलतियों को सुधारना चाहिये। अक्सर हम निराशाजनक विषयों के रूप में संबंध रखते हैं, जिन्हें मसीह स्वयं आकर्षित करता है। हम अपने अपूर्ण निर्णय के अनुसार इन आत्माओं से निपटते हैं, यह शायद उनकी आखिरी उम्मीद को बुझा देगा। बहुत से जो स्वंय को ईसाई समझते है, उन्हें अंतिम रूप से वांछित किया जायेगा। कई लोग स्वर्ग में होंगे जो अपने पड़ोसियों को वहां प्रवेश नहीं करने देगें। मनुष्य दिखने से न्याय करता है, लेकिन परमेश्वर का हष्दय न्याय करता है। फसल होने तक खरपतवार और गेहूँ एक साथ बढ़ने दे, और फसल परिवीक्षाधीन समय का अन्त है। COLHin 49.2

उद्धारकर्ता के शब्दों में एक और सबक है, अद्भुत पूर्वाभास को कोमल प्रेम का पाठ। चूंकि खरपतवार की जड़े घनिष्ठ अनाज की तरह होती है, इसलिये इन ढोगियों का वास्तविक चरित्र पूरी तरह से प्रकट नहीं हुआ है। क्या वे कलीसिया से अलग होने वाले थे, दूसरों को ठोकर खाने का कारण हो सकता है, लेकिन इसके लिये वे दृढ बने रहें। COLHin 49.3

इस दष्टान्त का शिक्षण ईश्वर के स्वयं के पुरूषों और स्वर्गदूतों के साथ काम करने में चित्रित किया गया है। शैतान एक धोखे बाज है। जब उसने स्वर्ग में पाप किया था, तब भी वफादार स्वर्गदूतों ने उसके चरत्रि को पूरी तरीके से नहीं समझा। यही कारण है कि ईश्वर ने एक बार भी शैतान को नष्ट नहीं किया। अगर उसने ऐसा किया होता तो पवित्र स्वर्गदतों ने न्याय और ईश्वर के प्रेम को नहीं माना है। ईश्वर की अच्छाई का एक शंक बुराई के बीज के रूप में होता है जो पाप और कड़वे फल को कड़वा कर देता है। इसलिये बुराई के लेखक के बख्श दिया गया, पूरी तरह से अपने चरित्र को विकसित करने के लिये। लम्बे समय के माध्यम से ईश्वर ने बुराई के काम की बापिस लेने की पीड़ा को जन्म दिया है, उन्होंने कलवरी से अनन्त उपहार दिये है, बजाये इसके कि दुष्टों की गलत व्याख्याओं से छुटकारा पाने के लिये किसी को छोड़ दे, खरपतवार के लिये कीमती अनाज को उखाड़ने के खतरे के बिना नीचे नहीं गिराया जा सकता है। और क्या हम अपने सहकर्मियों की ओर नहीं होगें, क्योंकि स्वर्ग और पथ्वी के लोग शैतान की ओर है। COLHin 50.1

दुनिया को मसीह धर्म की सच्चाई पर संदेह का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि चर्च में अयोग्य सदस्य है, और न ही इन झूठे भाईयों के कारण मसीहीओं को निराश होना चाहिये। आरम्भ की कलीसिया के साथ कैसे था? हन्नया और सफीरा ने खुद को चेलों के साथ जोड़ा। शिमौन मेगोस को बपतिस्मा दिया गया था। डेमास, जिसने पौलुस को त्याग दिया, को एक आस्तिक गिना गया था। यहूदा इस्कारियोती को प्रेरितों के साथ गिना गया। मुक्तिदाता एक भी मनुष्य को खोना नहीं चाहता। यहूदा के साथ उनका अनुभव मानव स्वभाव के साथ उनके लम्बे धैर्य को दिखाने के लिये

दर्ज किया गया है और वो हमसे बोली लगाता है, जैसे उसने वहन किया है। उन्होंने कहा कि झूठे भाईयों को कलीसिया में समय के अन्त तक देखा जायेगा। COLHin 50.2

मसीह की चेतावनी के बावजूद, पुरूषों ने खरपतवार को उखाड़ने की मांग की। उन लोगों को दंडित करने के लिये जिन्हें अपवित्र होना चाहिये, कलीसिया ने नागरिक शक्ति को सहारा दिया है। जो लोग स्थापित सिद्धान्तों से अलग थे, उन्हें मसीह की मंजूरी के तहत कार्य करने का दाबा करने वाले पुरूषों के उत्पीड़न में यातना और मौत की सजा दी गयी। लेकिन यह शैतान के अपने प्रमुख के तहत दुनिया को लाने के अपने तरीके की भावना है। ईश्वर को चर्च के माध्यम से गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है जो कि विधर्मियों के रूप में माना जाता है। COLHin 50.3

कोई निर्णय दूसरों की निन्दा, लेकिन विनम्रता और स्वंय के प्रति अविश्वास, मसीह के दृष्टान्त का उपदेश है। यह सब खेत में बोया गया अच्छा अनाज नहीं है। तथ्य यह है कि पुरूष चर्च में है, उन्हें मसीही साबित नही करते है। COLHin 51.1

खरपतवार गेहूँ के समान है जब कि अंकुर हरे रंग के थे, लेकिन जब फसल के लिये खेत सफेद था, तो बेकार खरपतवारों ने गेहूँ को कोई समानता नहीं की जो उसके पूर्ण, पके हुये सिर के वजन के नीचे छुके । पापी जो मसीह के सच्चे अनुयायियों के साथ एक समय के लिये धर्मनिष्ठा का दिखावा करते है, और इसाई धर्म के सम्प्रदाय की गणना कई लोगों को धोखा देने के लिये की जाती है, लेकिन दुनिया की फसल में अच्छे और बुरे के बीच कोई समानता न होगी। फिर जो लोग कलीसिया में शामिल हुये है, लेकिन जो मसीह में शामिल नहीं हुये है, वे प्रकट होंगे। COLHin 51.2

खरपतवार को गेहूँ के बीच उगने की अनुमति है ताकि धूप और बारिश का फायदा हो लेकिन फसल के समय में धर्मी और दुष्टों के बीच वापसी और विचार करना, उसके बीच में ईश्वर की सेवा करता और वह जो उसकी सेवा नहीं करता है। (मलाकी 3:18) मसीह खुद तय करेगे कि स्वर्ग के परिवार के साथ रहने के योग्य कौन है। वह हर आदमी को उसकी बातों और उसके कार्यो के मुताबिक न्याय करेगा। पाप में पेशा कुछ भी नहीं है। चरित्र ही भाग्य का फैसला करता है। COLHin 51.3

उद्धारकर्ता ऐसे समय की ओर संकेत नहीं करता है, जब सभी खरपतवार गेहूँ बन जाते हैं। गेहूँ और खरपतवार की एक साथ फसल दुनिया के अन्त तक फिर खरपतवार बंडलों में जलाया जाते हैं, और गेहूँ को ईश्वर की आड़ में किया जाता है। “तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के रूप में चमकेंगे।” तब ‘मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेज देगा, और वे अपने राज्य से उन सभी चीजों को इकट्ठा करेंगे जो अपमान करते है, और वे जो अधर्म करते है, और उन्हें आग की मिट्टी में डाल देंगे, वहां दांतों का पीसना और तड़पना होगा।’ COLHin 51.4

अध्याय 5 - राई के बीज के समान

"यह अध्याय मत्ती 13:31, 32, मरकुस 4:30-32, लूका 13:18, 19 पर आधारित है"

मसीह के उपदेश को सुनने वाली भीड़ में कई फरीसी थे। इन पर ध्यान नहीं दिया गया कि कैसे उनके कुछ सुननेवालों ने उन्हें मसीहा के रूप में स्वीकार किया। और उन्होंने खुद से सवाल किया कि व्याख्या करने वाला शिक्षक इजरायल को सार्वभौमिक प्रमुख कैसे दिला सकता है। धन, शक्ति या सम्मान के बिना, वह नया राज्य कैसे स्थापित कर सकता था? मसीह ने उनके विचारों को पढ़ा और उन्हें उत्तर दिया। COLHin 52.1

"हम ईश्वर के राज्य की तुलना कहां कर सकते है? या किस तुलना के साथ हम इसकी तुलना करेंगे?" सांसारिक सरकारों में ऐसा कुछ भी नहीं था जो अनुकरण के लिये तिल तिल कर चलता है। कोई नागरिक समाज उसे एक प्रतीक दे सकता था। "यह सरसों के बीज का एक दाना है, "उन्होंने कहा, "जब यह पथ्वी पर बोया जाता है, हालांकि पष्थ्वी पर मौजूद सभी बीजों से कम होता है, फिर भी यह जब बोया जाता है, बड़ा होता है और इससे अधिक होता है, सभी जड़ी बुटियों की तुलना में और महान शाखाओं को बाहर कर दिया, ताकि स्वर्ग के पक्षी छाया के नीचे ६ म सके। COLHin 52.2

बीज में कीटाणु जीवन तत्व को प्रकट करता है, जिसे ईश्वर ने प्रत्यारोपित किया है। इसका विकास मानव शक्ति पर निर्भर करता है। तो ये मसीह के राज्य के साथ है। यह कई नई रचना है। विकास के अपने सिद्धान्त उन लोगों के विपरीत है, जो इस दुनिया के राज्यों पर शासन करते है। सांसरिक सरकारें शारीरिक बल द्वारा प्रबल होती है, वे युद्ध द्वारा अपना प्रमुत्व बनाये रखते है, लेकिन नये राज्य का संस्थापक शांति का राजकुमार है। पवित्र आत्मा शिकार के भंयकर जानवरों के प्रतीक के तहत सांसारिक राज्यों का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन मसीह "ईश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप को दूर करता है।" (यहून्ना 1:29) उनकी सरकार की योजना में अंतरात्मा को मजबूर करने के लिये क्रूर बल का कोई रोजगार नहीं है। यहदियों ने परमेश्वर के राज्य को दनिया के राज्य को दनिया के राज्य के रूप में स्थापना की गई थी। धार्मिकता को बढ़ावा देने के लिये उन्होंने बाहरी उपायों का सहारा लिया। लेकिन मसीह एक सिद्धान्त का आरोपण करता है। सच्चाई और धार्मिकता का आरोपण करके, वह त्रुटि और पाप का प्रतिकार करता है। COLHin 52.3

जैसे कि यीशु ने इस दष्टान्त को बताया, सरसों के पौध की दूर और निकट से देखा जा सकता है, घास के दाने को ऊपर उठाकर और हवा में अपनी शाखाओं को हल्के से लहराते हुये । पक्षी टहनी से टहनी की ओर जाते है, और पत्तेदार पत्ते के बीच गाते है। फिर भी जिस बीज से यह विशालकाय पौधा निकला, वह सभी बीजों में से कम था। सबसे पहले इसने एक निविदा शार्ट को भेजा, लेकिन यह मजबूत जीवन शक्ति का था और तब तक फला-फूला जब तक कि यह अपने

वर्तमान महान आकार तक नहीं पहुंचाया गया। इसलिये अपनी शुरूआत में मसीह का राज्य विनम्र और महत्वहीन था। सांसारिक राज्यों की तुलना में, यह सभी में से कम से कम दिखाई दिया। इस दुनिया के शासकों द्वारा मसीह के राजा होने के दावों का मजाक उड़ाया गया था। अभी तक अपने अनुयायियों के लिये किये गये, शक्तिशाली सत्य में सुसमाचार का राज्य एक दिव्य जीवन था। इसका विकास कितना तेजी से हुआ, इसका कितना व्यापक असर हुआ। जब मसीह ने इस दृष्टान्त को देखा तो बाये राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिये केवल कुछ गलीली किसान थे। उनकी गरीबी, उनकी संख्या की कमजोरी को फिर से एक विचारक के रूप में आग्रह किया गया था कि एक कारण के रूप में पुरूष खुद को इन सरल दिमाग वाले मछुआरों से नहीं जोड़ते है जो यीशु का अनुसरण करते है। लेकिन वो राई के बीज को दुनिया भर में अपनी शाखाओं को विकसित और फैलाते था। जब सांसारिक राज्य, जिनकी महिमा फिर पुरूषों के दिलों में भर जाती है, को नष्ट कर देना चाहिये, तो मसीह का राज्य एक शक्तिशाली और दूरगामी शक्ति बना रहेगा। COLHin 53.1

तो दिल में अनुग्रह का काम शुरूआत में छोटा है। एक शब्द बोला जाता है, प्रकाश जो एक किरण को आत्मा में बहाया जाता है, एक प्रभाव डाला जाता है जो नये जीवन की शुरूआत है, और इसके परिणाम को कौन माप सकता है। न केवल सरसों के बीज के दृष्टान्त द्वारा मसीह के राज्य की वृद्धि को दर्शाया गया है। बल्कि इसके विकास के प्रत्येक चरण मे दृष्टान्त मे दर्शाय गये अनुभव को दोहराया गया है। हर पीढ़ी में उस कलीसिया का परमेश्वर एक विशेष सत्य और एक विशेष कार्य है। सत्य का सिद्धान्त सांसारिक बुद्धिमानों से छिपा रहता है और विवेकमान बच्चे के समान और विनम्र होता है। यह आत्मा बलिदान के लिये कहता है। इसमें लड़ने के लिये और जीतने के लिये जीत है। शुरूआत में इसके अधिवकता कम है। दुनिया के महापुरूषों द्वारा और विश्व—अनुरूप कलीसिया द्वारा, उनका विरोध और तिरस्कार किया जाता है। यहून्ना बपतिस्मा देने वाला, मसीह के अग्रदूत को देखे, जो राष्ट्र के गौरव और औपचारिकता का खंडन करने के लिये अकेला खड़ा है। COLHin 54.1

यूरोप में सुसमाचार के पहले वाहक देखे। कितना अस्पष्ट, कितना निराशाजनक, पौलुस और सिलास का मिशन लग रहा था, दो तम्बू बनाने वाले क्योंकि वे अपने साथियों फिलिप के लिये दोआस में भी जहाज पर थे। सीर्जस के गढ़ में मसीह का प्रचार करते हुये, जंजीरों में “पौलुस एक बुजुर्ग को देखे। साम्राज्य रोम के कटटरवाद के साथ संघर्ष में दासों और किसानों के छोटे समुदायों को देखे। मार्टिन लूथर को समझे कि शक्तिशाली कलीसिया जो दनिया के ज्ञान का एक बड़ा केन्द्र है। उसे सम्राट और पाप की तेजी से ईश्वर के शब्द को पकड़े देखे, घोषणा करते हुये, “कहा मैं अपना कदम लेता हूँ, मैं अन्यथा नहीं कर सकता। मुझे आपकी मदद करनी चाहिये। जेम्स वैस्ली को औपचारिका, कामुकता और बेवफाई के बीच मसीह और उसकी धार्मिकता का प्रचार करते हुये देखा गया। एक को मिट्टी की दुनिया के बोझ से दबे हुये लोग देखे, उन्हें मसीह के प्रेम के

संदेश को ले जाने के विशेषाधिकार के लिये विनती करना है। सनकी पन की प्रतिक्रिया सुने। “बैठो, युवा जब ईश्वर मूर्ति पूजकों का परिवर्तन करेगा तो वह बिना किसी की सहायता से करेगा। COLHin 54.2

इस पीढ़ी में धार्मिक विचार के महान नेता ध्वनी की प्रशंसा करते है जो सदियों पहले सत्य का बीज बोने वाले धर्म ग्रन्थों के निर्माण की प्रशंसा करते है। आज एक ही बीज से विकास बसन्त को रौंदने के लिये, इस काम में कई मोड़ आते है। पुराना रोना दोहराया जाता है। हम जानते हैं कि ईश्वर मूसा की ओर इशारा करता है, जैसा कि इस साथी के लिये (मसीह दूत में भेजता है) हम जानते है कि वह कहां से है। वहां (यहून्ना 9:29) पूर्व के युगों में, इस समय के लिये विशेष सत्य पाये जाते है नहीं। सनकी अधिकारियों के साथ, लेकिन उन लोगों और पुरूषों के साथ, जो परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने के लिये न तो बहुत सीख गये और न ही बहुत बुद्धिमान है। COLHin 54.3

“क्योंकि तुम अपने बुलावे को देख रहे हो, भाईयों न जाने कितने बुद्धिमान लोग है, न कि बहुत से पराक्रमी न जाने कितने महान कहलाते है, लेकिन परमेश्वर ने बुद्धिमानों को भ्रमित करने के लिये दुनिया की मूर्खतापूर्ण चीजों को चुना और परमेश्वर ने कमजोरो को चुना जो दुनिया की चीजे शक्तिशाली है, उन्हें भ्रमित करने के लिये और दुनिया को चीजों को आधार बनाये, और जो चीजे तिरस्कृत है, चुने हुये है, जो चाजी नहीं हैं, वे शून्य चीजे लाने के लिये है। (1 कुरिन्थियों 1:23—28) यह कि आपका विश्वास पुरूषों की बुद्धि में नहीं हैं, बल्कि ईश्वर की शक्ति में होना चाहिये। (नीतिवचन 2:5) COLHin 55.1

और इस अंतिम पीढ़ी में सरसों के बीज का दष्टान्त एक संकेड और विजय पूर्ति तक पहुँचता है। छोटा बीज वक्ष बन जायेगा। चेतावनी और दया का अतिम संदेश, “हर देश और दयालु और “जीभ’ पर जाना है। (प्रकाशितवाक्य 14:6-4) “उनके नाम के लिये लोगों को बाहर निकाले” (प्रेरितों के काम 15:14, प्रकाशितवाक्य 14:6-14) “उनके नाम के लिये लोगों को बाहर निकालना है” (प्रेरितों के काम 15:14, प्रकाशितवाक्य 18:1) और पष्थ्वी उसकी महिमा से हल्की होगी। COLHin 55.2

अध्याय 6 - बीज बोने के अन्य उपकरण

बीज बोने के काम और बीज से पौधे की वर्षद्ध से परिवार और स्कूल में कीमती पाठ सिखया जा सकता हैं। बच्चों और युवाओं को दिव्य एजेन्सियों के काम-काज को प्राकषतक चीजों में पहचानने के लिये सीखने दे और वे विश्वास अनदेखी लाभों से काबू करने में सक्षम होगे। जैसे कि वे अपने महान परिवार की इच्छा में ईश्वर की अद्भुत काम को समझते है, और हम उनके साथ कैसे सहयोगी करते है, उन्हें ईश्वर में अधिक विश्वास होगा, और अपने स्वयं के दैनिक जीवन में अपनी शक्ति का अधिक एहसास होगा। COLHin 56.1

ईश्वर ने बीज की रचना की, जैसे कि उसने अपने वचन से पष्थ्वी का निर्माण किया। अपने शब्द से उन्होंने इसे बढ़ाने और गुणा करने की शक्ति दी। उन्होंने कहा, “पष्थ्वी की घास, जड़ी-बूटी देने वाले बीज और फल के पेड़ को अपनी तरह से फल देने दे जिसका बीज अपने आप में, पष्थ्वी पर है, और ऐसा ही थाकृकृकृऔर ईश्वर ने देखा कि यह अच्छा था।” (उत्पत्ति 1:11, 12) यह वह शब्द है जो अभी भी बीज को बढ़ने का कारण बनता है। प्रत्येक बीज जो सूरज की रोशनी में अपना हरा ब्लेड भेजता है, वह उस शब्द की आश्चर्य काम करने वाली शक्ति की घोषणा करता है, जिसे उसके द्वारा बोला गया था, उसने कहा और हो गया” “जिन्होंने आज्ञा दी और वो हो गया।” (भजन संहिता 33:9) COLHin 56.2

मसीह ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया। “हमें इस दिन हमारी रोज की रोटी दे। और फूलों की ओर इशारा करते हुये उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया, “यदि ईश्वर मैदान की प्यास कोकृकृकृऐसा वस्त्र पहनाता हे, तो है अल्प विश्वासियों, तुम को वह क्योंकर न पहनायेगा? (मत्ती 6:11, 30) मसीह लगातार इस प्रार्थना का उत्तर देने के लिये और इस आश्वासन बनाने के लिये काम कर रहा है। भोजन करने, और कपड़े पहनने के लिये, आदमी के नौकर के रूप लगातार एक अदष्श्य शक्ति काम करती है। कई एजेन्सियों हमारे ईश्वर को बीज बनाने के लिये काम करती है, जाहिर तौर पर एक जीवित पौधे को फेंक दिया जाता है। और वह फसल को सही करने के लिये उचित अनुपात में आपूर्ति करता हैं भजनकार के खूबसूरत शब्दों में COLHin 56.3

तू पष्थ्वी पर जा और उसे सींच

तू बसे बहुत समष्द्ध करता है

ईश्वर की नदी पानी से भरी है

जब आप उसमें मकई डालते हैं।

तू वेघारियों को भली भांति सींचता है।

और उनके बीच मिटटी को बैठाता है

तू भूमि को मेंह से नरम करता है

और उसकी उपज को आशीष देता है

अपने भलाई से भरे हुये वर्ष पर तू ने

मानो मुकुट धर दिया है

तेरे मार्गों में उत्तम—उत्तम पदार्थ पाये जाते है। COLHin 57.1

भौतिक संसार ईश्वर के नियंत्रण में है। प्रकर्षत के नियमों का पालन प्रकर्षत द्वारा किया जाता है। सब कुछ सषष्टकर्ता की इच्छा से बोलता है और कार्य करता है। बादल और धूप, ओस और वर्षा, हवा और तूफान, सभी ईश्वर की देखरेख में है, और उनकी आज्ञा के प्रति अंतनिहित आज्ञाकारिता। यह परमेश्वर के कानून का पालन करने के लिये है कि अनाज का टुकड़ा, जमीन के माध्य से फूट जाता है “पहले अंकुर, तब बाल और तब बालों में तैयार दाना। (मरकूस 4:28) ये अपने उचित मौसम में विकसित होते है, क्योंकि वे अपने काम का विरोध नहीं करते है। और क्या ऐसा हो सकता है कि मनुष्य, ईश्वर की छवि के कारण और वाणी से सम्पन्न हो, अकेले अपने उपहारों के प्रति उदासीन हो और अपनी पत्नी के प्रति अवज्ञाकारी हो? हमारी दुनिया में भ्रम पैदा करने वाले तर्कशील प्राणी। COLHin 57.2

हर चीज में जो मनुष्य के भरण पोषण के लिये जाता है, उसे दैवीय और मानवीय प्रयासों की सहमति के रूप में देखा जाता है। जब तक मानव हाथ आरी की बुवाओं में अपना हिस्सा का काम नहीं करता तब तक कटाई नहीं हो सकता। लेकिन एजेन्सियों के बिना ईश्वर और बारिश, ओस और बादल देने में प्रदान करते है, कोई वषद्ध नही होगी। इस प्रकार यह अध ययन और विज्ञान के हर विभाग में, हर व्यवसाय में है। इस प्रकार यह अध यात्मिक चीजों में हैं, चरित्र के निर्माण में और मसीही काम की हर पंक्ति में। हमारे पास कार्य करने के लिये एक हिस्सा है, लेकिन हमारे पास एक जुट होने की शक्ति होनी चाहिये या हमारे प्रयास व्यर्थ हो जायेगे। COLHin 57.3

जब भी मनुष्य कुछ भी हासिल करता है, चाहे अध्यात्मिक या लैगिक रेखाओं में उसे यह ध्यान रखना चाहिये कि वह अपने निर्माता के सहयोग से ऐसा करता है। हमें महसूस करने के लिये बहुत आवश्यक है। ईश्वर पर अपनी निर्भरता का एहसास करना हमारे लिये बहुत आवश्यक है। बहुत अधिक आत्म—विश्वास मुख्य रूप से रखा गया है, मानव आविष्कारों पर बहुत अधिक निर्भरता है। उस शक्ति पर बहुत कम भरोसा है जो ईश्वर देने के लिये तैयार है। हम ईश्वर के साथ मिलकर मजदूर है। (1 कुरिन्थियों 3:9) निसंदेहीनता वह हिस्सा है जिसे मानव एजेन्ट निर्वाह करता है, लेकिन अगर वह मसीह को दिव्यता के साथ जुड़ा है तो मसीह के बल पर सारी चीजे कर सकता है। COLHin 58.1

बीज से पौधे का क्रमिक विकास बाल प्रशिक्षण में एक वस्तु पाठ है। पहले अंकुर, फिर बाल और उसके बाद बाल में मकई है। "जिसने इस दृष्टान्त में छोटा बीज बना, उसे इसके गुण दिये और इसके विकास को नियंत्रित करने वाले कानूनों को अपनाया और जिस सच्चाईयों को दृष्टान्त दर्शाता है, वे अपने जीवन में एक जीवित वास्तविकता बन गये थे। अपनी भौतिक और अध्यात्मिक प्रकषत दोनो में, उन्होंने पौधे द्वारा चित्रित विकास के दिव्य आदेश का पालन किया, जैसा कि वह सभी युवाओं को करना चाहते है। हालांकि वह महिमा का महामहिम था, वह बैतलहम में एक बच्चा गया और कुछ समय के लिये अपनी मां की देखभाल में असहाय शिशु का प्रतिनिधित्व किया। बच्चे में उन्होंने एक आज्ञाकारी बच्चे का कार्य किया। उन्होंने एक बच्चे की बुद्धि के साथ बात की और अभिनेय किया न कि किसी बच्चे की क्षमता के अनुसार, अपने माता-पिता का सम्मान करने और उनकी इच्छाओं को सहायक तरीके से पूरा करने के लिये। लेकिन उनके विकास का प्रत्येक चरण में वे सरल, प्राकतिक अनुग्रह के साथ पाप रहित जीवन के लिये परिपूर्ण थे। पवित्र रिकार्ड उनके बचपन के बारे में कहता है, बच्चा बड़ा हो गया और आत्मा में मजबूत हुए, ज्ञान से भर गया, और ईश्वर की कष्पा उस पर थी। और उनके जवानी में ये दर्ज है, "यीशु ने ज्ञन और कद में वर्षद्ध की, और ईश्वर मनुष्य के पक्ष में (1 लूका 2:40, 52) COLHin 58.2

माता-पिता और शिक्षको का काम यहाँ सुनाया उन्हे युवाओं की प्रवत्तियों को जानने के लिये इतना प्रयास करना चाहिये कि उनके जीवन के प्रत्येक चरण में वे प्रकतिक सौन्दर्य का प्रतिनिधित्व करे जैसे कि बगीचे में पौधे करते है। COLHin 59.1

वे बच्चे सबसे आकर्षक होते है जो प्रकषतक अप्रभावित होते है। उन्हे विशेष नोटिस दिया जाना बुद्धिमानी नही है, और उनके सामने अपनी चतुर कहावत दोहराये । धमण्ड को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिये। न ही उन्हें मंहगे या दिखावटी तरीके से कपडे पहने चाहिये। इससे उनमें गर्व का अनुभव होता है और उनके साथियों के दिलों में ईर्ष्या जागष्त होती COLHin 59.2

छोटो को बचपन की सादगी में शिक्षित होना चाहिये। वे छोटे, सहायक कर्तव्यों और आनन्द लेने वालों के साथ सन्तुष्ट होने के लिये प्रशिक्षित होते है और उनके वर्षों के लिये प्राकषत अनुभव करते है। बचपन के दृष्टान्त अंकुर का जवाब है और अंकुर की एक खासियत है। बच्चों को पूर्व परिपक्वता के लिये मजबूर नहीं किया जाना चाहिये, लेकिन शुरूआती वर्षों की ताजगी और अनुग्रह को यथासम्भव लम्बे समय तक बनाये रखना चाहिये। COLHin 59.3

छोटे बच्चे मसीही हो सकते है, उनके वर्षों के अनुसार एक अनुभव हो सकता है। यह सब ईश्वर उनसे उम्मीद करता है। उन्हें अध्यात्मिक चीजों में शिक्षित होने की आवश्यकता है, और माता-पिता ने उन्हें हर वह फायदा दिया है जो वे मसीह के चरित्र के अनुकरण के बाद पात्र बना सकते हैं। COLHin 59.4

प्रकपत में ईश्वर के नियमों में, प्रभाव निश्चिता के कारण होता है। कटाई गवाही देगी कि बुआई क्या हुई है। सुस्त काम करने वाले की निन्दा उसके काम से होती है। फसल उसके खिलाफ गवाह है। इसलिये अध यात्मिक बातों में प्रत्येक कार्यकर्ता की ईमानदारी उसके काम के परिणामों से प्रभावित होती है। उनके काम का चरित्र, चाहे वो मेहनती हो या सुस्त, फसल से पता चलता है। यह इस प्रकार है कि अनन्त काल के लिये उसकी नियति तय है। COLHin 59.5

बोया गया हर बीज अपनी तरह की फसल पैदा करता है। तो मानव जीवन में, हम सभी को करूणा, सहानुभूति और प्रेम के बीज बोने की जरूरत है, क्योंकि हम जो बोते है, वहीं काटेगे। स्वार्थ, आत्म-प्रेम, आत्म-सम्मान, आत्म योग का हर कार्य फसल के तरह सामने लायेगा। वह जो स्वंय के जीता है वह मांस और उस मासं के लिये बो रहा है जो वह भ्रष्टाचार करेगा। COLHin 60.1

ईश्वर मनुष्य को नष्ट नहीं करता, जो नष्ट हुआ है, वह सब नष्ट हो जायेगा। हर कोई जो, अन्तरात्मा की निन्दा करता है अविश्वास के बीज बो रहा है, और ये एक निश्चित फसल पैदा करेगें। परमेश्वर की ओर से पहली चेतावनी को ठुकराकर, पुराने बुर्जुगों के फेरो ने आशिष्ता के बीज वो दिये, और वह सयंम तक पहुंच गया। परमेश्वर ने उसे अविश्वास करने के लिये मजबूर नहीं किया। अविश्वास का बीज जो उसने बोया था वह अपनी तरह की फसल पैदा करता है। इस प्रकार प्रतिरोध तक तब जारी रहा, जब तक कि उन्होंने ठंडे, मष्त रूप में अपने पहले जन्म के अपने घर में और अपने राज्य में सभी परिवारों में पैदा हुये, जब तक कि समुद्र का पानी बन्द नहीं हो जाता, तब तक वह अपनी तबाह भूमि पर नजर रखता था। अपने घोड़ों और अपने रथो और युद्ध के अपने लोगों पर । उनका इतिहास शब्दों के सत्य का एक भयावह चित्रण है कि "जो भी एक आदमी बोता है, वह भी छीन लेगा।" (गलतियों 6:7) क्या पुरूषों को इस बात का एहसास था, और वे सावधान हो जाते थे कि वे क्या देखते है। COLHin 60.2

जैसा कि बोया गया बीज एक फसल पैदा करता है, और यह बदले में बोया जाता है, फसल को गुणा किया जाता है। दूसरों के सम्बन्ध में यह कानून सही है। हर कार्य, हर शब्द के बीज है जो फल देगा। हर काम के लिये विचारशील दयालुता, आज्ञाकारिता या आत्म इन्कार के कारण, दूसरों में खुद को पुनः उत्पन्न करेगा, और अभी भी दूसरों में उनके माध्यम से, तो ईर्ष्या, द्वेष या विद्यटन का हर कार्य एक ऐसा बीज है जो "कड़वाहट की जड़" में पैदा होगा। (इब्रानियों 12:15) जिससे कई अपवित्र हो जायेगें और इस प्रकार "बहुत जहर कितना बड़ा होगा। अच्छाई और बुराई की बुआई का समय और अनन्त काल के लिये होती है। COLHin 60.3

अध्यात्मिक और लौकिक दोनों तरह की चीजों में उदारता बीज बोने के पाठ में सिखाई जाती है। प्रभु कहते हैं, "धन्य है तुम जो सभी जल के किनारे बोते हो' (यशायाह 32:20) "यह मैं कहता हूँ, वह जो संयम से बोता है वह भी संयम से काटेगा। और जो बोवनी करता है, वह भी बेशर्मी से

काटेगा। (2 कुरिन्थियों 9:6) सभी जल के किनारे बोने का अर्थ है, ईश्वर का कारण या मानवता के कारण हमारी सहायता की मांग की जाती है। इससे गरीबी दूर नहीं होगी। “वह जो भरपूर प्रतिज्ञा करता है वह भी भरपूर रूप से प्राप्त करेगा।’ बोने वाले ने उसके बीज को दूर फेंककर गुणा किया। इसलिये यह उन लोगों के साथ है। जो परमेश्वर के उपहारों को वितरित करने में विश्वासयोग्य है। प्रदान करने से वे अपना आर्शीवाद बढाते है। ईश्वर ने उन्हें एक प्रर्याप्त क्षमता का वादा किया है जो वे दे सकते है। दो और तुम्हे दिया जायेगा। लोग पूरा नाम दबा दबाकर और हिला-हिला कर और उभारता हुआ गोद में डालेगे।” (लूका 6:38) COLHin 61.1

और इससे अधिक बुवाई और कटाई में लपेटा हुआ है। जैसे कि हम ईश्वर के अस्थायी आर्शीवाद वितरित करते है, हमारे प्यार और सहानुभूति के प्रमाण लेने वाले में आभार और ईश्वर के प्रति आभार जगाते है। अध्यात्मिक सत्य के बीज प्राप्त करने के लिये हष्दय की मिटटी तैयार की जाती है। और जो बोने वाले को बीज देगा, वह बीज को अंकुरित करेगा और अनन्त जीवन तक फल देगा। COLHin 61.2

अनाज को मिटटी में डालने से, मसीह हमारे छुटकारे के लिये स्वंय के बलिदान का प्रतिनिधित्व करता है। “गेहूँ के एक मकई को छोड़कर जमीन में गिर जाते है” वे कहते हे, यह अकेला रहता है। लेकिन अगर यह मर जाता है, तो यह बहुत फल लाता है। (यहून्ना 12:24)तो मसीह की मष्त्यु के फलस्वरुप परमेश्वर के राज्य के फल होगा। वनस्पति राज्य के कानून के अनुसार, जीवन उसकी मष्यु का परिणाम होगा।” COLHin 61.3

और सभी जो मसीह के साथ श्रमिकों के रुप मे फल लायेगें, उन्हें पहले जमीन पर गिरना और मरना होगा। जीवन के दूनिया की जरुरत के ताने —बाने में ढाला जाना चाहिये । आत्म -प्रेम, स्वार्थ ,नाश होना चाहिये। लेकिन आत्म बलिदान का कानून आत्म —संरक्षरण का कानून है। जमीन में दफन बीज फल पैदा करता है, और बदले में यह लगाया जाता है। फसल को कई गुना किया जाता है। पति ने अय्याशी करके अपना अनाज बचा लिया। इसलिये मानव जीवन में जीना है। जिप्स जीवन को संरक्षित किया जायेगा। वह जीवन ईश्वर और मनुष्य की सेव में स्वतंत्र से दिया गया है। जो मसीह के लिये इस दुनिया में अपने जीवन का बलिदान करते है, वे इसे जीवन के लिये शाश्वत रखेगें। COLHin 61.4

बीज नये जीवन में बंसत के लिये मर जाता है, और इसमें पुनरूत्थान का पाठ पढ़ाया जाता है। ईश्वर से प्यार करने वाली सभी ऊपर के अदन में फिर से रहेंगे। कब्र में छिपाई गई मानव देह में से ईश्वर ने कहा है, “ये भ्रष्टाचार में बोया जाता है। इसे अनाचार में उठाया जाता है, यह बेइमानी में बोया जाता है, इसे महिमा में उठाया जाता है, यह कमजोरी में बोया जात है, इसे शक्ति में उठाया जाता है। (15:42, 43) COLHin 62.1

इस तरह के कुछ सबक प्रकर्षत के जीवित रहने वाले बोने वाले और बीज द्वारा सिखाया जाता है। जैसा कि माता-पिता और शिक्षक इन पाठों को पढ़ाने की कोशिश करते है। काम के व्यवहार बनाया जाना चाहिये। बच्चों को स्वयं मिट्टी तैयार करने और बीज बोने दे। जब वे काम करते है, तो माता-पिता या शिक्षक वहां बोये गये अच्छे या बुरे बीज के साथ दिल के बगीचे की व्याख्या करते है, और जैसा कि बगीचे को सच्चाई के बीज के लिये तैयार किया जाना चाहिये। जैसे ही जमीन में बीज डाला जाता है, वे मसीह की मष्य्यु का सबक सिखा सकते है, और जैसे ही अंकुर निकलते है, वो पुनरूत्थान की सच्चाई का पाठ पढ़ा सकते है। जैसे-जैसे बढ़ते है, प्राकतिक और अध्यात्मिक बुआई पत्राचार जारी रखा जाता है। COLHin 62.2

युवाओं को समान तरीके से निर्देश दिया जाना चाहिये। उन्हें मिट्टी तक सिखायी जानी चाहिये। यह अच्छा होगा अगर हर स्कूल में खेती के लिये जमीन हो। ऐसी भूमि को ईश्वर का अपना विद्यालय माना जाता है। प्रकषत की चीजों को पढ़ाना है जिससे वे आत्मा की संस्कषत के अनुसार ज्ञान प्राप्त कर सकते है। COLHin 62.3

मिट्टी को छेड़ने में, जमीन को अनुशासित करने और अधीन करने में लगातार सबक सीखा जा सकता है। कोई भी जमीन एक कच्चे टुकड़े पर बसने की कोशिश नहीं करेगा, यह उम्मीद करता है कि एक बार फसल की पैदावार होगी। बीज बोने के लिये मिट्टी को तैयारी का इलाज करने में परिश्रम और दष्ढ़ता से श्रम लगाना पड़ता है। तो यह मानव हष्दय में अध यात्मिक कार्य है। जो लोग मिट्टी के देर लाभान्वित होगें, उन्हें अपने दिल में परमेश्वर के वचन के साथ आगे बढ़ना चाहिये। वे पवित्र आत्मा के नरम दब्बू प्रभाव से टूटे हुये दिल की परती जमीन को खोज लेगे। जब तक मिट्टी पर कड़ी मेहनत नहीं की जाती है, तब तक फसल नहीं होगी। इसलिये हष्दय की मिट्टी के साथ परमेश्वर की आत्मा को इसे परिष्कप्त और अनुशासित करने के लिये काम करना चाहिये, इससे पहले कि वह परमेश्वर की महिमा के लिये फल ला सके। COLHin 62.4

आवेग द्वारा काम करने पर मिट्टी अपने धन का उत्पादन नहीं करेगी। यह विचारशील दैनिक ध्यान देने की आवश्यकता है। यह अक्सर और गहरी जुताई की जानी चाहिये, इस विचार के साथ कि अच्छे बीज बोने से पोषण लेना है। इस प्रकार जो हल चलते और बोते है वे फसल की तैयारी करते है। उनकी उम्मीदों के दुखद मलवे के बीज मैदान में किसी को भी खड़े होने की जरूरत नहीं है। COLHin 63.1

प्रभु का आशीर्वाद उन लोगों पर आराम करेगा जो इस प्रकार भूमि पर काम करते है, प्रकति से अध्यात्मिक सबक सीखते है। मिट्टी की खेती में कार्यकर्ता को कम ही पता चलता है कि उसके लिये कौन से खजाने खुलेगें। हालांकि वह उस निर्देश को तुच्छ नहीं समझ सकता है जो वे उन दिमागों से इकट्ठा कर सकता है जिसके पास एक अनुभव है और इस जानकारी से कि बुद्धिमान

पुरूष प्रदान कर सकते है, वह खुद के लिये सबक इकट्ठा करता है, यह उनके प्रशिक्षण का किया हिस्सा है। मिट्टी की खेती आत्मा के लिये एक शिखा साबित करेगी। COLHin 63.2

वह जो बीज को वसन्त का कारण बनाता है, जो इसे दिन में झुकाता है, जो इसे विकसित करने की शक्ति देता है, हमारे आस्तिवका अधि कारी है, स्वर्ग का राजा और वह अपने बच्चे की अभी भी अधिक देखभाल और रूचि रखता है। जबकि मानव बोने वाला बीज हमारे सांसारिक जीवन को बनाये रखने के लिये बीज बो रहा है, परमात्मा बोने वाला बीज बोयेगा, जो आगे जीवन के लिये फल लायेगा। COLHin 63.3

अध्याय 7 - खमीर के समान

“यह अध्याय मत्ती 13:33 और लूका 13:20, 21 पर आधारित है”

कई शिक्षित और प्रभावशाली लोब गलील के भविष्यवकता को सुनने के लिये आये थे। इनमें से कुछ लोगों ने उसे उत्सुकता के साथ देखा, जो समुद्रा के द्वारा सिखाई गई मसीह के बारे में थी। इस महान सिंहासन में समाज के भी कार्यों का प्रतिनिधित्व था। गरीब, अनपढ़, भिखारी, अपने चेहरे पर अपराध की सील के साथ लुटेरा, धूर्त, असन्तुष्ट, व्यापारी और अवकाश के आदमी, उच्च और निम्न, अमीर और गरीब एक दूसरे के लिये भीड़ पर मसीह के शब्दों को सुनने और सुनने का स्थान, जैसे कि सुंसस्कृत पुरूषों ने अजीब भीड़ पर आश्चर्य किया। उन्होंने खुद से पूछा, क्या ईश्वर का राज्य इस तरह की सामग्री से बना है? फिर से उद्धारकर्ता ने उत्तर दिया। COLHin 64.1

“स्वर्ग का राज्य खमीर की तरह है जिसे एक महिला ने ले लिया, और भोजन के तीन पसेरी आटे में मिला दिया। जब तक कि वो पूरा खमीर नहीं बन गया। यहूदियो के बीज रिसाव को कभी-कभी पाप के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। फसल के समय लोगों को निर्देशित किया गया था कि वे अपने घरों से सब खमीरों को हटा दे, क्योंकि वे अपने दिलों से पाप को हटाने के लिये थे। मसीह ने अपने शिष्यों को चेतावनी दी, “फरसीयो के छल से सावधान रहो जो पाखडी है।” (लूका 12:11) और प्रेरित पौलुस द्वेष और चंचलता की बात करता है। (1 कुरिन्थियों 5:8) लेकिन मुक्तिदाता के दष्टान्त में स्वर्ग के राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिये रिसाव का उपयोग किया जाता है। यह ईश्वर की कष्पा के तेज, आत्मघात करने की शक्ति का चित्रण करता है।” COLHin 64.2

कोई भी इतना कमजोर नहीं है, कोई भी इतना नीचे नहीं गिरा है, जितना इस शक्ति के कार्य से परे है। उन सभी में जो खुद को पवित्र आत्मा को सौंप देगे, जीवन का एक नया सिद्धान्त निहित किया जाना है, ईश्वर की खोई हुई छवि को मानवता में बहाल किया जाना है। COLHin 65.1

लेकिन मनुष्य अपनी इच्छा के अभ्यास से खुद को बदल नही सकता है। उसके पास कोई शक्ति नहीं है जिसके द्वारा इस परिवर्तन को प्रभावित किया जा सके। खमीर को पूरी तरह से भोजन में डाल दिया जाना चाहिये, इससे पहले कि उसमें वांछित परिवर्तन हो सके। COLHin 65.2

इससे पहले कि महिमा के राज्य के लिये फिट हो सके, ईश्वर की कष्पा पापी के पाप को प्राप्त हो। सभी संस्कषत और शिक्षा जो दुनिया दे सकती है वह पाप के अपमानित बच्चे को स्वर्ग का बच्चा बनाने में विफल रहेगी। ईश्वर से नई उर्जा आनी चाहिये । परिवर्तन केवल पवित्र आत्मा द्वारा किया जा सकता है। सभी, जो बचाये जायेगे, उच्च या निम्न, अमीर या गरीब इस शक्ति के अपक्षय के लिये प्रस्तुत करना होगा। COLHin 65.3

खमीर जब भोजन के साथ घुलमिल जाता है, तो बाहर की ओर से काम करता है, इसलिये यह दिल के नवीनीकरण से होता है कि ईश्वर की कष्पा जीवन को बदलने का काम करती है। कोई भी बाहरी परिवर्तन हमें ईश्वर के साथ सामजस्य बनाने के लिये पर्याप्त नही है। कई ऐसे है जो इस या उस बुरी आदत को सुधार करने की कोशिश करते है और वे इस प्रकार मसीही बनने की उम्मीद करते है। लेकिन वे गलत जगह पर शुरूआत कर रहे है। हमारा पहला काम दिल से है। COLHin 65.4

आस्था का पेशा और आत्मा में सच्चाई का कब्जा दो अलग-अलग चीजे है। सत्य का मात्र ज्ञान पर्याप्त नहीं है। हम इसके अधिकारी हो सकते है, लेकिन हमारे विचारों और कार्यकाल नहीं बदला जा सकता है। हष्दय को परिवर्तित और पवित्र किया जाना चाहिये। COLHin 65.5

जो ईश्वर की आज्ञाओं को केवल एक दायित्व की भावना से रखने का प्रयास करता है, क्योंकि वह करने के लिये आवश्यक है। कभी भी आज्ञाकारिता के आनन्द में प्रवेश नहीं करेगा। वह नहीं मानता। जब ईश्वर की आवश्यकताओं को एक बोझ के रूप में जाना जाता है तो वे मानव झुकाव में कटौती करते है। हम जान सकते है जीवन मसीही जीवन नहीं है। सच्ची आज्ञा पालन एक सिद्धान्त का परिचायक है, यह धार्मिकता के प्रेम, ईश्वर के नियम के प्रेम से झरता है। सभी धार्मिकता का सार हमारे द्धार के प्रति वफादारी है। यह हमें सही करने के लिये, प्रेरित करेगा, क्योंकि यही सही है। क्योंकि सही करना ईश्वर को प्रसन्न करता है। COLHin 65.6

पवित्र आत्मा द्वारा हष्दय के रूपान्तरण का महान सत्य, निकोदिमस के लिये मसीह के शब्दों के लिये प्रस्तुत किया गया है। "वास्तव में, मैं तुमसे कहता हूँ, एक आदमी के ऊपर से पैदा होने के अलावा, वह ईश्वर का राज्य नहीं देख सकता हैकृकृकृवह जो मांस से पैदा हुआ है, वह मांस है और जो आत्मा से पैदा हुआ है, चकित न हो, जो मैं ने कहा है कि "यह फिर से पैदा होना चाहिये।" हवा का झोका जब ये सुनता है और आप ध्वनी को सुनते है लेकिन यह नहीं बता सकता, ये कहां से आता है, वहां से निकल जाता है और आत्मा को जन्म देता है। (यहून्ना 3:8-8) COLHin 66.1

प्रेरित पैलुस पवित्र आत्मा द्वारा लिखते हुये कहते है, जो दया में समष्द्ध है, अपने महान प्रेम के लिये वह हमसे प्रेम करता है। जब हम पापों में मर चुके थे तो मसीह ने हमें चंगा किया। अनुग्रह द्वारा बचाये गये। ताकि वो आने वाले हर युग मे अपने अनुग्रह के अनुपम धन को दिखाये। जिसे अपने मसीह यीशु में अपनी दया के रूप में हम पर दर्शाया है। परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा अपने विश्वास के कारण तुम्हारा उद्धार हुआ है। ये तुम्हें तुम्हारी ओर से प्राप्त नहीं हुआ है, परन्तु ये तो परमेश्वर का वरदान है। (इफिसियों 2:4-8) COLHin 66.2

आटे में छिपाया गया, खमीर अदष्श्य रूप से द्रव्यमान को अपनी रिसाव प्रक्रिय के तहत लाने के लिये काम करता है। अतः सत्य का खमीर गप्त रूप से चुपचाप आत्मा को बदलने के लिये लगातार काम करता है। प्राकतिक झुकाव नरम और वश में है। नये विचारों, नई भावनाओं,

नये उद्देश्यों को आरोपित किया जाता है। चरित्र का नया मानक स्थापित किया गया है। मसीह का जीवन, मन बदल जाता है। संकायों को नई लाईनों में कार्यवाही करने लिये तैयार किया जाता है। मनुष्य नये संकायों के साथ सम्पन्न नहीं हैं, लेकिन उसके पास मौजुद संकायों को पवित्र किया जाता है। अन्तरात्मा जागति होती है। हम चरित्र के लक्षणों से सम्पन्न है जो हमें ईश्वर के लिये सेवा करने में सक्षम बनाते है। COLHin 66.3

अक्सर यह सवाल उठता है कि ईश्वर के शब्द पर विश्वास करने का दावा करने वाले इतने सारे क्यों , जिनके शब्दों में, आत्माये, और चरित्र में कोई सुधार नही देखा गया है? ऐसे बहुत से लोग है जो अपने उद्देश्यों और योजनाओं के विरोध को सहन नही कर सकते है जो एक अपवित्र स्वभाव प्रकट करते है, और जिनके शब्द कठोर,जबरदस्त और भावुक है। उनके जीवन में स्वयं का वहीं प्रेम, वही स्वार्थीपूर्ण भोग, वहीं गुस्सा और जल्दबाजी देखी गयी है जो कि दुनियादारी के जीवन में देखा जाता है। वही संवेदनशील अभिमान है, प्रकृति झुकाव के लिये वहीं आज है, चरित्र की वही विकृति है, मानों सच्चाई उनके लिये पूरी तरह से अज्ञात थी। कारण यह है कि वे रूपांतरित नहीं है। उन्होंने दिल में सच्चाई के छोटे नहीं छिपाये है। उसे अपना काम करने का अवसर नहीं मिला। बुराई के लिये उनकी प्राकृतिक और खेती की प्रवृति, इसकी परिवर्तनकारी शक्ति के लिये प्रस्तुत नही की गई है, उनका जीवन मसीह की कृपा के अभाव, चरित्र को बदलने की उनकी शक्ति में एक अविश्वास प्रकट करता है। COLHin 66.4

सो उपदेश एक अविश्वास उपजाता है और उपदेश तब तक सुना जाता है जब कोई मसीह के विषय में उपदेश देता है। (रोमियों 10:17) चरित्र के परिवर्तन में शास्त्र महान ऐजंसी है। मसीह ने प्रार्थना की, "उन्हें अपने सत्य के द्वारा पवित्र करो, तुम्हारा वचन सत्य है।" (यहून्ना 17:17) यदि अध्ययन और पालन किया जाए, तो दिल के कामों का शब्द हर अपवित्र विशेषता को दर्शाता है। पवित्र आत्मा पाप के लिये दोषी ठहराया जाता है। और वह विश्वास जो हष्दय में रहता है, मसीह के प्रति प्रेम के द्वारा काम करता है, हमें शरीर, आत्मा और आत्मा मे अपनी छवि के अनुरूप बनाता है। तब परमेश्वर ने हमें उसकी मरजी पूरी करने के लिये इस्तेमाल किया। हमें दी गयी शक्ति बाहरी रूप में काम करती है, जिससे हमें दूसरों के साथ संवाद करने के लिये प्रेरित किया जाता है, जो हमारे लिये संचार किया गया है। COLHin 67.1

परमेश्वर के वचन की सच्चाई मनुष्य की महान व्यवहारिक आवश्यकता को पूरा करती है आत्मा का विश्वास के माध्यम से रूपांतरण । इन भव्य सिद्धान्तों को दैनिक जीवन में लाने के लिये बहुत शुद्ध और पवित्र नहीं माना जाना चाहिये। वे सत्य है जो स्वर्ग तक पहुंचते है और अनन्त काल तक फिर भी उनका महत्वपूर्ण प्रभाव मानव अनुभव में बुना जाना है। वे सभी महान चीजों और जीवन की सभी छोटी चीजों को अनुमति देते है। COLHin 67.2

दिल में प्राप्त किया, सत्य का भाव इच्छाओं को नियंत्रित करेगा, विचारों को शुद्ध करेगा और स्वभाव को मधुर करेगा। यह मन के संकाय और आत्मा की ऊर्जाओं को तेज करता है। यह प्यार करने के लिये महसूस करने की क्षमता को बढ़ाता है। COLHin 67.3

दुनिया एक रहस्य के रूप में मानती है, जो इस सिद्धान्त से प्रभावित है। स्वार्थी, पैसे वाला आदमी इस दुनिया के धन, सम्मान और सुखों के लिये खुद को सुरक्षित करने के लिये ही रहता है। वह अपनी प्रतिध वनी से शाश्वत संसार को खो देता है। लेकिन मसीह के अनुयायी के साथ ये बातें सर्वव्यापी नहीं होगी। मसीह की खातिर वह श्रम करेगा और स्वंय का इन्कार करेगा, इसलिये वह उन आत्माओं को बचाने के महान कार्य में सहायता कर सकता है, जो मसीह के बिना और दुनिया में आशा के बिना है। ऐसा आदमी जिसे दुनिया नहीं समझ सकती। क्योंकि वह शाश्वत वास्तविकताओं को ध्यान में रख रहा है। अपनी छुड़ाने की शक्ति के समय मसीह का प्रेम हृदय में आया है। ये प्यार हर दूसरे मकसद मे महारत हासिल करता है और दुनिया के भ्रष्ठ प्रभाव से ऊपर उठता है। COLHin 68.1

परमेश्वर के वचन का मानव परिवार के प्रत्येक सदस्य के साथ हमारे सम्बन्ध पर एक पवित्र प्रभाव है। सत्य का भाव प्रतिद्विद्वता की भावना, महत्वकांक्षा का प्रेम, पहले होने की इच्छा पैदा नहीं करेगा। सच है स्वर्ग में जन्मा प्यार स्वार्थी और परिवर्तनशील नहीं है। यह मानवीय प्रशंसा पर निर्भर नहीं है। उसका हष्दय जो ईश्वर कष्पा प्राप्त करता है वह ईश्वर के लिये और मसीह के लिये उन लोगों के साथ प्रेम करता है वह ईश्वर के लिये संघर्ष नही कर रहा है। वह दूसरों के प्यार नहीं करता, क्योंकि वे उसे प्यार करते है और उसे खुश करते है, क्योंकि वे उसकी खूबियों की सरहाना करता है, लेकिन क्योंकि वे मसीह के खरीदे हुये कब्जे में है। यदि उसके इरादे, शब्दों या कार्यो को गलत समझा जाता है या गलत तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, तो वह कोई अपराध नहीं करता है, लेकिन अपने वह अपने आप में दयालु और विचारशील, विनम्र है, फिर भी आशा से भरा है, हमेशा दया और प्रेम में भरोसा करता है। COLHin 68.2

प्रेरित हमें कहते है, “जैसा कि उन्होंने कहा कि तुम्हें बुलाया पवित्र है, इसलिये हर तरह की बातचीत में पवित्र रहो। क्योंकि लिखा है, क्योंकि मैं पवित्र हूँ, तुम पवित्र रहो। (1 पतरस 1:15,.6) मसीह की कष्पा स्वभाव और आवाज को नियंत्रण में करना है। इसको काम भाई द्वारा भाई के लिये दयालु, उत्साहजनक शब्दों में दिखाया गया है। एक स्वर्गदूत की उपस्थिति घर में है। जीवन एक मधुर इसकी सांस लेता है, जो पवित्र धूप के रूप में ईश्वर पहुचता है। प्रेम, दया सौभ्यता, पूर्वमासं और लम्बी पीड़ा में प्रकट होता है। COLHin 68.3

प्रतिज्ञान परिवर्तन है, दिल में रहने वाले मसीह उन लोगों के चेहरे पर चमकते है जो उनसे प्यार करते है और उनकी आज्ञाओं को मानते है। सत्य वहां लिखा है, स्वर्ग की मधुर शान्ति का पता चलता है। एक आदतन सौम्यता व्यक्त की जाती है, मानव प्रेम से अधिक । COLHin 69.1

सत्य की चंचलता पूरे मनुष्य में परिवर्तन का काम करती है, पुरूष को परिष्कष्त करती है, किसी को कोमल, स्वार्थी। इसके द्वारा जीवन को शक्तिप्रदान करने वाला। यह सब कुछ मन की शक्ति है और यह दिव्य जीवन के साथ सांमजस्य स्थापित करता है। मनुष्य अपने मानवीय स्वभाव के देवत्व का प्रेरेण बन जाता है। मसीह के चरित्र की उत्कष्टता और पूर्णता सम्मानित में किया जाता है। जैसे कि इन परिवर्तनों को प्रभावित किया जाता है, स्वर्गदूतों को भड़काऊ गीत में तोड़ दिया जाता है और मसीह परमात्मा की अनुकम्पा के बाद आत्माओं पर खुशी मनाते है।

अध्याय 8 - छुपा हुआ खजाना

“यह अध्याय मत्त 13:44 पर आधारित है”

“फिर से स्वर्ग का राज्य एक क्षेत्र में छिपे हुये खजाने के समान है, जो कि एक आदमी ने पाया और उसे छिपा दिया, और आनन्द के कारण उसने और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया।” COLHin 70.1

प्राचीन समय में यह प्रथा थी कि पुरूष अपने खजाने को पष्थ्वी में छिपा लेते थे। चोरी और डकैती अक्सर होती थी और जब भी सत्तारूढ़ सत्ता में कोई परिवर्तन हुआ, जिनके पास बड़ी सम्पत्ति थी, उन्हें भरी श्रद्धांजलि के लिये उत्तरदायी ठहराया गया। इसके अलावा देश पर सेनाओं के आक्रमण से लगातार खतरा था। परिणाम स्वरूप, अमीरों ने इसे छिपाकर अपनी सम्पत्ति को संरक्षित करने का प्रयास किया और पष्थ्वी को एक सरक्षित ठिकाने के रूप में देखा गया। लेकिन अक्सर छपाने की जगह को भुला दिया जाता था। मौत मालिक पर दावा कर सकती है, कारावास या निर्वासन उसे अपने खजाने से अलग कर सकती है और जिस धन को उसने संरक्षित करने के लिये इस प्रकार का दर्द उठाया है वह भाग्यशाली खोजक के लिये छोड़ दिया गया था। मसीह के दिन में सोने और चांदी के उपेक्षित भूमि पुराने सिक्कों और आभूषणों में खोज करना असामन्य नहीं था। COLHin 70.2

एक व्यक्ति खेती करने के लिये भूमि लेता है, जैसे ही बैलों ने जमीन को खोदा हल चलाकर, उस व्यक्ति को खजाने का पता चलता है, और वो सोचता है कि यह खजाना उसकी पहुंच के भीतर है। सोने को उसने खेत में छिपा दिया और घर लौट कर अपने मौजूद सभी सामान को बेच देता है, ताकि खजानेवाले खेत को खरीद सके। उसका परिवार और उसके पड़ोसी सोचते है कि वह पागल की तरह काम कर रहा है। मैदान को देखते हुये वे उपेक्षित मिट्टी में कोई मूल्य नहीं देखते है। लेकिन आदमी जानता है कि वह क्या कर रहा है, और जब उसके पास क्षेत्र के लिये एक शीर्षक होता है तो वह उस खजाने को खोजने के लिये उसके हर हिस्से को खोजता है जिसे हासिल किया है। COLHin 70.3

दष्टान्त ने स्वर्गीय खजाने के मूल्य को दर्शाया है और इसे सुरक्षित करने के लिये किये जाने वाले प्रयास को दर्शाता है। क्षेत्र में खजाने का पता लगाने के लिये सभी के पस भाग लेने के लिये तैयार था, जो कि उसके पास छिपे हुये धन सुरिक्षत करने के लिये, अनथक श्रम लगाने के लिये तैयार था। इसलिये स्वर्ग के खजाने का खोजक सच्चई के छल को हासिल करने के लिये न तो श्रम को बहुत मान और न ही बहुत अधिक बलिदान को भी निभायेगा। COLHin 71.1

दष्टान्त में खजाना युक्त क्षेत्र पवित्र शास्त्र का प्रतिनिधित्व करता है और सुसमाचार का खजाना है। पथ्वी अपने आप में स्वर्ग शिराओं के साथ परस्पर जुड़ी नहीं है और अनमोल चीजों से भरी हुई, जैस कि परमेश्वर का वचन है।

कितना छिपा हुआ

कहा जाता है कि सुसमाचार का खजाना छिपा हुआ है। उन लोगों द्वारा जो अपने स्वंय के अनुमान में बुद्धिमान है, जो व्यर्थ दर्शन के शिक्षण में प्रभावित है मोचन की योजना की सुन्दरता और शक्ति और रहस्य को नहीं माना जाता है। बहुतों की आंखे है, लेकिन वे नहीं देखते है, उनके कान है, लेकिन वे सुनते नहीं है, उनके पास बुद्धि है, लेकिन छिपे हुये खजाने की नहीं। COLHin 71.3

एक आदमी उस जगह से गुजर सकता है जहां खजाना छुपाया गया था। अत्यंत आवश्यकता में, वह एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये बैठ सकता है, न कि उसकी जड़ों में छिपे हुये धन के बारे में। ऐसी यहूदियो के साथ था। एक सुनहरे खजाने के रूप में सच्चाई इब्रानी लोगों को दी गयी थी। यहूदी अर्थव्यवस्था, स्वर्ग के हस्ताक्षर को वहन करते हुये स्वंय मसीह द्वारा स्थापित किया गया था। इसमें प्रकार और प्रतीकों में छुटकारे के महान सत्य पर पर्दा डाला गया था। फिर भी जब मसीह आया तो यहूदियों ने उसे नहीं पहचाना जिनके लिये इन सभी प्रतीक ने संकेत दिया था। उनके हाथों में परमेश्वर का वचन था, लेकिन जो परंपराए पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही थी, और शास्त्रों मानवीय व्याख्या उनसे छिपी थी, जैसा कि यीशु में है। पवित्र लेखन का अध्यात्मिक आयात खो गया था। सभी ज्ञान का खजाना उनके लिये खला था. लेकिन वे यह नहीं जानते थे। COLHin 71.4

ईश्वर पुरूषों से अपनी सच्चाई नहीं छिपाता है। कार्रवाई के अपने पाठ्यक्रम के द्वारा वे इसे अपने लिये अस्पष्ट बनाते है। मसीह ने यहूदी लोगों के प्रचुर प्रमाण दिया कि वह मसीह था, लेकिन उनके शिक्षण ने उनके जीवन में उसके निश्चित बदलाव लाने का आहान किया। उन्होनें देखा कि यदि वे मसीह को प्राप्त करते है, तो उन्हें अपने पोषित अधिकतम और पंरपराओं, अपने स्वार्थी, अधर्मी व्यवहारो को छोड़ देना चाहिये। उसे परिवर्तनशील, शाश्वत सत्य प्राप्त करने के लिये एक बलिदान की आवश्यकता थी। इसलिये वे उन सबसे निर्णायक सबूतो को स्वीकार नहीं करेगे। जिन्हें परमेश्वर मसीह में विश्वास स्थापित करने के लिये दे सकता है। उन्होंने पुराने नियम के ग्रंथों पर विश्वास करना स्वीकार किया, फिर भी उन्होंने मसीह के जीवन से संबंधित एक गवाही को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। COLHin 72.1

वे आश्वस्त होने से डरते थे कि कहीं ऐसा न हो कि उनका ६ र्मातरण कर दिया जाये और उन्हें अपनी पूर्व राय देने के लिये मजबूर होना पड़े। सुसमाचार का मार्ग सत्य और जीवन उनमें से एक था, लेकिन उन्होंने सबसे महान उपहार को अस्वीकार कर दिया जो स्वर्ग को सर्वश्रेष्ठ बना सकता है। COLHin 72.2

"मुख्य शासकों में से बहुत से लोग उन पर विश्वास करते थे हम पढ़ते है, "लेकिन फरीसियों के कारण उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया, उन्हें आराधनालय से बाहर कर दिया जाना चाहिये।"

(यहून्ना 12:42) वे आश्वस्त थे, वे यीशु को ईश्वर का पुत्र मानते थे, लेकिन यह उसे स्वीकार करने की उनकी महत्वकाक्षी इच्छाओं के अनुरूप नहीं था। उन्हें विश्वास नहीं था कि उनके लिये स्वर्गीय खजाना होगा। वह सांसारिक खजाना चाह रहे थे। COLHin 72.3

और आज पुरूष बेसब्री से सांसारिक खजाने की तलाश कर रहे है। उनके मन स्वार्थी, महत्वकांक्षी विचारों से भरे होते है। सांसारिक धन, सम्मान या शक्ति प्राप्त करने के लिये, वे ईश्वर की आवश्यकताओं के ऊपर पुरूषों की परंपराओं और आवश्यकताओं को रखते है। उनसे उनके वचन के खजाने छिपे हुये है। COLHin 72.4

“प्राकतिक मनुष्य परमेश्वर की आत्मा की चीजों को प्राप्त नहीं करता है, क्योंकि वे उसके प्रति मूर्खता करते है, न तो वह उन्हें जान सकता है, क्योंकि वे अध्यात्मिक रूप से विवेकी है। (1 कुरिन्थियों 2:4) COLHin 73.1

यदि हमारे सुसमाचार को छिपाया गया है तो यह उन लोगों के लिये छिपा है जो खो गये है, जिनमें इस दुनिया के ईश्वर ने उन लोगों के दिमागों को अन्धा कर दिया है जो मानते है कि नहीं, मसीह के शानदार सुसमाचार के प्रकाश का प्रकाश डाले, जो ईश्वर की छवि है उन पर चमकाना। (2 कुरिन्थियों 4:3,4) COLHin 73.2

खजाने का मूल्य

उद्धारकर्ता ने देखा कि पुरूष लाभ पाने में लीन थे, और शाश्वत वास्तविक्तओं को खो रहे थे। उन्होंने उस बुराई को ठीक करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने आत्मा को पंगु बनाने वाले असाध्य जादू को तोड़ने की कोशिश की। अपना फायदा है, अगर वह पूरी दुनिया को हासिल कर ले और अपनी आत्मा को खो दे । या एक आदमी अपनी आत्मा के बदले में क्या देगा? (मत्ती 16:26) वह मानवता को उस महान दुनिया के समाने प्रस्तुत करता है जिसे उन्होंने खो दिया है, वे शाश्वत वास्तविक्ताओं को देख सकते है। वह उन्हें अनन्त की दहलीज पर ले जता है, ईश्वर की अवर्णनीय महिमा के साथ कहता है, और उन्हें वहां खजाना दिखता हैं। COLHin 73.3

इस खजाने का मूल्य सोने या चांदी से ऊपर है। पथ्वी के खजानों के धनी तुलना नहीं कर सकते है। COLHin 73.4

“अथाह सागर कहता है, वह मुझ में नहीं है,

और समुद्र भी कहता है, वह मेरे पास नहीं है।

चोखे सीने से वह मोल नहीं लिया जाता

और न उसके दाम के लिये चांदी तोली जाती है

न तो उसके साथ ओपीर के कुन्दन की बराबरी हो सकती है

और न अनमोल सुलैमानी पत्थर का नीलमणि को न सोना, न कांच उसके बराबर ठहर सकता है

कुन्दन के गहने के बदले भी वह नहीं मिलती

मूंगे और स्फटिकमणि का उसके आगे क्या चर्चा

बुद्धि का मोल मणिक से भी अधिक है। COLHin 73.5

(अय्यूब 28:14-18)

यह वह खजाना है जो शास्त्रों में पाया जाता है। बाईबल परमेश्वर की महान पाठ पुस्तक उसकी महान शिक्षावद है। सभी सच्चे विज्ञानों की नींव बाईबल में निहित है। ज्ञान की प्रत्येक शाखा ईश्वर के शब्द को खोजकर मिल सकती है। और सबसे ऊपर इसमें सभी विज्ञानों का ज्ञान है, मोक्ष का विज्ञान है। बाईबल मसीह की बेशुमार दौलत की खान है। COLHin 74.1

सच्ची उच्च शिक्षा ईश्वर के शब्द का अध्ययन और पालन करने से प्राप्त होती है। लेकिन जब परमेश्वर का वचन उन पुस्तकों के लिय अलग रखा जाता है जो परमेश्वर और स्वर्ग की राज्य की ओर नहीं ले जाती है तो शिक्षा दी जाने वाली शिक्षा नाम की विकृति है। COLHin 74.2

प्रकत में अद्‌भुत सत्य है, पष्थ्वी, समुद्र और आकाश सत्य से परिपूर्ण है वे हमारे शिक्षक है। प्रकषत उसकी आवाज को स्वर्गीय ज्ञान और शाश्वत साथ के पाठों प्रस्तुत करती है। लेकिन गिरा हुआ आदमी समझ नहीं पायेंगा। पाप ने उसकी दषष्ट को अस्पष्ट कर दिया है, और वह स्वयं को ईश्वर के उपर रखे बिना प्रकषत की व्याख्या नहीं कर सकता है। सही सबक उन लोगों के दिमाग को प्रभावित नहीं कर सकते हैं जो परमेश्वर के वचन को अस्वीकार करते है। प्रकषत की शिक्षा उनके द्वारा इतनी विकत है कि यह मन को रचना कर से दूर कर देती है। COLHin 74.3

बहुत लोगों के अनुसार, मनुष्य की बर्षद्ध को दिव्य शिक्षक के ज्ञान से अधिक माना जाता है, और ईश्वर की सबक पुस्तक को पुराने जमाने, बांसी और निर्बध के रूप में देखा जाता है। लेकिन जो पवित्र आत्मा द्वारा वशीभूत हुये हैं उनके द्वारा ऐसा नहीं माना जाता है। अनमोल खजाने को देखे, और सभी को उस क्षेत्र को खरीदने के लिये बेच दिया जायेगा, जिसमें वह शामिल है। प्रतिष्ठत महान लेखकों की पुस्तकों को रखने के बजाय, उन्हें उसी शब्द का चयन करते है जो सबसे महान लेखक है और दुनिया का सबसे बड़ा शिक्षक जिसे कभी माना जता है, जिसने हमारे लिये अपना जीवन दिया है कि उसके माध्यम से हम हमेशा के लिये जीवन जी सकते है।

खजाने के उपेक्षा करने के परिणाम

शैतान मानव पर काम करता है, जिससे उन्हें लगता है कि ईश्वर से अलग होने के लिये अद्‌भुत ज्ञान है। भ्रामक तर्क के द्वारा उसने आदम और हवा को परमेश्वर के वचन पर संदेह करने के लिये और सिद्धान्त के साथ उन्होंने अवज्ञा की। और उसका परिष्कार आज वहीं कर रहा है जो उसने साथ बेवफा लेखकों की भावनाओं का मजाक उड़ाया जाता है, युवा विचारों को ध्यान में रखते हुये ईश्वर का अविश्वास और उनके कानून का उल्लंघन थोड़ा वे जानते है कि वे क्या कर रहे है, थोड़ा उन्हें एहसास है कि उनके काम का परिणाम क्या होगा। COLHin 75.1

एक छात्र के स्कूलों और कॉलेजों के ग्रेड के बारे में सोच सकता है। वह ज्ञान प्राप्त करने के लिये अपनी सारी शक्ति समपिर्त कर सकता है। लेकिन जब तक उसे ईश्वर का ज्ञान नहीं होगा, जब तक कि वह अपने शासन को चलाने वाले कानून का पालन नहीं करता है। तब तक वह खुद को नष्ट कर देगा, गलत आदतों से वह आत्मा प्रंशसा की शक्ति खो देता है। वह आत्म-नियंत्रण खो देता है। वह उन मामलों के विषय में सही ढंग से नहीं बता सकता है जिसकी उसकी सबसे अधिक चिन्ता रहती है। वह अपने और शरीर के उपचार के लापरवाह और तर्कहीन है। गलत आदतों से वह खुद को एक मलबा बनाता है। खुश वह नहीं हो सकता है यह शुद्ध स्वस्थ सिद्धान्तों की खेती करने की उपेक्षा उसे उन आदतों के नियंत्रण में रखती है जो उसकी शान्ति को बर्बाद करती है। उनके वर्षों के किये अध ययन खो गये है, "क्योंकि उसने खुद को नष्ट कर लिया है। उन्होंने अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का दुरूपयोग किया है और शरीर को खस्ताहाल खंडहर कर लिया है। वह अपने आने वाले जीवन के लिये भर्ती है। सांसारिक ज्ञान प्राप्त करके उसने एक खजाना हासिल करने के लिये संघर्ष किया है, लेकिन अपनी बाईबल को एक तरफ रखकर उसने बाकी सभी चीजों के लिये एक खजाना त्याग दिया।

यात्रा के लिये खोज

ईश्वर शब्द हमारे अध्ययन के लिये है। हम अपने बच्चों को उसमें पायी जाने वाली सच्चाईयों को शिक्षित करना चाहते है। यह एक अटूट खजाना है लेकिन पुरूष इस खजाने को पाने में असफल रहते है क्योंकि वो तब तक नहीं खोजते तब तक उनके कब्जे में नहीं है। बहत से लोग सच्चाई के सम्बन्ध में एक तर्क के साथ संतुष्ट है। वे एक सतह के काम के साथ सन्तुष्ट है यह मानते हुये कि उनके पास वह है जो जरूरी है। COLHin 76.1

दूसरे के कहने को सत्य के लिये लेते है। खुद को परिश्रर्मी बनाना श्रम में लगाने के लिये बहुत अकर्मण्य होते है, छिपे हये खजाने के लिये शब्द के रूप में प्रतिनिधित्व करते है। लेकिन मनुष्य के आविष्कार न केवल अविश्वासनीय है, वे खतरनाक है, क्योंकि वे मनुष्य को यह स्थान देते है, जहां परमेश्वर होना चाहिये। उन्होंने पुरूषों की बाते रखी जहा, "इस प्रकार ईश्वर कहता है" होना चाहिये। COLHin 76.2

मसीह सत्य है। उनके शब्द सत्य है और सतह पर दिखने की तुलना में उनका गहरा महत्व है। यीशु की सभी बातों का उनके स्पष्ट रुप से परे एक मूल्य है। पवित्र आत्मा द्वारा त्वरित किये जाने वाले मन इन कथनों के मूल को समझेंगे । वे सत्य के अनमोल रत्नों को समझेंगे, हालांकि ये दफन किये गये खजाने हो सकते है। COLHin 76.3

मानवीय सिद्धान्त और अटकले कभी भी परमेश्वर के वचन की समझ में नहीं आयेंगी। जो लोग मानते है कि वे दर्श को समझते है, उन्हें लगता है कि ज्ञान के खजाने को खोलने और विधर्मियों को चर्च में आने से रोकने के लिये उनकी व्याख्या आवश्यक है। लेकिन यह इन व्याख्याओं को गलत सिद्धान्तों और विधर्मियों में लाया है। पुरूषों ने यह समझाने के लिये बेताव प्रयास किये है कि वे जटिल शास्त्र क्या समझते है, लेकिन बहुत बार उनके प्रयासों से केवल इतना ही अंधेरा होता है जिसे उन्होंने स्पष्ट करने की कोशिश की। COLHin 76.4

याजकों और फरीसियों को लगा कि वे परमेश्वर के वचन पर अपनी व्याख्या डालकर शिक्षकों के रूप में महान काम कर रहे है लेकिन मसीह ने उनसे कहा "तुम न तो शास्त्रों को जानते हो, न ही परमेश्वर की शक्ति को" (मरकुस 12:24) उन्होंने उन पर "पुरूषों के आदेशों को सिद्ध करने के लिये शिक्षण' के अपराध का अरोप लगाया। (मरकुस 7:7) यद्यपि वे उसके वचन को समझने वाले थे वे शब्द के कर्ता नहीं थे। शैतान ने अपनी आंखे मूंद ली थी कि उन्हें इसका सही आयात नहीं देखना चाहिये। COLHin 76.5

यह हमारे समय में अहुतों का काम है। बहुत सी कलीसियाएं पाप की दोषी है। खतरे भयवाह खतरा है कि आज के कथित बुद्धिमान लोग यहदी शिक्षकों के अनभव को दोहराकर भविष्यवाणी की झठी व्याख्या करते है और आत्मा को दिव्य सत्य के बारे में गलत धारणा के कारण अंधकार में लाया जाता है और अंधेरे में बहा दिया जाता है। COLHin 77.1

परंमपरा या मानवीय अटकलों के मंद प्रकाश द्वारा शास्त्रों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। अच्दी तरह से हम मानव पंरपरा या कल्पना द्वारा शास्त्रों को समझने के लिये एक मशाल के साथ सूर्य को प्रकाश देने की कोशिश कर सकते है। परमेश्वर के पवित्र वचन को अपनी महिमाओं को अलग पहचान देने के लिये पृथ्वी की मशाल की रोशनी की आवश्यकता नहीं है। COLHin 77.2

यह अपने आप में प्रकाश है-ईश्वर की महिमा का पता चला और इसके बगल में हर दूसरा प्रकाश मंद है। COLHin 77.3

लेकिन बयान अध्ययन और करीबी जांच होनी चाहिये। सत्य की तीव्र स्पष्ट धारणाएं कभी भी अकर्मण्यता का प्रतिफल नहीं होगी। कोई भी सांसारिक आशीर्वाद बयाना, रोगी, प्रयास के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यदि पुरूष व्याख्या में सफलता प्राप्त करते हैं तो उन्हें परिणाम देखने के लिये इच्छा शक्ति और विश्वास होना चाहिये। और हम बयाना परिश्रम के बिना

अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने की उम्मीद नहीं करते है। जो लोग सत्य के खजाने को खोजने की इच्छा रखते है, उन्हें उनके लिये खोदना चाहिये, क्योंकि खनिक धरमी में छिपे खजाने के लिये खोदता है। कोई आधा-अधूरा उदासीन काम नहीं करेगा। यह केवल परमेश्वर के वचन को पढ़ने के लिये ही नहीं, बल्कि पुराने और युवा लोगों के लिये भी आवश्यक है। इसे पूरी इमानदारी के साथ अध्ययन करने, प्रार्थना करने और छिपे हुये खजाने के रूप में सत्य की खोज करने के लिये। जो लोग ऐसा करते है, उन्हें मसीह के द्वारा पुरस्कृत किया जोयगा, समझ को जल्दी किया जायेगा। COLHin 77.4

हमारा उद्धार शास्त्र में निहित सत्य के ज्ञान पर निर्भर करता है। यह ईश्वर की इच्छा है कि हम इसके अधिकारी हो। ढूंढो, ओ, भूखों दिलों के साथ कीमती बाईबल में खोजे । ईश्वर के वचन का अन्वेषण करे। क्योंकि सोने की खान की नसों को खोजने के लिये पृथ्वी की खोज करनी पड़ती है। जब तक आप अपने सम्बन्ध में ईश्वर और उसकी इच्छा के संबंध पता नहीं लगाते है, तब तक खोज को कभी मत छोड़े। मसीह ने घोषणा की, "जो कुछ भी तुम मेरे नाम से मांगोगे, वहीं मैं करूंगा, कि पिता पुत्र में महिमा मंडित हो सके । यदि तुम मेरे नाम में कुछ भी मांगोंगे तो मैं करूंगा।" (यहून्ना 14:13, 14) COLHin 78.1

धर्मनिष्ठा प्रतिभा के लोग शाश्वत वास्तविक्ताओं के विचारों को पकड़ते है, लेकिन अक्सर वे समझने में असफल होते है, क्योंकि जो चीजे देखी जाती है, वे अनदेखी की महिमा के गृहण करती है, जो छिपे खजाने के लिये सफलतापूर्वक खोजेगा उसे इस दुनिया की चीजों की तुलना में अधिक खोज करनी होगी। उनके स्नेह और उनकी सभी क्षमताओं की खोज के अनुरूप होना चाहिये। COLHin 78.2

अवज्ञा ने ज्ञान की एक बड़ी मात्रा के लिये दरवाजा बन्द कर दिया है जो शायद शास्त्रों से प्राप्त किया गया है। समझ का मतलब है ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना। पुरूषों के पूर्वाग्रह और ईर्ष्या को पूरा करने के लिये शास्त्रों का अनूकुलन नहीं किया जा सकता है, उन्हें केवल उन लोगों द्वारा समझा जा सकता है जो विनम्रतापूर्वक सत्य के ज्ञान की तलाश में हैं कि वे इसका पालन कर सके। COLHin 78.3

क्या आप पूछते है, मुझ बचने के लिये क्या करना चाहिये? जांच के द्वारा आपको अपनी पूर्व निर्धारित राय अपने विधर्मी और संस्कष्त विचारों को रखना होगा। आप कभी भी सच्चाई तक नहीं पहुंचेगे। प्रभु क्या कहता है, यह जानने के लिये खोजे। COLHin 78.4

यदि आप खोज के अनुसार दष्ढ़ विश्वास करते है, यदि आप देखते है कि आपकी पोषित राय सच्चाई के साथ नहीं है तो स्वयं के विश्वास के अनुरूप सत्य की गलत व्याख्या न करे, लेकिन दिये गये प्रकाश को स्वीकारें। खुले दिल से आप परमेश्वर के वचन से चमत्कारिक बाते देख सकते है। COLHin 78.5

मसीह के रूप में मसीह उद्धारकर्ता के रूप में प्रबषद्ध की स्वीकारता के लिये कहता है जो एक दिल से नियंत्रित होता है, जो स्वर्ग के खजाने को समझ सकता है और उसकी सरहाना कर सकता है। यह विश्वास प्रतिपदा के परिवर्तन से अविभाज्य है। विश्वास का अर्थ है सुसमाचार की खोज को खोजने और स्वीकार करने के लिये सभी दायित्व के साथ जो इसे लागू करता है। COLHin 79.1

जब तक एक आदमी फिर से जन्म न ले वह ईश्वर के राज्य में नहीं जा सकता। (यहून्ना 3:3) वह एक मन्दबुद्धि व्यक्ति का अनुमान देख सकता है, लेकिन विश्वास की आंख के बिना वह खजाना को सुरक्षित करने के लिये दिया। लेकिन उनके रक्त में विश्वास के माध्यम से पुर्नजन्म के बिना, पापों का कोई त्याग नहीं है, किसी भी आत्मा का खजाना नहीं है। COLHin 79.2

हमें परमेश्वर के वचन में सत्य को समझने के लिये पवित्र आत्मा के ज्ञान की आवश्यकता है। प्राकतिक दुनिया की प्यारी चीजों की सूरत तक नहीं देखी जा सकती है, अंधेरे को तितर-वितर करते हुये उन्हें अपने प्रकाश के साथ प्रवाहित करना है। इसलिये परमेश्वर के वचन में कोषाध्यक्षों की सराहना नहीं की जाती है जब तक कि वे धार्मिकता के सूर्य के उज्जव किरणों से प्रकट से नहीं होते है। COLHin 79.3

पवित्र आत्मा, अनन्त प्रेम के परोपकार द्वारा स्वर्ग से भेजा गया, ईश्वर की चीजों को लेता है और उन्हें हर आत्मा को प्रकट करता है जो मसीह में एक अंतनिहित विश्वास है। उनकी शक्ति से उन महत्वपूर्ण सत्यों पर जिन पर आत्मा का उद्धार निर्भर करता है, वे मन को प्रभावित करते है और जीवन का मार्ग इतना सादा बना दिया जाता है कि उसमें किसी को भी जरूरत नहीं है। जैसा कि हम इस वचन पर चमकने के लिये अध्ययन करते है कि हम इसके कोषाध्यक्षों को देख और सराह सकते है। COLHin 79.4

खोज की समीक्षा

कोई यह न सोचें कि उन्हें हासिल करने के लिये अधिक ज्ञान नही है। मानव बुद्धि की गहराई को मापा जा सकता है, मानव संपदा के कार्यो में महारत हासिल की जा सकती है, लेकिन कल्पना की उच्च्तम, सबसे गहरी, चौड़ी उड़ान ईश्वर का पता नही लगा सकती। सबसे परे अनन्त है जिसे हम समझ सकते है हमने केवल झलक देखी हैं हमने केवल दिव्य महिमा की झल्क देखी है और ज्ञान और ज्ञान के अविष्कार की, हमारे पास, जैसा कि यह खदान की सतह पर काम कर रहा था, जब अमीर स्वर्ण अयस्क सतह के नीचे होता है तो उस व्यक्ति को पुरूस्कष्त करने के लिये जो इसके लिये खुदाई करेगा। शाफट खुदान में गहरा ओर अभी तक गहरा होना चाहिये और परिणाम शानदार खजाना होगा। एक सही विश्वास के माध्यम से दिव्य ज्ञान मानव ज्ञान बन जायेगा। COLHin 79.5

बिना पुरूस्कप्त किये, मसीह की आत्मा में कोई भी शास्त्र नहीं खोज सकता है। जब मनुष्य एक छोटे बच्चें के रूप में निर्देश देने को तैयार होता है। जब वह परमेश्वर को पूरी तरह से नमन करता है तो वह वचन में सच्चाई पायेगा। यदि पुरूष आज्ञाकारी होगे, तो वे परमेश्वर की सरकार की योजना को समझेगे। स्वर्गीय दुनिया अन्वेषण के लिये अनुग्रह और महिमा के अपने कक्ष खोलेगी। सत्य मनुष्य की खदानों की खोज के लिये मानवजाति पूरी तरह से अलग है जो अब तक बेकार है। छुटकारे का रहस्य, मसीह का अखतार, उनका प्रायश्चित बलिदान, वैसा नहीं होगा। जैसे वे अब है, हमारे दिमाग में अस्पष्ट है। उन्हें न केवल बेहतर समझा जायेगा, बल्कि पूरी तरह से अधिक सराहना की जायेगी। COLHin 80.1

परमेश्वर की प्रार्थनाओं में, मसीह ने दुनिया को एक सबक दिया, जो मन और आत्मा पर आधारित होना चाहिये। यह "जीवन अनन्त है' उन्होंने कहा और आत्मा पर आधारित होना चाहिये। यह "जीवन अनन्त है, "उन्होने कहा कि वे आपको एक मात्र सच्चे ईश्वर और यीशु मसीह को जान सकते है, जिसे तने भेजा है" (यहन्ना 17:3) यही सच्ची शिक्षा है। यह शक्ति प्रदान करता है। ईश्वर और यीशु मसीह के अनुभाव ज्ञान जिसे उन्होंने भेजा है मनुष्य को ईश्वर की छवि में बदल देता है। यह मन की उच्च शक्तियों के नियंत्रण में निम्न प्रकृति के लिये आवेगा और जनून लाने के लिये मनुष्यों को खुद की महारत देता है। यह अपने स्वामी को ईश्वर का पुत्र और स्वर्ग का उत्तराधिकरी बनाता है। यह उसे अनन्त दिमाग के साथ समय में लाता है, उसे ब्रहमाण्ड के समृद्ध खजाने के लिये खोलता है। COLHin 80.2

वह यह ज्ञान है जो ईश्वर के वचन की खोज से प्राप्त होता है। यह खजाना हर आत्मा को मिल सकता है जो इसे प्राप्त करने के लिये सभी को देगा। COLHin 80.3

"यदि तुम ज्ञान के बाद कुछ हो, और वे समझने के लिये आवाज उठाते है, यदि तुम उसे चांदी के रूप में खोजते हो और समझों और ईश्वर का ज्ञान पाओं। (नीतिवचन 2:3-5)

अध्याय 9 - मोती

"यह अध्याय मत्त 13:45, 46 पर आधारित है"

हमारे उद्धारकर्ता को बहुमूल्य मोती की तुलना में प्रेम को छुड़ाने का आशीर्वाद । उन्हें व्यापारी के दष्टान्त, अपने पाठ की व्याख्या, ईश्वरीय मोती की मांग करते हुए की, "जब उन्हें बड़ी कीमत का एक धन मिला, तब जाकर उसने सब कुछ बेच दिया जो उसके पास था और उसे खरीद लिया।' यीशु खुद महान मूल्य के, वो मोती है। उसी में परमेश्वर की पूर्णता को इकट्ठा किया जाता है। वह पिता की महिमा और उनके व्यक्ति की व्यक्तत्व छवि चमक है। उनके चरित्र में ईश्वर की विशेषता को व्यक्त किय गया है। पवित्र शास्त्र का हर पन्ना उसकी रोशनी से चमकता है। मसीह की धार्मिकता, एक शुद्ध, सफेद मोती के रूप में कोई दोष नहीं है। मनुष्य का कोई भी कार्य परमेश्वर के अनमोल उपहार को बेहतर नहीं बना सकता है। यह दोष के बिना है। मसीह में, "ज्ञान और ज्ञान के सभी खजाने को छिपाया गया है। (कुलस्सियों 2:3) "वह हमारे लिये ज्ञान, और धार्मिकता और पवित्रता और छुटकारे के लिये बनाया गया है।' (1 कुरिन्थियों 1:30) वह सब जो इस दुनिया के लिये और दुनिया मे आने के लिये मानव आत्मा की जरूरतों और लालसाओं को पूरा कर सकता है और मसीह में पाया जाता है, जो हमारा उद्धारक मोती है, इतना कीमती कि उसकी तुलना में सभी चीजों का नुकसान हो सकता है। COLHin 82.1

मसीह "अपनो ही के पास आया और उसके अपनों ने उसे स्वीकार नहीं किया।" (यहून्ना 1:11) ईश्वर का प्रकाश दुनिया के अंधेरे में चमक गया और "अंधेरा समझ में नहीं आया" (यहून्ना 1:5) लेकिन सभी को स्वर्ग के उपकार के प्रति उदासीन नहीं पाया गया। दष्टान्त में व्यापारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो ईमानदारी से सत्य की इच्छा रखते थे। अलग-अलग देशों में बनाया और विचारशील पुरूष थे, जिन्होंने साहित्य और विज्ञान और धर्म की दुनिया के लिये धर्म की मांग की थी, जिसे वे आत्मा के खजाने के रूप में प्राप्त कर सकते थे। जाँच के बीच वो लोग थे जो उसके लिये मांग कर रहे थे जो उन्होंने नहीं किया है। एक औपचारिक धर्म से असन्तुष्ट, वे उसके लिये तरस गये जो अध्यात्मिक और उत्थान था। मसीह के चुने हुये चेले बाद के वर्ग, कॉर्नेलियस और इथियोपिया के पूर्वजों के थे। COLHin 82.2

वे स्वर्ग से प्रकाश की लालसा और प्रार्थना कर रहे थे। और जब मसीह उनके सामने आया तो उन्होंने उसे प्रसन्नता से स्वीकार किया। COLHin 83.1

दष्टान्त में मोती को उपहार के रूप में नही दर्शाया गया है। व्यापारी ने उस सभी को कीमत पर इसे खरीदा। कई लोग इसके अर्थ पर प्रश्न उठाते है, क्योंकि पवित्र शास्त्र में मसीह को एक उपहार के रूप में दर्शाया गया है। वह एक उपहार है, लेकिन केवल उन लोगों के लिये, जो खुद के बिना शरीर और आत्मा को आरक्षित किये देते है। हम खुद को मसीह के लिये देने के लिये, उनकी सभी आवश्यकताओं के लिये आज्ञाकारिता का जीवन जीने के लिये कर रहे है। हम जो

कुछ भी है, वे सभी प्रतिभाये और क्षमतायें जो हमारे पास है वे प्रभु है, उनकी सेवा के लिये पवित्र होना है। जब हम अपने आप को स्वर्ग के सभी खजाने के साथ, मसीह के लिये पूरी तरह से देते हैं, तो हमें खुद को देते हैं। हम महान मूल्य के मोती प्राप्त करते हैं। COLHin 83.2

उद्धार एक मुफत उपहार है, और फिर भी इसे बेचा और खरीदा जाता है। जिस जिस बाजार में दैवीय दया का प्रबंधन होता है, वहां कीमती पैसों को बिना पैसे और बिना कीमत के खरीदा जा रहा है। इस बाजार में सभी स्वर्ग का सामना प्राप्त कर सकते है। सत्य के रत्नों का खजाना सभी के लिये खुला है। "देखों, मैं ने तुम्हें एक खुले दरवाजे के सामने स्थापित किया है। प्रभु घोषणा करता है, "और कोई भी आदमी इसे बन्द नहीं कर सकता है।" इस दरवाजे से कोई लगातार रास्ता नहीं बनाती है। दरवाजे पर भीतर से आवाजे आती है' कहते है मुक्तिदाता की आवाज हमें प्यार से और प्यार से बुलाती है, "मैं तुम्हें सोने के आग में ताया हुआ सोना खरीदने की सलाह देता हूँ कि तुम सबसे अमीर हो।" (प्रकाशितवाक्य 3:18, 18) COLHin 83.3

मसीह का सुसमाचार एक आशीर्वाद है जो सभी के पास हो सकता है। उद्धार प्राप्त करने के लिये सबसे गरीब भी सबसे अमीर है, सांसरिक धन की कोई भी राशि इसे सुरक्षित नहीं कर सकती है। यह प्यार आज्ञाकारिता द्वारा प्राप्त जाता है जो खुद को खरीदे गये कब्जे के रूप में यीशु को कूस पर चढ़ता है। शिक्षा यहां तक कि उच्चतम वर्ग के, खुद को ईश्वर के पास नहीं ला सकता है। फरीसी हर लौकिक और हर अध्यात्मिक लाभ के पक्षधर थे और उन्होंने घमण्ड भरे गर्व के साथ कहां, "हम धनवान है, और माल के साथ बढ़े हुये है और कुछ भी नही, अभी तक वे 'मनहूस और दुखी और गरीब, और अन्धे, और नग्न थे।" (प्रकाशितवाक्य 3:17) सबने उन्हें बड़े कीमत के मोती की पेशकश की लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार करने से मना कर दिया और उन्होंने उनसे कहा "सार्वजनिक और शरणदाता आपके साथ परमेश्वर के राज्य में जाते है। (मत्ती 21:31) COLHin 84.1

हम उद्धार अर्जित नहीं कर सकते है, लेकिन हम इसके लिये बहुत रूचि और दष्ढ़ता के साथ तलाश कर रहे है जैसे कि हम इसके लिये दुनिया में सब कुछ छोड़ देगे। COLHin 84.2

हम बड़ी कीमत के मोती की तलाश मे है लेकिन सांसरिक बाजारों का सांसरिक तरीकों नहीं है। हमें जो कीमत चुकानी पड़ती है वह सोने या चांदी की नहीं, इसके लिये ईश्वर को हमें स्वयं को समर्पित करना है। इस विचार का त्याग करें कि लौकिक या अध्यात्मिक लाभ आपको उद्धार के लिये जितायेगा। ईश्वर आपकी मर्जी का पालन करने के लिये कहते है "जो विजयी होगा" मसीह घोषणा करता है, "उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का गौरव प्रदान करूंगा।" ठीक वैसे ही जैसे मैं विजयी बनकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूँ। (प्रकाशितवाक्य 3:21)कुछ ऐसे है जो हमेशा स्वर्गीय मोती की तलाश में रहते है। लेकिन वे अपनी गलत आदतों का सम्पूर्ण समर्पण नहीं करते है। वे स्वंय नहीं चाहते है कि मसीह उनमें जीवित रहे। इसलिये उन्हें

कीमती सोती नहीं मिलते। उन्होंने अपवित्र महत्वकांक्षा और सांसरिक आकर्षण के लिये अपने प्यार को दूर नहीं किया है। वे कूस को नहीं लेते है और आत्म त्याग और बलिदान के मार्ग में मसीह का अनुसरण करते है। लगभग मसीही अभी तक पूरी तरह से मसीही नहीं है, वे स्वर्ग के पास लगते है, लेकिन वे वहां प्रवेश नहीं कर सकते है। लगभग पूरी तरह से नहीं बल्कि पूरी तरह से बचा हुआ मतलब लगभग पूरी तरह से नहीं बल्कि पूरी से खो गया। COLHin 84.3

अच्छे मोती की मांग करने वाले व्यापारी के दृष्टान्त में दोहरा महत्व है, यह न केवल पुरूषों के लिये स्वर्ग के राज्य की मांग के रूप में लागू होता है, बल्कि मसीह के रूप में उनकी खोई विरासत की मांग करता है। मसीह जो स्वर्गीय व्यापारी अच्छा मोती चाहता था, उसने खोई हई मानवता को मोतियों की माता में देखा। मनुष्य में पाप के द्वारा अपवित्र और बर्वाद, उसने उद्धार की संभावनाओं को देखा। वे शब्द जो शैतान के साथ संघर्ष के युद्ध का मैदान में है। और जिन्हें प्रेम की शक्ति द्वारा बचाया गया है, वे मुक्तिदाता की तुलना में अधिक कीमती है, जो कभी नहीं गिरे। ईश्वर ने मानवता को देखा, न कि नीच और बैकार, उसने यीशु में इसे देखा, इसे प्रेम को भुनाने के माध्यम से देखा। उन्होंने ब्रहमाण्ड के सभी धन एकत्र किये, ओर उन्हें मोती खरीदने के लिये नीचे रखा और यीशु ने इसे पाया, इसे अपने स्वयं के शिक्षा शास्त्र में रखा। “क्योंक वे एक मुकुट को पत्थर के रूप में होगे, उनकी भूमि पर एक प्रतीक के रूप में उठा लिया जायेगा’। (जर्कयाह 9:16) “वे मेरे होंगे मेजबानों के प्रभु, उस दिन जब मैं अपने गहने बनाऊँगा। (मलाकी 3:17) COLHin 85.1

लेकिन अनमोल मोती के रूप में मसीह, इस स्वर्गीय खजाने को रखने का हमारा विशेषाधिकार, यह विषय है जिस पर हमें सबसे अधिक ६ यान देने की आवश्यकता है। यह पवित्र आत्मा है जो पुरूषों को माती की अनमोलता को प्रकट करती हैं पवित्र आत्मा की शक्ति का समय है, वह समय है जब एक विशेष अर्थ में स्वर्गीय उपहार की मांग की जाती है और मसीह में पाया जाता है। COLHin 85.2

मसीह के दिनों में कई लोगों ने सुसमाचार सुना, लेकिन झूठी शिक्षाओं से उनके दिमाग का रंग गहरा हो गया, और उन्होंने गलील के परमेश्वर के भेजे हुये शिक्षक में विश्वास नहीं किया। मसीह के स्वर्गारोहण के बाद उनके मध्यस्थ राज्य में उनके प्रवेश को पवित्र आत्मा के प्रकोम द्वारा इंगित किया गया था। पैंतिकुस्त के दिन आत्मा को दिया गया था मसीह के गवाहों ने उठे उद्धारकर्ता की शक्ति की घोषणा की। स्वर्ग के प्रकाश ने उन लोगों के अंधेरे दिमाग में प्रवेश किया जो मसीह के दुश्मनों द्वारा धोखा दिया गया था। उन्होंन अब इजराएल के प्रति पश्चाताप और पापों को क्षमा करने के लिये, “एक राजकुमार और उद्धारकर्ता होने का श्रेय दिया। (प्रेरितें के काम 5:31) उन्होनें देखा कि स्वर्ग की महिमा के साथ उनके हाथों में अनन्त खजाने है, जो उनके विद्रोह से बदल जायेगें। जैसे ही प्रेरितों पिता की एक मात्र भिक्षा की महिमा को निर्धारित किया, तीन हजार आत्माओं को दोषी ठहराया गया। वे खुद को देखने के लिये बने थे क्योंकि वे पापी और

प्रदूषित थे, और मसीह उसके दोस्त और उद्धारक के रूप में। मसीह को उठा लिया गया, मसीह की महिमा दी गई, जो पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से पुरूषों पर टिकी हुई थी। विश्वास से इन विश्वासियों ने उन्हें अपमान, पीड़ा और मृत्यु के रूप में देखा था जो शायद नष्ट नहीं होते, लेकिन जीवन को नष्ट कर सकते हैं। आत्मा द्वारा मसीह के रहस्योघाटन ने उन्हें उनकी शक्ति और महिमा का एहसास कराया और उन्होंने विश्वास करते हुये कहा, “मुझे विश्वास है” COLHin 85.3

फिर मसीह के जी उठने की खुशी के सुसमाचार को दुनिया भर में बसे हुये सीमाओं तक ले जाया गया। कलीसिया के सभ दिशाओं से झुण्ड को धर्मान्तरित किया जाता है। भक्तों का पूर्व पुर्ननिर्माण किया गया। पापी बड़ी कीमत के मोती मांगने में मसीही के साथ एक जुट हो गये। भविष्यवाणी पूरी हो गई, कमजोर, “दाऊद के रूप में” और दाऊद का घर, “प्रभु के दूत के रूप में होगा।” (जर्कयाह 12:8) प्रत्येक मसीही ने अपने भाई में परोपकार और प्रेम के दिव्य अनुकरण को देखा। एक रूचि प्रबल हुई। एक वस्तु अन्य सभी को मात्र महत्वकासंक्षा मसीह के चरित्र की समानता को प्रकट करना था, और उसके राज्य के विस्तार के लिये श्रय करना था। “उन लोगों की भीड जो मानती थी कि वे एक हष्दय और एक आत्मा के थेकृकृकृकृमहान शक्ति के साथ प्रेरितो ने प्रभु यीशु के पुनरूत्थान की साक्षी दी उन सभी को बड़ी थी।” (प्रेरितों के काम 4:32,33) “और प्रभु की कलीसिया में प्रतिदिन जोड़ा गया, जिन्हें बचाया जाता था” (प्रेरितों के काम 2:4) मसीह की भावना पूरी मंडली को अनुप्राणित करती है क्योंकि उन्हें बहुमूल्य मोती मिला था। COLHin 86.1

इन दष्श्यों को दोहराया जाना है और अधिक शक्ति के साथ पेन्तीकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का प्रकोप पूर्व की वर्षा थी, लेकिन बाद की बारिश अधिक प्रचुर होगी। आत्मा हमारी मांग और स्वागत का इन्तजार करती है। पवित्र आत्मा को शक्ति द्वारा मसीह को पूर्णता फिर से प्रकट किया जाना है। पुरूष अनमोल मोती के मूल्य को समझेगें और प्रेरित पौलुस के साथ वे कहेगें, मुझे किन चीजों से लाभ हुआ, जिन्हें मैं ने मसीह के लिये नुकसान, यीशु मसीह मेरे प्रभु’ । (फिलिप्पियों 3:7, 8)

अध्याय 10 - जाल

"यह अध्याय मत्ती 13:47, 50 पर आधारित है"

स्वर्ग का राज्य एक जाल की तरह जिसे समुद्र में डाल दिया गया है, और हर जाल को इकटठा किया गया है। जब यह भरा हुआ था, तो वे किनारे पर चले गये, और बैठ गये अच्छे जहाजों में इकट्ठा किया, लेकिन बुरे को दूर कर दिया। ताकि यह दुनिया के अंत में स्वर्गदूत आगे आयेंगे, और दुष्टों को उन से अलग करेगे, और उन्हें आग की भटटी में डाल देगे, दातों का पीसना होगा। COLHin 88.1

जाल का डालना सुसमाचार का प्रचार है। यह दोनो कलीसिया में अच्छे शैतान को इकट्ठा करता है। जब सुसमाचार का मिशन पूरा हो जायेगा ताजे निर्णय अलगाव के काम को पूरा करेगा। मसीह ने देखा कि कैसे कलीसिया झूठे प्राफेसरों के असंगत जीवन के कारण दुनिया में सुसमाचार को प्रकट करेगी। यहां तक कि मसीही भी ठोकर खाने के कारण होगे। क्योंकि उन्होंने देखा कि जो यीशु मसीह का नाम लेते है, उनकी आत्मा पर नियंत्रण हीं था। क्योंकि इन पापियों के कलीसिया में होने के कारण, पुरूषों की यह सोचने का खतरा होगा कि ईश्र ने उनके पापों को माफ कर दिया। इसलिये मसीह भविष्य से पर्दा उठाता है और सभी को निहारने के लिये बोलता है कि यह चरित्र है, स्थिति नहीं जो मनुष्य की नियति को तय करती है। COLHin 88.2

खरपतवार और जाल के दोनों दष्टान्त स्पष्ट रूप से सिखाते है कि कोई समय नही है जब सभी दुष्ट ईश्वर की ओर फिर जायेगे। फसल तक खरपतवार और गेहूँ एक साथ बढ़ते है। अच्छी बुरी यह मछली को एक साथ अंतिम जुदाई के लिये एक साथ खींचता है। COLHin 88.3

फिर से दष्टान्त सिखाते है कि फैसले के पश्चात परिवीक्षा नहीं होनी है। जब सुसमाचार का काम पूरा हो जाता है, तो तुरन्त अच्छे और बुरे के बीच अलगाव हो जाता है, और प्रत्येक वर्ग की नियति हमेशा के लिये तय हो जाती है। COLHin 89.1

ईश्वर किसी के विनाश की इच्छा नही करते है। "जैसे कि मैं जीवित हूँ ईश्वर को प्रसन्न करो, मुझे दुष्टों की मष्यु में कोई आनन्द नही है, लेकिन यह कि दुष्ट अपने रास्ते से मुड़े और जीवित रहें। स्वयं को अपने बुरे तरीकों को बदले। फिर क्यों तुम मरोगे। (हिजिकेल 33:11) परिवीक्षाधीन समय के दौरान उनकी आत्मा पुरूषों को जीवन के उपहार की प्राप्ति के लिये प्रेरित कर रही है। ये केवल उन लोगों को खारिज करता है जो उनकी दलील को खारिज कर देंगे। ईश्वर ने घोषणा की है कि पाप को ब्रहमांड के लिये एक बुराई के रूप में नष्ट कर दिया जाना चाहिये । जो पाप से चिपके रहते है, वे उसके विनाश में नाश हो जायेगा। COLHin 89.2

अध्याय 11 - नई और पुरानी चीजों

“यह अध्याय मत्ती 13:51, 52 पर आधारित है”

जब मसीह लोगों को सिखा रहा था, तो वह अपने चेलों को उनके भविष्य के काम के लिये भी शिक्षित कर रहा था। उनके सभी निर्देशों में उनके लिये सबक है। जाल के दृष्टान्त देने के बाद, उसने उनसे पूछा। “क्या तू इन सब चीजों को समझ गये हो? उन्होंने उससे कहा, “हॉ प्रभु’ फिर एक और दृष्टान्त में, “उन्होंने जो सत्य प्राप्त किया था, उसके सम्बन्ध । में उनकी जिम्मेदारी उनके समाने रखी।” इसलिये उन्होंने कहा “प्रत्येक मुंशी जो स्वर्ग के राज्य के लिये निर्देश देता है, एक आदमी की तरह है जो एक ग्रहस्थ है, जो अपने खजाने की चीजों को नये और पुराने से बाहर लाता है।” COLHin 90.1

गष्हस्वामी द्वारा प्राप्त किया खजाना वह कोष नहीं है। वह दूसरों से सवांद करने के लिये इसे सामने लाता है। और उपयोग खजाना बढ़ता है। ग्रहस्थ के पास नई और पुरानी दोनो तरह की चीजें है। इसलिये मसीह सिखाता है कि उनके शिष्यों के लिये प्रतिबन्ध सत्य को दुनिया तरह की चीजे है। और जैसे जैसे सत्य का ज्ञान दिया जायेगा, यह बढ़ता जायेगा। COLHin 90.2

सभी जो हष्दय से सुसमाचार प्राप्त करते है, वे इसे घोषित करने के लिये लम्बे समय तक रहेगें। मसीह के स्वर्ग में जन्में प्रेम की अभिव्यक्ति मिलनी चाहिये। जिन लोगों ने मसीह को धारण किया है, वे अपने अनुभव से सम्बन्धित होंगे। पवित्र आत्मा के अग्रणी कदमों का पता लगाकर ईश्वर और यीशु मसीह के ज्ञान के लिये उनकी भूख और प्यास, जिसे उन्होंने भेजा है, उनके शास्त्रों की खोज के परिणाम, उनकी प्रार्थनायें, उनकी आत्मा, तड़प लिये मसीह के शब्द, “तेरा पाप क्षमा हुये, इन बातों को गुप्त रखना किसी के लिये भी अस्वाभाविक है। और जो मसीह के प्रेम से भरे है, वे नहीं करेगें। जिस अनुपात में ईश्वर ने उन्हें बनाया है, पवित्र सत्य के निक्षेपकों की इच्छा होगी कि दूसरों को भी आशीर्वाद मिले। और जैसा कि ईश्वर की कष्पा के समष्द्ध खजाने को जानते है। उनकी सादगी और अनारक्षित आवेदन में एक छोटे बच्चे का दिल होगा। उनकी आत्मायें पवित्रता के बाद जायेंगी और अधिक से अधिक खजाने उन्हें दनिया को देने के लिये प्रकट होगे। COLHin 90.3

सत्य महान भंडार का वचन है, लिखित शब्द, प्रकृति की पुस्तक, और जीवन से संबंधित ईश्वर के वचन में अनुभव की पुस्तक है। यहां वे खजाने है जिसमें मसीह को आकृषित करना है। सत्य के बाद की खोज में वे ईश्वर पर निर्भर होते है, मानव बुद्धि पर नहीं, वे महापुरूष जिनके ज्ञान ईश्वर के साथ मूर्खता है। अपने स्वंय के नियुक्त चैनलों के माध्यम से प्रभु प्रत्येक साधक को स्वंय का ज्ञान प्रदान करेगे। COLHin 91.1

यदि मसीह का अनुयायी उनके वचन पर विश्वास करेगा और इसका अभ्यास करेगा, तो प्राकषतक दुनिया में कोई विज्ञान नहीं है कि वह समझ और सराहाना नहीं कर पायेगा। वहां कुछ

भी नहीं है कि उसे दूसरों के लिये सत्य प्रदान करने के लिये उसे प्रस्तुत करना होगा। प्राकषतक विज्ञान का खजाना है जिसमें से प्रत्येक छात्र मसीह के स्कूल में आ सकता है। जैस-जैसे हम प्रकपत के पाठों का अध्ययन करते है, वैसे-वैसे वष्क्षकों की खोज में समुद्र और आकाश के सभी अजूबो हमारे सामने सच्चाई की एक नई धारणा आ जायेगी। और जो रहस्य पुरूषों के साथ, ईश्वर के व्यवहार में जुड़े है, उनकी बुद्धि और निर्णय के चित्रण जैसे कि मानव जीवन में देखे जाते है, ये खजाने में समष्द्ध एक भंडार के रूप में पाये जाते है। COLHin 91.2

लेकिन ये वचन में है कि ईश्वर का एक ज्ञान सबसे स्पष्ट रूप से मनुष्य को गिराने के लिये है। यह मसीह की बेशुमार धन का खजाना है। COLHin 91.3

परमेश्वर के शब्द में पुराने नियम के पवित्र शास्त्र के साथ-साथ नये वचन भी शामिल है जो एक दूसरे के बिना पूरी नहीं है। मसीह ने घोषणा की कि पुराने नियम के सत्य नये के सामन ही मूल्यवान है। मसीह दुनिया की शुरूआत में उतनी ही उद्धार थे जितना कि वे आज है। इससे पहले कि वह मानवता के साथ अपनी दिव्यता को गढ़ता और हमारी दुनिया में आता। आदम, सेत, हनोक, मेथुसिलहा, और नूह द्वारा सुसमाचार संदेश दिया जाता था। अब्राहम कनान में और लूत ने सदोम में संदेश दिया, और पीढ़ी से पीढ़ी तक वफादार दूतों ने आने वाले को घोषित किया। यहूदी अर्थव्यवस्था के संस्कारो की स्थापना स्वयं यीशु मसीह ने की थी। वह उनके बलिदान की व्यवस्था का आधार था, जो उनकी सभी धार्मिक सेवा के महान विरोध थे। बलि के रूप में रक्त ईश्वर के मेम्ने के बलिदान की ओर इशारा किया गया। सभी विशिष्ट प्रसाद उसी से भरे थे। COLHin 91.4

पितष् पुरूषों के बलिदान के प्रतीक के रूप में मसीह को बलिदान के प्रतीक के रूप में कानून में चित्रित किया गया है और जैसा कि नबियों द्वारा प्रकट किया गया है, पुराने नियम का धन है। उनके जीवन में मसीह, उनकी मष्यु, उनका पुनरूत्थान, मसीह के रूप में वह पवित्र आत्मा द्वारा प्रकट होता है, नये नियम का खजाना है। हमारे उद्धारकर्ता, पिता की महिमा से बाहर निकले, पुराने और नये दोनो है। COLHin 92.1

मसीह के जीवन की मष्यु और अंतमन, जो भविष्यवकताओं ने भविष्यवाणी की थी, प्रेरितों को गवाह के रूप में आगे बढ़ना था। अपनी दीनता में मसीह, अपनी पवित्रता और शुद्धता, अपने अतुल्नीय प्रेम में, उनका विषय होना था। और अपनी पूर्णता में सुसमाचार का प्रचार करने के लिये, उन्हें उद्धारकर्ता को न केवल अपनी जीवन और शिक्षाओं में प्रकट करना चाहिये, बल्कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के रूप में और बलिदान सेवा के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना होगा। COLHin 92.2

मसीह ने अपने शिक्षण में पुरानी सच्चाईयों को प्रस्तुत किया, जिनमें वे स्वंय के प्रवर्तक थे, सत्य जो उन्होंने पितष्सता और भवियवक्ताओं से बोले थे, लेकिन उसने अब उन पर एक नया

प्रकाश डाला। उनका अर्थ कितना अलग दिखाई दिया। उनकी व्याख्या से प्रकाश और अध्यात्मिकता की बाढ़ लायी गई और उसने वायदा किया कि पवित्र आत्मा को शिष्यों को ज्ञान देना चाहिये कि परमेश्वर का वचन उनके सामने कभी भी नहीं होना चाहिये। वे इसकी सच्चाई को नये सौन्दर्य में प्रस्तुत कर सकेंगे। COLHin 92.3

कभी ईश्वरीय प्रतीक्षा का पहला वचन अदन की वाटिका में बोला गया था, जीवन, मसीह के चरित्र और मध्य युगीन कार्य मानव, मन का अध ययन कर रहा है, फिर भी हर मन जिसके द्वारा पवित्र आत्मा ने काम किया है, इन विषयों को एक प्रकाश में प्रस्तुत किया है, जो ताजा और नया है। छुटकारे के सत्य निरंतर विकास और विस्तार में सक्षम है। हालांकि पुराने है कि वे कभी भी नये नहीं होते है। लगातार सार्थक के लिये एक बड़ा गौरव और अचम्भित करने वाला खुलासा करते है। COLHin 92.4

हर युग में सत्य का एक नया विकास होता है, उस पीढ़ी के लोगों के लिये ईश्वर का एक संदेश, पुराने सत्य सभी आवश्यक है। एक नया सच पुराने सच से स्वतंत्र नहीं है, बल्कि उसका खुलासा है। ये केवल उतना ही पूराना है जितना पुराना सत्य समझा जाता है कि हम नये को समझ सकते है। जब मसीह ने अपने चेले को उसके पुनरूत्थान की सच्चाई को खोलने के लिये चाहा, तो उसने "मूसा और पैगम्बरों पर" शुरू किया और "सभी धर्मग्रन्थों में उनके बार में खुद को उजागर किया' (लूका 24:27) लेकिन ये वह प्रकाश है जो बुर्ज के ताजे आवरण में चमकता है तो पुराने की महिमा करता है। वह जो नये को अस्वीकार या उपेक्षित करता है वह वास्तव में पुराने के पास नहीं है। उसके लिये यह अपनी महत्वपूर्ण शक्ति खो देता है COLHin 93.1

और एक बेजान रूप बन जाता है। ऐसे लोग है जो विश्वास करते हैं और पुराने नियम के सत्य को पढने के लिये जब कि वे नये को अस्वीकार करते हैं। लेकिन मसीह की शिक्षाओं को प्राप्त करने से इंकार करने पर वे दिखाते है कि वे यह नही मानते है कि कौन से पितर और भविष्यवकताओं ने बात की है। "क्या आप मूसा को मानते है" मसीह ने कहा, "तो मेरा विश्वास करेगे, क्योंकि उन्हाने मुझे लिखा है," (यहून्ना 5:46) इसलिये उनके पुराने नियम के शिक्षण में भी कोई वास्तविक शक्ति नहीं है। COLHin 93.2

"कई लोग जो विश्वास करने और सुसमाचार सिखाने का दावा करते है वे एक समान त्रुटी ये है। उन्होने पुराने नियम के ग्रथों को अलग कर दिया, जिनमे से मसीह ने कहा, वे वही है जो मेरी गवाही देते है। (यहून्ना 5:39) पुराने को अस्वीकार करने में, वे वास्तव में नये को अस्वीकार करते है, दोनों एक अविभाज्य पूरे के कुछ हिस्से में है। कोई भी मनुष्य बिना सुसमाचार परमेश्वर के वचन को सही ढंग से प्रस्तुत नहीं कर सकता है। वचन मूल है, सुसमाचार सुंगधित फूल और फल है जो इसे धारण करता है। COLHin 93.3

पुराने नियम नये पर प्रकाश डालता है और नया पुराने पर । प्रत्येक मसीह में परमेश्वर की महिमा का रहस्योंघाटन है, दोनों वर्तमान समय है जो लगातार साधन को अर्थ के नये चित्रों को प्रकट करेंगे। COLHin 93.4

मसीह में और मसीह के माध्यम से सत्य मापक है। इंजील का छात्र जैसे दिखता है, वह एक फव्वारा तरह गहराई में था और इसकी गहराई में गज के रूप में चौड़ा था। इस जीवन में हम नहीं, हम अपने पुत्रों को हमारे पापों का प्रतिफल देने के लिये, परमेश्वर के प्रेम के रहस्य को समझेंगे। इस धरती पर हमारे उद्धारक का काम है और कभी ऐसा विषय होगा जो हमारी उच्चतम कल्पना को खीचेंगा। मनुष्य इस रहस्य को मिटाने के प्रयास में रहे मानसिक शक्ति पर लगा सकता है लेकिन उसका मन थका हुआ और मूर्च्छित हो जायेगा। सबसे मेहनती खोजकर्ता उसे एक असीम निर्लज्ज समुद्र के सामन दिखेगा। COLHin 94.1

यीशु ने जो सत्य है, वह अनुभव किया जा सकता है लेकिन कभी समझाया नहीं जाता। इसके ऊंचाई और चौड़ाई और गहराई हमारे ज्ञान को पार करती है। हम अपनी कल्पना में पूरी तरह से कार्य कर सकते है और फिर हम केवल एक प्यार की अस्पष्ट रूपरेखा को देखेंगे, जो कि अस्पष्ट है, जो स्वर्ग के रूप में राख है, लेकिन सभी मानव जाति पर ईश्वर की छवि पर मुहर लगाने के लिये पष्थ्वी पर रखा। COLHin 94.2

फिर भी हमारे लिये यह संभव है कि हम दिव्य करूणा को सहन कर सके। यह विनम्र, विपरीत आत्मा के सामने प्रकट होता है। हम ईश्वर की करूणा को उसी अनुपात में समझेगें जैसे हम उनके लिये उनके बलिदान की सरहाना करते है। जैसे ही हम हष्दय की विनम्रता में ईश्वर के वचन को खोजते है हमारी मुक्ति का भव्य विषय खुल जायेगा। COLHin 94.3

जैसे-जैसे हम इसे निहारेंगे, वैसे-वैसे इसकी चमक बढ़ती जायेगी और जैसे-जैसे हम इसे समझेंगे, इसकी ऊंचाई और गहराई कमी बढ़ती जायेगी। COLHin 94.4

हमारा जीवन मसीह के साथ बंधना है, हम उसे लगातार खींच रहे है, उसका हिस्सा है, जीवित रोटी जो स्वर्ग से नीचे आई है, कभी ताजा, कभी अपने प्रचुर खजाने को देने वाले एक फव्वारे में। यदि हम अपने सामने प्रभु को रखते है, तो हमारे दिल को धन्यवाद देने और उसकी प्रशंसा करने की अनुमति देता है, हम अपने धार्मिक जीवन में एक निरंतर ताजगी रखेंगे। हमारी प्रार्थनायें ईश्वर के साथ वार्तालाप का रूप ले लेगी, क्योंकि हम एक मित्र के साथ बात करेंगे। वह अपने रहस्यों को हमसे व्यक्तिगत रूप से बोलेगे। अक्सर हमारे पास यीशु की उपस्थिति का एक मधुर हर्षित भाव आयेगा। जैसा कि उसने हनोक के साथ किया था, अक्सर हमारे दिल हमारे भीतर जलते रहेगे। क्योंकि वह हमारे लिये आता है। इस सच में मसीह का अनुभव होता है, तो उसके जीवन में एक सादगी, एक विनम्रता और हष्दय की दीनता देखी जाती है, वो सभी को दिखाती है कि वह किसके साथ जुड़ता है कि वह यीशु के साथ है और उससे सीखता है। COLHin 94.5

जो लोग इस पर अभियोग लगाते है, उनके बारे में मसीह का धर्म स्वयं को अवर्तीण, व्याप्त सिद्धान्त, एक जीवित, काम करने वाली अध यात्मिक उर्जा के रूप में प्रकट करेगा। इसमें सदाबहार युवाओं की ताजगी, खुशी और शक्ति दिखाई देगी। ईश्वर का वचन पाने वाला दिल एक पूल के रूप में नहीं है जो वाष्पित हो जाता है, न कि एक टूटे हये खम्भे की तरह जो अपना खजाना खो देता है। यह उन्मुक्त झरनों द्वारा खिलाई गई। यह अमोघ झरनो द्वारा सिंचित की गई पहाड़ की धारा की तरह है, जिसका ठंडा उज्जावल पानी चट्टान से चट्टान तक। पके हुये, प्यासे तथा थके हुये को ताजा करता है। COLHin 95.1

यह अनुभव सच्चाई के हर शिक्षक को बहुत योग्य बनाता है जो मसीह को प्रतिनिधि बना देगा। मसीह के उपदेश की भावना उनके संचार COLHin 95.2

और उनकी प्रार्थनाओं को बल और प्रत्यक्षता देगी। मसीह का उसका गवाह एक संकीण, बेजान गवाह नहीं होगा। सेवक एक ही सेट पर प्रवचन नहीं देगे। उनका मन पवित्र आत्मा की निरंतर रोशनी के लिये खुला रहेगा। COLHin 95.3

_ मसीह ने कहा, "जो मेरे मांस खाते है और मेरा खून पीते है, अनन्त जीवन जीते हैं। जैसे कि जीवित पिता ने मुझे भेजा है, और मैं पिता द्वारा जीवित हूँ, इसलिये वो मुझे खा लेता है, यहां तक कि वह मेरा द्वारा जीवित रहेगाकृकृयह आत्मा है कि त्वरितकृजो शब्द मैं तुमसे कहता हूँ, वे आत्मा है और वे जीवन है।" (यहून्ना 6:54-63) COLHin 95.4

जब हम मसीह का मांस खाते है और उसका खून पीते है, तो शाश्वत जीवन का तत्व सेवकाई में मिलेगा। पुराने विचारों का कोई कोष नहीं होगा। नौरस, अरूचिकर प्रवचन समाप्त हो जायेगे। पुरानी सच्चाईयों को प्रस्तुत किया जायेगा, लेकिन वे एक नये प्रकाश में दिखाई देगे। सत्य की एक नई धारणा, एक स्पष्टता और एक शक्ति होगी जो सभी को समझ में आयेगी। जिन लोगों की सेवकाई का विशेषाधिकार प्राप्त है, यदि वे पवित्र आत्मा के प्रभाव के प्रति अति संवेदनशील होते है, तो वे एक नये जीवन की उर्जा महसूस करते है। परमेश्वर के प्रेम की आग उनके भीतर जल जायेगी। उनके अवधारणात्मक संकायों सुन्दरता और सच्चाई की महिमा को समझने की जल्दी होगी। COLHin 95.5

वफादार ग्रहस्थ यह दर्शाता है कि बच्चों और युवाओं के प्रत्येक शिक्षक को क्या होना चाहिये। अगर वह परमेश्वर के वचन को अपना विश्वासघाती बनाता है, तो वह लगातार नई सुन्दरता और नई सच्चाई को सामने लायेगा। जब शिक्षक प्रार्थना में ईश्वर पर विश्वास करेगा, मसीह की आत्मा उस पर आयेगी और ईश्वर दूसरों के दिमाग पर पवित्र आत्मा द्वारा उसके माध्यम से काम करेगी। आत्मा मीठी आशा और साहस और बाइबल कल्पना के साथ मन और दिल को भर देती है, और यह सब उसके निर्देश के तहत युवाओं को सूचित किया जायेगा। COLHin 96.1

प्रेरणा के शब्दों से शिक्षक की आत्मा में धुली स्वर्गीय शांति और आनन्द के झरने, सभी को आशीर्वाद देने के लिये प्रभाव की एक शक्तिशाली नदी बन जायेगे, जो उसके साथ जुड़ते है। बाइबल विद्यार्थी के लिये बाइबज भड़काऊ किताब नहीं बनेगी। एक बुद्धिमान प्रशिक्षक के तहत वचन अधिक से अधिक वांछित हो जायेगा। यह जीवन की रोटी के रूप में होगा और कभी बूढ़ा नहीं होगा। यह पृथ्वी पर चमकते हुये सूरज की तरह है, लगातार चमक और गर्मी प्रदान करती है, फिर भी कभी समाप्त नहीं होती है। COLHin 96.2

परमेश्वर की पवित्र, शिक्षित आत्मा उसके वचन में है। एक नया और अनमोल प्रकाश, एक प्रकाशमय, हर पष्ठ से चमकता है। सत्य का पता चलता है और शब्दों और वाक्यों को इस अवसर के उज्जवल और उपयुक्त बनाया जाता है, जैसे कि आत्मा को ईश्वर की आवाज। COLHin 96.3

पवित्र आत्मा युवाओं को संबोधित करने के लिये, और ईश्वर के वचन के खजाने और परमेश्वर के वचन की सुन्दरता को खोजते है। महान शिक्षक द्वारा कहे गये वादे इंद्रियों की पकड़ लेगे और आत्मा को अध्यात्मिक शक्ति के साथ चिंतन करेगे जो दिव्य है। फलदायी मन मैं दिव्य चीजों के साथ एक परिचित बढ़ेगा जो प्रलोभन के खिलाफ एक बाधा के रूप में होगा। COLHin 96.4

सच्चाई की चिंतायें बढ़ती जायेंगी, और उन अर्थो की चौड़ाई और परिपूर्णता को ग्रहण करेगी, जिनके बारे में हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। वचन की सुन्दरता और धन, मन और चरित्र पर एक परिवर्तनकारी प्रभाव डालते है। स्वर्ग की ज्योति प्रेरणा के रूप में हष्दय पर पड़ेगी। COLHin 96.5

बाइबल की सराहना इसके अध्ययन से बढ़ती है। जिस भी तरीके से छात्र मुड़ सकता है, वह अनन्त ज्ञान और ईश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करेगा। COLHin 97.1

यहूदी अर्थव्यवस्था का महत्व अभी तक पूरी तरह से समझ में नहीं आया है। सत्य विशाल और गहरा इसके संस्कार और प्रतीकों में छाया हुआ है। सुसमाचार वह कुंजी है जो इसे रहस्यों को खोलती है। उद्धार की योजना के ज्ञान के माध्यम से इसकी सच्चाई को समझने के लिये खोला जाता है। जितना हम करते है उससे कही अधिक, इन अद्‌भुत विषयों को समझना हमारा सौभाग्य है। हम ईश्वर की गहरी बातों को समझने के लिये है। स्वर्गदूतों की इच्छा है कि उन लोगों के बारे में पता चला जो उन लोगों के सामने आते है और जो ईश्वर के वचन को खोज रहे है अधिक से अधि क लम्बाई, और चौड़ाई, और गहराई और ज्ञान की ऊंचाईयों के लिये प्रार्थना कर रहे है, जो वह अकेले दे सकते है। COLHin 97.2

जैसा कि हम इस दुनिया के इतिहास के करीब है, पिछले दिनों से सबंधित भविष्यवाणियों विशेष रूप से हमारे अध्ययन की मांग करती है। नये नियम के धर्मग्रन्थों की अंतिम पुस्तक सच्चाई से भरी है जिसे हमें समझने की आवश्यकता है। शैतान ने कई लोगों के दिमाग को अंधा कर दिया है, तांकि वे प्रकाशितवाक्य को अपना अध्ययन न बनाने के लिये किसी बहाने से खुश है। लेकिन

मसीह के अपने चेले यहून्ना के माध्यम से यहां घोषित किया है कि अंतिम दिनों में क्या होगा, और वह कहता है 'धन्य है जो पढ़ता है और वे जो इस भविष्यवाणी के शब्दों को सुनते है, और उन बातों को रखते है जो उसमें लिखी है।" (प्रकाशितवाकय 1:3) COLHin 97.3

"यह जीवन शाश्वत है" मसीह ने कहा कि "वे तुम्हें एक मात्र सच्चे ईश्वर और यीशु मसीह को जान सकते है, जिन्हें आपने भेजा है" (यहून्ना 17:3) ऐसे क्यों है हमें इस ज्ञान के मूल्य का एहसास नहीं है? क्यों ये शानदार सत्य हमारे दिलों में चमक नहीं रहे हैं, हमारे होठों पर कांप रहे है और हमारे पूरे अस्तित्व के विकृत कर रहे है? COLHin 97.4

हमें अपना वचन देने में परमेश्वर ने हमे हमारे उद्धार के लिये आवश्यक प्रत्येक सत्य के कब्जे में डाल दिया है। जीवन के कुओं से हजारों ने पानी खींचा है फिर आपूर्ति कम नहीं हुई है। हजारों लोगों ने उनके सामने ईश्वर के स्थापित किया है और निहारने से उन्हें एक ही छवि में बदल दिया गया। उनके चरित्र के विषय उनकी आत्मा जलती है, जैसे कि वे उनकी चरित्र की बात करते है, यह बताते हुये कि मसीह ने उनके लिये क्या किया है और वे मसीह के लिये क्या है, लेकिन इन खोजकर्ताओं ने इन भव्यों और पवित्र विषयों का प्रचार नहीं किया है। उद्धार के रहस्यों को खोजने के काम में हजारों अधिक संलग्न है। मसीह के जीवन और चरित्र के रूप में जैसे ही मसीह का जीवन और उसके मिशन के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है, प्रकाश की किरणे सत्य की खोज करने के हर प्रयास में और अधि क स्पष्ट रूप से चमकेगी। प्रत्येक नयी खोज कुछ और अधिक गहराई से दिलचस्पी से बतायेगी जो समय तक चलेगा, मेहनती छात्र के दिमाग को काम में लेगा, और अपने अनावश्यक वर्षों के साथ स्वर्ग की ओर देखने के लिये वह कहेगा, "महानता का रहस्य है।" COLHin 97.5

अंन्तकाल में हम यह जानेगे कि हमें जो ज्ञान प्राप्त हुआ, उसे यहां प्राप्त करना संभव था, इससे हमारी समझ खुल जाती है। छुटकारे के विषय हमेशा की उम्र के माध्यम से उद्धार किये गये। लोगों के लिये दिल और दिमाग ओर जीभ को रोजगार देंगे। वे उन सच्चाईयों को समझेंगे जिन्हें मसीह ने अपने शिष्यों के लिये खोलने के लिये लालसा की थी, लेकिन जिनके पास विश्वास करने के लिये विश्वास नहीं था। हमेशा और हमेशा के लिये मसीह की पूर्णता और महिमा के नये विचार दिखाई देगें। अंतहीन उम्र के माध्यम से वफादार ग्रहस्थ अपने खजाने से नई और पुरानी चीजों को सामने लायेगा।

अध्याय 12 - देने को कहाना

"यह अध्याय लूका 11:1-13 पर आधारित है"

मसीह पिता से लगातार संदेश प्राप्त कर रहा था कि वह हमसे वार्तालाप करे। जिस काम के विषय मे आप सुनते है, "उन्होंने कहा, मेरा नहीं है, लेकिन पिता का है जिसने मुझे भेजा है।" (यहून्ना 14:24) "मनुष्य प्रतिज्ञा करने के लिये नहीं आया, अपितु लघुता के लिये आया था।" (मत्ती 20:28) खुद के लिये नहीं, बल्कि दूसरों के लिये, उन्होंने सोचा और प्रार्थना की, स्वर्ग के प्रकाश से पुरूषों के लिये, दैनिक उसने पवित्र आत्मा का एक नया बपितस्मा प्राप्त किया। नये दिन के शुरूआती घंटों में प्रभु ने उसे नींद से जगाया और उसकी आत्मा और उसके होंठ को अनुग्रह से अभिषेक किये गये थे कि वह दूसरों को प्रदान कर सके। उनके शब्दों को स्वर्गीय अदालतों से ताजा किया गया। उन शब्दों को उनके लिये जो थके हुये और उत्पीड़ितों को बोल सकते थे। प्रभु ईश्वर ने मुझे दिया, "उन्होंने कहा, प्रभु ने मुझे सीखने वालों के लिये जीभ दी है कि मैं थके हुये को अपने वचन के द्वारा संभालना जानू। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सूनु । (यशायाह 50:4) COLHin 99.1

मसीह के चेले उसकी प्रार्थनाओं और उसकी परमेश्वर के साथ भक्ति की आदत से बहुत प्रभावित थे। अपने ईश्वर से थोड़े से समय की अनुपस्थिति के बाद, उन्होंने उसे अपने ध्यान में लीन पाया। उनकी उपस्थिति के बारे में अनाज, वह जोर से प्रार्थना करता रहा। शिष्यों का दिल गहरा गया। जब उसने प्रार्थना बन्द की तो उन्होंने कहा, "प्रभु हमें प्रार्थना करना सिखा।" COLHin 99.2

जबाव में मसीह ने प्रभु की प्रार्थना को दोहराया, क्योंकि उसने उसे पहाड़ी उपदेश दे दिया। तब एक दष्टान्त में उन्होंने उन्हें जो पाठ पढ़ाना चाहा, उसका उदाहरण दिया। COLHin 99.3

"आप में से कौन' उसने कहा, "एक दोस्त होगा, आधी रात को उसके पास जायेगा, और उससे कहेगा, मित्र मुझे तीन रोटियाँ उधार दे दे, क्योंकि मेरा मित्र यात्रा करके आया और मेरे पास उसके सामने कुछ भी देने के लिये नहीं है, और वह उत्तर देने से रोकेगा और कहेगो, मुझे परेशान मत करो, दरवाजा बन्द है और मेरे बच्चे बिस्तर पर मेरे पास लेटे है, मैं उठकर तुम्हें नहीं दे सकता हूँ। मैं तुमसे कहता हूँ, यद्यपि वह नहीं उठेगा। और देगा, फिर भी उसके आयात के कारण वह उठेगा और उसे जितने की जरूात होगी वो देगा। COLHin 100.1

यहाँ मसीह याचिका कर्ता का प्रतिनिधित्व करते हुये पूछ रहा है कि वह फिर से दे सकता है। उसे रोटी प्राप्त करनी चाहिये, अन्यथा वह एकथके हुये बेलदार की आवश्यकता की शर्त नहीं कर सकता है। हालकि उसका पडोसी तुच्छ होने के लिए तैयार नहीं है लेकिन वह उसकी बिनती नहीं करेगा : उसका दोस्त को राहत मिलनी चाहिये और आखिर में उसकी आयात शीलता को पुरस्कृत किया जाता है उसकी अपूर्ति की जाती हैं। COLHin 100.2

इसी तरह से चेलो को ईश्वर से आशीर्वाद लेना था, भीड़ के भोजन में और स्वर्ग से रोटी पर धर्मोपदेश में मसीह में उनके काम को उनके प्रतिनिधियों रूप में खोला या उन्हे लोगों की जीवन की रोटी देनी थी जिसने अपना काम नियुक्त किया था, उसने देखा कि उनके विश्वास को कितनी बार आजमाया जायेगा अकसर उन्हें अप्रत्याशित स्थिति में फेंक दिया जाता था और उनके मानव अपर्याप्त का एहसास होता था। आत्मायें जो जीवन की रोटी के लिये त्राहि-त्राहि कर रही थी वे उनकी वापसी करेगे और वे स्वयं को निराश्रित और असहाय महसूस करेगे। उन्हें अध यात्मिक भोजन प्राप्त करना चाहिये, या उनके पास कुछ भी नहीं होगा लेकिन वे एक आत्मा को दूर करने के लिये नही थे मसीह उन्हें आपूर्ति के स्त्रोत तक पहुँचाता है। जिस आदमी का दोस्त मनोरजंन के लिये उसके पास आया था, आधी रात को बेमोसम धंरे में भी उसने उसे नहीं छोड़ा। उसके पास गया जिसने भोजन किया था और उसके अनुरोध के दबाया जब तक पडोसी ने उसकी आवश्यकता की आपूर्ति नहीं की और क्यों ईश्वर जिसने अपने सेवकों को खाना खिलाने के लिये भेजा था अपने काम के लिये उनकी जरूरत की आपूर्ति नहीं करेगा? COLHin 100.3

लेकिन दष्टान्त मे स्वार्थी पडोसी ईश्वर के चरित्र का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। पाठ उनके आधार पर नहीं बल्कि इसके विपरीत तैयार किया जाता है। एक स्वार्थी आदमी अपने बाकी को परेशान करने वाले को खुद से छुटकारा दिलाने के लिये तत्काल अनुरोध प्रदान करेगा। लेकिन ईश्वर हमें देने के लिये प्रसन्न है कि हम दसरों को याजक बना सकते है इस तरह उसके समान बन सकते हैं। COLHin 101.1

मसीह ने घोषण की, कि मागों तो तुम्हे दिया जायेगा ढूढों तो तुम्हें मिलेगा, खटखटाओं और तुम्हारे लिये दरवाजा खोला जायेगा, हर एक के लिये जो मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढता है वो पाता है। COLHin 101.2

उद्धार कर्ता का काम चल रहा है अगर कोई बेटा आपसे रोटी मांगता है तो क्या वो उसे पत्थर देगा, या वह मछली मांगता है तो क्या वो उसके बदले उसे सर्प देगा या वह झंडा मांगेगा तो क्या वो उसे वो देगा जो वह मांगता है। यदि तुम दुष्ट होकर, अपने बच्चों को अच्छे उपहार देना जानते हो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें कितना पवित्र आत्मा देगे जो उनसे पूछ? COLHin 101.3

परमेश्वर में हमारे विश्वास को मजबूत करने के लिये, मसीह उसे एक नये नाम से सम्बोधित करना सिखाता है, एक नाम जो मानव हृष्दय के सबसे प्रिये संगठनों के साथ जुड़ा हुआ है। वह अनन्त ईश्वर को हमारे पिता को बुलाने का विशेषाधिकार देता है। यह नाम उसके और उसके सम्बन्ध की प्रतिज्ञा है। जब उसका पक्ष या आशीर्वाद मांगा जाता है, तो उसके कानों में एक अजीब बात है कि हम शायद इस नाम से उसे पुकारना मुनासिब न समझे, उन्होंने उसे बार-बार दोहराया है। वह हमें अपील के साथ परिचर्चित होने का इच्छा रखता है। COLHin 101.4

ईश्वर हमे अपने बच्चों के रूप में मानते है। उसने हमे लापरवाह दुनिया से छुटकारा दिलाया है और हमे स्वर्गीय राजा के खिलौने वाले परिवार बेटों और बेटियों का सदस्य बनने के लिये चुना है। वह हमें सांसरिक पिता में, एक बच्चे की तुलना में गहरे और मजबूत विश्वास के साथ उस पर भरोसा करने के लिये आंमत्रित करता है। माता-पिता अपने बच्चों को प्यार करते है, लेकिन ईश्वर का प्यार बड़ा, व्यापक, गहरा, मानव प्रेम संभवता हो सकता है। यह अथाह है। तब यदि सांसरिक माता-पिता जानते है कि अपने बच्चों को अच्छे उपहार कैसे दिये जाये, तो स्वर्ग में हमारे पिता को उन लोगों को पवित्र आत्मा कैसे दी जायेगी जो उसे देते है, और उनका दष्टान्त सिद्धान्तों को देखने के लिये लाता है, जिन्हें सभी को समझने की आवश्यकता है। वह दिखाता है कि प्रार्थना की सच्ची भावना क्या है, वह शिक्षकों को ईश्वर से हमारे अनुरोधों को पेश करने में दष्ढ़ता की आवश्यकता बताती है और प्रार्थना सुनने और जवाब देने की उनकी इच्छा का आश्वासन देती है। COLHin 101.5

हमारी प्रार्थना केवल अपने लाभ के लिये स्वार्थी होने के लिये नहीं है। हम यह पूछना चाहते है कि हम दे सकते है। मसीह के जीवन का सिद्धान्त हमारे जीवन का सिद्धान्त होना चाहिये। उनके लिये “उन्होंने कहा, अपने शिष्यों की बात करते हुये” मैं खुद को पवित्र करता हूँ कि वे भी पवित्र हो जाये।” (यहून्ना 17:19) वही भक्ति, वही आत्म बलिदान, ईश्वर के वचन के दावों के प्रति वहीं उदासीनता, जो मसीह में प्रकट होती है उसे उसके सेवकों में अवश्य देखा जाना चाहिये। दुनिया हमारा उददेश्य खुद की सेवा या उन्हें खुश करता नहीं है, हम पापियों को बचाने के लिये, परमेश्वर के साथ सहयोग करके ईश्वर की महिमा करना चाहते है। हमें परमेश्वर से आशीर्वाद मांगना है कि हम दूसरों से संवाद कर सके। प्राप्त करने की क्षमता केवल प्रदान करके संरक्षित है। हम अपने आस-पास के लिये संवाद किये बिना स्वर्गीय खजाना प्राप्त करना जारी नहीं रख सकते हैं। COLHin 102.1

दष्टान्त में याचिका कर्ता ने फिर से पुनः वकालत की, लेकिन उसने अपने उद्देश्य को त्याग नहीं दिया। तो हमारी प्रार्थना हमेशा एक तत्काल उत्तर प्राप्त करने के लिये नहीं लगती है। लेकिन मसीह सिखाता है कि हमे प्रार्थना करना नहीं छोड़ना चाहिये । प्रार्थना ईश्वर में किसी भी परिवर्तन को काम नहीं है, यह हमें ईश्वर के साथ सद्भाव में लाने के लिये है। जब हम उसका अनुरोध करने है तो वह देख सकता है कि हमारे लिय आवश्यक है कि हम अपने हष्दय की खोज करें और पाप का प्राथश्चित करे। इसलिये हमें परीक्षण और परीक्षण के माध्यम से ले जाता है, वह हमें अपमान के माध्यम से ले जाता है कि हम देख सकते है कि हमारे साथ उसकी पवित्र आत्मा के काम में क्या बाधा है। COLHin 102.2

परमेश्वर के वादों को पूरा करने की शर्ते है, और प्रार्थना कभी भी कर्तव्य को जगह नहीं ले सकती है। “अगर तुम मुझसे प्यार करते है” मसीह कहता है कि “मेरी आज्ञाओं को मानों।” उसने कहा कि फिर जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वो उन्हें मानता है, वहीं मुझसे प्रेम रखता है और

जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा और मैं उससे प्रेम रखूगा, और अपने आप को उस पर प्रकट करूंगा।” (यहून्ना 14:15, 21)। जो लोग परमेश्वर के सामने अपनी याचिकायें लाते है, वे अपने वादों का दावा करते है, जब कि वे शर्तो का पालन नहीं करते है, वे यहोवा का अपमान करते है। वे वचन की पूर्ति के लिये उनके अधिकार के रूप में यीशु मसीह को लाते है, लेकिन वे उन चीजों को नहीं करते है जो मसीह में विश्वास दिखाती है और उनके लिये प्यार करती है। COLHin 102.3

कई लोग पिता के साथ स्वीकषत की शर्त को टाल रहे हैं। हमे विश्वास करना चाहिये कि हम परमेश्वर के पास किस विश्वास के साथ काम करते है। यदि हम अवाज्ञाकारी है तो हम ईश्वर को नोट करने के लिये नकद है जब हमने उन शर्तो को पूरा नहीं किया है जो हमारे लिये देय होगी। हम ईश्वर को उनके वादे पेश करते है और उन्हें ऐसा करने के लिये कहते है, जब वह ऐसा करता है तो वह अपना नाम बदनाम करेगा। COLHin 103.1

वादा है, “यदि तुम मुझमे बने रहे और मेरी बाते तुममें बनी रहे तो जो चाहे मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जायेगा। (यहून्ना 15:7)। और यहून्ना घोषणा करना है, यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानोगें, तो इससे हम जान लेगे कि हम उसे जान गये है। जो कोई कहता है वह उसे जानता है और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता है, वह झूठा है, उसमें सत्य नहीं है। लेकिन जो कोई उसके वचन को मानता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है।” (1 यहून्ना 2:3-5)। COLHin 103.2

उनके शिष्यों के लिये अंतिम आज्ञाओं में से एक था, “एक-दूसरे से प्रेम करो, जैसे कि मैंने तुमसे प्रेम किया है। (यहून्ना 13:34) क्या हम इस आज्ञा का पालन करते है या हम चरित्र के तीखे, अनपेक्षित लक्षणों का आनन्द लेते है? अगर हम किसी भी तरह से दुखी या घायल हुये है तो यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी गलती कबूल करें और सुलह की तलाश करें। COLHin 103.3

यह एक आवश्यक तैयारी है जो हम विश्वास में ईश्वर से पहले आ सकते है, उनका आशीर्वाद मांगने के लिये। COLHin 103.4

प्रार्थना में प्रभु की तलाश करने वालों द्वारा अक्सर अपेक्षित किया गया एक और मामला है। क्या आप ईश्वर के प्रति ईमानदार रहे है? नबी द्वारा, ईश्वर ने घोषणा की, “अपने पुरखाओं के दिनों से तुम लोग मेरी विधि यों से हटते आये हो और उनका पालन नहीं करते। तुम मेरी ओर फिरो। तब मैं तुम्हारी ओर फिरूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, परन्तु तुम पूछते हो कि हम किस बात से फिरे । क्या मनुष्य ईश्वर को धोखा दे सकता है? देखों तुम मुझको धोखा देता है, तो भी पछते है। कि हमने किस बात में तुझे लूटा है। दशमांश और उठाने की भेटों मे। (मलाकी 3:7, 8)। COLHin 103.5

हर आशीर्वाद दाता के रूप में, ईश्वर हम सभी के एक निश्चित हिस्से का दावा करते है। इस सुसमाचार के प्रचार को बनाये रखने का उसका प्रावधान है। परमेश्वर के पास यह वापसी करके, हमे उसकी भेटों की सराहना करनी चाहिये। लेकिन अगर हम उससे पीछे हटते है, जो उसका अपना है, तो हम उसके आशीर्वाद का दावा कैसे कर सकते है। अगर हम सांसरिक चीजों के प्रति बेइमान है, हम उनसे स्वर्ग की चीजों को सौपने की उम्मीद कैसे कर सकते है? यह यहां हो सकता है कि बिना अनुत्तर प्रार्थना के रहस्य है। COLHin 104.1

लेकिन उसकी दया में प्रभु क्षमा करने के लिये तैयार है, और वह कहता है "सारे दशमांश भण्डार में ले आओं कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहेकृकृकृऐसा करके मुझे परखों कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोल कर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नहीं। मैं तुम्हारे नाश करने वाले को ऐसे घुड़दूंगा कि तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा, और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेगेंकृकृकृतब सारी जातियां तुम को धन्य कहेगी, क्योंकि तुम्हारी देश मनोहर देश होगा। सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (मलाकी 3:10-12) COLHin 104.2

तो यह ईश्वर की आवश्यकताओं में से हर एक के साथ है। आज्ञाकारिता की शर्त पर उनके सभी उपहारो का वादा किया जाता है। ईश्वर के पास उन लोगों के लिये आशीर्वाद से भरा स्वर्ग है जो उनके साथ सहयोग करेगे। जो सभी उसका विश्वास करते है वे अपने वादों को पूरा करने का दावा कर सकते है। लेकिन हमें ईश्वर पर एक दष्ढ़ अटूट विश्वास दिखाना चाहिये। अक्सर वह हमारे विश्वास का जवाब देने के लिये या हमारी इच्छा की वास्तविकता का परीक्षण करने के लिये हमें विश्वास करना चाहिये और हमारी याचिकाओं को एक दष्ढ़ संकल्प के साथ दबावा चाहिये जिसे अस्वीकर नहीं किया जायेगा। COLHin 104.3

ईश्वर कहता है कि एक बार मांगो और आपको मिलेगा। वह चाहता है कि हम उससे प्रार्थना में लगातार मांगते रहने से याचिकाओं और अधिक विनम्र रवैयों में आ जाता है और उसे उन चीजों को प्राप्त करने की इच्छा बढ़ जाती है जिसके वह पूछता है मसीह ने लाजर की कब्र पर मारथा से कहा, यदि तुम विश्वास करते हो तो तुम्हें ईश्वर की महिमा को देखना चाहिये। (यहून्ना 11:40) | COLHin 105.1

लेकिन बहुतों का विश्वास नहीं है। यही कारण है कि ईश्वर की शक्ति को अधिक नही देखते है। उनकी कमजोरी उनके अविश्वास का परिणाम है। उन्हें स्वंय के काम में अधिक विश्वास है, उनके लिये ईश्वर के काम में है। वे खुद को स्वंय में रखने है, वे योजना बनाते हैं और वसीयत करते है लेकिन प्रार्थना करते है, और ईश्वर पर बहुत कम भरोसा करते है, उन्हें लगता है कि उनके पास विश्वास है, लेकिन क्षण का आवेग है। अपनी स्वंय की आवश्यकता का एहसास करने में या देने की ईश्वर की इच्छा के अनुसार, वे प्रभु के सामने अपना अनुरोध रखने में दृढ़ता नहीं करते है। COLHin 105.2

हमारी प्रार्थनायें उतनी ही ईमानदारी और दष्ढ़ता के साथ होनी चाहिये, जितना उसे होनी चाहिये जितनी उस जरूरमंद मित्रा की याचिका थी जिसने आधी रात को रोटियां मांगी थी। हम जितना अधिक ईमानदारी और दष्ढ़ता से पूछेगे, उतना ही मसीह के साथ हमारा अध्यात्मिक मिलन होगा। हमें बढ़ा हुआ आशीर्वाद प्राप्त होगा, क्योंकि हमने विश्वास बढ़ाया है। COLHin 105.3

हमारा हिस्सा प्रार्थना और विश्वास करना है। प्रार्थना के लिये देखो और प्रार्थना ईश्वर की सुनवाई के साथ सहयोग करते है। ध्यान रखे कि "हम ईश्वर के साथ मिलकर मजदूर है। (यहून्ना 3:9)। अपनी प्रार्थनाओं के अनुरूप बोले और कार्य करें यह आपके साथ एक अनन्त अंतर बना देगा कि क्या परीक्षण आपके विश्वास को वास्तविक साबित करेगा या ये दिखायेगा कि आपकी प्रार्थना केवल एक रूप है। COLHin 105.4

जब समस्यायें पैदा होती है और कठिनाई आपसे टकराती है, तो मानवता की मदद के लिये। सभी ईश्वर पर भरोसा रखे। दूसरों को हमारी कठिनाईयों को दूर करने का अभ्यास ही हमें कमजोर बनाता है और उनके लिये कोई ताकत नहीं है। यह उन पर हमारी अध्यात्मिक दुर्बलताओं का बोझ डालता है, जिन्हें वे दूर नहीं कर सकते। हम अयोग्य, अनन्त ईश्वर की शक्ति हो सकती है, जब हम व्यक्ति को परेशान करने की कोशिश करते COLHin 105.5

तुम्हें ज्ञान के लिये पष्थ्वी के छोर पर जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि परमेश्वर निकट है। यह वह क्षमता नहीं है जो अब आपके पास है या आपके पास कभी होगी जो आपको सफलता दिलायेगी। यह वह है जो प्रभु आपके लिये कर सकता है। हमें विश्वास करने की आवश्यकता है कि मनुष्य क्या कर सकता है और हर विश्वास करने वाली आत्मा के लिये परमेश्वर क्या कर सकता है। वह विश्वास के द्वारा आपके पास पहंचने की लालसा रखता है। वह आपके पास उनसे महान चीजों की अपेक्षा करना चाहता है। वह आपको लौकिक के साथ-साथ अध्यात्मिक मामलों में भी समझने के लिये तरसता है। वह बुद्धि को तेज कर सकता है। वह युक्ति और कौशल दे सकता है। अपनी प्रतिभा को काम में लाये, ईश्वर से ज्ञान मांगे और यह आपको दिया जायेगा। COLHin 106.1

मसीह के वचन को अपने आश्वासन के रूप में ले। क्या उसने आपको अपने पास आने का निमंत्रण नहीं दिया है। कभी भी अपने आप को निराशाजनक, हतोत्साहित तरीके से बात करने की अनुमति न दे। यदि आप करते है तो आप बहुत कुछ खो देगें। उपस्थिति और शिकायत देखकर जब कठिनाईयों और दबाव आते है, तो आप एक बीमार प्रबुद्ध विश्वास का प्रमाण देते है। बात करें और कार्य करे जैसे कि आपका विश्वास अजेय है। प्रभु संसाधनों में समष्द्ध है, वह दुनियां का मालिक है। आस्था में स्वर्ग देखो उसे देखो जिसके पास प्रकाश, शक्ति और दक्षता है। COLHin 106.2

वास्तविक विश्वास में एक उछाल है, सिद्धान्त की एक निरंतरता है और उददेश्य की एक निश्चिंतता है कि न तो समय और न ही परिश्रम कमजोर हो सकता है। “यहां तक कि युवा बेहोश हो जायेगें और थके हुये होगे और जवान पूरी तरह से विफल होंगे। लेकिन वे इन्तजार करेंगे कि वे प्रभु को अपनी ताकत का नवीनीकरण करे, वे गिदद के समान उड़ेगे, वे दौड़ेगे और भ्रमित न होगे, चलेगे और बेहोश न होगें। (यशायाह 40:30, 31) COLHin 106.3

बहुत से ऐसे है जो दूसरों की मदद करना चाहते है, लेकिन उन्हें लगता है कि उनके पास कोई अध्यात्मिक शक्ति या प्रकाश नहीं है। उन्हें अनुग्रह के सिंहासन पर अपनी याचिकायें प्रस्तुत करने दे। पवित्र आत्मा के लिये निवेदन करें। ईश्वर ने अपने किये हर वादे को पूरा किया। आपके हाथों में आपकी बाईबल के साथ, मैं ने ऐसा किया है, जैसे कि तूने कहा हैं। मैं ने तेरा वादा प्रस्तुत किया, “मांगो तो उन्हें तुम्हे दिया जायेगा, ढूंढो और तुम पाओगे, खट-खटाओं और तुम्हारे लिये खोला जायेगा।” COLHin 106.4

हमें न केवल मसीह के नाम में, बल्कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से प्रार्थना करनी चाहिये । यह बताता है कि इसका क्या मतलब जब वह कहा जाता है कि “आत्मा हमारे लिये दुख के साथ हस्तक्षेप करती है, जिसे खत्म नहीं किया जा सकता है।” (रोमियों 8:26)। ऐसी प्रार्थना का जबाव देने के लिये ईश्वर प्रसन्न होत है। जब निष्ठा और तीव्रता के साथ हम मसीह के नाम से प्रार्थना करते है, तो ईष्वर से वह तीव्रता आती है जो हमारी प्रार्थना का उत्तर देने के लिये है, “जो हम पूछते है या सोचते है, उससे अधिक है।” (इफिसियों 3:20) COLHin 107.1

मसीह ने कहा है, “जो कुछ तुम प्रार्थना में मांगो तो प्रतीति कर लो कि तुम्हे मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जायेगा।” (मरकुस 11:24) पवित्र आत्मा की प्रेरणा के तहत प्रिय यहून्ना, बड़ी स्पष्टता और आश्वासन के साथ बोलता है, “इन बातों के बाद, वह यीशु को मंदिर में मिला, तब उसने उससे कहा, देख तू तो चंगा हो गया है, फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े। उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया। जिसने मुझे चंगा किया, वो यीशु है। (यहून्ना 5:14, 15) फिर यीशु के नाम से पिता के लिये अपनी याचिकायें बढ़ाई। ईश्वर उस नाम सम्मान करेगे। COLHin 107.2

सिंहासन के बारे में इन्द्रधनुषी राउंड एक आश्वासन है कि ईश्वर सत्य है जो कि उसमें न तो परिवर्तन शीलता है, और न ही मोड़ की छाया हमने उसके खिलाफ पाप किया है, और उसके पक्ष में आवंछनीय है। अभी तक उसने खुद को हमारे होठों में डाल दिया है कि सबसे अद्‌भुत दलील है, “महिमा मत करो, याद रखो, हमारे लिये तुम्हारी वाचा नहीं तोड़ना।” (यिर्मयाह 14:21) जब हम अपनी अयोग्यता और पाप को स्वीकार करते हुये उसके पास आते है तो उसने अपने आप को हमारे रोने पर ध्यान देने की प्रतिज्ञा की है। उनके सिंहासन का सम्मान हमारे लिये उनके वचन को पूर्ति के लिये है। COLHin 107.3

हारून की तरह, जो मसीह का प्रतीक था, हमारे मुक्तिदाता ने पवित्र स्थान पर अपने सभी लोगों के नाम, उनके दिल पर रखों। हमारे उच्च पुजारी उन सभी शसब्दों को याद करते हैं जिनके द्वारा हमें विश्वास करने के लिये प्रोत्साहित किया है। वह कभी अपनी वाचा के प्रति सचेत रहता है। COLHin 108.1

उसके चाहने वाले सभी मिल जायेंगे। सभी जो दस्तक देगे, उनके लिये दरवाजा खोला जायेगा। बहाना नहीं बनाया जायेगा। मुझे परेशानी नहीं है। दरवाजा बन्द है, मैं इसे खोलना नहीं चाहता। कभी किसी को नहीं बताया जायेगा, मैं आपकी मदद नहीं कर सकता। भूखी आत्माओं को भोजन कराने के लिये रोटियों के लिये आधी रात को बिस्तर लगाने वाले सफल होंगे। COLHin 108.2

दष्टान्त में, वह जो अजनबी के लिये रोटी मांगता है, उसे "जितने की आवश्यकता है वह प्राप्त करता है। और किस उपाय में परमेश्वर हमें यह बतायेगा कि हम दूसरों को प्रदान कर सकते है? "मसीह के उपहारों के माप के अनुसार ।" (इफिसियों 4:7) स्वर्गदूत गहन रूचि के साथ देख रहे है कि आदमी अपने साथी पुरूषों के साथ कैसा व्यवहार कर रहा है। जब वे एक प्रकार मसीह के प्रति सहानुभूति प्रकट करते है तो वे उसकी तरफ दबाते है कि आत्मा के लिये जीवन की रोटी होगी। तो "परमेश्वर मसीह यीशु द्वारा महिमा के अपने धन के अनुसार अपनी सभी जरूरत की आपूर्ति करेगा।" (फिलिपियों 4:9) आपको गवाही इसकी वास्तविक्ता और वास्तविक्ता है कि वह आने वाले जीवन की शक्ति में शक्तिशाली बना देगा। प्रभु का वचन सत्य और और धार्मिकता के रूप में आपके मुहँ में होगा। COLHin 108.3

दूसरों के लिये व्यक्तिगत प्रयास बहुत गुप्त प्रार्थना से पहले होना चाहिये। इसके लिये आत्माओं को बचाने के विज्ञान को समझने के लिये महान ज्ञान की आवश्यकता होते है। पुरूषों के साथ संवाद करने से पहले, मसीह के साथ बातचीत करें। स्वर्गीय अनुग्रह के सिंहासन पर लोगों को राज्य करने की तैयारी मिलती है। COLHin 108.4

अपने दिल को ईश्वर की लालसा के लिये, जीवित ईश्वर के लिये जोड़ दो। मसीह के जीवन ने दिखाया है कि मानवता ईश्वरीय प्रकर्षत का हिस्सा बनकर क्या कर सकती है। वह सब कुछ जो मसीह ने परमेश्वर से प्राप्त क्या, हमारे पास भी हो सकता है। फिर पूछे और प्राप्त करें। एलिय्याह की अटूट दष्ढ़ता के साथ, याकूब के दष्ढ़ विश्वास साथ के ईश्वर ने जो वादा किया है, वह सब अपने अपने लिये दावा करें। COLHin 108.5

ईश्वर की गौरवशाली धाराणाओं को अपने मन के पास रहने दे। यीशु के जीवन के लिये छिपे हुये लिंक से अपने जीवन को बनने दो। वह जिसने प्रकाश को अंधरे से बाहर चमकने की आज्ञा दी, वह आपके हष्दय में चमकने को तैयार है, यीशु मसीह के चेहरे में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान का प्रकाश देने के लिये। पवित्र आत्मा परमेश्वर की बातों को लेगा और उन्हें आप को दिखायेगा,

उन्हें आज्ञाकारी हृष्दय में एक जीवित शक्ति के रूप में व्यक्त करेगा। मसीह आपको अनन्त की दहलीज तक ले जायगा। आप चूंघट से परे महिमा देख सकते है, और उन लोगों की क्षमता को प्रकट कर सकते है जो कभी भी अंत करण बनाने के लिये जीवित रहते है। COLHin 109.1

अध्याय 13 - दो उपासक

“यह अध्याय लूका 18:9-14 पर आधारित है’

निश्चित रूप से जो खुद पर भरोसा करते थे कि वे धर्मी है, और दूसरों को तिरस्कप्त करते है, “मसीह ने फरीसों और जनता के दष्टान्त की बात कही। फरीसी मंदिर में आराधना करने के लिये ऊपर जाता है, इसलिये नहीं कि उसे लगता है कि क्षमा की आवश्यकता में पापी है, लेकिन क्योंकि वह खुद को धर्मी समझता है और प्रशंसा जीतने की आशा करता है। उसकी उपासना वह योग्यता के कार्य के रूप मानता है जो उसे ईश्वर के लिये सुझायेगा। साथ ही यह लोगों को उसकी धर्म परायणता के बारे में उच्च राय देगा और मनुष्य की उपासना स्वार्थ से प्रेरित होती है। COLHin 110.1

और वह आत्म प्रशंसा से भरा है। वह उसे देखता है, चलता है और प्रार्थना करता है। दूसरों से अलग होकर यह कहना कि “मेरे पास न आओ, क्योंकि मैं तुमसे पवित्र हूँ” (यशायाह 65:5) वह खड़ा है और प्रार्थना करता है, “स्वयं के साथ” पूरी तरह से सन्तुष्ट, वह सोचता है कि ईश्वर और पुरूष उसे उसी शालीनता से मानता है। COLHin 110.2

“ईश्वर मैं आपकों धन्यवाद देता हूँ “वह कहते हैं, “मैं अन्य पुरूषों के रूप में नहीं है, जबरन वसूली करने वाले, अन्यायी, व्यभिचारी या यहां तक कि इस प्रचारक के रूप में। वह अपने चरित्र का न्याय करता है, ईश्वर के पवित्र चरित्र द्वारा नहीं, अन्य पुरूषों के चरि द्वारा। उसका ईश्वर से मानवता से दूर हो जाता है। यही उसकी आत्म—सन्तुष्टी कर रहस्य है। COLHin 110.3

वह अपने अच्छे कामों को याद करने के लिये आगे बढ़ता है, “मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ, मैं उन सभी चीजों को देता हूँ, जो मेरे पास है। “फरीसी का धर्म आत्मा को नहीं छूता है। वह चरित्र की ईश्वरीयता की तलाश नहीं कर है, एक प्यार से भरा दिल । वह एक ऐसे ६ गर्म से सन्तुष्ट है जिसे केवल बाहरी जीवन के साथ करना है। उसकी ६ पार्मिकता उसकी खुद की है उसके अपने कामों का फल और एक मानवीय मानक द्वारा आंका जाता है। COLHin 110.4

जो अपने आप पर भरोसा करता है, वही धर्मी है, दूसरों का तिरस्कार करेगा। जैसा कि फरीसी अन्य पुरूषों द्वारा खुद को जज करता है, इसलिये वह अन्य पुरूषों को खुद से जज करता है। उनकी धार्मिकता का अनुमान उनके द्वारा किया जाता है, उनके द्वारा दिखाई देने वाले विरोध भासी से वे अधिक सही है। उसकी आत्म—धार्मिकता आरोप लगाने की ओर ले जाती है। “अन्य पुरूष” वह ईश्वर के कानून के अपराधियों के रूप में निन्दा करता हैं। COLHin 111.1

इस प्रकार यह शैतान के अभियुक्त शैतान की आत्मा को प्रकट कर रहा है। इस भावना के लिये ईश्वर के साथ साम्य में प्रवेश करना अंसम्भव है। वह दिव्य आशीर्वाद के अपने घर निराश्रित हो जाता है। COLHin 111.2

प्रचारक अन्य उपासकों के साथ मंदिर गये थे, लेकिन उन्होंने जल्द ही उनके अलावा अपने भक्तों को एक जुंट करने के लिये अयोग्य समझ लिया। दूर खड़े होकर वह स्वर्ग की ओर अतनी ऊंची आंखे नहीं उठायेगा, लेकिन अपनी छाती पीटेगा "कड़ी पीड़ा और आत्म घष्णा में। उसने महसूस किया कि उसने परमेश्वर के खिलाफ अपराध किया है, वह पापी और प्रदूषित था। वह अपने आस-पास के लोगों से भी दया की उम्मीद नहीं कर सकता था क्योंकि उन्होंने उसे अवमानना की दषष्ट से देखा था। वह जानता था कि उसे पास ईश्वर की प्रशंसा करने के लिये कोई योग्यता नहीं है, और पूरी तरह से निराशा में वह रोता, ईश्वर मुझ पापी पर दया करें।" उसने अपनी तुलना दूसरो नहीं की। अपराध की भावना से अभिभूत वह ऐसे खड़ा था जैसे ईश्वर की उपस्थिति में अकेला हो। उसकी एकमात्र इच्छा क्षमा और शांति के लिये थी। उनकी एक मात्र याचिका ईश्वर की दया थी। और वह धन्य हो गया, मैं आपको बताता हूँ "मसीह ने कहा' यह आदमी दूसरों के बजाय अपने घर में जायज था। COLHin 111.3

फरीसी और प्रचारक को महान वर्गों का प्रतिनिधित्व करते है जिनमें ईश्वर की आराधना करने के लिये आने वालों को विभाजित किया जाता है। उनके पहले दो प्रतिनिधि पहले दो बच्चों में पाये जाते है, जो इस दुनिया में पैदा हुये थे, कैन ने खुद को धर्मी समझा और वह केवल धन्यवाद प्रस्ताव के साथ ईश्वर के पास आये। उनके पाप की कोई स्वाकरोक्ति नहीं की, और दया की कोई आवश्यकता स्वीकार नहीं की। लेकिन हाबिल इस खून के साथ आया जो ईश्वर के मेम्ने को ईशारा करता था। वह एक पापी के रूप में आया, कबूल किया, खुद को खो दिया, उसकी एक मात्र आशा ईश्वर के प्रति असीम प्रेम था। प्रभु के पास इस भेंट का सम्मान था, लेकिन कैन और उनकी देशकाश के लिये उनके पास कोई सम्मान नही था। आवश्यकता की भावना, हमारे पापों और पाप की पहचान, ईश्वर के साथ स्वीकषत की पहली शर्त है। धन्य आत्मा में गरीब है क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। (मत्ती 5:3) COLHin 111.4

फरीसी और जनता द्वारा प्रतिनिधित्व किये गये प्रत्येक जाति के लिये प्रेरित पतरस के इतिहास में एक सबक है। अपने शुरूआती शिष्यतव में पतरस ने खुद को मजबूत माना। फरीसी की तरह, अपने स्वंय के अनुमान में वह "अन्य पुरूषों के समान नहीं थे' जब उसके विश्वासघात की पूर्व संध्या पर मसीह ने अपने चेलों को मना किया, "इस रात मेरे कारण तुम सब नाराज हो जाओंगे' पतरस ने आत्मविश्वास से घोषणा की, "सभी ने बुरा माना, फिर भी मैं नहीं करूंगा' (मरकुस 14:27,28) पतरस को खुद के खतरे का पता नहीं था। आत्मविश्वास ने उसे गुमराह किया। COLHin 112.1

उसने खुद को प्रलोभन झेलने में सक्षम समझा, लेकिन कुछ ही घंटों में परीक्षण आ गया, और श्राप और शपथ के साथ उन्होंने अपने ईश्वर को मना कर दिया। COLHin 112.2

जब मुर्गो की बांग ने मसीह के शब्दों की याद दिलाई, तो वह आश्चर्यचकित और हैरान हो गया कि उसने अभी क्या किया था और उसने अपने स्वामी की ओर देखा। उस क्षण में मसीह ने पतरस को देखा और उस शोकग्रस्त नजर के नीचे, जिसमें उसके लिया दया और प्रेम मिश्रित थे, पतरस ने खुद को समझा। वह बाहर गया और फूट-फूट कर रोने लगा। मसीह के उस रूप ने उसका दिल तोड़ दिया। पतरस निर्णायक मोड़ पर आया गया था, उसने अपने पाप पर पश्चाताप किया। वह अपने संर्घष और पश्चाताप में जनता की तरह था और जनता की तरह उसे दया मिली। मसीह के रूप में उसे क्षमा का आश्वासन दिया। COLHin 112.3

अब उसका आत्म—विश्वास डोल गया था। फिर कभी पुराने घंमड भरे कथनों को दोहराया नहीं गया। COLHin 112.4

मसीह के पुनरूत्थान के बाद मसीह ने पतरस का परीक्षण किया। शिमौन, यौना का बेटा, उन्होंने कहा, "इनसे अधिक मुझसे प्रेम करते है?" पतरस ने जब अपने भाईयों के ऊपर खुद को नहीं छोड़ा। उन्होंने अपने दिल की बताई पढ़ने वाले से बिनती की। "ईश्वर" उन्होंने कहा, "आप सभी चीजों को जानते है, आप जानते है कि मैं आपसे प्यार करता है। (यहून्ना 21:15, 17) COLHin 113.1

तब उन्होंने मेहनताना प्राप्त किया। एक काम व्यापक और अधिक नाजूक था, यहां उनके लिये नियुक्त किया गया था। मसीह ने उसे भेड़ और भेड़ के बच्चों को खिलाया। इस प्रकार अपनी निष्ठुर आत्माओं के प्रतिबद्ध, जिनके लिये उद्धारकर्ता ने अपना जीवन लगा दिया था। मसीह ने अपनी बहाली में विश्वास का सबसे मजबूत सबूत पतरस को दिया। एक बार बैचेन, घंमडी, और आत्मविश्वासी शिष्य वशीभूत और विपरीत हो गया था। इसके बाद उन्होंने आत्म त्याग और आत्म बलिदान में अपने प्रभु का अनुसरण किया। वह मसीह के कष्टों का भागी था, जब मसीह उसके महिमा के सिंहासन पर बैठेगा तो पतरस उसकी महिमा का भागीदार होगा। COLHin 113.2

पतरस के पतन और उस फरीसी को ईश्वर के साथ के लिये इतना की बुराई आज हजारों को बर्बाद कर रही है। ईश्वर के लिये इतना आक्रमक या मानव आत्मा के लिये इतना खतरनाक नहीं है जितना गर्व और आत्म निर्भरता। सभी पापों में से सबसे निराशाजनक और सबसे लाइलाज हैं। COLHin 113.3

पतरस का पतन तत्कालिक नहीं था, लेकिन धीरे-धीरे हुआ। आत्म-विश्वास ने उसे इस विश्वास के लिये प्रेरित किया कि वह बच गया था और हर कदम नीचे ले जाया गया जब तक कि वह अपने मास्टर से इन्कार नहीं कर सका। कभी हम सुरक्षित रूप से स्वयं पर या महसूस नहीं कर सकते। COLHin 113.4

स्वर्ग के इस पक्ष को हम प्रलोभन के खिलाफ सुरक्षित है। जो लोग उद्धारकर्ता को स्वीकार करते है। हांलाकि वे अपने रुपांतरण को ईमादारी से करते है। उन्हे कभी भी यह कहने या महसूस

करने के लिये सिखाया जाना चाहिये कि वे बच गये है। यह भ्रमक है। हर एक को आशा और विश्वास को संजोना सीखना चाहिये लेकिन तब भी हम खुद को मसीह के लिये देते है, और जानते है। कि हमें स्वीकार करता है। हम प्रलोभन को पहॅच से परे नहीं है। परमेश्वर का वचन घोषित करता है। बहुतो को शुद्ध किया जायेगा और सफेद बनाया जायेगा और कोशिश की जोयेगी (दानियल 12:10)1केवल यह जो मुकदमें का अन्त करना है।, और अपने पहले विश्वास में कहते है। में बच गया हूँ। खुद पर भरोसा करने का खतरा है। अपनी कमजोरी की दृष्टि खो देते है। देवीय शक्ति निरंतर आवश्यता होती है व शैतान के उपकरणों के लिये तैयार नहीं है। और कई प्रलाभनो के तहत, पतरस की तरह पाप की गहराई में गिर जाते है। हम निश्चित है “उसे लगता है कि वह सोचता है कि वह खड़ा है ऐसा न हो कि वह गिर जाये।” (कुरिन्थियों 10:12)। हमारी एक मात्र सुरक्षिता स्वंय पर निर्भरता है। COLHin 113.5

पतरस के लिए चरित्र के अपने दोषो को सीखना आवश्यक था और मसीह की शक्ति और अनुग्रह की उनकी आवश्यकता थी। प्रभु उसे मुकदमें से नही बचा सकते थे लेकिन वह उसे हार से बचा सकता था। यदि पतरस मसीह की चेतावनी प्राप्त करने के लिए तैयार था, तो वह प्रार्थना के लिए तैयार था, तो वह प्रार्थना के लिए देख रहा था। वह डर से कांप गया होगा और उसके पैर कपकपा रहे थे और उसे दिव्य सहायता मिली होगी ताकि शैतान को विजय न मिल सके। COLHin 114.1

यह आत्म निर्भरता के माध्यम से था कि पतरस गिर गया और यह पश्चाताप और अपमान के माध्यम से था कि उसकी भावना फिर से स्थापित हो गयी । अपने अनुभव के रिकार्ड में हर पश्चाताप करने वाले की प्रोत्साहन मिल सकता है। हांलाकि पतरस ने बहुत पाप किया, फिर भी वह पीछे नही हटे। मसीह के शब्दो को उसकी आत्मा पर लिखा था “मैं ने तुम्हारे लिए प्रार्थना की, कि तुम्हारा विश्वास विफल न हो” (लूका 22:32) पश्चाताप की उसकी कड़वी पीड़ा में इस प्रार्थना और मसीह के प्यार और दया की स्मृति ने उसे आशा दी। मसीह के पुनरूत्थान के बाद, पतरस को याद आया और उसने दूत को महिलाओं के लिए संदेश दिया “अपने रास्ते जाओं अपने शिष्यों और पतरस को बताओं कि वह तुम्हे गलील में जाने से पहले जाने देता। वहाँ तुम उसे देखागें’ (मरकुस 16:7) पतरस के उद्धारकर्ता पतरस के पश्चात को स्वीकार कर लिया। COLHin 114.2

और पतरस को छुडाने के लिए निकली उस आत्मा तक फैली हुई है जो प्रलोभन में पड़ी हुई है। मनुष्य को पाप में ले जाने के लिए शैतान का विशेष उपकरण है और फिर उसे क्षमा करने के लिए लाचार, असहाय और कॉपते हुए छोड दे। COLHin 114.3

लेकिन हमे क्यों डरना चाहिए, जब ईश्वर ने कहा है, “उसे मेरी ताकत पकड लेने दो कि वह मेरे साथ शांन्ति बना सके और वह मेरे साथ शान्ति बनाये रखेगा ” (यशामाह 21:5), हमारी

दुर्बलताओं के लिए हर प्रावध गान किया गया है हर प्रोत्साहन ने हमे मसीह में आने की पेशकर की। COLHin 115.1

मसीह ने अपने टूटे हुए शरीर को ईश्वर की विरासत को वापस खरीदने के लिए मनुष्य को एक और परीक्षण देने के लिए पेश किया। "इसके अलावा वह उन्हे पूरी तरह से बचाने में सक्षम है जो उनके द्वारा ईश्वर के पास आते है यह देखते हुए कि वह कभी भी उनके हस्तक्षेप करने के लिए जीवित रहते है।" (इब्रानियो 7:25) उनके बेदाग जीवन, उनकी आज्ञाकारिता, कलवरी के कूस पर उनकी मृत्यु हमारे द्वारा के कप्तान मसीह हमारे लिए हस्तक्षेप करते है, लेकिन एक विजेता के रूप में उनकी जीत का दाव करते है। उनकी पेशकश पूरी हो गयी है। एक दास जो हमारे अंरमयामी है वे अपन स्वःनियोजित कार्य को ईश्वर के समक्ष रखने का कार्य करते है, जिसमें उनके स्वय के निर्दोष गुण और प्रार्थना, स्वीकारोकित, और उनके लोगों का धन्यवाद, उसकी धार्मिकता की खुशबू से सुगंधित ये एक मधुर स्वाद के रूप में ईश्वर को देते है। यह पेशकश पूरी तरह से स्वीकार्य है और क्षमा सभी संक्रमण को कवर करती है। COLHin 115.2

मसीह ने अपने आप को हमारे विकल्प और सुनिश्चितता के लिए प्रतिज्ञा की है वह किसी की उपेक्षा नही करता है। वह जो अपनी आत्मा को अपनी ओर से मरने के बिना शाश्वत खंडहर के सम्पर्क में आने वाले मनुष्यों को नही देख सकता था वह प्रत्येक आत्मा को दया और करूणा के साथ देखेगा जिसे पता चलता है कि वह खुद को बचा नही सकता है। COLHin 115.3

वह उसे उठाये बिना कोई कांपता हुए दबाने वाला यंत्र की तलाश करेगा। वह जो अपने स्वंय के प्रायश्चित के माध्यम से मनुष्य को नैतिक शक्ति का एक असीम कोष प्रदान करता है वह इस शक्ति को हमरो बेहाल में नियोजित करने में विफल नहीं होगा। हम अपने पापो और दुखा को उसके पैरों तक लजा सकते है, वह हमे प्यार करता है। उनके हर रूप और शब्द हमारे आत्म विश्वास आमंत्रित करता हैं वह मर्जी के अनुसार हमारे पात्रों आकार और ढालेगें। COLHin 115.4

पूरे शैतानी बल में एक आत्मा पर काबू पाने की उम्मीद नही है जो साधारण विश्वास ने खुद को मसीह पर डालती है। "वह बेहोश करने की शक्ति देता है और उनके पास जो ताकत नही है वह बढा सकता है। (यशायाह 40:29) COLHin 116.1

"यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते है तो वह विश्वास योग्य है। हमे हमारे पापों को क्षमा करने के लिए और हमे सभी अधर्म से शुद्ध करने के लिए है। प्रभु कहते है। "केवल वह अपने अधर्म को स्वीकार करो कि तुमने अपने ईश्वर के खिलाफ अपराध किया "तब मैं तुम पर स्वच्छ जल छिडकंगा, तुम स्वच्छ रहोगें। तुम्हारी सारी गंदगी और तुम्हारी सारी मूर्तियों से में तुम्हें शुद्ध कर दूंगा। (यहून्ना 1:9, यिर्मयाह 3:13, यहेजकेल 36:25) COLHin 116.2

लेकिन हमें खुद का ज्ञान होना चाहिये, एक ऐसा ज्ञान जिसके परिणामस्वरूप हमें क्षमा और शांति मिल सकती हैं। फरीसी को पाप का कोई दोष नहीं लगा। पवित्र आत्मा उसके साथ काम

नहीं कर सकता था। उसकी आत्मा एक स्वंय के कवच में बंधी हुई थी जिसे ईश्वर के बाण कंटीले और सच्चे हाथों से स्वर्गदूत के हाथों द्वारा भेद दिया गया था। ये केवल वह है जो खुद को पापी जानता है जिसे मसीह बचा सकता है। वह "टूटे हुये को ठीक करने के लिये, बन्धुओं की सुपुर्दगी देने के लिये, और अंधे को दृष्टि से उबरने के लिये, उन्हें आजाद करने के लिये स्वतंत्र करने के लिये आया था। (लूका 4:18) लेकिन वे जो पूरी तरह से मसीह की मदद की हमारी जरूरत को महसूस नहीं करते है। हमें अपने घावों के दर्द को महसूस करना चाहिये, या हम इच्छा चिकित्सा नहीं करते है। COLHin 116.3

यहोवा कहता है, "क्योंकि तुम कहते, मैं धनी हूँ और सामानों के साथ बढ़ा हूँ और कुछ भी नहीं की आवश्यकता है, और यह नहीं जानते है कि तू विद्वान है, और दयनीय है और गरीब है और अंधा है और नग्न है, मैं तुझे खरीदने की सलाह देते है कि आग मे ताया हुआ सोना मुझे मोल ले कि धनी हो जायें। श्वेत वस्त्र ले ले कि पहनकर तुझे नंगेपन की लज्जा न हो, और अपनी आंखो में लगाने के सूर्मा ले, कि तू देखने लगे। (प्रकाशवाक्य 3:17, 18) आग में आजमाया गया सोना विश्वास है जो प्यार से काम करता है, केवल यही हमें ईश्वर के साथ सद्भाव में ला सकता है। हम सक्रिय हो सकते है, हम बहुत काम कर सकते है, लेकिन प्यार के बिना, ऐसा प्यार मसीह के दिल में हो गया। हम स्वर्ग के परिवार के साथ कभी भी गिने नहीं जा सकते। COLHin 116.4

कोई भी आदमी खुद अपनी त्रुटियों को नहीं समझ सकता। "दिल से सभी चीजों से ऊपर धोखेबाज है और बुरी तरह से दुष्ट है, यह कौन जान सकता है' (मिर्ययाह 17:9) होंठ आत्मा की गरबी को व्यक्त कर सकते है जिसे हष्दय स्वीकार नहीं करता। आत्मा की गरीबी की बात करते हये हष्दय अपनी श्रेष्ठ विनम्रता और उत्तम धार्मिकता के बैंह से भर सकता है। एक तरह से केवल स्वयं का एक सच्चा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। हमें मसीह को देखना चाहिये। यह उसकी अज्ञानता है जो पुरूषों को अपने स्वयं के कठोरता में उत्थान करता है। जब हम उसकी पवित्रता और उत्कष्ठता पर विचार करते है, तो हम अपनी कमजोरी और गरीबी और दोषी को देखेंगे, क्योंकि वे वास्तव में है। हम हर दूसरे पापी की तरह खुद को खोये हुये और निराश और आत्म-धार्मिकता के कपड़ों में जकड़े हुये देखेगे। हम देखेंगे कि यदि हम कभी बच सकते है, तो यह हमारी अच्छाई नहीं होगी, बल्कि परमेश्वर की असीम कष्पा के माध्यम से होगी। COLHin 117.1

चुंगी लेन की प्रार्थना सुनी गई, क्योंकि इसने निर्भरता को सर्वव्यापीता पर पकड़ बनाने के लिये आगे दिखाया। खुद की चुंगी लेने वाले के सामने शर्म के अलावा कुछ नहीं दिखाई दिया। इस प्रकार यह उन सब को देखना चाहिये जो ईश्वर की तलाश करते है। विश्वास से विश्वास जो सभी आत्म-विश्वास को त्याग देता है-जरूरतमंदो को अनन्त शक्ति पर पकड़ बनाना है। COLHin 117.2

कोई भी बहारी निरीक्षण विश्वास और स्वयं के सम्पूर्ण त्याग का स्थान नहीं ले सकता है। लेकिन कोई भी आदमी स्वयं को खाली नहीं कर सकता। हम काम पूरा करने के लिये केवल मसीह के लिये सहमति दे सकते है। तब आत्मा की भाषा होगी, हे प्रभु, मेरा मन ले, क्योंकि मैं इसे नहीं दे सकता। यह आपकी सम्पत्ति है। इसे शुद्ध रखो, मेरा दिल ले लो, क्योंकि मैं इसे तुम्हारे लिये नहीं दे सकता। मुझे बचाओं, मुझे एक शुद्ध और पवित्र वातावरण में बढ़ाओं, जहां तुम्हारा प्रेम का समृद्ध प्रवाह मेरी आत्मा के माध्यम से बह सकता है। COLHin 117.3

यह केवल मसीह जीवन की शुरूआत में ही है कि स्वयं का यह त्याग करना है। स्वर्ग के हर अग्रिम कदम पर इसका नवीनीकरण किया जाना है। हमारे सभी अच्छे कार्य स्वंय के बाहर एक शक्ति पर निर्भर है। इसलिये परमेश्वर, एक नित्य के बाद हृदय से बाहर पहुंचाने के लिये नित्य होना चाहिये । बयाना, पाप और उसके सामने आत्मा की विनम्रता का दिल तोड़ने वाला कबूलनामा, केवल स्वंय के निरंतर त्याग और मसीह पर निर्भरता से ही हम सुरक्षित रूप से चल सकते है। COLHin 117.4

जितना निकट हम यीशु के पास होते है और उतने ही स्पष्ट रूप से हम उसके चरित्र की पवित्रता को समझते है। उतने ही स्पष्ट रूप से हम पाप की अधिकता को समझेंगे और उतना ही हम महसूस करेंगे जितना के हम स्वयं को उठाने में करेंगे। जिन्हें स्वर्ग पवित्र रूप में पहचानता है, वे अपनी अच्छाई दिखाने के लिये अंतिम है। प्रेरित पतरस मसीह का वफादार सेवक बन गया और उसे दिव्य प्रकाश और शक्ति से बहुत सम्मानित किया गया। मसीह की कलीसिया के निर्माण में उनका सक्रिय भाग था, लेकिन पतरस अपने अपमान के भयभीत अनुभव को कभी नहीं भूला, उसका क्षमा किया गया, फिर भी वह जानता था चरित्र की कमजोरी के कारण जो उसके पतन का कारण था केवल मसीह की कृपा की लाभ उठा सकती थी। उसने अपने आप में क्या पाया जिसमें महिमा है। COLHin 118.1

प्रेरित या भविष्यवक्ताओं में से किसी ने भी पाप के बिना होने का दावा नहीं किया। वे पुरूष जो ईश्वर के सबसे निकट रहते है, वे पुरूष जानबूझकर गलत कार्य करने के बजाय जीवन का बलिदान कर देते है। जिन पुरूषों को ईश्वर ने दिव्य प्रकाश और शक्ति से सम्मानित किया था, उन्होंने अपने स्वयं के स्वभाव के पाप को स्वीकार किया है। COLHin 118.2

उन्होंने देह में कोई विश्वास नहीं किया है, अपने स्वयं के धार्मिकता का दावा नहीं किया है, लेकिन मसीह की धार्मिकता में पूर्ण विश्वास किया है। तो क्या यह सब मसीह के साथ होगा। COLHin 118.3

मसीह अनुभव में हर अग्रिम कदम पर हमारा पश्चाताप गहराया। यह देहे है, जिसे यहोवा ने क्षमा किया है, जिन लोगों को वो अपने लोगों के रूप में स्वीकार करता है कि वह कहता है, “तब तुम अपने बुरे चाल चलन और अपने कामों को जो अच्छे नहीं थे, स्मरण करके अपने अधर्म और

घिनौना कामों के कारण अपने आप से घष्णा करोगे (यहेजकेल 36:31) और फिर वह कहता है, "मैं तेरे साथ अपनी वाचा स्थिर करूंगा, तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा है। जिससे तू स्मरण करके लज्जित हो, और लज्जत के मारे फिर कभी मुंह न खोलो। यह उस समय होगा, जब मैं तेरें को ढापूंगा, प्रभु यहावा की यही वाजी है। (यहेजकेल 16:62, 63) तब हमारे होंठ आत्म महिमा मंडल में नहीं खुलेगे। हमें पता होगा कि हमारी प्रर्याप्तता केवल मसीह यीशु में है। हम अपने स्वयं के स्वीकारोकित को स्वीकार करते है। "क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती है। (रोमियों 7:8) पर ऐसा न हो कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के कूस का जिसके द्वारा संसार मेरी दषष्ट में और मैं संसार की दषष्ट में कूस पर चढ़ाया गया हूँ| (गलतियों 6:14) COLHin 118.4

इस अनुभव के सामजस्य के साथ आदेश है, "सो हे मेरे प्यारों, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते हुये हो, वैसे भी अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुये विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुये अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओं। (फिलिप्पियों 2:14) ईश्वर ने आप से यही नहीं कहा कि वह अपने वादों पूरा करने में विफल हो जाये कि उसका धैर्य थकेगा या उसकी करूणा को धूमिल किया जायेगा। आपकी इच्छा की समीह अधीनता में नहीं रखा जायेगा। अपने वशांनुक्रम और चरित्र की प्रशिक्षित गाड़ियों को अपने जीवन तक नियंत्रित करने दें। "यह ईश्वर है जो आप दोनों में काम करता है। उसके अच्छे काम करने के लिये । ऐसा न हो कि भय आप के आत्मा और प्रभु के बीच में आये। ऐसा न हो कि भय उस उददेश्य को दूषित न कर दे जिसके माध्यम से ईश्वर आपके उद्देश्य को पूरा करना चाहता है। अपनी खुद की ताकत पर भरोसा करने के लिये मसीह के हाथ से अपना हाथ हटाने का डर और जीवन को चलाने का प्रयास करें, उसकी स्थायी उपस्थिति के मार्ग के बिना। COLHin 119.1

हमें हर उस चीज से दूर रहने की जरूरत है जो गर्व और आत्म-निर्भर को प्रोत्साहित करेगी, इसलिये हम चापलूसी या प्रशंसा देने या पाने का पात्र होना चाहिये। चापलूसी करना शैतान का काम है। वह चापलूसी के साथ-साथ आरोप लगाने और निन्दा करने में भी माहिर है। इस प्रकार वह आत्मा के विनाश का काम करना चाहता है। COLHin 119.2

जो लोग पुरूषों की प्रशंसा करते है शैतान द्वारा उनके दलालों के रूप में करता है। मसीह के कार्यकर्ताओं को प्रशंसा कर हर शब्द को खुद से दूर करने दे । स्वयं को दृष्टि से बाहर कर दिया जाये । अकेले मसीह को ऊंचा किया जाना है। "हमें उससे प्यार करना चाहिये और अपने पापों से हम अपने खून में धोया, हर आंख को निर्देशित किया जाये और हर जगह से प्रशंसा की जाये। (प्रकाशितवाक्तय 1:5) COLHin 119.3

जिस जीवन में प्रभु का भय घोषित होता है , वह जीवन उदासी और उदासी का जीवन नहीं होगा। यह मसीह की अनुपस्थिति है जो सहिष्णुता को दुखी करता है और जीवन को आगे का तीर्थ

। जो लोग आत्म सम्मान और आत्म प्रेम से भरे है, उन्हें मसीह के साथ रहने, व्यक्तिगत मिलन की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। वो दिल जो पत्थर पर नहीं गिरा है, वह पानी पूर्णता पर गर्व करता है। पुरूष गरिमा पूर्ण धर्म चाहते है। वे अपने गुणों में लेने के लिये पर्याप्त रूप से एक मार्ग में चलने की इच्छा रखते है। उनका आत्म-प्रेम, उनकी लोक प्रियता और प्रशंसा का प्यार, उनके दिल से उद्धारकर्ता को बाहर निकलता है, और उनके बिना यह खुशी और उदासी है। लेकिन आत्मा में मसीह का निवास आनन्द का एक कुआ है। जो सभी उसे प्राप्त करते है, उनके लिये परमेश्वर के वचन का बहुत ही महत्वपूर्ण आनन्द है। COLHin 120.1

इस प्रकार कहा गया है कि उच्च और बुलन्द व्यक्ति जो आनन्द काल तक रहता है, जिसका नाम पवित्र है, मैं उच्च और पवित्र स्थान पर रहता हूँ उसके साथ वह भी है जो एक विनम्र आत्मा है विनम्र की भावना को पुर्नजीवित करने और फिर से जीवित करने के लिये, इसके विपरीत लोगों का दिल है। (यशायाह 57:15) COLHin 120.2

यह तब था जब मूसा चट्टान की आड़ में छिपा था कि उसने परमेश्वर की महिमा को स्वीकार किया। यह तब होता है जब हम छुपी हुई चट्टान में छिप जाते है कि मसीह में हमें अपने छड़े हुये हाथ से ढंक लेगा और हम सुनेंगे कि प्रभु ने अपने सेवकों से क्या कहा। हमारे लिये मूसा के रूप में ईश्वर खुद को "दयालु और कष्पालु, चिरसहिणता, भलाई और सच्चाई में प्रचुरता, हजारों के लिये दया रखते हुये, अधर्म और अपराध और पाप को क्षमा करते हुये प्रकट करेगे। (निर्गमन 34:6, 7) COLHin 120.3

छुटकारे के कार्य में ऐसे परिणाम शामिल होते है, जिनके लिये मनुष्य के लिये कोई भी गर्भाधान करना मुश्किल होता है, जो आंख ने नही देखी और कान ने नहीं सुनी जो बाते मनुष्य के चिन्त में नहीं चढ़ी, वे ही है जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की है। (1 कुरिन्थियों 2:9) जैसे पापी के रूप में मसीह की शक्ति द्वारा खींचा गया, उत्थान पार पहुंचता है, और इससे पहले कि कोई स्थ्पान हो वो खुद को आगे बढ़ाता है। उसे एक नया हृदय दिया जाता है और वह मसीह में एक नया प्राण बन जाता है। COLHin 120.4

पवित्रता यह पाती है। कि इसके लिये कुछ भी आवश्यक नहीं है। ईश्वर स्वंय "उसी का औचित्य है जो यीशु में है, (रोमियो 3:26) जिसको उसने सही ठहराया वह भी महिमा का बखान करता है। (रोमियो 8:30) जैसा कि पाप के माध्यम से शर्म और अपमान है। इससे भी सम्मान और अति उत्साह होगा प्रेम के छुडाने का मनुष्य की दिव्य छवि के अनुरुप होने के लिये, स्वर्ग के खजाने का एक बल प्रदान किया जाता है। शक्ति का एक महामहिम, जो उन्हें स्वर्गदूतो से भी ऊँचा स्थान देगा जो कभी नहीं गिरते है। "जो मनुष्यों को तुच्छ जानने जिससे जातियों को घृणा है। और जो अपराधियों का दास है। इस्राइल का छुडाने वाले और उसकों पवित्र अर्थात यहोवा के कहता है। राजा उसे देखकार खडें, हो जायेगें और हाकिम दण्डवत करेगें, यह यहोवा के लिये

निमित होगा, जो सच्चा और इजराएल का पवित्र है। और जिसने तुमे चुन लिया है। (यशापाठ 49:7) “हर व्यक्ति के लिये जो खुद को छोड देगा और वह खुद का अपमानित करेगा।” COLHin 121.1

अध्याय 14 - क्या परमेष्वर अपने चुने हुओं का न्याय न करेगा

“यह अध्याय लूका 18:1-8 पर आधारित है”

यीषु अपने दूसरे आगमन से ठीक पहले और उन खतरों से गुजरने की बात कर रहे थे जिनके माध्यम से उनके अनुयायियों को गुजरना होगा। उस समय के विषेश संदर्भ में उन्होंने दष्ष्टान्त से सबंधित “इसे अन्त तक, कि पुरूशों को हमेषा प्रार्थना करना चाहिये और होष नहीं खोना चाहिये।” COLHin 122.1

“एक षहर में” उन्होनें कहा, “एक न्यायाधीष था, जो न ईश्वर से डरता था और न ही आदमी का सम्मान करता था। उस षहर में एक विध वा थी, और वह उसके पास, आकर कह रही थी कि मेरे प्रतिकूल का बदला ले लो। उसने कुछ समय के लिये न्याय नहीं किया, लेकिन बाद में उसने कहा, हालांकि मुझे ईश्वर का भय नहीं है और न मनुश्य की परवाह, फिर भी क्योंकि यह विधवा मुझे परेषान करती है, मैं उसका बदला लूंगा, उसके नित्य आने से वह मुझसे छुटकारा पा जायेगा। और प्रभु ने कहा, सुनो अन्यायी न्यायाधीष ने क्या कहा, और क्या परमेष्वर अपने स्वयं के चुनाव का बदला नहीं लेगा, जो दिन रात रोता है, यद्यपि वह उसके साथ लम्बे समय तक रहता है? मैं तुमसे कहता हूँ कि वह षीघ्रता से उसका बदला लेगा। COLHin 122.2

यहां जो न्यायाधीष चित्रित किया गया है, उसके पास दुख के लिये दया नहीं अधिकार के लिये कोई सम्बन्ध नहीं था। विधवा जिसने उसके सामने अपनी परेशानी बतायी थी, उसे लगातार टाला गया। बार-बार वह उसके पास आयी केवल अवमानना के साथ बेइज्जत किया गया और फैसले आगे के आगे दिया गया। न्यायाधीष जानता था कि उसका कारण धर्मी था और वह उसे एक ही बार में राहत दे सकता था कि लेकिन उसने नहीं किया। उसने अपनी मनमानी षक्ति और उसने उसकी पूछने और विनय करने पर उसे व्यर्थ में जाने दिया। लेकिन विधवा ने हिम्मत नहीं हारी बार-बार सुनी उसकी परेशानी को सुलझाने, उसकी उदासीनता और कठोरता के बावजूद, उसने अपनी याचिका तब तक दबा दी जब तक कि न्यायाधीश ने उसके मामले में उपस्थित होने की सहमति नहीं दी। “हालांकि मुझे डर है कि ईश्वर ही नहीं मनुश्यों का भी सम्मान करें।” उन्होंन कहा “फिर भी यह विधवा मुझे परेषान करती है, मैं इसका न्याय करूंगा। उसके लगातार आने से वह मुझे परेषान करती हैं। अपने आंषिक एक तरफा फैसले को प्रचार देने से बचने के लिये अपनी प्रतिश्ठा को बचाने के लिये उन्होंने दृढ़ महिला का बदला लिया। COLHin 122.3

और प्रभु ने कहा, सुनो क्या अन्यायी जज सेठ है। और क्या ईश्वर अपने स्वंय के प्रभाव का बदला नहीं लेगा, जो दिन रात रोता है। यद्यपि वह उनके साथ लम्बा समय बिताता है। मैं तुमसे कहता हूँ कि वह उनका षीघ्र बदला लेगा। COLHin 123.1

मसीह यहां न्यायाधीष और ईश्वर के बीच एक तीव्र विपरीत चित्रण करता है। न्यायाधीष ने विधवा के अनुरोध को केवल स्वार्थ के माध्यम से प्राप्त किया कि वह उसकी आयात से छुटकारा

पा सकता है। उसे कोई दया या करूणा महसूस नहीं हुई। उसका दुख उसके लिये कुछ भी नहीं था। जो लोग उसे चाहते है, उनके प्रति परमेष्वर का दर्षश्टकोण कितना अलग है। जरूरतमंदों और व्यथित की अपीलों को असीम करूणा के साथ माना जाता है। COLHin 123.2

न्याय के लिये, न्याय करने वाली महिला ने अपने पति को खो दिया दिया था। गरीब, चित्रहीन, उसके पास अपनी बर्बाद किस्मत को पुनः प्राप्त करने का कोई साधन नहीं था। इसलिये पाप के द्वारा मनुश्य ने परमेष्वर के साथ अपना संबंध खो दिया। स्वयं के पास उसके पास मुक्ति का कोई साधन नहीं है। लेकिन मसीह में हम पिता के समीप लाये जाते है। ईश्वर का चुनाव उनके दिल का प्रिय है। वे, वे हैं, जिन्हें उन्होंने दुनिया के अंधरे के बीच रोषनी के रूप में चमकने के लिये अद्भुत रोषनी में अंधरे से बाहर बुलाया है। अन्यायी जज को विधवा के प्रति कोई विषेश रूचि नहीं थी, जिसने उसे प्रसव के लिये आयात किया, अभी तक अपने आप को उसकी दयनीय अपील से छुटकारा पाने के लिये, उसने उसकी दलील सुनी, अपने विरोध से उसे छुड़ाया। लेकिन अपने बच्चों से असीम प्यार करते है। उसके लिये पथ्वी पर सबसे प्रिय वस्तु उसकी कलीसिया है। COLHin 123.3

क्योंकि यहोवा भाग उसके लोग है, याकूब उसकी विरासत का बहुत कुछ है। उन्होंने उसे एक रेगिस्तानी भूमि में पाया और बर्बाद हो रहे जंगल में उन्होंने उसके बारे में कहा, उन्होंने उसे निदेष दिया। उसने उसे अपनी आंख के सेब के रूप में रखा। (व्यवस्थाविवरण 32:9, 10) इस प्रकार मेजबानों के ईश्वर ने कहा, महिला के बाद उसने मुझे उन राश्ट्रो के पास भेजा, जिन्होंने तुम्हें बिगाड़ा था। क्योंकि वह तुझे छूता है, वह मेरी आंख की पुतली को छूता है। COLHin 124.1

विधवा की प्रार्थना, "मेरा बदला लेना" मेरा न्याय करो मेरा प्रतिकूल, ईश्वर अपने बच्चों की प्रार्थना का प्रतिनिधित्व करता है। पैतान उनका महान विरोधी है। वह "हमारे भाईयों का अभियुक्त है' जो दिन और रात ईश्वर के सामने उन पर आरोप लगाता है। (प्रकाषितवाक्य 12:10) वह ईश्वर के लोगों को धोखा देने और नश्ट करने के लिये गलत तरीके से प्रस्तुत करने और लगातार आरोप लगाने का काम कर रहा है और यह पैतान और उसके ऐजेंटों को ताकत से मुक्ति के लिये है कि इस दृश्टान्त ने मसीह अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाता है। COLHin 124.2

जर्कयाह की भविश्यवाणी में पैतान के प्रषंसनीय कार्य और मसीह के कार्य को उनके लोगों के प्रति प्रतिकूलता को देखने के लिये लाया गया हैं। COLHin 124.3

भविष्यवक्ता कहता है, उसने यहोवू को प्रभु के दूत के सामने खड़े होने वाले महायाजक और पैतान को उसके दाहिने हाथ पर खड़े होते हुये दिखाया। COLHin 124.4

और यहोवा ने शैतान से कहा, हे शैतान, तुम को फटकार कर यहां तक कि यहोवा ने येरूशेलेम को चुना है। तुम को फटकारा हैं। क्या ये ब्राण्ड आग से नहीं गिराया गया है। यहोशू गंदे कपड़ो से लदा हुआ था और स्वर्गदूत के सामने खड़ा था। (जर्कयाह 3:1-3) COLHin 124.5

ईश्वर के लोगो को यहां एक अपराधी के रूप में प्रतिनिधित्व किया जाता है। यहोशू महायाजक के रूप में अपने लोगो के लिये एक वरदान मांग रहा है जो बड़ी विपत्ति में पड़े है। जब वो परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ा रहा होता है, तो शैतान उसके दाहिने में उसके विरोधी की तरह खड़ा होता है। वह बच्चों पर ईश्वर का आरोप लगाता है और उनके मामले को जितना संभव हो सके उतना ही हताश कर रहा है। वह प्रभु के सामने उनके बुरे कामों और उनके दोषों को प्रस्तुत करता है। वह अपने दोषों और असफलताओं को दिखाता है, उम्मीद करता हे कि वे मसीह की नजर में ऐसे चरित्र के रूप में दिखाई दे कि वह उनकी महान आवश्यकता में कोई मदद नहीं कर पाय । यहोशू, ईश्वर के लोगों के प्रतिनिधि के रूप में, निंदा के तहत खड़ा है, गन्दे कपड़ों से ढका हुआ है। अपने लोगो के पापों से सावधान, वह हतोत्साहित है शैतान उसकी आत्मा पर अपराध बोध का दबाव बना रहा है जिससे वह लगभग निराशा महसूस करता है। फिर भी वहां वह एक समर्थक के रूप में खड़ा है, जिसके साथ शैतान उसके खिलाफ खड़ा था। COLHin 124.6

स्वर्ग में अभियोजक के रूप में शैतान का काम शुरू हुआ। मनुष्य के पतन के बाद से इस पृथ्वी पर उसका काम चल रहा है, और यह एक विशेष अर्थ में उसका काम होगा क्योंकि हम इस दुनिया के इतिहास के करीब पहुंचते है। जैसा कि वह देखता है कि उसका साथ कम है, वह ६ गोखा देने और नष्ट करने के लिये अधिक इमानदारी के साथ काम करेगा। जब वह इस धरती पर ऐसे लोगों को देखता है तो वह क्रोधित होता है जो अपनी कमजोरी और पाप के मामले में भी यहोवा के कानून का सम्मान करते है। वह निश्चय करता है और सभी को ईश्वर से अलग करता है। वह ईश्वर पर आरोप लगाने और निन्दा करने का प्रयास करता है और सभी दया और क्षमा में दया और प्रेम में, इस दुनिया में अपने उददेश्यों को पूरा करने का प्रयास करते है। COLHin 125.1

अपने लोगो के लिये ईश्वर की शक्ति का हर प्रकटन शैतान की दुश्मनी पैदा करता है। जब भी परमेश्वर उनकी ओर से काम करता है, तो शैतान अपने स्वर्गदूतों के साथ नये सिरे से काम करता है। ताकि उनकी बर्बादी को बढ़ावा मिले। वह उन सभी से ईर्ष्या करता है जो मसीह को अपनी ताकत बनाते है। उसकी वस्तु बुराई को भड़काने के लिये है, और जब वो सफल हो गया, तो सभी दोषपूर्ण पात्र की ओर ईशारा करता है। वह अपनी कमजोरी और मूर्खता, अपने पापों के प्रतिनिष्ठा, मसीह के प्रति अपनी तरत्थता को प्रस्तुत करता है, जिसने उनके उद्धारक को बदनाम किया। COLHin 125.2

यह सब यह तर्क रूप में आग्रह करता है कि उनके विनाश में अपनी इच्छा से काम करने का अधिकार साबित करता है। वह अपनी आत्माओं को इस सोच के साथ ठीक करने का प्रयास करता है क्योंकि उनका मामला निराशाजनक है इसलिये उनकी बदनामी का दाग कभी नहीं धुल सकता है। वह अपने विश्वास को नष्ट करने के लिये आशा करता है कि वे उसके प्रलोभनों से पूरी तरह उपजेगें और उनकी ईश्वर के प्रति निष्ठा से मुड़ेंगे। COLHin 126.1

प्रभु के लोग स्वयं शैतान के आरोपों का जवाब नहीं दे सकते है। जैसे कि वे खुद को देखते है, वे निराशा के लिये तैयार है। लेकिन वे दिव्य वकील से विनती करते है। वे उद्धारक के गुणों का निवेदन करते है, "प्रभु" यीशु में विश्वास करने वाले सिर्फ और सिर्फ उसके प्रति विश्वास रखते है। (रोमियो 3:26) विश्वास के साथ प्रभु के बच्चे के आरोप को चुप करने के लिये उसके पास जाते है और उसके उपकरणों को पकड़ते है। क्या वे मेरे विरोधी के साथ न्याय करते है, "वे प्रार्थना करते है, और क्रूस और शक्तिशाली तर्क के साथ निर्भीक अभियुक्त को चुप करा देते है। COLHin 126.2

"यहोवा ने शैतान से कहा, "हे शैतान, प्रभु ने जो येरूशेलेम को चुना है वह तुझे फटकार लगाता है, क्या ये आग से गिरा हुआ ब्रांड नहीं है? जब शैतान परमेश्वर के लोगों को कोप से ढंक देता है और उन्हें बर्बाद करता है तो मसीह का विरोध होता है, हालांकि वे पाप कर चुके है, मसीह ने उनके अपराध अपनी आत्मा पर ले लिया है। उसने आग से एक ब्राण्ड के रूप में दौड़ को छीन लिया है। मानव स्वभाव से, वह मनुष्य के साथ जुड़ा है, जबकि उसकी दिव्य प्रकृति के माध्यम से वह अनन्त ईश्वर के साथ एक है। स्थायी आत्माओं की पहुँच के भीतर मदद लायी जाती है। विरोधी को फटकार लगायी जाती है। COLHin 126.3

"अब यहोशू गन्दे कपड़ों से लदा हुआ था और स्वर्गदूत के सामने खड़ा था और उसने उत्तर दिया जो लोग उसके सामने खड़े थे, उन्होंने कहा, उसके गन्दे वस्त्र छीन लो। उसने कहा, देखो मैं उसकी अधर्मता का कारण बना। और मैं तुम्हारे वस्त्रों को बदल दूंगा। मैंने कहा उनके सिर पर एक पटटी लगा दो। इसलिये वे उन्होंने उसके सिर पर पटटी लगायी और उसे वस्त्र पहनाये।" तब राजाओं के प्रभु के अधिकार के साथ स्वर्गदूत ने यहोशू के लिये, परमेश्वर के लोगो की प्रतिज्ञा की, "यदि तू मेरे मार्ग में चलेगा, यदि तू मेरा कार्यभार संभालकर रखेगा, तो तू भी मेरे घर का न्याय करेगा, मेरे आगनों का रक्षक होगा और तुझको इनके बीच में आने जाने दूंगा, जो इस सिंहासन के पास खड़े है। (जर्कयाह 3:3—7) COLHin 126.4

परमेश्वर के लोगों के दोषों के बावजूद मसीह उसकी देखभाल की वस्तुएँ दूर नहीं होने देता है। उनके पास अपनी छाप बदलने की शक्ति है। COLHin 127.1

गन्दे कपड़ों को हटाता है, वह पष्चाताप करता है, विष्वास करता है कि लोभ उसकी अपनी धार्मिकता पर राज करते है और स्वर्ग के रिकॉर्ड पर उनके नाम के खिलाफ क्षमा लिखते है। वह स्वर्गीय ब्रहमाण्ड से पहले उन्हें अपना मानता है। पैतान को उनके विरोधी को अभियोजक और ६ गोखेबाज दिखाया गया है। परमेष्वर अपने चुनाव के लिये न्याय करेगा। प्रार्थना, "मुझे मेरे विरोधी के साथ न्याय करें' न केवल षैतान पर लागू होता है, बल्कि उन ऐजंसियों पर भी लागू होता है जिन्हें वह गलत बयानी, प्रलोभन और ईश्वर के लोगों को नश्ट करने के लिये उकसाता है। जिन लोगों ने परमेष्वर की आत्माओं का पालन करने का फैसला किया है, वे अनुभव से समझेंगे कि

उनके पास विरोधी है जो एक षक्ति से नियंत्रित होता है। ऐसे विरोधी हर कदम पर मसीह को घेरते है, जो लगातार और निर्धारित रूप से कोई भी इंसान कभी नहीं जान सकता है। मसीह के षिश्यों जैसे उनके स्वामी का नित्य प्रलोभन होता है। COLHin 127.2

मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले दुनिया की दषा का वर्णन है। याकूब प्रेरितों के लालच और उत्पीड़न के बारे में बताता है। वह कहता है "अब जाओं तुम धनी लोगो के साथकृकृहो मैं ने पिछले दिनों के लिये एक साथ खजाना इकट्ठा किया है, देखो उन मजदूरों का किराया जो आपके खेतो को काट चुके है, जो आपने धोखे से उनकी मजदूरी रख ली है उनका रोना परमेष्वर ने सुन लिया है जो सब्त के दिन का प्रभु भी है। तुम पष्थ्वी पर सुख से रह रहे हो और प्रचण्ड रहे है। तुम ने अपने दिलों का पोशण किया है, जो कि वध के दिन से किया था। इमानदार लोगों पर आरोप लगा कर मार डाला और वह आपका विरोध नहीं करेगा। (याकूब 5:1-6) यह आज की मौजूदा स्थित की एक तस्वीर है। उत्पीड़न और जबरन वसूली की, हर प्रजाति के द्वारा लोग महान भाग्य जमा रहे है जब कि मानवता के भूखे रहने का रोना ईश्वर के सामने आ रहा है। COLHin 127.3

न्याय को पीछे हटाया गया, धर्म दूर खड़ा रह गया, सच्चाई बाजार में गिर पड़ी, सिधाई प्रवेष नहीं करने पाती है। जो सच्चाई खोता और बुराई से भागता है सो षिकार हो जाता है। ये देखकर यहोवा ने बुरा माना, क्योंकि न्याय जाता रहा। (यषायाह 59:14, 15)। यह पष्थ्वी पर मसीह के जीवन में पूरा हुआ था। वह परमेष्वर की आज्ञाओं के प्रति वफादार था, जिसने मानवीय परंपराओं और आवष्यकतओं को अलग कर दिया था। जो कि उनके स्थान पर बढ़ा दी गयी थी, इस वजह से उन्हें नफरत और सताया गया था, यह इतिहास दोहराया जाता है। पुरूशों को कानून और परंपरायें ईश्वर के कानून से ऊपर है, और जो लोग परमेष्वर की आज्ञाओं के प्रति सच्चे है उन्हें तिरस्कार और उत्पीड़न सहना पड़ता है। मसीह, ईश्वर के प्रति अपनी आस्था के कारण एक सब्त तोड़ने वाले और निन्दा करने वाले के रूप में आरोप था। उसे एक षैतान के कब्जे में घोशित किया गया था और उसे बीलजेबब के रूप में घोशित किया गया था। COLHin 128.1

इस तरह से उनके अनुयायियों पर आरोप लगाये गये और गलत तरीके से पेष किया गया। इस प्रकार पैतान आषा करता है कि वे उन्हें पाप की ओर ले जाये और परमेष्वर का अनादर करें। COLHin 128.2

दष्श्टान्त में जज का चरित्र, जो न तो ईश्वर से डरता था और व ही मनुश्य का आदर करता था। मसीह द्वारा उस तरह के निर्णय को प्रस्तुत करने के लिये किया गया जिसे तब निश्पादित किया गया था और जल्द ही उसके परीक्षण में देखा जायेगा। वह हर समय अपने लोगों को यह महसूस करने की इच्छा रखता है कि विपत्ति के दिन सांसारिक षासकों या न्यायाधीषों पर कितनी कम निर्भरता रखी जा सकती है। अकसर परमेष्वर के चुने हुये लोगों को अधिकारिक पदों पर पुरूशों के सामने खड़ा होना पड़ता है जो परमेष्वर के षब्द को अपनी मार्गदर्षक और परामर्षदाता

नहीं बनाते है, लेकिन जो अपने स्वयं के कहे अनुषासनहीन आवेगों का पालन करते है। COLHin 128.3

अन्यायी न्यायाधीष के दष्टान्त मे, मसीह ने दिखाया कि हमें क्या करना चाहिये। "क्या ईश्वर अपने स्वयं के चुनाव का बदला नहीं लेगा, जो दिन-रात रोता है? "यीषु, हमारे उदाहरण ने खुद को प्रेरित या वितरित करने के लिये कुछ भी नहीं किया। उसने अपना मामला ईश्वर तक पहुँचाया। इसलिये उसके अनुयायियों को आरोप लगाने या निंदा करने या खुद को पहुंचाने के लिये मजदूर करने का सहारा नहीं लेना है। COLHin 128.4

जब परीक्षण उत्पन्न होते है जो अस्पश्ट प्रतीत होते है तो हमे षान्ती को खराब नहीं होने देना चाहिये। हालांकि अन्यायपूर्ण तरीके से हमारा इलाज किया जा सकता है, जोष पैदा न होने दे, प्रतिषोध की भावना पैदा करके हम खुद को घायल कर सकते हैं। हम ईश्वर में अपने आत्म-विष्वास को नश्ट करते है, और पवित्र आत्मा को षोकित करते हैं। हमारे पक्ष में एक गवाह है, एक स्वर्गीय दूत, जो दुष्मन के लिये एक मानक लाभ उठायेगा। वह हमें धर्मी के सूर्य के उज्जवल किरणों के साथ बंद कर देगा। इससे परे पैतान घुस नहीं सकता। वह पवित्र प्रकाष की इस ढाल को पार नहीं कर सकता। COLHin 129.1

जब कि दुनिया में दुश्टता आगे बढ़ रही है, हममें से किसी को भी खुद को चापलूसी करने की आवष्यकता नहीं है कि हमें कोई कठिनाई होगी। COLHin 129.2

लेकिन यह बहुम मुष्किल जो हमें परम प्रधान के दर्षकों के चैम्बर में ले जाती है। हम उस व्यक्ति की सलाह ले सकते है जो ज्ञान में अनन्त है। COLHin 129.3

_प्रभु कहते है, "मुसीबत के दिन मुझे बुलाओं "(भजन संहिता 50:15)। वह हमें अपनी चिंताओं और आवष्यकताओं और हमारी दिव्य सहायता की आवष्यकता के बारे में बताने के लिये आंमत्रित करता है। वह हमसे प्रार्थना पर तत्पर है। जैसे ही कठिनाईयाँ आती है, हम अपने ईमानदार, बयाना याचिकाओं की पेषकष करने वाले होते है। आपकी प्रार्थनाओं से हम ईश्वर में अपने मजबूत आत्म-विष्वास का प्रमाण देते है। हमारी आवष्यकता का बोध हमें ईमानदारी से प्रार्थना करने की ओर ले जाता है, और हमारे स्वर्गीय पिता को हमारे आग्रह द्वारा स्थानातरित किया जाता है। COLHin 129.4

अक्सर जो लो अपने विष्वास के लिये बदनामी या जुल्म सहते है, उन्हें खुद को ईश्वर से दूर समझने की परीक्षा होती है। पुरूशों की नजर में वे अल्पसंख्यक है। सभी को उनके दुष्मन उनके ऊपर विजय प्राप्त करने है। लेकिन उन्हें अपने विवेक का उल्लंघन न करने दे। वह जो उनकी ओर से पीड़ित है, और उनके दुखों और कश्टों को वहन किया है, उन्हें नहीं छोड़ा है। COLHin 129.5

ईश्वर के बच्चे अकेले और रक्षाहीन नहीं है। प्रार्थना सर्वषक्तिमान की बांह को हिलाती है। प्रार्थना में, "उपद्रवियों ने धार्मिकता को मिटाया, वादे हासिल किये, पेरो के मुंह बन्द किये । आग कि हिंसा को बुझाया-"हम जानते है कि जब हम षहीदों की रिपोर्ट सुनते है, तो इसका क्या मतलब होगा—विदेषियों की सेनाओं से लड़े। (इब्रानियों 11:33, 34)। COLHin 130.1

यदि हम अपने जीवन को उसके सेवक के सामने आत्मसमर्पण कर देते हैं तो हमें कभी भी माफी नहीं दी जा सकती है जिसके लिये परमेष्वर ने प्रावधान नहीं किया है। जो भी हमारी स्थिति हो सकती है, हमारे पास अपने तरीके से निर्देषित करने के लिये एक गाइड है, जो भी हमारी उत्कष्टतायें है, हमारे पास सुनिष्चित परामर्षदाता है, हमारा दुख, षोक या अकेलेपन जो भी हो, हमारे पास एक सहानुभूति रखने वाला मित्र है। अगर हमारी अज्ञानता में हमने गलत किया, तो मसीह हमें नहीं छोड़ता है। उनकी आवाज स्पश्ट और विषिश्ट यह कहते हुये सुनी जाती है, "मैं रास्ता हूँ, सत्य और जीवन ।" (यहून्ना 14:6) "वह जरूरतमंदों की तब पहुँचायेगा, जब वह गरीब होगा, गरीब भी और उसके लिये मददगार नहीं होगा।" (भजन संहिता 72:12) COLHin 130.2

प्रभु घोशणा करता है कि उन लोगों द्वारा सम्मानित किया जायेगा जो उनके लिये आह भरते है जो ईमानदारी से उनकी सेवा करते है। "तू विलीन हो जाता है जिससे उसका मन षान्त रहता है, क्योंकि वह तुम पर विष्वास करता है। (यषायाह 6:3) सर्वषक्तिमान की भुजा हमें आगे बढ़ने के लिये आगे बढ़ी है। आगे बढ़ों ईश्वर कहते है। मैं आपकी सहायता करूंगा। यह मेरे नाम की महिमा के लिये है जिसे आप पूछते है और आप प्राप्त करेंगे। मुझे उन लोगों के सामने सम्मानित किया जायेगा जो आपकी विफलता को देख रहे है। वे मेरे वचन के षानदार ढंग से मानेंगे। "सभी चीजे, जोभी आप प्रार्थना में मांगोगे विष्वास करना की आपको मिल गया। (मत्ती 21:22)। COLHin 130.3

जो भी पीड़ित और अन्यायपूर्ण व्यवहार करते है उन्हें ईश्वर के सामने गिड़गिड़ाने दो। उन लोगों से दूर रहे जिनके हष्दय कठोर हैं अपने अनुरोधों को अपने निर्भता से अवगत कराये। कभी भी ऐसा नहीं किया जाता है जो उसके विपरीत दिल के साथ आता है। एक भी इमानदार की प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाती है। गाने बजाने वालो के गानो के बीच, ईश्वर सबसे कमजोर इंसान के रोने की आवाज सुनते है। हम अपने दिल की इच्छा को हम अपने बन्दों में डाल देते है। हम एक प्रार्थना में सांस लेते है जैसे कि हम रास्ते से चलते है और हमारे षब्द घर के सम्राट के सिंहासन तक पहुंचते है। किसी भी मानव कान के लिये सशक्त हो सकते है लेकिन वे मौन नहीं रह सकते हैं, और न ही वे व्यापार की गतिविधियों के माध्यम से खो सकते है जो चल रहे है। आत्मा की इच्छा को कुछ भी डूबा सकता है। यह सड़क के शोर ऊपर भीड़ को भ्रम के ऊपर स्वर्गीय अदालतों के लिये ऊपर उठता है। यह ईश्वर है जिनसे हम बोल रहे हैं और हमारी प्रार्थना सुनी जाती है। COLHin 130.4

आप जो सबसे अधिक अयोग्य महसूस करते है, डरे नहीं और स्वयं को पास ले जाये। जब उसने खुद को दुनिया के पाप के लिये मसीह में दिया, तो उसने हर आत्मा के मामले को चलाया। "जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दिया, वह उसके साथ हमे और सब कुछ क्यों कर न देगा। (रोमियो 8:32)। क्या वह हमारे प्रोत्साहन और ताकत के लिये दिये गये, अनुग्रहपूर्ण वचन को पूरा न करेगा। COLHin 131.1

मसीह इतना कुछ नहीं चाहता है कि शैतान की प्रभुता से अपनी विरासत को भुना सके। लेकिन इससे पहले कि हम शैतान की सत्ता से हट जाये, हमें उसकी शक्ति से भीतर पहुंचना चाहिये। प्रभु इस बात के लिये अनुमति देते है कि हम पृथ्वी से शुद्ध हो सकते है, स्वार्थ से, चरित्र के असहनीय लक्षणों से। वह हमारी आत्मा के ऊपर जाने के लिये दुख के गहरे पानी को झेलता है ताकि हम उसे और यीशु मसीह को जान सकें, जिसे उसने भेजा है ताकि हमें हृदय विदीर्ण होने से बचाने के लिये दिल की लालसा और परीक्षण से पवित्र, खुश होकर निकल सके। अक्सर हम अपनी आत्माओं के साथ परीक्षण की भट्टी को स्वार्थ का अंधेरा कर देते है, लेकिन अगर महत्वपर्ण परीक्षण के तहत धीरज रखे, तो हम आगे आकर ईश्वरीय चरित्र को दर्शायेगे। जब उनकी अभिलाषा को पूरा करने के उद्देश्य पूरा हो गया है, "और वह तेरा धर्म ज्योति की नाई, और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले की नाई प्रगट करेगा।" (भजन संहिता 37:6)। COLHin 131.2

इसमें कोई खतरा नहीं है कि यहोवा अपने लोगो की प्रार्थनाओं की उपेक्षा करेगा, खतरा यह है कि प्रलोभन और परीक्षण में वे हतोत्साहित हो जायेगे, और प्रार्थना में बने रहने में विफल रहेगे। COLHin 131.3

उदारकर्ता ने साइरोफिनिशियन महिला के प्रति दिव्य करूणा प्रकट की। उसका दुख देखकर उसका दिल पसीज गया। वह उसे तत्काल आश्वासन देने की लालसा करता था कि उसकी प्रार्थना सुन ली जाये, लेकिन वह अपने शिष्यों को सबक सिखाना चाहता था और एक समय के लिये वह अपने प्रताडित दिल की दहाई देता था। जब उसके विश्वास को प्रकट किया गया था, तो उसने प्रशंसा के अपने शब्दों से बात की और उससे पूछे गये अनमोल वरदान के साथ उसे दूर भेज दिया। शिष्यों ने इस पाठ को कभी नहीं भुलाया और प्रार्थना को जारी रखने का परिणाम दिखाने के लिये इसे रिकार्ड पर रखा। COLHin 132.1

यह स्वयं मसीह था जिसने उस मां के दिल में दष्ढ़ता को डाल दिया था। जिसे ठुकराया नहीं जायेगा। यह मसीह था जिसने न्यायाधीश के समक्ष विध वा को साहस और दष्ढ़ संकल्प दिया। ये यीशु मसीह था जो जब्बोक द्वारा रहस्यमय संघर्ष में सदियों पहले थे, उसी दष्ढ़ता से विश्वास के साथ याकूब को प्रेरित किया था और जिस आत्म विश्वास के साथ उन्होंने खुद को प्रत्यारोपित किया, वह इनाम देने में विफल नहीं हुआ। COLHin 132.2

वह जो स्वर्गीय अभयारण्य में अधिकार पूर्वक न्याय करता है। उनका आनन्द उनके लोगों में अधिक है, जो पाप की दुनिया में प्रलोभन से जूझ रहे है। उनके सिंहासन को घेरने वाले स्वर्गदूतों की तुलना में। COLHin 132.3

दुनिया के इस धब्बे में पूरा स्वर्गीय ब्राह्मण्ड का सबसे बड़ा हित प्रकट होता है क्योंकि मसीह ने अपने निवासियों की आत्माओं के लिये एक अनन्त कीमत अदा की है। प्रभु के छुड़ाने के लिये विश्व के उद्धारक ने बुद्धिमता के सम्बन्धों के द्वारा पथ्वी को स्वर्ग के लिये बाध्य किया है। स्वर्गीय प्राणी अभी भी उन दिनों की तरह धरती पर आते है जब वे इब्राहीम और मूसा के साथ चलते और बातचीत करते थे। हमारे महान शहरो की व्यस्त गतिविधि के बीच, उन भीड़ के बीच जो पूरी तरह से भीड़ और व्यापार बाजरों को भरते है, जहाँ सुबह से शाम तक लोग अभिनय करते है जैसे कि व्यापार और खेल और आनन्द सभी स्वर्ग में अभी भी इसके दर्शक और पवित्र है। मनुष्य के प्रत्येक शब्द और कर्म का अवलोकन करने वाली अदष्ष्य ऐजेसियां है। व्यापार या आनन्द के लिये हर सभा में, पूजा के लिये हर सभा में, प्राकतिक दषष्ट से देखा जा सकता है कि तुलना में अधिक श्रोता है। कभी-कभी स्वर्गीय बुद्धिमता पर्दे को अलग करती है जो अनदेखी दुनिया को छुपाती है कि हमारे विचार को जल्दी और जीवन की भीड़ से वापिस लिया जा सकता है ताकि यह विचार किया जा सके कि हम जो करते है या कहते है, उसके लिये अनदेखी गवाह है। COLHin 132.4

हमें स्वर्गदूतों के सेवकाई को करने से बेहतर समझने की जरूरत है। यह विचार करना अच्छा होगा कि हमारे सभी कार्यो में स्वर्गीय प्राणियों का सहयोग और देखभाल है। प्रकाश और शक्ति की अदृश्य सेनायें नम्र और नीच लोगों में शामिल होती है जो ईश्वर के कदों पर विश्वास करते है और दवा करते है। चेरूबिम और सेरोफिम और स्वर्गदूत जो शक्ति में उत्कृष्टता प्राप्त करते है- दस हजार, दस हजार बार और हजारो स्वर्गदूत उनके दाहिने हाथ पर खड़े होगे। सभी सेवक जिन्हें उनकी सेवकाई के लिये भेजा गया है मोक्ष के वारिस होगे।” (इब्रानियों 11:14)। COLHin 133.1

इन दूतों द्वारा एक वफादार रिकार्ड पुरूषों के बच्चों के शब्दो और कामो के लिये रखा जाता है। परमेश्वर के लोगों के प्रति क्रूरता या अन्याय का हर कार्य, वे सभी दुष्ट श्रमिकों की शक्ति से पीड़ित होने के कारण होते है, जो स्वर्ग में पंजीकृत है। ईश्वर को अपने स्वयं चुनाव का बदला नहीं लेना चाहिये, जो दिन-रात गिड़गिड़ाता है, हालांकि वह उनके साथ लम्बे समय तक सहन करता है, मैं आपको बताता हूँ कि वह तेजी से उनका बदला लेगा। COLHin 133.2

“सो अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है। क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ। क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जब कि आने वाला आयेगा और देर न करेगा। (इब्रानियों 10:35-37)।” सो हे भाईयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, देखो ग्रहस्थ पष्थ्वी के बहुमूल्य फल की आशा

रखता हुआ प्रथम और अंतिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो और अपने हष्दय को दष्ढ़ करो, क्योंकि प्रभु का शुभागमन निकट है। (याकूब 5:7, 8) COLHin 133.3

ईश्वर की सहनशीलता अद्‌भुत है। जब तक पापी के साथ दया की अपील की जाती है, तब तक इंसाफ इन्तार करता है लेकिन धार्मिकता और निर्णय उनके सिंहासन का विलोपन है। (भजन संहिता 97:2)। ईश्वर क्रोध के लिये धीमा है, लेकिन वह शक्ति में महान है और दुष्टों को बरी नहीं करेंगे, ईश्वर भवर और तूफान में उसका रास्ता पकड़ता है , और बादल उसके पैरो की धूल है। (नूहम 1:3)। COLHin 133.4

ईश्वर के कानून के उल्लंघन में दुनिया निर्भीक हो गयी है। उनके लम्बे समय से मना करने के कारण, पुरूषों ने उनके अधिकार को रौंद दिया। उन्होंने अपनी विरासत के प्रति उत्पीड़न और क्रूरता में एक दूसरे को मजबूत किया, कहा, ईश्वर को कैसे पता है? और क्या सबसे उच्च में ज्ञान है? (भजन संहिता 73:1)। लेकिन एक ऐसी रेखा है जिसके आगे वे गुजर नहीं सकते। वह समय निकट है जब उनके पास ईश्वर की लम्बी पीड़ा, उनकी कष्पा की सीमा, उनकी दया की सीमायें होगी। प्रभु अपने स्वयं के सम्मान को अपने लोगों को वितरित करने के लिये और अधर्म के प्रलाप को दबाने के लिये हस्ताक्षेप करेगा। COLHin 134.1

नूह के दिनों में लोगों ने परमेश्वर के कानून की अवहेलना की थी जब तक कि निर्माता के लगभग सभी स्मरण पष्थ्वी से दूर नहीं हो गये थे। उनका अधर्म इतनी बड़ ऊँचाई तक पहुंच गया कि प्रभु पथ्वी पर जल की बाढ़ ले आये, और उसके दुष्ट निवासियों को बहा ले गये। उम्र से लेकर उम्र बढ़ने तक प्रभु ने अपने कार्यक्षेत्र के तरीके को जाना । जब कोई संकट आया है, तो उसने खुद को प्रकट किया है, और शैतान की योजनाओं के काम में बाधा डालने के लिये हस्तक्षेप किया है। राष्ट्रो के साथ परिवारों के साथ और व्यक्तियों के साथ, उन्होंने अक्सर मामलों को संकट में आने दिया है कि उनका हस्तक्षेप चिन्हित हो सकता है। तब उसने प्रकट किया कि इजराएल में एक ईश्वर है जो अपने कानून को बनाये रखेगा और अपने लोगों को प्रेरित करेगा। COLHin 134.2

प्रचलित अधर्म के इस समय में हम जान सकते है कि अंतिम बड़ा संकट हाथ में है। जब ईश्वर के कानून की अवहेलना लगभग सार्वभौमिक है जब उनके लोग अपने साथी पुरूषों द्वारा उत्पाड़ित और पीड़ित होते है, तो प्रभु हस्तक्षेप करेगे। COLHin 134.3

समय निकट है जब वह कहेगा, “हे मेरे लोगों आओ, अपनी कोठरी में प्रवेश करके किवाड़ों को बन्द करो, थोड़ी देर तक जब तक क्रोध शान्त न हो तब तक अपने को छिपा रखो। क्योंकि देखो, यहोवा पृथ्वी निवासियों अधर्म का दण्ड देने के लिये अपने स्थान से चला आता है, और पृथ्वी अपना खून प्रगट करेगी और घात किये हुओ को और अधिक न छिपा रखेगी। (यशायाह 26:20, 21) | जो लोग मसीह होने का दावा करते है वे अब गरीबों को धोखा दे सकते है और उन पर

अत्याचार कर सकते है, विधवा को लूट सकते है। वे उनके शैतानी घृणा का शिकार हो सकते है, लेकिन इसके लिये ईश्वर उन्हें निर्णय में लायेगे। उन्होंने "बिना दया के निर्णय लिया होगा' जसने "कोई दया नहीं दिखा है" (याकूब 2:3) । इसलिये वे खड़े नहीं होगे। सभी पथ्वी के न्यायाधीश के समक्ष, उनकी विरासन के शरीर और आत्माओं को होने वाले दर्द के लिये एक खाता प्रस्तुत करने के लिये। वे अब झूठे आरोपों में लिप्त हो सकते है। वे उन लोगों को व्युत्पन्न कर कसते है जिन्हें ईश्वर ने अपना काम करने के लिये नियुक्त किया है, वे हो सकते है। अपने विश्वासियों को जेल में चेन गैंग की निर्वासन को, मृत्यु तक, पर विश्वास दिलाओं, लेकिन हर आंसू बहाने की पीड़ा के लिये, उन्हें जबाव देना चाहिये । परमेश्वर उन्हें उनके पाप के लिये दोगुना इनाम देगा। बाबुल को प्रेरित चर्च का प्रतीक वह निर्णय के, अपने सेवकों से कहता है, "क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुंच गये है और उसके अधर्म परमेश्वर को स्मरण हुये है। जैसा उसने तुम्हें दिया, वैसा ही उसको भी दो, उसके कामों के अनुसार उसे दो गुना बदल दो, जिस कटोरे में उसने दिया था उसी में उसके लिये दो गुना भर दो। (प्रकाशितवाक्य 18:5, 6) COLHin 134.4

भारत से, अफ्रीका से, चीन से, समुद्र के द्वीपो से, दलित लाखों तथा कथित मसीह भूमि से मानव शोक का रोना ईश्वर को चढ़ रहा है। वह रोना लम्बे समय तक अनुन्तरित नहीं रहेगा। ईश्वर पृथ्वी को अपने नैतिक भ्रष्टाचार से साफ करेगे, क्योंकि नूह के दिनों में पानी का समुद्र नहीं होगा, लेकिन आग के एक समुद्र से जिसे किसी भी मानव द्वारा तैयार नहीं किया जा सकता है। COLHin 135.1

तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा, परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुये है वे बच निकलेगे। (दानिय्येल 12:1)। COLHin 135.2

अटारी से, हवेलियों से, काल कोठरी से, मचानों से, पहनाओं और रेगिस्तानों से, धरती की गुफाओं और समुद्र की गुफाओं से यीशु अपने बच्चो को इक्ट्ठा करेगे। पष्थ्वी पर वे निराश्रित, पीड़ित और तड़प रहे है। लाखों कुख्यात बीज के साथ भरी हुई कब्र में चले गये है। उन्होंने शैतान के भ्रामक दावों के लिये उपज से इन्कार कर दिया। मानव न्यायाधिकरणों द्वारा ईश्वर के बच्चों को सबसे कमजोर अपराधियों के रूप में ठहराया गया है, लेकिन वह दिन निकट है जब "ईश्वर स्वयं न्याय कर रहा है। (भजन संहिता 50:6)। तब पथ्वी के फैसले उलट जायेगे। उनके लोगों को फटकार वह दूर ले जायेगा। (यशायाह 25:8)। उनमें से हर एक को सफेद वस्त्र दिये जायेगे। (प्रकाशितवाक्य 6:1)। और वे उन्हें पवित्र लोग कहेगे, जो प्रभु के छुड़ाय हुये है। (यशायाह 62:12)। COLHin 135.3

उन्हें जो भी पार करने के लिये कहा गया है, उन्हें जो भी नुकसान हुआ है, जो भी उत्पीड़न हुआ है, यहां तक कि उनके अस्थायी जीवन के नुकसान के लिये ईश्वर के बच्चों को पुनः सम्मानित

किया गया है "वे उसका चेहरा देखेंगे और उसका नाम उनके माथे में होगा।" (प्रकाशितवाक्य 22:4)

अध्याय 15 - यह व्यक्ति पापियों को स्वीकारता है।

“यह अध्याय लूका 15:1-10 पर आधारित है’

जैसे ही “प्रचारक और पापी, मसीह के पास एकत्रित हुये, रब्बी ने अपनी नाराजगी यह कह कर व्यक्त की, यह आदमी पापियों को स्वीकारता है, और कहा, “कि उनके साथ खाना खाता है। COLHin 137.1

इस आरोप के द्वारा उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मसीह पापी और नीच लोगों के साथ जडना पसन्द करता था, और उन दुष्टता के प्रति असंवेदनशील था। यीशु में, रब्बी मसीह में निराश हो गये थे। ऐसा क्यों था कि जिसने एक चरित्र का इतना बड़ा दावा किया था, वह सभी नहीं पाया था और उनके पढ़ने के तरीके का पालन करता था? वह सभी वर्गों के बीच काम करते हुये इतनी स्पष्टता से क्यों गया? अगर वो सच्चे भविष्यवक्ता थे, तो उन्होंने कहा वह उनसे बात करेगा और शास्त्री और पापियों के उदासनीता का व्यवहार करेगा। इसने समाज के इन अभिभावकों को नाराज कर दिया कि वह जिनके साथ, वे लगातार झगड़े में थे, फिर भी जीवन की पवित्रता ने उन्हें जगाया और उनकी निंदा की, उन्हें इस तरह की स्पष्ट सहानुभूति में मिलना चाहिये, सामाजिक बहिष्कार के साथ। उन्हें उसके तरीके मंजूर नहीं थे। वे खुद को शिक्षित, परिष्कृत और पूर्व-धार्मिक रूप से मानते थे। लेकिन मसीह के उदाहरण ने उनके स्वार्थ को पूरा कर दिया। COLHin 137.2

। इससे उन्हें यह भी कोध आया कि जिन लोगों ने केवल रब्बियों के विषय में अवमानना दर्शायी है और जिन्हें सभाओं में नहीं देखा गया था, उन्हें यीशु के विषय में सोचना चाहिये और उनके शब्दों पर ध्यान देना चाहिये। शास्त्री और फरीसियों ने उस शुद्ध उपस्थिति में केवल निंदा महसूस की, फिर कैसे था कि जानता और पापियों को यीशु के पास खींचता गया था। COLHin 137.3

वे नहीं जानते थे कि स्पष्टीकरण उन शब्दों में निहित है जो उन्होंने एक अपमानजनक आरोप के रूप में कहा था, “ये आदमी पापियों को स्वीकारता है, यीशु के पास आने वाली आत्माओं ने उनकी उपस्थिति में महसूस किया कि यहां तक कि उनके लिये पाप के गडडे से बच गया था। फरीसियों ने केवल उनके लिये तिरस्कार और निंदा की है, लेकिन मसीह ने उन्हें ईश्वर की संतान के रूप में अभिवादन किया। वास्तव में पिता के होसले, लेकिन पिता के दिल से नहीं भुला । और उनके बहुत दुख और पाप ने उन्हें केवल उनकी करूणा की वस्तु बना दिया। जितना दूर वे उससे भटक गये थे, उतनी अधिक लालसा और पलायन के लिये बलिदान करने वाले को त्याग दिया।

यह सब इजराएल के शिक्षकों ने पवित्र सूची पत्र में सीखा होगा, जो कि रखवाले घातांक होना उनका गौरव था। क्या दाऊद ने नहीं लिखा, जो घातक पाप में गिर गया। “मैं खोई हुई भेड़ का नाई भटका हूँ, तू अपने दास को ढूंढ’ (भजन संहिता 119:176) मीका ने पापी के प्रति ईश्वर के

प्रेम को प्रकट नहीं किया है, यह कहते हुये कि, “कि कौन तुम्हारे समान ईश्वर है, जो उस अधर्म को क्षमा करता है, और अपनी विरासत के अवशेष के अपराध से गुजरता है? वह अपने कोध को हमेशा के लिये नहीं रखता, क्योंकि वह दया में प्रसन्न है’? (मीका 7:18)

खोई हुई भेड़

मसीह ने इस समय पवित्र शास्त्र के शब्दों की यादों को याद नही किया, उन्होंने खुद के अनुभव के बारे में बताया। यरदन के पूर्व में फैले चौड़े मैदानों ने झुंडो के लिये प्रचुर मात्रा में चरागाह का निर्माण किया, और घाटियों के माध्यम से, लकड़ी की पहाड़ियों के माध्यम से, चरवाहों की देखभाल के लिये, एक खोई भेड़ की तलाश के लिये, खोई भेड़ों को भटकना पड़ा। यीशु के बारे में कम्पनी में चरवाहे थे और ऐसे पुरूष भी थे जिनके पास झुडों और झुडों में पैसा था और सभी उनके दृष्टान्त की सरहना कर सकते थे, “तुम में से कौन सा आदमी, जिसके पास सौ भेड़ों है। जो एक खो गई है उसे खोजने जायेगा जंग लमें नहीं, निन्नानवे को छोड़कर? COLHin 138.2

ये आत्मायें जिन पर आप कष्पा करते है, यीशु ने कहा, वो ईश्वर की सम्पत्ति है। सष्जन और मुक्ति द्वारा वे उनके है और वे उनकी दषष्ट में मूल्य है। जैसे कि चरवाहा अपनी भेड़ां से प्यार करता है और अगर एक भी लापता है, तो वह आराम नहीं कर सकता है, इसलियें असीम रूप से उच्च डिग्री में, ईश्वर हर बहिस्कष्त आत्मा से प्यार करता है। पुरूष अपने प्यार के दावे से इन्कार कर सकते है कि वे ईश्वर है और वह खुद को ठीक करने के लिये तरसता है। वह कहता है, “एक चरवाहे के रूप में दिन में अपने झुण्ड को बाहर निकालता है कि वह उसकी भेड़ों में से है जो बिखरे हुये है, इसलिये क्या मैं अपनी भेड़ों को खोजूंगा और उन्हें उन सभी स्थानों से बाहर निकाल दूंगा जहां वे बादल और अंधेरे में है।” (यहेजकेल 34:12) COLHin 139.1

दष्टान्त में चरवाहा एक भेड़ की खोज करने के लिये बाहर जाता है बहत कम से कम जिसे गिना जा सकता है। इसलिये अगर वहां पर एक आत्मा को खो दिया होता तो मसीह उस एक आदमी के लिये मर गया होता। COLHin 139.2

भेड़ जो भेड़शाला भटक गयी है वह सभी प्राणियों में से असहाय है। यह चरवाहे द्वारा मांगा जाना चाहिये, क्योंकि यह अपना रास्ता नहीं खोज सकता है। तो उस आत्मा के साथ जो परमात्मा से भटक गयी है, वह खोई हुई भेड़ों की तरह असहाय है और जब तक दिव्य प्रेम इस बचाव में नहीं आया था, वह कभी भी ईश्वर के लिये अपना रास्ता नहीं खोज सकता था। COLHin 139.3

चरवाहा जो जानता है कि उसकी एक भेड़ गायब है, झुंड पर लापरवाही से नहीं दिखता है, जिसे सुरक्षित रूप से रखा गया है, और कहता है, “मेरे पास निन्यान्वे है, और मुझे भटके हुये व्यक्ति की तलाश में जाने के लिये बहुत परेशानी होगी। वह वापस आयेगा और मैं भेड़शाला का दरवाजा खोलूंगा और उसे अन्दर आने दूंगा’ | नहीं, जितनी जल्दी भेड़-बकरियों भटकती है, इससे चरवाहा उदास और बैचेन हो जाता है। वह झुण्ड को गिनता है और उसे याद करता है। जब उसे

यकीन हो जाता है कि एक भेड़ खो गई है, तो वह सोता नहीं है। वह निन्यानवे भेड़ों को छोड़ देता है, और आवारा भेड़ की तलाश में चला जाता है। रात को गहरा और अधिक अस्थायी और अधिक खोज की। वह उस खोई भेड़ को खोजने का हर संभव प्रयास करता है। COLHin 139.4

उसे कितनी राहत मिलती है जब वह दूर कहीं बहुत कमजोर सी भेड़ की आवाज सुनता है। ध्वनि के बाद, सबसे अधिक ऊंचाइयों पर चढ़ता है, वह अपने जीवन के जोखिम पर अवक्षेप के किनारे पर जाता है। इस प्रकार, वह खोजता है, जबकि भेड़ की आवाज धीमी होती जाती है जिससे पता लगता है कि भेड़ मरने पर है। अन्त में उनके प्रयास को पुरूस्कष्त किया गया। खोई हुई भेड़ मिल गयी। वह उसे झिड़कता नहीं इस के बावजूद उसे उसके कारण काफी दुख उठाना पड़ा वो उसे कोड़ों से मार कर नहीं ले जाता, वह उसे घर तक भी ले जाने की कोशिश नहीं करता। वह उसे कांपती हुई भेड़ को कंधे पर खुशी से उठा लेता है और उसे बड़े प्यार से बांहों में इकट्ठा करके छाती के करीब दबाता है, अपने स्वंय के दिल की गर्मी को वह जीवन दे सकता है। कष्तज्ञता के साथ उनकी खोज व्यर्थ नहीं गयी है, वह उसे वापिस भेड़शाला में ले जाता है। COLHin 140.1

ईश्वर का शुक है, उसने हमारी कल्पना को प्रस्तुत किया है कि बिना चादर के एक उदास चरवाहे की कोई तस्वीर नहीं दृष्टान्त असफलता की बात नही करता है लेकिन सफलता की ओर खुशी की वसूली में करता है। यहां ईश्वरीय गांरटी है कि ईश्वर की आवारा भेड़ों में से एक की भी अनदेखी नहीं की जाती है। किसी को भी छोड़ा जाता है। हर एक जिसे फिरोती दी जायेगी, मसीह भ्रष्टाचार के गर्व से और पाप की बाधाओं से बचायेगा। COLHin 140.2

आत्मा का त्याग करें, साहस करें, भले ही आपने दुष्टता की हो। यह मत सोचियें कि शायद ईश्वर आपके अपराध को क्षमा करेगा, क्योंकि आप उसकी उपस्थिति में आने के लिये स्वयं को एक अचम्भे में डाल देगे। ईश्वर ने पहली वर्षद्ध की, जब आप उसके खिलाफ विद्रोह में थे। आपकी तलाश में आगे बढ़ गया। चरवाहे के कोमल हष्दय के साथ निन्यान्वे को छोड़ दिया और जंगल में एक भेड़ जो खो गयी। उसकी खोज में चला गया। आत्मा घायल और नाश होने के तत्पर है। वह उसे अपनी बाहों में लेकर उसे सुरक्षा प्रदान करता है। COLHin 140.3

यहूदियों द्वारा सिखाया गया था इससे पहले ईश्वर का प्यार पापी के लिये बढ़ाया जाय, उसे पहले पश्चाताप करना चाहिये। उनके विचार में, पश्चाताप एक कार्य है जिसके द्वारा पुरूष स्वर्ग के पक्ष मं कमाते है और यह सोचा गया था कि फरीसियों को विस्मय और क्रोध में उकसाया था। "यह आदमी पापियों को स्वीकार करता है।" उनके विचारों के अनुसार उन्हें अपने पास जाने के लिये जिसके कोई भी अनुमति नहीं देनी चाहिये, लेकिन जिन्होंने पश्चाताप किया था, लेकिन खोई हुई भेड़ के दष्टान्त में, मसीह सिखाता है कि मक्ति ईश्वर से मांगने के माध्यम से नही आती है वरन परमेश्वर की हमारे खोज में है। कोई भी ऐसा नहीं कि परमेश्वर की खोज करें, वे सब परमेश्वर से दूर चले गये है। (रोमियों 3:11, 12) बात के लिये पश्चाताप नहीं कर रहे है कि परमेश्वर हमसे प्रेम

करता है, लेकिन वह हमें अपने प्रेम को प्रकट करता है ताकि हम पश्चाताप कर सकें। COLHin 140.4

जब भटकी हुई अतिम के रूप से घर आती है तो चरवाहे का आभार आनन्दित करने वाले मधुर गीतों में अभिव्यक्ति पाता है। वह अपने मित्रों और पड़ोसियों से कहता है, उनसे कहां, “मेरे साथ आनन्द मनाओं, क्योंकि मुझे अपनी भेड़ मिल गयी है जो खो गई थी। इसलिये जब भेड़ियों को भेड़ के बड़े चरवाहे से मिल जाता है, तो स्वर्ग और पष्थ्वी धन्यवाद और आनन्द में एक जुट हो जाते है। COLHin 141.1

“खशी एक पापी के लिये स्वर्ग होगी. जब वह पश्चाताप करता है नब्बे से अधिक और केवल नौ व्यक्तियों पर, जिन्हें पश्चातापी आवश्यकता नहीं है।’ फरीसियों ने कहा, मसीह अपने आप को स्वर्ग का पंसदीदा मानते है। आप खुद को अपनी धार्मिकता में सुरक्षित समझते है। फिर यह जान ले कि अगर आपको किसी पश्चाताप की आवश्यकता नहीं है, तो मेरा मिशन आपके लिये नहीं है। ये गरीब आत्मायें जो अपनी गरीबी और पाप को महसूस करती है, वहीं लोग है जिनके बचाव में मैं आया हूँ। स्वर्ग के स्वर्गदूत इन खोये हुये लोगों में रूचि रखते है। जिन्हें आप घष्णा करते है। आप शिकायत करते है और व्यंग्य करते है, इनमें से एक को खो दिया है जो खुद को मुझसे मिलता है, लेकिन जानते है कि स्वर्गदूत आनन्दित होते है, और ऊपर न्यायालयो में विजय का गीत बजता है। COLHin 141.2

रब्बियों का कहना था कि स्वर्ग में जब ईश्वर के खिलाफ पाप किया जाता है, तब उसका विनाश होता है, लेकिन यीशु ने सिखाया कि ईश्वर को विनाश का काम एक अजीब काम है। COLHin 141.3

जिसमें सब स्वर्ग प्रसन्न है। उन आत्माओं को ईश्वर की अपनी छवि की बहाली है जिन्हें उसने बनाया है। COLHin 141.4

जब पापी दूर तक भटकने वाले परमेश्वर के पास लौटने की कोशिश करता है तो वह आलोचना और अविश्वास का सामना करेगा। ऐसे लोग है जो संदेह करेगे कि क्या उसका पश्चाताप वास्तविक है या कानाफूसी करेगा। “उसके पास स्थिरता नहीं है मुझे विश्वास नहीं है कि वो पकड़ लेगा ये व्यक्ति ईश्वर का कार्य नहीं कर रहे है बल्कि शैतान का काम कर रहे है जो कि भाईयों का आरोप है। उनकी आलोचना के माध्यम से दुष्ट उस आत्मा के हतोत्साहित करने और उसे अभी भी आशा और ईश्वर से दूर करने की आशा करता है। पश्चाताप करने वाले पानी को खोये हुये व्यक्ति की वापसी पर स्वर्ग में आनन्दित होने पर चिन्तन करना चाहिये। उसे परमेश्वर के प्रेम में आराम करने दे और किसी भी मामले में फरीसियों के अपमान और सन्देह से निराश न हो। COLHin 142.1

रब्बियों ने मसीह के दृष्टान्त को जानना और पापियों पर लागू करने के रूप में समझा, लेकिन एक व्यापक अर्थ भी है। खोई हुई भेड़ के द्वारा मसीह ने केवल व्यक्तिगत पापी का प्रतिनिधित्व करता है। ये दुनिया है लेकिन विशाल प्रभुत्व में एक परमाणु है जिस पर ईश्वर की अध्यक्षता करते है, फिर भी इस छोटी सी पापी दुनिया में एक खोई हुई भेड़ उसकी दृष्टि से अधिक अनमोल है निन्यानवे से अधिक जो कि अपने रास्ते से भटकी नहीं है। मसीह स्वर्गीय अदालतों में प्यार करने वाला सेनापति, अपनी उच्च सम्पत्ति से विचलित हो गया जिसने एक खोई भेड़ को बचाने के लिये अपने पिता के साथ की गई महिमा को अलग रखा। इसके लिये उसने निन्यान्वे की ऊंचाई पर पाप रहिता दुनिया छोड़, जो उससे प्यार करता था, और इस धरती पर आया, “हमारे अपराधों के लिये घायल और हमारे अधर्म के लिये चोटिल हुआ। (यशायाह 53:5) परमेश्वर ने अपने बेटे में खुद को दिया कि वह भेड़ के बच्चे को वापिस पाने की खुशी प्राप्त कर सकता है। COLHin 142.2

देखो पिता ने हमें किस तरह से प्यार दिया कि हमें ईश्वर के बेटे कहा। (1 यहून्ना 3:1) और मसीह कहता है, “जैसा कि तुमने मुझे संसार में भेजा है, यहां तक कि मैंने उन्हें संसार में भेजा है” (17:18) जो कि मसीह के कष्टों के पीछे है उसे भरने के लिये उनके कंकाल के लिये, जो कलीसिया है। (कुलस्सियों 1:24) प्रत्येक आत्मा जिसे मसीह ने बचाया है, उसे खोये हुये को बचाने के लिये उस नाम से भटकने के लिये कहा जाता है। इजराएल में इस काम की उपेक्षा की गयी थी। ये आज उन लोगों द्वारा उपेक्षित नहीं है जो मसीह के अनुयायी होने का दावा करते है। COLHin 142.3

कितने भटकने वाले अपने पाठक के लिये मांग की और उसे वापिस भेड़शाला में लाया है? जब आप उन लोगों से मुड़ते है, जो अप्रभावों और अनाकर्षक लगाने है तो क्या आपको एहसास है कि आप उन आत्माओं की उपेक्षा कर रहे है। उनके लिये मसीह चाह रहा है? उसी समय जब आप उनकी ओर से मुड़ते है, वे आपकी करूणा की सबसे बड़ी जरूरत हो सकती है। पूजा के लिये हर विधानसभा में आत्मायें आराम और शान्ति के लिये तरसती है। वे लापरवाह जीवन जीते हुये दिखाई दे सकते है, लेकिन वे पवित्र आत्मा के प्रभाव के असंवेदनशील नहीं है। उनमें से कई मसीह के लिये जीते जा सकते है। COLHin 143.1

यदि खोई हुई भेड़ को वापिस भेड़शाला में नहीं लाया जाता है, तो वह तब तक भटकती है जब तक कि नष्ट नहीं हो जाती। कई आत्माओं को बचाने के लिये हाथ बढ़ाये जाने की इच्छा के लिये बर्बाद करने के लिये नीचे जाते है। गलतियॉ कठिन और लापरवाह दिखाई दे सकती है, लेकिन अगर उन्हें वहीं फायदे मिलते है जो दूसरों के पास होते है तो वे शायद आत्मा की अधिक श्रेष्ठता और उपयोगिता के लिये अधिक प्रतिभा का खुलासा कर सकते है। स्वर्गदूतों को इन भटके हुये लोगों पर दया आती है। स्वर्गदूत रोते है, जबकि मानव आंखे सूखी है और दिल दया के लिये बन्द है। COLHin 143.2

प्रलोभन और दुराचार के लिये गहरी, आत्मा को छूने वाली सहानुभूति की कमी है। ऐ मसीह की आत्मा की अधिकता के लिये, और स्वयं के लिये बहुत कम, और बहुत कम के लिये। COLHin 143.3

फरीसियों ने मसीह के दृष्टान्त को उनके लिये फटकार समझा। जनता और पापियों को उनकी उपेक्षा । उसने ऐसा खुले तौर पर नहीं किया था, कहीं ऐसा न हो कि यह उनके दिल को बन्द कर दे, लेकिन उनका दृष्टान्त, उनके सामने वहीं काम था जो परमेश्वर को उनके लिये आवश्यक था, जो वे करने में असफल रहे थे। अगर वे सच्च चरवाहे होते, तो इजराएल में इन नेताओं ने एक चरवाहे का काम किया होता। उन्होंने मसीह की दया और प्रेम प्रकट किया होगा और उनके साथ उनके मिशन में एकजुट हुये होगे। ऐसा करने से इन्कार करने से उनके धर्मनष्ट होने के दावे फासले साबित हुये। अब कईयों ने मसीह की भर्त्सन को अस्वीकार कर दिया, अभी तक कुछ उनके शब्दों ने विश्वास दिलाया। इन पर स्वर्ग में स्वर्ग जाने के बाद, पवित्र आत्मा और खोये हुये भेड़ों के दृष्टान्त में बताये गये अपने काम में अपने शिष्यों के एक साथ एक जुट हुये। COLHin 143.4

चांदी का खोया हुआ सिक्का

खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त देने के, मसीह ने एक और बात करते हुये कहा, चांदी के दस सिक्के होने वाली महिला, अगर वह एक चांदी का सिक्का खो देती है, तो एक मोमबत्ती को जला सकती और घर को तब तक खोज लेती है जब तक वह उसे खोज न ले? COLHin 144.1

पूर्व में गरीबों के घरों में आमतौर पर एक कमरा होता था, जिसमें अक्सर खिड़की रहित और अधेरा होता था। कमरा शायद हो कभी साफ होता था और फर्श पर गिरने वाले पैसे का टुकड़ा तेजी से धूल और गन्दी से ढका होगा। इसे ढूंढने के लिये दिन में भी मोमबत्ती से रोशन किया जाना चाहिये और घर को बड़ी लगन से झाडू लगानी पड़ेगी। COLHin 144.2

पत्नी के विवाह वाले हिस्से में आमतौर पर पैसे के टुकड़े होते थे, जिसे वह अपनी सबसे पोषित सम्पत्ति के रूप में अपनी बेटियों को प्रेषित करने के लिये सावधानी से रखती थी। इन सिक्कों में से एक के नुकसान को एक गम्भीर आपदा माना जायेगा, और इसकी वसूली से बहत खुशी होगी, जिसमें पड़ोसी महिलायें आसानी से साझा करेंगी। COLHin 144.3

जब उसे यह मिल गया था, "मसीह ने कहा' वह अपने दोस्तों और उसके पड़ोसियों को बुलाती है और कहती है, मेरे साथ आनन्दित रहो, क्योंकि मुझे वह सिक्का मिल गया है, जिसे मैंने खो दिया था। इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ स्वर्ग में पश्चाताप करने वाले पापी के लिये खुशियाँ है परमेश्वर के स्वर्गदूतों द्वारा। COLHin 144.4

यह दष्टान्त, पूर्ववर्ती की तरह, उस चीज के नुकसान को निर्धारित करता है, जिसे उचित खोज के साथ पुनप्राप्त किया जा सकता है और यह बहुत खुशी के साथ। लेकिन दो दष्टान्त अलग-अलग वर्गो का प्रतिनिधि तव करते है। खोई हुई भेड़ जानती है कि वह खो गई है।। यह चरवाहा और झुण्ड को छोड़ दिया है, और यह खुद को ठीक नहीं कर सकता है। यह तुम लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो महसूस करते है कि वे ईश्वर से अलग हो गये है और जो अपमान के बादल में घिरे है, अपमान और बुरी तरह से परीक्षा में है। खोया हुआ सिक्का उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो अत्याचारों और पापों में खो गये है, लेकिन जिन्हें अपनी स्थिति का कोई बोध नहीं है। उन्हें परमेश्वर से अलग किया जाता है, लेकिन वे यह नहीं जानते है, उनकी आत्मायें संकट में है, लेकिन वे अचेतन और असंबद्ध है। इस दष्टान्त में, मसीह सिखाता है कि यहां कि वे परमेश्वर के दावों के प्रति उदासीन है, उनके दयालु प्रेम की वस्तुयें है। उनसे इस बात की मांग की जाती है कि उन्हें वापस ईश्वर के पास लाया जाये। COLHin 144.5

भेड़ भेड़शाला से भटक गयी है। वे जंगल और पहाड़ों में खो गयी थी। घर में चांदी का सिक्का गुम हो गया था। COLHin 145.1

इस दष्टान्त से परिवारों को सबक मिलता है। ग्रहस्थी में अपने सदस्यों के शूलों के विषय में बड़ी अशिष्टता है। उनकी संख्या में से कोई एक हो सकता है जो ईश्वर से अलग है, लेकिन ईश्वर के सौंपे गये उपहारों पर खो जाने वाले पारिवारिक रिश्ते में कितनी चिंता महसूस की। सिक्का हालाकि धूल और मिटटी में पड़ा हुआ है, चादी का एक सिकका है। इसका मालिक इसे चाहता है क्योकि ये मुल्यवान है इसलिये हर आत्या जो पाप से नीचे है, परमेश्वर की दषष्ट में अनमोल है। जैसे कि सिक्का शासनकाल की छवि और प्रतिलेखन को सहन करता है, इसलिये अपनी रचना में आदमी ईश्वर की छवि और प्रति लरेवन को बोर करता है: और हालाकि अब पाप के प्रभाव से प्रभावित और मंद है। इस शिलालेख के निशान पर हर आत्मा पर बने हुये हैं। ईश्वर उस आत्मा को पुनः प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं और उस पर धर्म और पवित्रता में अपनी छवि बनाते हैं। COLHin 145.2

दष्टान्त की महिला अपने खोये हुये सिक्के के लिये लगन से खोज करती है। वह मोमबती जलाकर घर में झाडू लगाती है। वह सब कुछ हटा देती है जो उसकी खोज में बाधा बन सकती है। हालांकि केवल एक सिक्का खो गया है, वह अपने प्रयासों को तब तक नहीं खोयगी जब तक कि वह सिक्का मिल नहीं जाता। इसलिये परिवार में अगर कोई सदस्य ईश्वर से हार जाता है तो उसकी आत्मा परीक्षा के लिये हर साधन का उपयोग करता है। जीवन व्यावहार को जॉचने दो। देखे कि क्या कोई गलती नहीं है। प्रबन्धन में कुछ त्रुटि है, जिसके द्वारा उस आत्मा की पुष्टि की जाती है। COLHin 145.3

ऊपर परिवार में एक बच्चा है जो अपनी पापी अवस्था में बेहोश है, तो माता-पिता आराम नहीं करते । मोमबत्ती की रोशनी करे। ईश्वर के शब्द को खोजे और उसके प्रकाश से किसी चीज को परिश्रम से जॉचने दे, यह देखने के लिये की यह बच्चा क्यों खो गया है। माता-पिता को अपने स्वयं के दिलों को खोजने दे, उनकी आदतों और प्रथाओं की जॉच करे। बच्चे ईश्वर की धरोहर है और हम उनकी सम्पत्ति के प्रबन्ध के लिये उनके प्रति जवाबदेह है। COLHin 146.1

पिता और माता विदेशी मिशन क्षेत्र में लम्बे समय तक श्रम करते है, ऐसे कई लोग हे जो मसीह लोगों के घर के बाहर काम करते है जबकि उनके अपने बच्चे मुक्तिदाता और उसके प्यार के लिये अजनबी है। मसीह के लिये अपने बच्चों को जीतने का काम कई माता-पिता सेवकाई या सब्बत स्कूल के शिक्षक पर भरोसा करते है, लेकिन ऐसा करने में वे अपने स्वंय के ईश्वर प्रदत्त जिम्मेदारी की उपेक्षा कर रहे है। अपने बच्चों को मसीही बनाने की और प्रशिक्षण सर्वोच्च सेवा थी। जो माता-पिता ईश्वर के लिये अनुष्ठन करते है। यह एक ऐसा काम है जो रोगी परिश्रम, आजीवन परिश्रम और लगन से काम करने की मांग करता है। इस भरोसे की उपेक्षा से हम खुद को बेईमान साबित करते है। ऐसी उपेक्षा का कोई भी बहाना ईश्वर द्वारा स्वीकार नहीं किया जायेगा। COLHin 146.2

लेकिन जो लोग उपेक्षा के दोषी है, वे विनाश के लिये नहीं है। जिस महिला का सिक्का खो गया था उसे ढूंढने तक की जगह नहीं मिली। COLHin 146.3

इसलिये प्यार, विश्वास और प्रार्थना से माता-पिता को अपने घर के काम करने दे, जब तक कि वे खुशी के साथ ईश्वर के पास यह कहते हुये नहीं आ सकते है, "देखों मैं और वे बच्चे जिन्हें ईश्वर ने मुझे दिये है। (यशायाह 3:18)यह सच्चे गव्ह सेवकाई का काम है। यह उन लोगों के लिये भी उतना उपयोगी है जो इसे उन लोगों के लिये करते है जिनके लिये यह किया जाता है होम सर्कल के लिये हमारे वफादार दिल से हम प्रभु के परिवार के सदसयों के लिये काम करने के लिये खुद को फिट कर रहे है, जिनके साथ यदि मसीह के प्रति वफादार है, तो अनन्त युगों तक रहेगे। मसीह ने हमारे भाई बहनों के लिये एक ही दिलचस्पी दिखाते है कि एक परिवार के सदस्य के रूप में हम एक-दूसरे के लिये है। COLHin 146.4

और ईश्वर ने कहा कि यह सब हमें अभी अन्य के लिये श्रम करने के लिये फिट बैठता है। जैसे-जैसे सहानुभूति बढ़ेगी और हमारा प्यार बढ़ेगा, हमें हर जगह एक काम करने को मिलेगा। ईश्वर का महान मानव परिवार दुनिया को गले लगाता है, और सदस्यों में से किसी को भी उपेक्षा के साथ पारित नहीं जाता है। हम जहां भी हो सकते है, वहीं चांदी का खोया सिक्का हमारी खोज का इन्तजार करता है क्या हम इसके लिये मांग रहे है? दिन-प्रतिदिन हम उन लोगों से मिलते है जो धार्मिक चीजों में कोई रूचि नहीं लेते है। हम उनके साथ बात करते है, हम उनके बीच में जाते है, क्या हम उनके अध्यात्मिक कल्याण में रूचि दिखाते है। क्या हम मसीह को पाप मुक्ति रक्षक

के रूप में प्रस्तुत करते है? मसीह के प्यार के साथ हमारे अपने दिल गर्म है, क्या हम उन्हें इस बार प्यार के बारे में बताते है? यदि हम नहीं करते हैं, तो हम इन आत्माओं से कैसे मिलेगे अनन्त काल तक जब उनके साथ हम ईश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होगे। COLHin 147.1

एक आत्मा का मूल्य कौन लगा सकता है? क्या आप इसकी कीमत जान पायेंगे? अदन की वाटिका में जा सकते है और वहां पीड़ा के उन घंटों के माध्यम से मसीह के साथ देखते है, जब वहां खून की बड़ी बूंदे थी। उद्धारकर्ता को क्रूस पर उत्थान करते हुये देखे। उस घर्षणत रोने को सुन, "मेरे पिता, मेरे पिता, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? (मरकूस 15:34) जख्मी सिर, छेद पसली की तरफ छेदा भाला और उसके पैरों को देखे । याद रखे कि सभी ने मसीह को जोखिम में डाला। हमारे छटकारे के लिये, स्वर्ग में साम्रज्य था। क्रूस के पायदान पर, ये याद रखना कि एक पापी के लिये मसीह ने अपना जीवन लगा दिया होगा, आप एक आत्मा के मूल्य का अनुमान लगा सकते है। COLHin 147.2

यदि आप मसीह के संवाद में है तो आप हर इंसान पर उसका अनुमान लगायेगे। आप दूसरों के लिये वही गहरा प्यार महसूस करेगे, जो मसीह ने आपके लिये महसूस किया है। तब जीतने में सक्षम होगे, ड्राइव करने के लिये नहीं आकर्षित करने के लिये और न ही पश्चाताप करने के लिये। COLHin 147.3

जिनके लिये वह मर गया। यदि मसीह ने उनके लिये व्यक्तिगत प्रयास नहीं किया होता तो कोई भी कभी भी ईश्वर के पास वापस नहीं लाया जाता और यह उस व्यक्तिगत कार्य द्वारा है कि बचाव कर सकते है। COLHin 147.4

जब आप उन लोगों को देखते है जो मष्यु के लिये नीचे जा रहे है, तो आप शान्त उदासनीता में आराम नहीं करेगे। अधिक से अधिक पाप और हिरण और उसके दुख, अधिक बयान और निविदा वसूली के लिये आपके प्रयास होगे। आप उन लोगों की जरूरत को जो ईश्वर के खिलाफपाप कर रहे है, और अपराध के बोझ से दबे हुये है। आपका दिल उनके लिये सहानुभूमि से भर जायेगा और आप उनकी मदद करने के लिये उनके पास जायेगे। आपके विश्वास और प्रेम की बाहों के मसीह के लिये लायेगे। आप उन्हें देखेगे और उन्हें प्रोत्साहित करेगे, आपकी सहानुभूति और आत्म-विश्वास उनके दष्ढ़ता से गिरने के लिये कठिन बना देगा। COLHin 148.1

इस काम में स्वर्ग के सभी स्वर्गदूत साथ देने के लिये तैयार है। स्वर्ग के सभी संसाधन उन लोगों की आज्ञा पर है जो खोये हुये को बचाने की कोशिश कर रहे है। स्वर्गदूत आपको सबसे लारवाह और सब से कठोर तक पहुंचाने में मदद करेगे। जब किसी को ईश्वर के पास लाया जाता है, तो स्वर्ग को खुश किया जाता है, सरीफ और करूब उनकी सुनहरी वीणा को छूते है और पुरूषों के बच्चों के लिये उनकी दया और प्रेम—दया के लिये ईश्वर और मेम्ने की प्रशंसा करते है। COLHin 148.2

अध्याय 16 - खोया और मिला है

"यह अध्याय लूका 15:11-35 पर आधारित है"

खोई हुई भेड़ सिक्के और विलक्षण पुत्र के दृष्टान्त, अलग-अलग पंक्तियों में सामने आते है, जो उनसे भटक रहे है, उनके लिये ईश्वर का प्यार। हालांकि वे परमेश्वर से दूर हो जाते है। वे उन्हें उनके दुख में नहीं छोड़ता है। वह उन सभी के प्रति दयालुता और कोमलता से भरा हुआ है जो कषष दुश्मन के प्रलोभनों के सम्पर्क में है। COLHin 149.1

कौतुक पुत्र के दृष्टान्त में प्रस्तुत किया जाता है कि जो लोग कभी पिता के प्रेम को जानते है, लेकिन जिन्होनें अपनी इच्छा से उन्हें बन्दी बनाने का नेतष्त्व करने की अनुमति दी है, उनके साथ प्रभु का व्यवहार होता है। COLHin 149.2

"एक निश्चित आदमी के दो पुत्र थे और उनमें से छोटे ने अपने पिता से कहा, पिता मुझे मेरे हिस्से का धन मेरे हवाले कर दो। उसने उसे उनमें बांट दिया। कुछ देर के बाद छोटा बेटा दूर देश में अपनी यात्रा पर चला गया।' COLHin 149.3

छोटा बेटा अपने पिता के घर के संयम से थक गया था। उसने सोचा कि उसको स्वतन्त्रता प्रतिबंधित है। उनके पिता के प्यार और उनकी देखभाल की गलत व्याख्या की गई और उन्होंने अपने स्वयं के झुकाव के निर्देशो का पालन करने की ठानी। COLHin 149.4

युवा पुत्र अपने पिता के प्रति कोई दायित्व स्वीकार नहीं करता है, और कोई आभार व्यक्त नहीं करता है, फिर भी वह अपने पिता के सामान को साझा करने में बच्चे के विशेषाधिकार का दावा करता है। वह विरासत जो उसके पिता की मष्यु पर उस पर गिरती थी, वह अब वह प्राप्त करना चाहता है। वह वर्तमान आनन्द पर तुला है, और भविष्य की परवाह नहीं करता है। COLHin 149.5

अपनी पैतष्क सम्पत्ति प्राप्त करने के बाद, वह अपने पिता के घर से "एक दूर देश" चला जात है। पैसे में बहुत और स्वतंत्रता के साथ जैसे वह पसन्द करता है, वह खुद को समतल करता है कि उसके दिल की इच्छा पूरी हो जाये । केई कहने वाला नहीं है, ऐसा मत करो, क्योंकि यह अपने आप को चोट पहुंचाना है या ये करो, क्योंकि यही सही है। बुरे साथी उसे पाप की गहराई में डुबकी लगाने की मदद करते है। बाईबल उन पुरूषों के विषय में बताती है जो "बुद्धिमान होने के लिये खुद को स्वीकार करत है" "मूर्ख बन गये" (रोमियों 1:22)। और यह दष्टान्त के युवका का इतिहास है। वह संपत्ति जो उसने अपने पिता से स्वार्थी होने का दावा किया है, वह शरणार्थियों पर खर्च करता है। उसकी युवा मर्दानगी का खजाना बर्बाद हो गया था। जीवन के अनमोल वर्ष, बुद्धि की ताकत, युवाओं के उज्जवल दर्शन, अध्यात्मिक आकांक्षाये वासना की आग में भस्म हो जाती है। COLHin 150.1

एक बड़ा आकाल पैदा होता है, वह चाहने लगता है, और वह खुद को देश के एक नागरिक से जोड़ता है, जो उसे सूअर चराने के लिये खेत में भेजता है। एक यहूदी के लिये यह सबसे अधिक रोजगार का अपमान जनक था, जो युवा अपनी स्वतन्त्रता पर गर्व करता है, वह अब खुद को गुलाम पाता है। वह सबसे बुरे बन्धन में है। “अपने पापों की डोरियो के साथ’ (नितिवचन 5:22)। उसे चमक दिखाने वाली चमक-धमक गायब हो गयी और वे अब स्वयं पर बोझ महसूस करने लगा। उस उजाड़ और आकाल से त्रस्त भूमि पर जमीन पर बैठे, जिसके कोई साथी नहीं थे। लेकिन सूअर, वह खुद को उन पतियों के साथ पेट भरने के लिये तैयार नहीं था और बेहोश की हालत में है। इन समलैंगिक साथियों में से जिन्होंने अपे समष्द्ध दिनों में उनके बारे में सोचा था और खाया और उसके खर्च पर शराब पी थी, उनके साथ दोस्ती करने के लिये उसके पास कुछ भी नहीं था। अब उका दंगाई आनन्द कहाँ है। अपने विवेक को पूरा करते हुये, अपनी संवेदनाओं को तोड़ते हुये, उससे खुद को खुश रखा, लेकिन अब पैसा खर्च होने के साथ, भूख से असन्तुष्ट, गर्व के साथ, अपने नैतिक स्वभाव के साथ, अपने कमजोर स्वभाव और अविश्वास के साथ, अपनी हीन भावनाओं के साथ, मष्त प्रतीत होता है, और वह सबसे दुष्ट है। COLHin 150.2

पापी की यहां क्या तस्वीर है। यद्यपि उनके प्रेम के आशीर्वाद से घिरा हुआ है,लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है कि पापी, आत्म-भोग और पापपूर्ण आनन्द पर तुला है, ईश्वर से अलग होने की इतनी इच्छा रखता है। वह कप्तधन पुत्र की तरह, अपने अधिकर के रूप में ईश्वर की अच्छी बातों का दावा करता है। वह उन्हें एक कोर्स के रूप में लेता है, और कष्तज्ञता की कोई वापसी नहीं करता है, प्रेम की कोई सेवा प्रदान करता है। जैसे कि कैन प्रभु की उपस्थिति से अपने घर की तलाश में निकला था, के रूप में विलक्षण “दूर देश में भटक गया। इसलिये पापी ईश्वर की विस्मषत में खुशी को तलाश करते है। (रोमियों 1:28) COLHin 151.1

जो कुछ भी हो सकता है उसका स्वयं में केन्द्रित जीवन हो सकता है। जो कोई परमेश्वर से अलग रहने के लिये भाग लेता है वह अपने पदार्थ को बरबाद कर रहा है, और खुद को अनन्तकाल तक दिवालिया बनाने के लिये काम कर रहा है। वह आदमी जो परमेश्वर से अलग हो जाता है कि वह स्वयं की सेवा करे तो वह धन का दास है। परमेश्वर ने स्वर्गदूतों के सहचर्च के लिये जो मन बनाया है, वह उस सेवा की ओर नीचा हो गया है जो सांसरिक और सर्वश्रेष्ठ है। यह वह अन्त है जो स्वयं की सेवा करता है। COLHin 151.2

यदि आपने ऐसा जीवन चुना है तो आप जानते कि आप उसके लिये पैसा खर्च कर रहे है जो रोटी नही है, और उसके लिये श्रम जो सन्तोष जनक नहीं है। आपका समय आता है जब आपकी जिन्दगी में गिरावट आती है। अकेले दूर की गिनती में आप अपने दुख को महसूस करते है क्योंकि कि निराशा में आप रोते है, “मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ। मुझे इस मष्त्यु की देह से कौन छुड़ायेगा? (रोमियों 7:24)। यह एक सार्व भौमिक सत्य का कथन है जो पैगम्बर के शब्दों में निहित है, “शापित है वह पुरूष जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और उसका सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा से

भटक जाता है निर्जल देश के अधमये पेड के समान होगा और कभी भलाई ने देखेगा। वह निर्जल और निर्जन तथा छाई भूमि पर बसेगा। (यर्मयाह 17:5, 6)। ईश्वर, "जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहराय जाओगें क्योंकि वह भलों और बुरा दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, धर्मियों और अधर्मियों दोनो पर मेंह बरसाता है। (मत्ती 5:45) लेकिन पुरूषों के पस खुद को धूप और बारिश से दूर करने की शक्ति है। इसलिये जबकि धार्मिकता का सूरज चमकता है और अनुग्रह की बौछार सभी के लिये स्वतन्त्र रूप से गिरती है, हम खुद को अलग कर सकते है, ईश्वर अभी भी जंगल में पके जलते वाले स्थानों में वास करते है।" COLHin 151.3

ईग्श्वर का प्यार अभी भी उस पर बरसों से बरस रहा है जिसने खुद को उससे अलग होने के लिये चुना है और उसे पिता के घर वापिस लाने के लिये आपरेशन के प्रभावों में सेट करता है। अपने मनहूस बेटे में विलक्षण पुत्र खुद के लिये आया था" शैतान ने उसके ऊपर जो भ्रामक शक्ति डाली थी, वह टूट गई। उसने देखा कि उसका दुख उसके अपनी मूर्खता का प्रमाण था, और उसने कहा, मेरे पिता के कितने किराये के घर नौकरो के पास है, और पर्याप्त रोटी है और मैं भूख से मरता हूँ। मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा।" जैसे कि वह दुस्साहिक था, अपने पिता के प्यार के विश्वास में कौतुक को आशा मिली। यह वह प्यार था जो उसे घर की ओर खींच रहा था तो ये ईश्वर के प्यार का आश्वासन है जो पापी को ईश्वर के पास लौटने के लिये विवश करता है। ईश्वर की भलाई आपको पश्चाताप की ओर ले जाती है।" (रोमियों 2:4)। एक सुनहरी श्रंखला दिव्य प्रेम की दया और करूणा, प्रत्येक अपूर्ण आत्मा के चारो ओर से गुजरती है। प्रभु घोषणा करता है, "मैंने तुम्हें एक सदाबहार दस्ताने के साथ प्यार किया है, इसलिये घर से मैं ने आकर्षित किया है। (यिर्मयाह 31:3)। COLHin 152.1

बेटा अपना अपराध कबूलने की ठानता है। वह यह कहते हुये अपने पिता के पास जायेगा, 'मैंने स्वर्ग में और तुम्हारे आगे पाप किया है, और पुत्र कहलाने के लायक नहीं हूँ। लेकिन वह कहते है, यह दिखाते हुये कि उनके पिता के प्यार के बारे में उनकी धारण कैसी है, मुझे अपने किराये के नौकरो में से एक बनाओ।" COLHin 152.2

युवक सूअर के झूडो और उनके चारे को छोड़कर अपने चेहर अपने घर की ओर मोड़ लेता है। कमजोरी के साथ, भूख से तड़पते हुये, वह अपने मार्ग पर उत्सुकता से चलता है। अपनी गन्दगी को छुपाने के लिये उसके पास कुछ भी नहीं लेकिन उसके दुख ने उसके अभिमान को जीत लिया और वह एक नौकर के स्थान पर भीख मांगने के लिये दौड़ता है जहाँ वह एक बार एक बच्चा था। COLHin 152.3

बाद में समलैंगिक, विचारहीन युवा के रूप में वह अपने पिता के द्वार से बाहर चला गया, उस पिता के दिल में एक लम्बे अरसे से चली आ रही पीड़ा का सपना था। जब वह अपने जंगली साथियों के साथ नाचता और दावत देता था, तो क्या वह उस छाया के बारे में सोचता था जो उसके

घर पर गिर गयी थी। और अब जैसे पके हुये दर्दनाक कदमों के साथ वह घर के मार्ग का पीछा करता है,वह नहीं जानता कि कोई उसकी वापसी के लिये प्रहरी है। लेकिन जब तक वह एक शानदार तरीका, "नहीं छोड़ता तब तक पिता अपने रूप को बदल देता है। प्रेम दूत दृष्टि का है। पाप के वर्षों की गिरावट भी बेटे की आखों से नहीं छिप सकती। वह "दया करता था और दौड़कर उसकी गर्दन पर गिर जाता था' एक लम्बे, सुस्त, निविदा आलिगन में। COLHin 152.4

पिता अपने बेटे के दुख और अपमान पर ध्यान नहीं देता। वह स्वयं के कंधों से चौड़े, धनी मंत्री को धारण करता है और उसे पुत्र के व्यर्थ रूप से लपेटता है और युवा यह कहते हुये पश्चाताप करते है, "पिता मैं, ने स्वर्ग के विरूद्ध पाप किया है, और तुम्हारी दषष्ट में, एक बांध अधिक योग्य है।" नौकरों को बुलाओं' पिता उसे अपने पास पकड़ लेता है और उसे घर ले आता है। उसे नौकर के स्थान के रूप में कोई अवसर नहीं दिया जाता है। वह एक बेटा है जिसे सबसे अच्छे घर के सदस्यों के साथ सम्मानित किया जायेगा और जिस प्रतीक्षा करने वाले पुरूष और महिलायें सम्मान और सेवा करेगें। COLHin 153.1

पिता ने अपने नौकरों से कहा, "सबसे अच्छी पौशाक लाओ और इसे पहना दो, और उसके हाथ पर एक अंगूठी डालो और पैरो में जूते पहनाओ, और एक तन्दुरूस्त बछड़े को लाओं और उसे मारकर अच्छा भोजन तैयार करो, क्योंक मेरा बेटा मर गया था और फिर से जिन्दा हो गया है, वह खो गया था अब मिल गया है और वो खुशियाँ मनाने लगे। COLHin 153.2

अपनी बेचैन युवावस्था में, अपने पिता को कठोर और गम्भीर के रूप में देखता था। अब उसकी सोच कितनी अलग है। इसलिये जो लोग शैतान से छले जाते है वे परमेश्वर को कठोर और सटीक समझने के लिये छले जाते है। वे उसे निंदा करने के लिये देखने के रूप में मानते है। वे शैतान द्वारा परमेश्वर को कठोर और सटीक मानते है और पापी को प्राप्त करने के लिये अनइच्छुक के रूप में निंदा करते हैं जब तक कि उसको मदद करने के लिये कोई कानूनी बहाना न हो। उनका कानून वे पुरूषों की खुशी पर प्रतिबन्ध के रूप में मानते है जिससे वे बचने के लिये खुश है। COLHin 153.3

लेकिन वह जिसकी आंखे मसीह के प्रेम द्वारा खोली गई है, वे ईश्वर की करूणा से भर जायेगें। वह अत्याचारी अथक रूप से प्रकट नहीं होता है, लेकिन वह एक पिता के रूप में अपने पश्चाताप करने वाले बेटे को गले लगाने की लालसा रखता है। पापी भजनहार के साथ बहाना करेगा, "जैसे एक पिता अपने बच्चो को पीटता है, वैसे ही ईश्वर उन्हें भी भयभीत करते है।" (भजन सिंहता 103:13)। COLHin 154.1

दष्टान्त में कोई ताना नहीं है, अपने बुरे पाठ्यक्रम के विलुप्त होने के लिये कोई दलाई नहीं है। बेटे को लगता है कि अतीत को माफ कर दिया गया और भुला दिया गया, हमेशा के लिये अलग कर दिया गया। इसलिये ईश्वर पापी से कहते है, "मैं एक घने बादल, तेरा अपराध और एक

बादल के रूप में, वे पास करते है।" (यशायाह 42:42)। क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा। (यिर्मयाह 31:34)। "दुष्ट अपनी चाल चलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की और फिरे, फिर वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा। (यशायाह 55:7) | "यहोवा की यह वाणी है, कि उन दिनों में इजराएल का अधर्म ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा और यहूदा के पाप खोजने पर भी नहीं मिलेगें। यहूदा के पाप खोजने पर भी नहीं मिलेगे, क्योंकि जिन्हें मैं बचाऊँ मैं उनके पाप भी क्षमा कर दूंगा।" COLHin 154.2

पश्चाताप करने वाले पापी को प्राप्त करने के लिये ईश्वर की इच्छा का यहां क्या आश्वासन है। क्या आपने, अपना रास्ता खुद चुना है? क्या आप ईश्वर से दूर भटक गये है। क्या आपने अपराध के फल पर दावत मांगी है, केवल उन्हें अपने होठों पर राख लगाने के लिये? और अब तुम्हारा पदार्थ खर्च हो गया, तुम्हारा जीवन योजनाऐं थर्रा गई और तुम्हारी आशायें भर गई, क्या तुम अकेले बैठकर उजाड़ते हो? अब वह आवाज जो लम्बे समय से आपके दिल की बात कह रही है, जिसे आप नहीं सुनेगे, वह आपके लिये अलग और स्पष्ट है, "उठो सुनो और सुनो, यह तुम्हारा आराम नहीं है, क्योंकि यह प्रदूषित है, यह तुम्हे नष्ट कर देगा एक तबाही के साथ। (मीका 2:10)। अपने पिता के घर लौटो, वह तुम्हें आमत्रित करते हुये कहता है, "मेरे पास लौट आओ, क्योंकि मैं ने तुम्हें छुड़ा लिया है।" COLHin 154.3

जब तक आप खुद को धोखा नहीं देते तब तक मसीह से दूर रहने के लिये दुश्मन के सुझाव को न सुने। जब तक तुम कभी नहीं आओगे । जब शैतान आपके गंदे कपड़े की ओर इशारा करता है तो यीशु के वचन को दोहराये, जो कुछ पिता मुझे देते है वह सब मेरे पास आयेगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा। (यहून्ना 6:37) । दुश्मन को बताये कि यीशु का खून सभी पापों से साफ हो जाता है। "जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा। मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत हो जाएऊंगा। (भजन संहिता 51:7) COLHin 155.1

उठो और अपने पिता के पास जाओ। वह आपसे एक बहुत शानदार तरीके से मिलेगें। यदि आप पश्चाताप में उसकी ओर एक कदम भी उठाते है। वह आपको अनन्त प्यार की आपनी बाहों में रखने के लिये जल्द बाजी करेगा। उसका काम विपरीत आत्मा के रोने के लिये खुला है। ईश्वर के जाने के बाद सबसे पहले दिल से बाहर पहुँचना। कभी भी प्रार्थना की पेशकश नहीं की जाती है, फिर भी लड़खड़ाते हुये, कभी आंसू नहीं बहाया जाता है, हालांकि ईश्वर के पोषित होने बाद भी कभी सच्ची इच्छा नहीं की जाती है, हालांकि ये बहुत ही कमजोर है, लेकिन ईश्वर की आत्मा इसे पूरा करने के लिये आगे बढ़ती है। प्रार्थना के पूरा होने या हृदय की तड़प का ज्ञान करने से पहले ही मसीह की कृपा उस अनुग्रह को पूरा करने के लिये आगे बढ़ता है जो मानव आत्मा पर काम कर रहा है। COLHin 155.2

तुम्हारे स्वर्गीय पिता पाप से अपवित्र वस्त्रों को तुमसे लेगे। जर्कयाह की या सुन्दर परवलयिक भविष्यवाणी में, महायाजक यहोशू, जो प्रभु के दूत के सामने मैले कपड़ों में खड़ा है, पापी का प्रतिनिधित्व करता है। यह शब्द प्रभु ने कहा है, इसके ये मैले वस्त्र उतारो फिर उसने उससे कहा देख मैने तेरा अधर्म दूर किया, मैं तुझे सुन्दर वस्त्र देता हूँ और उन्होने उसके सिर पर याजक के योग्य शुद्ध पगड़ी रखी, और उसको वस्त्र पहनाये। (जर्कयाह 3:4, 5)। ईश्वर तुम्हे भी ईश्वर "उद्धार के वस्त्र" पहनायेगा और "पवित्रता के वस्त्रों' से सुसज्जित करेगा। (यशायाह 61:10) क्या तुम भेड़शालाओं में लेट जाओगे? और ऐसी कबूतरी के समान होगे जिसके पंख चान्दी से और जिसके पर पीले सोने से मढ़े हुये हो। (भजन संहिता 68:13) COLHin 155.3

वह तुम्हें अपने भोज के घर में ले आयेगा और तुम्हारे ऊपर उसके प्रेम का बैनर होगा (सुलेमान का गीत 2:4) यदि तुम मेरे मार्ग में चलते हो तो वह कहता है, "मैं तुम्हें इन स्थानों में बीच वाली जगह दूंगा'—यहां तक कि पवित्र स्वर्गदूतो के बीच जो उनके सिंहासन के चारों ओर है। (जर्कयाह 3:7)। COLHin 155.4

जैसा कि दूल्हा दुल्हन पर प्रसन्न होता है, उसी प्रकार तुम्हारा परमेश्वर तम्हारे ऊपर प्रसन्न रहेगा।" (यशायाह 62:5)" वह तेरे कारण परमेश्वर तुम्हारे ऊपर प्रसन आनन्द से मगन होगा। वह अपने प्रेम के मारे चुप रहेगा, फिर ऊँचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा। (सपन्याह 3:17) | और आनन्द के पिता के गीत में एकजुट हो जाओ, इसके लिये मेरा बेटा मर गया था, और फिर से जीवित हो गया। वह खो गया था और अब मिल गया है। COLHin 156.1

इस प्रकार से उद्धारकर्ता के दष्टान्त में आनन्द के दष्य्य के सामंजस्य को खराब करने के लिये कोई अप्रिय बात नहीं है, लेकिन अब मसीह एक और तत्व का परिचय देता है। जब वह घर आया तो बड़ा बेटा खेत में था और जैसे ही वह आया और उसने घर की ओर झांका, उसने संगीत और नष्य सुना। उसने एक नौकर को बुलाया और पूछा कि इन चीजों का क्या मतलब है? और उसने उससे कहा तेरा भाई आया है और तेरे पिता ने तन्दुरूस्त बछड़े को मार डाला क्योंकि उसने उसे सुरक्षित और स्वस्थ पाया। वह क्रोधित था और अन्दर नहीं गया। इस बड़े भाई को पिता की चिन्ता नहीं थी। उसने पिता की खुशी में साझा होना नहीं चाहा जो खुशी पिता को पथिक की वापसी पर हो रही थी। अन्दर की खुशियों की आवाजे से वह खुश नहीं हो रहा था। वह नौकर से उत्सव के कारण विषय में पूछता है और जबाव ने उसकी ईर्ष्या को और उत्तेजित कर दिया वो अपने भाई के स्वागत के लिये अन्दर नहीं गया। एहसान को ठेस पहुंचाने वाले को वह खुद का अपमान मानता है। COLHin 156.2

जब पिता उसके साथ प्रतिवाद करने के लिये बाहर आता है तो उसके स्वभाव था गौरव से घमण्ड और दुर्भावना प्रकट होती है। वह अपने पिता के घर में अपने जीवन के बिना किसी सेवा के एक दौर के रूप में रहता है और फिर इसका मतलब है कि बेटे को दिखाये गये एहसान के

विपरीत। वह यह स्पष्ट करता है कि उसकी अपनी सेवा बेटे के बजाय नौकर की ही है। जब उसे अपने पिता की मौजूदगी में एक आनन्दित खुशी मिलनी चाहिये थी तो उसके दिमाग ने अपने चिरस्थायी जीवन से लाभ अर्जित करने के लिये विश्राम किया। उनके शब्दों से पता चलता है कि यह इस बात के लिये है कि उन्होंने पाप करने वालों को भड़काया है। अब अगर इस भाई को पिता के उपहार में साझा करना है, तो बड़े बेटे को गिना जाता है कि उसके साथ अन्याय हुआ है। उसके भाई के साथ जो किया जा रहा था, वह उससे असन्तोष प्रकट करता है। वह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि वह पिता के स्थान पर था. उसे विलक्षणता नहीं मिली थी। वह उसे भाई के रूप में भी नहीं मानता और उसे "तुम्हारा बेटा' कहता है। COLHin 156.3

फिर भी पिता उसके साथ कोमलता से पेश आते है। "बेटा' वह कहता है, "तुम सदा मेरे साथ हो, और मेरे पास जो कुछ है वह सब तुम्हारा है," आपके भाई के बाहरी जीवन के इन सभी वर्षों के दौरान, क्या आपको मेरे साथ सहचर्च का विशेषाधिकार नहीं मिला है। COLHin 157.1

अपने बच्चो की खुशी के लिये जो कुछ भी वो कर सकता था उसने किया। वह स्वतन्त्र रूप से उनका बेटा था। बेटे को उपहार या इनाम का कोई सवाल नहीं है। "मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब तुम्हारा है" आपको केवल मुझ पर विश्वास करना है जो उपहार दिया जाए उसे मुफ्त में लो। COLHin 157.2

एक बेटे ने खुद को घर से अलग कर लिया, पिता के प्यार को समझ नहीं पाया। लेकिन अब वह लौट आया है खुशी की लहर हर कठिनाई को दूर करती है "ये तेरा भाई मर चुका था, और फिर से जीवित है, खो गया था अब मिल गया है।" COLHin 157.3

क्या बड़े भाई को अपनी ईर्ष्या और कठोर हष्दयता का पश्चाताप था? इस विषय में, मसीह चुप था। दष्टान्त के लिये अभी भी अधिनियमित किया गया था और यह उसके श्रेताओं के साथ यह निर्धारित करने के लिये आराम किया कि क्या परिणाम होना नेतष्त्वकर्ता द्वारा मसीह दिन के अपरिवर्तननीय हीरो का प्रतिनिधित्व किया गया था, वे अवमानना से भरे हुये है, जिस पर वे सार्वजनिक और पापी है क्योंकि वे अधर्म में महान जयादतियों करने के लिये माने गये है, स्वधर्म के साथ इन अभिमानियों को जमीन पर रखता है। दष्टान्त में बड़े लोगो के समान, उन्होनें परमेश्वर से विशेष विशेषाधिकार प्राप्त किये थे। उन्होंने ईश्वर के घर में होना का दावा किया, लेकिन उनके पास भाड़े की भावना था। वे आशा के लिये काम कर रहे है। उनकी नजर में ईश्वर एक स्टीक काम लेने वाला मुख्यिा था। उन्होंने मसीह को जनता और पापियों को उनकी कष्पा का उपहार प्राप्त करने के आमंत्रित करते देखा। ये उपहार जिसे रब्बियों ने केवल परिश्रम और तपस्या द्वारा सुरक्षित करने की आशा की थी और वो नाराज थे। विलक्षणता की वापसी ने पिता के दिल में खुशी भर दी, ऐसा करने से उन्हें ईर्ष्या के लिये उकसाया। COLHin 157.4

दष्टान्त में बड़े बेटे के साथ पिता की याद स्वर्गवासियों के लिये स्वर्ग की निर्विदा था। “मेरे पास जो कुछ भी है वह तुम्हारा है’ मजदूरी के रूप में नहीं अनपेक्षित दान के रूप में प्राप्त कर सकते है। COLHin 158.1

स्वार्थ-धार्मिकता न केवल पुरूषों को ईश्वर को गलत तरीके से प्रगट करती है परन्तु उन्हें अपने भाईयों के प्रति ठण्डा और महत्वपूर्ण बनाती है। बड़ा बेटा, अपने स्वार्थ और ईर्ष्या में, अपने भाई को देखने, हर कार्य की आलोचना करने और कम से कम कभी का आरोप लगाने के लिये तैयार खड़ा था। वह हर गलती का पता लगायेगा और हर गलत कार्य का अधि कतम लाभ उठायेगा। इस प्रकार वह अपनी अक्षम आत्मा को सही ठहराना चहाता था। आज भी कई लोग ऐसा ही कर रहे है। जबकि आत्मा प्रलोभनों की बाढ़ के खिलाफ अपना पहला संघर्ष कर रही है, वे जिद्दी, आत्म इच्छा शिकायत, आरोप लगाकर खड़े है, वे ईश्वर के बड़े होने का दावा कर सकते है, लेकिन वे शैतान की भावना के बारे में कहते है। अपने भाईयों के प्रति उनके रवैये से, इन आरोपियों ने इन लोगों को जगह दी जहाँ ईश्वर ने उन्हें उनके प्रतिज्ञान का प्रकाश नहीं दे सकते है। COLHin 158.2

कई लोग लगातार सवाल कर रहे है, “क्या मैं ईश्वर के सामने आऊगा. अपने आपको उच्च ईश्वर के सामने झकाउँगा? क्या मैं उससे पहले चढावे के साथ आंऊगा, एक साल की उम्र के बछड़ों के साथ|क्या ईश्वर हजारों मेढों से प्रसन्न होंगे या तेल की दस हजार नदियों के साथ? लेकिन “उसने तुम्हें दिखा दिया, हे मनुष्य, क्या अच्छा है और क्या ईश्वर को तुम्हारी आवश्यकता है, न्याय करने के लिये, दया करने के लिये, और अपने ईश्वर के साथ विनम्रता से चलने के लिये? (मीका 6:6-8)। COLHin 158.3

यह वह सेवा है जिसे ईश्वर ने चुना है-“ढीला करनेकृकृअन्याय से बनाये हुये दासों और अन्धरे सहने वाले जुआ तोड़कर उनको छुड़ा लेनाकृ कृऔर अपने जाति भाईयों से अपने को न छुपाना।” (यशायाह 58:6, 7) । जब आप अपने आप को पापियों के रूप में देखते हैं तो केवल अपने स्वर्गीय पिता के प्यार से बच जाते है, आपको दया आ जायेगी। दूसरों के लिये जो पाप में पीड़ित है। आप किसी भी घर्षणत ईर्ष्या और सेंसर के साथ दुख और पश्चाताप को पूरा नहीं करेगे। जब स्वार्थ की बर्फ आपके दिलों से पिघल जाती है तो आप ईश्वर के साथ सहानुभूति में होगे, और उनकी खुशी को बचाने में साझा करेगें। COLHin 158.4

यह सच है कि आप ईश्वर को प्राप्त करने का दावा करते है, लेकिन वह खो गया था, मिल गया है।” वह निकटतम संबन्धी द्वारा आपके लिये बाध्य है, इन्कार करते है और आप दिखाते है कि आप ईश्वर के परिवार में एक बच्चे के रूप में, लेकिन घर में किराये पर रहते है। COLHin 159.1

हालांकि आप खोये हुये लोगों के अभिवादन में शामिल नहीं होगें, फिर भी आनन्द बढ़ेगा, बाकी लोगों का स्थान पिता की ओर से और पिता के काम में होगा। वह जो बहुत क्षमा किया जाता है, वह बहतु प्यार करता है। लेकिन तुम बिना अंधेरे में रहोगे। क्योंकि “वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।” (यहून्ना 4:8)

अध्याय 17 - इसे इस वर्ष भी रहने दो

यह अध्याय लूका 13:1—9 पर आधारित है

जो उनके उपदेश में निर्णय की चेतावनी के साथ जुड़ा हुआ है। "मनुष्य का पुत्र नहीं आया है। उन्होंने कहा, "पुरूषों के जीवन को नष्ट करने के लिये, लेकिन उन्हें बचाने के लिये" (लूका 9:56)। "ईश्वर ने दुनिया की निंदा करने के लिये अपने बेटे को दुनिया में नही भेजा, लेकिन उसके माध्यम से दुनिया के बचाया जा सकता है।" (यहून्ना 3:17) ।ईश्वर के न्याय और निर्णय के संबंध में दया का उनका मिशन बंजर अंजीर के पेड़ के दष्टान्त में चित्रित किया गा है। COLHin 160.1

मसीह परमेश्वर के राज्य के लोगों को आगाह कर रहा था और उसने अपनी अज्ञानता और उदासीनता को झिड़क दिया था। आकाश में संकेत, जो मौसम की भविष्यवाणी करते थे, वे पढ़ने में तेज थे, लेकिन उस समय के संकेत, जो इतनी स्पष्ट रूप से उनके मिशन की ओर इशारा करते थे। COLHin 160.2

लेकिन पुरूष तक तैयार थे। जब पुरूष अब यह निष्कर्ष निकाल रहे है कि वे स्वंय स्वर्ग के पंसीददा है और यह कि दुराचार का संदेश दूसरे के लिये है। श्रेताओं ने यीशु को एक ऐसी घटना के बारे में बताया जिसने उत्साह पैदा किया था यहूदिया के गर्वनर पोटियस पिलातुस के कुछ उपायों ने लोगो के अपराध करने दिया। येरूशेलम में एक लोकप्रिय तबाही हुई थी, और पाइलट ने इसे हिंसा से उकसाने का प्रयास किया था। एक अवसर पर उनके सैनिकों ने मंदिर के प्रांगण पर भी आक्रमण कर दिया था और कुछ गैलिलियन तीर्थयात्रियों को उनके बलिदानों को खत्म करने के लिये कटाक्ष किया था। यहूदिया ने विपत्ति को पीड़ित के पाप के कारण निर्णय के रूप में माना और जो लोग हिंसा के इस कार्य को पकड़ते है वे गुप्त संतुष्टि के साथ ऐसा करते है। उनके विचार में उनके स्वयं के सौभाग्य ने उन्हें बहुत बेहतर साबित किया और इस लिये ये गैलिलियन की तुलना में ईश्वर के अधिक इष्ट थे। उन्हें इन पुरूषों के लिये निंदा के यीशु के शब्दों से सुनने की उममीद थी, जिन्हें संदेह था कि वे अपनी-अपनी सजा के लिये पर्याप्त रूप से हकदार नहीं है। COLHin 160.3

मसीह के शिष्यों ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिये उधम नहीं किया। जब तक कि उन्होंने अपने गुरू की राय नहीं सुनी। उन्होंने उन्हें अन्य पुरूषों के चरित्रों को पहचानने और उनके परिक्षित निर्णय के अनुसार प्रतिशोध को मापने के सन्दर्भ में इंगित किया था। फिर भी उन्होंने इन लोगो को दूसरों के ऊपर पापी के रूप में निरूपित करने के लिये मसीह की तलाश की। उनके जवाब पर वे आश्चर्यचकित थे। COLHin 161.1

भीड़ की ओर मुड़ते हुये, उद्धारकर्ता ने कहा, "मान लो कि तुम ये गैलिलियन सभी गैलिलियों से अधिक के पापी थे, क्योंकि उन्होंने इस तरह की चीजों को झेला है, मैं तुमहें कहता हूँ, अस्वीकार करो, लेकिन तुम पश्चाताप के अलावा, तुम सब आशीष को याद रखोगे।" इन चौका देने वाली

आपदाओं को उनके दिलों को नम करने के लिये और उनके पापों को पश्चाताप करने के तैयार किया गया था। प्रतिरोध का तूफान इकट्ठा हो रहा था जो जल्द ही उन सभी को तोड़ने के लिये था जिन्होंने मसीह में शरण नहीं ली थी। COLHin 161.2

जैसा कि यीशु ने चेलों और भीड़ के साथ बात की थी। वह भविष्यवाणी की दषष्ट से तत्पर था और येरूशेलेम की सेनाओं के साथ घेरे हुये था। उन्होंने चुने हुये शहर के खिलाफ एलियस की धमधमाहट की आवाज को सुना और हजारों की संख्या में घेराबन्दी बर्बाद हो गयी। यहूदिया में से कई, उन गैलिलियों की तरह, मन्दिर की अदालतों में बलि देने के बहुत कष्य में मारे गये थे। व्यक्तियों पर जो विपत्तियाँ पड़ी थी, वे ईश्वर से एक राष्ट्र के लिये समान रूप से दोषी थी। यीशु ने कहा, "पश्चाताप को छोड़कर सभी नष्ट हो जायेगे' थोड़े समय के लिये परिवीक्षा का दिन उनके लिये सुस्त रहा। अभी भी उनके पास उन चीजों को जानने का समय था जो उनकी शांति के लिये थी। COLHin 161.3

"एक निश्चित आदमी" ने जारी रखा, "एक अंजीर का पेड़ लगाया गया था, उसने कहाँ जिसमें दाख की बारी है, और वह आया और फल की तलाश की और उसे कोई फल नहीं मिला, इसे काट दिया जाय" और उसे जमीन पर गिरा दिया गया। COLHin 161.4

मसीह के सुननेवालों ने उनके शब्दों के आवेदन को गलत नहीं समझा। दाऊद ने इजराएल के विषय में गाया, जो निष्कर्ष से बेल लाया था। यशायाह ने लिखा था, "सेनाओं के यहोवा की दाख की बारी इजराएल का घर है, और यहूदा के लोग उसका सुहावना पौधा है।" (यशायाह 5:7) | जिस पीढ़ी के उद्धारकर्ता ने ईश्वर की दाख की बारी में अंजीर के पेड़ का प्रतिनिधित्व किया था, उसकी विशेष देखभाल और आशीर्वाद के घेरे में हैं। COLHin 162.1

अपने लोगों के प्रति परमेश्वर का उद्देश्य और उनके सामने की शानदार अभिरूचि, सुंदर शबदों में सामने रखी गयी थी "कि उन्हें धार्मिकता को वृक्ष, प्रभु का रोपण कहा जाये कि उनकी महिमा हो' (यशायाह 6:13)। प्रेरणा की आत्मा के तहत याकूब ने अपने अच्छे बेटे के बारे में कहा था। युसुफ एक फलदार कड़ी है, यहाँ तक कि एक कुंये से भी फलदार है, जिसकी शाखाये दीवार पर चलती है।" COLHin 162.2

और उसमें कहा, "तेरा पिता का प्रभु" आपकी सहायता करेगा' सर्वशक्तिमान "आपको ऊपर स्वर्ग के आशीर्वाद के साथ आशीर्वाद देगा, वह गहरी उस आशीर्वाद का अशीर्वाद देता है। (उत्पत्ति 49:22, 25)। इसलिये ईश्वर ने इजराएल को जीवन के कुओं द्वारा एक अच्छी बेल के रूप में लगाया था। उसने अपनी दाख की बारी "बहुत ही फलदार पहाड़ी में बनाई थी" उसने "इसे निकाल दिया और उसके पत्थरों को इक्ट्ठा किया, और इसे विकल्प बेल के साथ लगाया। (यशायाह 5:1. 2)। "और उन्होंने देखा कि यह अंगर के आगे लाना चाहिये" (यशायाह 5:2) | मसीह के दिन लोगों ने पहले के युगों की तुलना में पवित्रता का एक बड़ा प्रदर्शन किया था, लेकिन वे ईश्वर की

आत्मा की मीठी कब्रों से और भी अधिक निराश थे। चरित्र के अनमोल फल जिसने युसुफ के जीवन को इतना सुगंधित और सुन्दर बना दिया, यहूदी राष्ट्र में प्रकट नहीं हुये। अपने बेटे में ईश्वर फल चाह रहे और उन्हें कोई नहीं मिला। इजराएल सभी में एक सहकर्मी था। इसका अस्तित्व ही एक अभिशाप था, क्योंकि उसने दाख की बारी में वह स्थान भर दिया जो एक फलदार वक्ष भर सकता है। उसने इन आशिषों की दुनिया को लूट लिया जिन्हें भगवान ने देने के लिये बनाया था। इजराएलों ने राष्ट्रों में परमेश्वर को गलत तरीके से प्रस्तुत किया था। वे केवल बेकार नहीं थे, लेकिन एक निश्चित बाधा थी। बहुत हद कर तक उनका धर्म भ्रामक था और उद्धार के बजाय बर्बाद हो गये। COLHin 162.3

दृष्टान्त में दाख की बारी के सजाने वाला उस वाक्य सवाल नहीं करता है कि पेड़, यदि वह फलहीन रहा, तो उसे काट दिया जाना चाहिये, लेकिन वह जानता है और उस बजर पेड़ में मालिक की रूचि को साझा करता हैं। इसके विकास और फल को देखने के लिये कुछ भी नही है। वह मालिक की इच्छा का जवाब देते हुये कहता है, “इस साल इसे अकेले रहने दो, जब तक इसकी खुदाई और गोबर नहीं डालूंगा, तब तक यह अच्छा फल नहीं लायेगा।’ COLHin 163.1

माली एक सयंत्र को इतना अप्रकाशित करने के लिये मंत्री को मना नहीं करता है। वह अभी भी अधिक से अधिक देखभाल करने की तैयार खड़ा है। वह अपने आस-पास के वातावरण को सबसे अधिक अनुकुल बना देगा और इस पर ध्यान आकर्षित करेगा। COLHin 163.2

बेल के पेड़ में मालिक और उसको सजाने वाल उसके हित में एक है। इसलिये पिता और पुत्र का प्यार उनके चुने हुये लोगों के साथ था। मसीह अपने सुनने वालों से कह रहा था कि बढ़े हुये अवसर उन्हें दिये जायेगे, प्रत्येक साधन का अर्थ यह है कि ईश्वर का प्रेम जिस तरह से विकसित हो सकता है, वह इस बात पर आधारित होगा कि वे धार्मिकता के वष्क्ष बन सकते है जो दुनिया के आशीर्वाद के लिये फल ला सकते है। COLHin 163.3

माली के काम का नतीजा यीशु में दृष्टान्त में नहीं बताया। इस बिन्द पर उनकी कहानी को काट दिया गया था। इसका निष्कर्ष पीढी के साथ आराम आया, जिसने उनके शब्दों को उनके लिये गम्भीर चेतावनी दी गयी थी, यदि नहीं तो, उसके बाद आप इसे काट देगें।” उन पर यह निर्भर करता था कि क्या अपरिवर्तनीय शब्दों को जोर से बोला जाय। क्रोध का दिन निकट था। पहले से ही इजराएल को नुकसान पहुंचाने वाली आपदाओं में वे दाख की बारी का मालिक दया से उन्हें बेवजह पेड़ के विनाश के लिये मना कर रहा था। COLHin 163.4

चेतावनी हमें इस पीढ़ी में रेखा के साथ लगाती है। क्या तुम्हारा दिल लापरवाह और पेड़ निष्फल है। कुछ समय के बाद कयामत के शब्दों को कहा जायेगा? आपको उनके उपहार कब तक मिले। वह कब से देख रहा है और प्यार की वापसी के लिये इन्तजार कर रहा है। माली की निगरानी के तहत, अपने अंगूर के बाग में लगाये, क्या विशेषाधिकार है तुम्हारा कितनी बार निविदा

सुसमाचार सन्देश ने आपके दिल को रोमाचिंत किया है। आपने मसीह का नाम लिया, आप बाहरी तौर पर सम्बन्ध नहीं रखते है। उसके जीवन का ज्वार तुम्हारे भीतर से नहीं बहता है। उनके चरित्र की मीठे अनग्रह “आत्मा के फल” आपके जीवन में नहीं देखे जाते है। COLHin 163.5

बंजर पेड़ बारिश और धूप और माली की देखभाल प्राप्त करता है। यह मिटटी के पोषण खींचता है। लेकिन इसके अनुपादक खुर केवल जमीन को काला करते है जिससे फल देने वाले पौधे इसकी छाया में चार चांद नहीं लगा सकते । तो ईश्वर का उपहार आप पर आया, दुनिया का अशीर्वाद नहीं। आप दूसरों के विशेषाधिकार लूट रहे हैं, लेकिन आपके लिये उनका हो सकता है। COLHin 164.1

आप महसूस करते है, हालांकि यह मंद हो सकता है कि आप जमीन के कर्मी है। अभी तक उसकी महान दया में भगवान ने तुम्हें नहीं अलग किया वह तुम्हें रूखाई से नहीं देखता। वह उदासीनता के साथ दूर नही जाता है या विनाश पर छोड़ देता है। आप को देखकर वह रोता है, कयोंकि वह कई शताब्दियों पहले इजराएल के विषय में रोया था। मैं तुम्हें पाऊंगा, ऐ प्रेयकृकृक? मैं अपने गुस्से की उग्रता पर अमल नहीं करूंगा। मैं एप्रेम को नष्ट करने के लिये वापिस नहीं आऊँगा, क्योंकि मैं ईश्वर हूँ और मनुष्य नहीं।” (होशे 11:8, 9)। दयालु उद्धारकर्ता आपके बारे में कह रहा है, इस साल, इसे छोड दो, जब तक मैं इसके बारे में खदाई नहीं करूंगा और इसे तैयार करूंगा। COLHin 164.2

जोड़े गये परिवीक्षा की अवधि के दौरान इजराएल के लिये मसीह के प्रेम के बारे में क्या अटूट प्रेम था, क्रूस पर उसने प्रार्थना की, “पिता उन्हें क्षमा करें, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या करते है।” (लूका 23:34)। उसके स्वर्गरोहण के बाद, येरूशेलेम में सुसमाचार प्रचार किया गया। वहाँ पवित्र आत्मा उडेलने दिया गया था। COLHin 164.3

वहाँ पहले सुसमाचार के जीवित उद्धारकर्ता की शक्ति को प्रकट किया। “उसका चेहरा जैसा कि उसका चेहरा एक स्वर्गदूत का चेहरा था।” (प्रेरितों के काम 6:15) उसकी गवाही से दब गया। उसने अपना जीवन लगा दिया। वह सब स्वर्ग ही दे सकता था। “मेरे दाख की बारी के लिये और क्या किया जा सकता था’ मसीह ने कहा कि मैं ने इसमें नहीं किया है” (यशायाह 5:4)। इसलिये उनकी देखभाल आपके लिये श्रम कम नहीं है, बल्कि बढ़ गया है। फिर भी वह कहता है, “मैं प्रभु को रखता हूँ, मैं उसे हर पल पानी दूंगा, ऐसा न हो कि उसमें कोई चोट लगी हो, मैं रात-दिन रखूगा।” (यशायाह 27:3)। COLHin 164.4

यदि वह फल, अच्छी लाता हैं, तरह से आता है, और यदि नही, तो उसके बाद” ईश्वरीय संस्थाओं को जवाब देने वाला हष्दय तब कठोर हो जाता है जब तक कि वे पवित्र आत्मा के प्रभाव के प्रति अति संवेदनशील न हो। फिर यह है कि इस वचन को बोला गया है, “इसे काटों और क्यों जमीन पर गिराते हो।”? COLHin 165.1

आज वह तुम्हें आमंत्रित करता है, हे इजराएल, ईश्वर के पास आओं, वे ईश्वर हैककृमैं उनको चंगा करूंगा जो ईश्वर से दूर चले गये है, मैं उन्हें स्वतंत्र रूप में विकसित होगा और अपनी जड़ों को लेबनान के रूप में आगे बढ़ायेगा ।कृकृवे जो उसकी छाया के नीचे रहते है, लौट आयेगे। वे मकई के रूप में पुनजीवित होगें, और बेल के रूप में विकसित होगे।कृकृ कृमेरे से तेरा फल मिला है। (होशे 14:1-8)।

अध्याय 18 - राजमर्गो और सड़क के किनारे जाये

यह अध्याय लूका 4:1, लूका 14:12-24 पर आधारित है

उद्धारकर्ता एक फरीसी की दावत में एक अतिथि था। उन्होंने अमीरों के साथ-साथ गरीबों के भी निमंत्रण स्वीकार किये और उनके रिवाज के अनुसार उन्होंने अपने सत्य के पाठ से पहले दष्ष्य को उससे जोड़ा। यहूदियों के बीच पवित्र पर्व उनके सभी मौसमों के साथ जुड़ा हुआ था, जो कि धार्मिक और आनन्द दायक थे। ये उनके लिये शाश्वत आनन्द का आशीर्वाद का एक प्रकार था। यह उनके लिये शाश्वत जीवन का आशीर्वाद था। महान दावत जिस पर वे अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ बैठे थे, जबकि अन्यजातियों के बिना खड़े थे और लालसा भरी आंखों से देखा, एक विषय था जिस पर वे प्रसन्न थे। चेतावनी और निर्देश के पाठ जिसे मसीह देना चाहता था, उसने अब महान सिपहसालार के दष्टान्त से स्पष्ट किया। ईश्वर का आशीर्वाद, वर्तमान और भविष्य के जीवन के लिये, दोनो ने खुद को बन्द करने के लिये सोचा। उन्होंने अन्य जातियों को परमेश्वर की दया से वंचित कर दिया। दष्टान्त द्वारा मसीह ने दिखाया कि वे स्वयं उस समय दय के आमंत्रण को अस्वीकार कर रहे थे, ईश्वर के राज्य के लिये आवहान । उसने दिखाया कि दया का आंमत्रण, ईश्वर के राज्य के लिये बुलाहट, उन्होंने दिखाया कि जो निंमत्रण उन्होंने दिया था, उन्हें उन लोगों के पास भेजा जाना था, जिन्हें वे तिरस्कष्त करते थे, जिससे उन्होंने उनके वस्त्र छीने थे, जिन्हें वे कबूल करने वाले थे। COLHin 166.1

अपनी दावत के लिये मेहमानों को चुनने फरीसी अपने स्वार्थ के लिये सलाह ली थी। मसीह ने उससे कहा, “जब तुम रात का खाना खाते हो, तो न अपने दोस्तों को बुलाओं, न अपने भाईयों को, न अपने घरवालों को और न अपने अमीर पड़ोसियों को, ऐसा न हो कि वे फिर से तुम्हारी बोली लगा दे और तुम पर फिर से हमला किया जाये। लेकिन जब तुम एक दावत बुलाओं तो गरीबों, नौकरों, लंगड़े और अंधे को बुलाओं। और तुम ६ न्य हो जाओं। वो तुम्हें दे नहीं सकते, क्योंकि तुम बस पुनरूत्थान पर दष्ढ़ हो जाओगे।” COLHin 166.2

मसीह यहाँ उस निर्देश को दोहरा रहा था जो उसने इजराएल को मूसा के माध्यम से दिया था। उनके पवित्र भोजों में प्रभु ने निर्देशित किया था कि “अजनबी, पिताहीन, विधवा जो द्वार के लिये भीतर है। वे आयेगें, खायेंगे और सन्तुष्ट होंगे।(व्यवस्थाविवरण 14:29) COLHin 167.1

ये सभाये इजराएल को वस्तु पाठ के रूप में होनी थी। इस प्रकार सच्चे अतिथि को आनन्द का पाठ सिखाया जा रहा है, लोगों को शोक संतप्त और गरीबों की देखभाल करने के लिये पूरे वर्ष थे। और इन चेहरों मं एक व्यापक सबक था। इजराएल को दिया गया अध्यात्मिक आशीर्वाद अकेले अपने लिये नहीं था। ईश्वर ने उन्हें जीवन की रोटी दी कि वे इसे दुनिया को तोड़ कर दे। COLHin 167.2

यह काम उन्होंने पूरा नहीं किया था। मसीह के शब्द उनके स्वार्थ के लिये फटकार के थे। फरीसियों के लिये उनके शब्द विचलित थे। बात-चीत की एक और चौनल में बदलने की आशा करते हुये, उनमें से एक पवित्र हवा के साथ था, उसने कहा, “धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खायेगा” निश्चित था। उनका दृष्टिकोण उन लोगों के दृष्टिकोण के समान था जो आनन्दित होते हैं कि वे मसीह द्वारा बचाये गये है जिन पर मोक्ष का वादा किया जाता है। उसकी आत्मा बालम की तरह थी, जब उसने प्रार्थना की, “मुझे कठोर लोगों की मृत्यु को मरने दे, और मेरा अंतिम अन्त भी उसके जैसा होने दो’। (गिनती 23:10)। फरीसी स्वर्ग के लिये अपनी खुद की फिटनेस के विषय में नहीं सोच रहा था, लेकिन वह स्वर्ग मं आनन्द लेने की आशा करता था। उनकी टिप्पणी को दावत में मेहमानों के दिमाग को उनके व्यवहारिक कर्तव्य के विषय से दूर करने के लिये डिजाइन किया गय था। उसने उन्हें वर्तमान जीवन को धर्मी के पुनरूत्थान के दूरस्थ समय तक ले जाने के लिये सोचा। COLHin 167.3

मसीह ने ढोंग करने वाले को पढ़ा और उस पर अपनी आंखे तेज करते हुये उसने साथियों के सामने अपने वर्तमान विशेषाधिकार के चरित्र और मूल्य को खोला। उन्होंने उन्हें दिखाया कि उनके पास भविष्य के आशीर्वाद में साझा करने के लिये उस समय कार्य करने का एक हिस्सा था। COLHin 167.4

एक निश्चित आदमी उन्होंने कहा, “एक महान व्यक्ति ने रात के खाने के लिये काफी लोगों को बुलाया। जब दावत का समय आया, तो मेजबान ने दूसरे सन्देश के साथ अपने नौकर को अपेक्षित मेहमानों के लिये भेजा, “आओं, क्योंकि सभी चीजे तैयार है। लेकिन एक अजीब उदासीनता दिखाई दी। “सभी ने एक सहमति के साथ बहाना बनाना शुरू किया, पहले ने कहा, मैंने जमीन का एक टुकड़ा खरीदा है और मुझे इसे देखने की जरूरत है। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मैं ने बहाना बनाया है। दूसरें ने कहा, मैंने पांच जोड़ी बैल खरीदे है, मैं उन्हें साबित करने जा रहा हूँ, मैं प्रार्थना करता हूँ अपने मुझे माफ किया, और अन्य ने कहा में ने पत्नी से शादी की है इसलिये मैं नहीं आ सकता हूँ। COLHin 168.1

कोई भी बहाना एक वास्तविक आवश्यकता पर स्थापित नहीं किया गया था। जिस आदमी को अपनी जमीन के टुकड़े को देखने की जरूरत है, वह पहले ही खरीद चुका था। उनकी जल्दबाजी और देखने के लिये यह तथ्य के कारण था कि उनकी रूचि उनके खरीद में अवशोबित हो गयी थी। COLHin 168.2

बैलों को भी खरीदा गया था। उन्हें साबित करना केवल खरीदार के हित को सन्तुष्ट करना था। तीसरे की वजह से कोई जयादा समानता नहीं थी। तथ्य यह हैं कि इच्छित अतिथि ने एक पत्नी से शादी की थी। उसे दावत में अपनी उपस्थिति को रोकने की आवश्यकत नहीं थी। उनकी पत्नी का भी स्वागत किया जाता। लेकिन भोग के लिये उनकी योजनायें थी और ये उन्हें उस दावतत की

तुलना में अधिक वांछनीय लगता था, जिसमें उन्होंने भाग लेने का वायदा किया था। उन्होंने मेजबान की तुलना में अन्य समाज में खुशी पाना सीख लिया था। उन्होंने बहाना नहीं बनाया था, अपने इन्कार में शिष्टाचार का ढोंग भी नहीं किया। "मैं नहीं कर सकता' केवल सच्चई के लिये एक चूंघट था "मुझे आने की परवाह नहीं है।" COLHin 168.3

सभी बहाने एक पूर्वाग्रहित मन को धोखा देते है। इन अभिप्रायचित मेहमानों के लिये अन्य चियों सभी अवशोषित हो गयी थी। खुद को स्वीकार करने के लिये उन्होंन जो निमंत्रण स्वीकार किया था, उसे अलग रख दिया था और उदार मित्र को उनकी अनिश्चितता का अपमान किया गया था। COLHin 168.4

महान समर्थक द्वारा, मसीह सुसमाचार के माध्यम से दिये गये आशीर्वाद का प्रतिनिधित्व करता है। यह प्रावधान स्वयं मसीह से कम नहीं है। वह रोटी जो स्वर्ग से नीचे आती है, और उससे मोक्ष की की धारयें बहती है। प्रभु के दूतों ने यहूदियों को उद्धारकर्ता के आगमन की घोषणा की थी, उन्होंने मसीह को ईश्वर के मेम्ने के रूप में इंगित किया था, जो दुनिया के पाप को दूर करता है।" (यहून्न 1:29)। उन्होंने जो दावत दी थी उसमें ईश्वर ने उन्हें सबसे बड़ा उपहार दिया था जो स्वर्ग को सर्वश्रेष्ठ बना सकता है-एक उपहार जो गणना से परे है। ईश्वर के प्रेम ने मंहगे भोज को सुसज्जित किया था, जो एक निबोध संसाधन प्रदान करता था। यदि कोई व्यक्ति इस रोटी को खाता है, मसीह ने कहा "वह हमेंशा जीवित रहेगा।" (यहून्ना 6:51)। COLHin 169.1

लेकिन सुसमाचार की दावत के निमंत्रण को स्वीकार करने के लिये उन्हें मसीह और उसकी धार्मिकता प्राप्त करने के एक उद्देश्य के लिये उपादेय सांसारिक हितों को बनाना चाहिये। ईश्वर ने मनुष्य के लिये सभी दिया और वह उसे अपनी सेवा को हर सांसारिक और स्वार्थी और विचार से ऊपर रखने के लिये कहता है। वह विभाजित हष्दय को स्वीकार नहीं कर सकता । सांसारिक प्रेमों में लीन हष्दय को ईश्वर तक नहीं पहुंचाया जा सकता। COLHin 169.2

हर समय के लिये सबक हैं। हम परमेश्वर के मेम्ने का अनुसरण करते हैं, जो भी वह चाहता है, उनका मार्गदर्शन चुना जाता है, उनका साहचर्य सांसारिक मित्रों के साहचय से ऊपर है। मसीह कहता है, "वह जो मुझसे अधिक पिता या माता को प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नही है ओर वह मुझसे अधिक पुत्र या पुत्री को प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं है। (मत्ती 10:37) COLHin 169.3

परिवार की मंडली के चारों और, जब उनकी रोज़ की रोटी तोड़ी जाती थी, तो मसीह के दिनों में कई लोगों ने शब्दों को दोहराया, "धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खायेगा।" धन्य है वह जो परमेश्वर वे राज्य में रोटी खायेगा।" लेकिन मसीह ने दिखाया कि अनन्त लागत पर उपलब्ध मेज के लिये मेहमानो को खोजना कितना मुश्किल था। जो लोग उनकी बाते सुनते थे, वे जानते थे कि उन्होंने दया का निमंत्रण थोड़ा कम कर दिया है। उनके लिये सांसारिक सम्पत्ति, धन और मुख्य सभी अवशोषित थे, एक सहमति से उन्होंने बहाना बनाया था। COLHin 169.4

तो अब ये है। जिन बहानों को निमंत्रण के लिये मना करने के लिये आग्रह किया तो ईंजील के निमंत्रण को मना करने के लिये बहाने की पूरी जमीन को कवर किया। परूष यह घोषणा करते हैं कि वे ससमाचार के दावों पर ध्यान देकर अपनी सांसारिक सम्भावनाओं को उजागर नही कर सकते। अनन्त काल की चीजों की तुलनाये, वे अपने लौकिक अंत सम्बन्ध |ी को अधिक महत्व दे सकते थे। ईश्वर से मिले बहुत आशीर्वाद से वे अपनी रचनाकारों और उद्धारक से अपनी नहीं होंगे और वे दया के दूत से कहते है, “इस समय के लिये जाओं, जब मेरे पास एक सुविधाजनक मौसम होगा तो मैं तुम्हारे लिये पुकार करूंगा। (प्रेरितों के काम 24:25) । अन्य लोग उन कठिनाइयों का आग्रह करते है जो उनके सामाजिक सम्बन्धों में उत्पन्न होती है। क्या उन्हें ईश्वर की पुकार परिचितों के साथ सांमजस्य नहीं रख सकते। इस प्रकार वे अपने आपको दष्टान्त में वर्णित बहुत अभिनेता साबित होते है। दावत के मास्टर ने उनके आमंत्रण के लिये अवमानना दिखाने के रूप में अपने भड़काने वाले उत्तेजनाओं दिखाया है। COLHin 170.1

उस आदमी ने कहा, ‘मैं ने एक पत्नी से शादी की है, और इसलिये मैं नहीं आ सकता” एक बड़ी कक्षा का प्रतिनिधित्व करता है। कई लोग ऐसे होते हैं जो अपनी पत्नियों या अपने पति को ईश्वर की पुकार सुनने से होते है। पति कहता है, “मैं अपनी पत्नी के विरोध के बावजूद अपने कर्तव्य के प्रति विश्वास नहीं रख सकता। मझे झकाव मझे ऐसा करने के लिये बहुत कठिन बना देगा “पत्नी ने करूण पुकार सुनी, “आओं क्योंकि सब चीजे तैयार हो गयी है।” और वह कहती है, “मैं प्रार्थना करती हूँ कि तुमने मुझे बहाना बना दिया है।” मेरा पति दया के निमंत्रण को मना कर देता है, वह कहता है कि उसका व्यवसाय मार्ग में हैं। मुझे अपने पति के साथ जाना चाहिये और मैं नहीं आ सकता।’ बच्चों का दिल प्रभावित होता है। वे आने की इच्छा रखते है लेकिन वे अपने माता और पिता से प्यार करते है और चूंकि ये सुसमाचार की पुकार पर ध्यान नहीं देते। इसलिये बच्चे सोचते है कि उनके आने की उम्मीद नहीं की जा सकती है। वे यह भी कहते है, “क्या मैं ने बहाना बनाया?” COLHin 170.2

इन सभी ने उद्धारकर्ता की पुकार को सुनने से मना कर दिया क्योंकि वे परिवार के घेरे में विभाजन से डरते है। वे मानते हैं कि ईश्वर को मानने से इन्कार करने पर वे घर की शान्ति और समृद्धि का बीमा कर रहे है, लेकिन यह एक भ्रम है। COLHin 171.1

जो स्वार्थ बोते है वे स्वार्थ छीन लेगे। मसीह के प्रेम को अस्वीकार करते है जो अकेले ही मानव प्रेम को पवित्रता और दष्ढ़ता प्रदान करते है। वे न केवल स्वर्ग को खो देगे, परन्तु उस सच्चे आनन्द को खो देंगे, जिसके लिये स्वर्ग का त्याग किया गया था। COLHin 171.2

दष्टान्त में दावत के दाता ने सीखा है कि कैसे उसके निमंत्रण को लिया गया था और उसने कोधित होकर नौकर से कहा शहर की सड़कों और गलियों में जाओं और गरीबों, अंधो और अहसाये को दावत में लाओं। COLHin 171.3

मेजबान उन लोगों से मुखातिव हुआ, जिन्होंने उसके इनाम को तुच्छ जाना और एक ऐसे लोगों को बुलाया जो भरे हुये नहीं थे, जो बेघर थे। उन्होंने उन लोगों को बुलाया जो गरीब और भूखे थे, जो उसकी दावत का सम्मान करेगे। “जनता और वेश्याये” मसीह ने कहा’ तुम से पहले परमेश्वर के राज्य में जायेगे। (मत्ती 21:31)। जब भी, मनहूस इनसानियत का नमूना हो सकता है कि आदमी ईश्वर की सूचना और प्रेम के लिये बहुत कम, बहुत अधिक मनहूस नहीं हो सकते है। मसीह थके हुये और उत्पीड़ित लोगों की देखभाल करना चाहता है। वह उन्हें प्रकाश और खुशी और शान्ति देने के लिये तरसता है जो कहीं और नहीं मिलती है। सबसे अच्छा पापी उसकी गहरी, सबसे मजबूत दयालु वस्तु है। वह अपनी पवित्र आत्मा को कोमलता के साथ उन पर बरसने के लिये भेजता है, उन्हें अपने आप को आकर्षित करने की मांग करता है। COLHin 171.4

गरीब और अंधों को लाये सेवक ने अपने गुरू को सूचना दी, “ऐसा किया जाता है कि अभी और स्थान खाली है। प्रभु ने नौकर से राजमार्गो और सड़क के किनारे लोगों को लेकर आओं, तब मेरा घर भर जयेगा। यहाँ मसीह ने दुनिया के राजमार्गो और उपमार्गो बीमार यहूदी धर्म के बाहर सुसमाचार के कार्य दी और संकेत किया है। COLHin 171.5

इस आज्ञा का पालन करने के लिये पौलुस और बरनबास ने यहूदियों को किया “यह आवश्यक था कि परमेश्वर का वचन सबसे पहले आप से बोला जाय । लेकिन आपको देखकर कहा गया और अपने आप को हमेशा की जिन्दगी के अयोग्य समझने के लिये, जो हम बारी करते है अन्य जातियों ने क्योंकि प्रभु ने हमें आज्ञा दी है कि मैं ने तुम्हें अन्य जातियों का प्रकाश बनाने के लिये निर्धारित किया है कि तुम पष्थ्वी के सिरों पर उद्धार के लिये रहों। जब अन्य जातियों ने यह सुना तो वे प्रसन्न हुये, और गौरवान्तिव हुये। प्रभु के वचन और अनन्त जीवन के रूप में कई में माना जाता था।” (प्रेरितों के काम 13:46-48) COLHin 171.6

मसीह के चेलों द्वारा घोषित सुसमाचार संदेश दुनिया के लिये उनके पहले आगमन की घोषणायें थी। यह पुरूषों को उनके विश्वास के माध्यम से उद्धार की अच्छी खबर देता है। COLHin 172.1

यह उनके लोगों को भुनाने के लिये उनके दूसरे आगमन की ओर इशारा करता है और यह पुरूषों के सामने आशा, विश्वास और आज्ञाकारिता के माध्यम से सेट करता है और संतो की विरासत को प्रकाश में सांझा करता है। यह संदेश आज पुरूषों को दिया जाता है, और इस समय इसके साथ मिलकर मसीह के दूसरे आगमन की घोषणा करता है जो संकेत उन्होंने खुद दिये थे, वे पूरे हुये और परमेश्वर के वचन को सिखाने में हम जान सकते है कि प्रभु द्वार पर है। COLHin 172.2

प्रकाशितवाक्य में यहन्ना मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले सुसमाचार संदेश के उदघोषण को पूर्व निर्धारित करता है। वह स्वर्ग के बीच में एक स्वर्गदूत के रूप में उड़ान भरता

है, जो हमेशा के लिये उन्हें प्रचार करने के लिये सुसमाचार देता है, जो पष्थ्वी पर और हर देश में और दयालु, और जीभ और लोगों को कहते है। ईश्वर से डरो और उसकी स्तुति करो क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ गया है। (प्रकाशितवाक्य 14:6, 7)। COLHin 172.3

भविष्यवाणी में फैसले की यह चेतावनी, इसके जुड़े संदेशों के साथ, स्वर्ग के बादलों में मनुष्य के पुत्र के आने के बाद है। निर्णय की उदघोषणा मसीह के द्वितीय आगमन की घोषणा है। इस उदघोषणा को सार्वकालिक कहा जाता है। इस प्रकार मसीह के दूसरे आगमन के उपदेश, इसकी महत्वा की घोषणा, सुसमाचार संदेश का एक अनिवार्य हिस्सा दिखाया गया है। COLHin 172.4

बाईबल घोषणा करती है कि अंतिम दिनों में पुरूष सांसारिक कार्यो में सुख और धन प्राप्ति में लीन हो जायेगा। वे शाश्वत वास्तविकताओं से अंधे होगे। मसीह कहते है, "जैसे नूह के दिन थे, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना होगा। क्योंकि बाद से पहले दिनों में वे खा पी रहे थे, विवाह कर रहे थे जब तक नूह ने कश्ती में प्रवेश नहीं किया। और जब बाढ़ आई और उन्हें बहा कर ले गयी। उसी प्रकार मनुष्य के पुत्र का भी आगमन होगा। (मत्ती 24:37, 39)। COLHin 172.5

तो यह आज है। पुरूष लाभ के लिये पीछा कर रहे हैं और भोग के लिये स्वार्थी हैं जैसे कि कोई ईश्वर नहीं है और न होगा। नूह के दिनों में बाढ़ की चेतावनी पुरूषों को उनकी दुष्टता में घबराने और उन्हें पश्चाताप करने के लिये भेजा गया था। इसलिये मसीह के जल्द आने का संदेश सांसारिक चीजों में उनके अवशोषण से पुरूषों को उत्तेजित करने के लिये डिजाइन किया गया है। यह उन्हें शाश्वत वास्तविकताओं की भावना के लिये जगाने का ईरादा है कि वे प्रभु की मेज पर निमंत्रण देने के लिये ध्यान दे। COLHin 173.1

सुसमाचार का निमंत्रण पूरी दुनिया को दिया जाता है-"हर देश को और देश और जाति और लोगो को" (प्रकाशितवाक्य 14:6) चेतावनी और दया का अंतिम संदेश पूरी पथ्वी को अपनी महिमा के साथ हल्का करना है। यह अमीर और गरीब उच्च और निम्न, सभी वबो के लोगो तक पहुँचाना है। "राजमार्गो और सड़को पर जाओ, मसीह कहते है, "और आने के लिये मजबूर करें कि मेरा घर भर जाये। COLHin 173.2

सुसाचार की चाह के लिये दुनिया खत्म है। ईश्वर वचन के लिये अकाल है। ऐसे कुछ है जो मानव पंरपरा के साथ शब्द का प्रचार करते है। यद्यपि पुरूषों के हाथ में बाईबल होती है, उन्हें सेवकों से लोगों तक अपना तक अपना संदेश पहुंचाने का आहास करता है। चिरस्थायी जीवन का वचन उन्हें देना चाहिये जो अपने पापों में डूबे हुये है।" COLHin 173.3

राजमार्गो और सड़को में जाने की आज्ञा में मसीह उन सभी के कार्यो को निर्धारित करता है जिन्हें वह अपने नाम से मंत्री बताता है। परी दुनिया मसीह के सेवकों के लिये मैदान है। पूरा मानव परिवार उनकी मंडली में शामिल है प्रभु की इच्छा है कि उनकी कृपा का शब्द हर आत्मा को घर ले आये। COLHin 173.4

बहुत हद तक यह व्यक्तिगत श्रम द्वारा पूरा किया जाता है। यह मसीह की योजना थी। उनका काम काफी हद तक व्यक्तिगत साक्षत्कार से बना था। उनके पास एक दिवसीय दर्शकों के लिये वफादार सम्बन्ध था। उस एक आत्मा के माध्यम से संदेश से अकसर हजारों तक बढ़ाया जाता था। COLHin 173.5

हम आत्माओं को हमारे पास आने के लिये इन्तजार नहीं कर रहे है, हमें उनकी तलाश करनी चाहिये जहाँ वे है। जब वचन का पुल्पिट से प्रचार किया गया है तो काम शुरू हो गया है। ऐसे बहुवचन है जो कभी भी सुसमाचार तक नहीं पहुँचेगे जब तक कि ये उन तक ना पहुंचाया जाये। COLHin 174.1

दावत का निमंत्रण सबसे पहले यहूदिया को दिया गया था, जिन लोगों को शिक्षकों और नेताओं के रूप में पुरूषों के बीच खड़े होने के लिये बुलाया था, वे लोग जिनके हाथों में भविष्यवाणी का समाचार था जो प्रतिबद्ध किया गया था, अपने मिशन को आगे बढ़ाने में। यदि पुजारी और लोग की बुलाहट को ध्यान में रखते तो वे दुनिया को सुसमाचार का निमंत्रण देने में मसीह के दूतों को एक जुट होते। सच्चाई उन्हें भेजी गयी थी कि वे इसे लागू करे। जब उन्होंने बुलाहट से इन्कार कर दिया, तो वे इसे गरीबी, नौकरानियों, पड़ावों और अंधों के पास भेज दिया गया। जनता और पापियों को निमंत्रण मिला। जब सुसमाचर को अन्य जातियों को भेजा जाता है, तो काम करने की यही योजना होती है। संदेश राजमार्गो में दिया जाता है, उन लोगों के लिये जो दुनिया के काम में सक्रिय भाग लेते है लोगो के शिक्षकों और नेताओं को। COLHin 174.2

प्रभु के दूतों को यह ध्यान में रखना चाहिये। झुड के चरवाहों के लिये शिक्षको को दैवीय रूप से नियुक्त किया जाता है, यह एक वचन के रूप में आना चाहिये जो कि ध्यान में रखा जाए। जो लोग समाज के बाधों की श्रेणी में आते है उन्हें कोमल स्नेह और भाई चारे सहित रहना चाहिये। व्यवसायिक जीवन में पुरूष विश्वास के उच्च पदों पर बड़े अविष्कारशील संकायें और वैज्ञानिक अन्तर्द्रष्टि के साथ पुरूष सुसमाचार के शिक्षक जिनके मन को इस समय के लिये विशेष सत्यों ने नहीं बुलाया गया है ये पहले होना चाहिये, पुकार सुन ले। उनके लिये आमंत्रण देना होगा। COLHin 174.3

धनी के लिये एक काम करना है। उन्हें अपनी जिम्मेदारी के लिये जागष्त होने की जरूरत है क्योंकि उन्हे स्वर्ग का उपहार दिया जाता है। उन्हें यह याद दिलाने की आवश्यकता है कि उन्हें एक खाता दिया जाना चाहिये जो जीवित और मष्त लोगो का न्याय करेगा। धनी व्यक्ति को परमेश्वर के प्रेम और भय में आपके श्रम की आवश्यकता होती है। बहुत बार यह अपने धन पर भरोसा करता और अपने खतरे को महसूस नहीं करता है। इसके मन की आखो को स्थायी मूल्य की चीजों को और आकर्षित करने की आवश्यकता है। उसे सच्चाई अच्छाई के अधिकार को पहचानने की जरूरत है जो कहता है, “हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो। और मुझसे सीखों, क्योंकि मैं मन में

दीन और नम्र हूँ और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जुआ सहज और बोझ हल्का है। (मत्ती 11:28-30)। COLHin 174.4

जो लोग दुनिया में उच्च शिक्षा धन या पुकार के लिये खड़े है, वे शायद ही कभी आत्मा के हितों के सम्बन्ध में सम्बोधित किये जाते है। कई मसीह कार्यकर्ता इन वर्गो से सम्पर्क करने में संकोच करते है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिये। यदि कोई आदमी डूब रहा होता है तो हम उनके साथ नहीं खड़े होते है और उसे नष्ट होते देखते है, क्योंकि वह एक वकील, व्यापारी या एक न्यायाधीश था। यदि हम व्यक्तियों को एक उपद्रव में भागते हुये देखते है तो हम उन्हें वापिस आग्रह करने में संकोच नहीं करेंगे। जो भी उसकी स्थिति और बुलाहट होती है। न ही हमें आत्मा के संकेट के पुरूषों की चेतावनी देने में संकोच करना चाहिये। COLHin 175.1

सांसारिक वस्तुओं के प्रति भक्ति के कारण किसी की भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। उच्च सामाजिक पदों में से कई दिल से और घमंड के बीमार है वे एक शान्ति के लिये तरस रहे है जो उन्होंने नहीं की है। समाज के सबसे ऊँचे पद पर वे लोग है जो मोक्ष के लिये भूखे और प्यासे है। कई लोग मदद प्राप्त करते है यदि प्रभु के कार्यकर्ता व्यक्तिगत रूप से उनसे सम्पर्क करेंगे, एक दयालु तरीके से मसीह के प्यार से दिल निर्विदा बन गया। COLHin 175.2

सुसमाचार संदेश की सफलता सीखे गये भाषणों वाकपटु प्रशासकों या गहन तर्को पर निर्भर नहीं करती है ये संदेश की सरलता और जीवन की रोटी के लिये भूखी आत्माओं के लिये इसके अनूकुल पर निर्भर करता है। मुझे बचने के लिये क्या करना होगा? यह आत्मा की इच्छा है। COLHin 175.3

सबसे सरल और विनम्र तरीके से हजारों लोगों तक पहुंचा जा सकता है। सबसे अधिक बुद्धिजीवी जिन्हें दुनिया के सबसे अधिक उपहार प्राप्त पुरूषों और महिलाओं के रूप में देखा जाता है, वे अक्सर ईश्वर से प्यार करने वाले व्यक्ति के सरल शब्दों से तरोताजा हो जाते है, और जो उस प्रेम को स्वाभाविक रूप से बोल सकते है जैसे कि दुनिया की उन चीजों की बात करती है जो उनकी रूचि रखते है। COLHin 175.4

सबसे गहराई से अक्सर अच्छी तरह से तैयार और अध्ययन किये गये शब्दों का प्रभाव कम होता है। लेकिन प्राकृतिक सादगी में बोली जाने वाली ईश्वर के पुत्र या पुत्री की सच्ची, ईमानदार अभिव्यक्ति में यह सुनने की शक्ति है कि लम्बे समय से मसीह और उसके प्रेम के खिलाफ जो उन्हें अपने दिलों को बन्द कर रखा वो खुल जायेगा। COLHin 176.1

मसीह के लिये कार्यकर्ता को याद रखे कि वह अपने बल पर श्रम करने के लिये नहीं है उसे बचाने के लिये, उसकी शक्ति में विश्वास के साथ ईश्वर के सिंहासन को धारण करने दे। उसे प्रार्थना में ईश्वर के साथ, बहस करने, वे फिर ईश्वर से उसे दी गई सुविधाओं के साथ काम करें। पवित्र

आत्मा को उनकी दक्षता के रूप में प्रदान किया जाता है। दिलों को प्रभावित करने के लिये सेवक स्वर्गदूत उसकी तरफ से होगे। COLHin 176.2

अगर येरूशेलेम के नेताओं और शिक्षकों ने मसीह के लाये हुये सत्य को प्राप्त किया होता, तो उनके शहर का मिशनरी केन्द्र बन गये होता, पिछड़ा इजराएल परिवर्तित हो गया होता। प्रभु के लिये एक विशाल सेना एकत्रित की गई होती। और वे कितनी तेजी से दुनिया के सभी हिस्सों में सुसमाचार को ले जा सकते थे। इसलिये अब यदि प्रभाव के पुरूष और उपयोगिता के लिये बड़ी क्षमता मसीह के लिये जीती जा सकती है, तो उनके माध्यम से गिरे हये को उठाने या बाहर करने में इकटठा और मोक्ष की खाई को दूर तक फैलाने में काम पूरा हो सकता है। तेजी से आमंत्रण दिया जा सकता है कि ईश्वर की और से मेहमानों को इकट्ठा किया जाये। COLHin 176.3

लेकिन हम गरीब वर्ग के लोगों की उपेक्षा करने के लिये केवल महान प्रतिभाशाली पुरूषों के विषय में नहीं सोचते है। अपने दतों को मसीह निर्देश देता है कि वे सडको और उन दरिन्दों के पास जाये, जो धरती के एक कोने में है। महान शहरों के न्यायालयों और गलियों में देश के एकाकी मार्गों में परिवार और व्यक्ति है। शायद एक अजीब भूमि में अजनबी जो चर्च सम्बन्धे के बिना है और जो अपने अकेलेपन में महसूस करने के लिये आते है कि ईश्वर उन्हें भूल गये है। COLHin 176.4

उन्हें समझ नहीं आ रहा है उन्हें बचने के लिये क्या करना चाहिये। कई पाप में डूब गये है बहुत से संकट में है। वे दुख, इच्छा, अविश्वास, निराशा के साथ दबाये जाते है। शरीर और आत्मा दोनों में हर प्रकार के रोग उन्हें प्रभावित करते है। वे अपनी परेशानियों का हल ढूंढने में लम्बे समय से लगे हये और शैतान उन्हें उन वासनाओं और सखों में तलाश करने के लिये प्रेरित करता है जो बर्बादी और मौत का कारण बनते है। वह उन्हें संदोम का मेघ भेट कर रहा है जो उनके होठों पर राख बन जायेगी। वे उसके लिये अपने पैसा खर्च कर रहे है जो रोटी नही है और उसके लिये उसका श्रम जो सन्तुष्ट नहीं है। COLHin 177.1

इन पीड़ितों में हम उन लोगों को देखते है जिन्हें मसीह बचाने आया था। उनके लिये उनका निमंत्रण है "अहो, सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ, दूध बिन रूपये और बिना ही आकर ले जो, जो भोजन वस्तु नहीं है, उसके लिये तुम रूपया लगाते हो, जिससे पेट नहीं भरता। उसके लिये क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुये खाने पाओगे और चिकनी—चिकनी वस्तुयें खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे। कान लगाओ, मेरे पास आओ, सुनो तुम जीवित रहोगे और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात दाऊ पर अटल करूणा की वाचा। (यशायाह 55:1-3)। COLHin 177.2

ईश्वर ने एक विशेष आज्ञा दी थी कि हमें अजनबी, निर्वासित और गरीब आत्माओं को नैतिक शक्ति में कमजोर है जो उनका साथ देना चाहिये। कई जो धार्मिकता के प्रति पूर्ण उदासीन दिखाई

देते है, वे आराम और शान्ति के लिये तरसते है, हालांकि वे बहुत गहराई तक पाप में डूब चुके है, लेकिन उन्हें बचाने की संभावना है। COLHin 177.3

मसीह के सेवक उसकी मिसाल पर चलते है। जब वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर गया, तो उसने दुख को कम किया और बीमारों को चंगा किया। फिर उसने उनके राज्य के सम्बन्ध में में महान सत्य उनके सामने रखा। यह उनके अनुयायियों का काम है। जैसा कि आप शरीर को पीड़ित करने से राहत पाते है, आप आत्मा की इच्छा के लिये मंत्री बनाने के तरीके पायेंगे। आप उत्थानकर्ता को इंगित कर सकते है, और महान चिकित्सक के प्यार के बारे में बता सकते है, जिसके पास अकेले बहाल करने की शक्ति है। COLHin 177.4

खराब निराशा वाले लोगों को बताये जो भटक गये है कि उन्हें निराशा की जरूरत नहीं है। यद्वपि वे मिट गये है और सही चरित्र का निर्माण नहीं कर रहे है ईश्वर को उन्हें पुर्नस्थापित करने के लिये खुशी है, यहाँ तक कि उनके उद्धार की खुशी भी। वह स्पष्ट रूप से निराशाजनक साम्रगी लेने के लिये प्रसन्न होता है, उन लोगों के माध्यम से जिनके द्वारा शैतान ने काम किया है और उन्हें उनकी कृपा के विषय बनाते है। वह उन्हें प्रकोप से छुड़ाने के लिये आनन्दित होते हैं जो अवज्ञाकारी है। उन्हें बताये कि हर आत्मा के लिये चिकित्सा, सफाई है। प्रभु की मेज पर उनके लिये एक जगह है। वह उनके स्वागत के लिये बोली लगाने का इन्तजार कर रहे है। COLHin 178.1

जो लोग उपमार्ग और सड़कों में जाते है, वे व्यापक रूप से अलग चरित्र के अन्य लोगो को पायेगे, जिन्हें उनकी सेवकाई की आवश्यकता है। ऐसे लोग है जो अपने पास मौजूदा सभी रोशनी तक जी रहे है और ईश्वर को सबसे अच्छी सेवा दे रहे है तो वो जानते है कि कैसे। लेकिन उन्हें एहसास है कि उनके लिये और उनके बारे में उन लोगों के लिये एक बड़ा काम होना है। वे ईश्वर के एक गुप्त ज्ञान के लिये तरस रहे है, लेकिन उन्होंने केवल अधिक से अधिक प्रकाश की चमक को देखना शुरू कर दिया है। वे आंसुओं के साथ प्रार्थना कर रहे है कि ईश्वर उन्हें आशीर्वाद भेजेगे जो विश्वास से वे दूर करते है। महान नगरो की दुष्टता के बीच इनमें से कई आत्माओं को ढूढा जाना है। उनमें से कई बहुत ही विनम्र परिस्थितियों में है और इस वजह से उनका ध्यान दुनिया की ओर नहीं है। उनमें से कई सेवक और कलिसयों के लोग कुछ भी नहीं जानते है। लेकिन नीच दयनीय स्थानों में वे प्रभु के साक्षी है। उनके पास मसीह प्रशिक्षण के लिये थोड़े हल्के अवसर हो सकते है, लेकिन नग्नता, भूख और ठण्ड के बीच वे दूसरों को सेवक बनाना चाहते है। ईश्वर की कृपा प्रकट करने वाले भक्तों को इन आत्माओं की तलाश है, उनके घरों की यात्रा कर, उनकी आवश्यकताओं के लिये पवित्र आत्मा सेवक की शक्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा। उनके साथ बाईबल का अध्ययन करें और उनके साथ उस सादगी से प्रार्थना करे जो पवित्र आत्मा को प्रेरित करते है। मसीह अपने सेवकों को एक संदेश देगा जो आत्मा को स्वर्ग की रोटी की रूप में होगा। घर परिवार से दिल से कीमती आशिर्षे मिलेगी। COLHin 178.2

दृष्टान्त में दिये गये आदेश, "उन्हें अन्दर आने के लिये मजबूर करते है, अक्सर गलत व्याख्या की गई है। यह शिक्षक के रूप में माना जाता है कि हमें पुरूषों को सुमाचार प्राप्त करने के लिये बाध्य करना चाहिये। लेकिन यह निमंत्रण के तत्कालिकता और प्रस्तुत किये गये सकत की प्रभावशीलता को दर्शाता है। सुसमाचार कभी भी लोगों को मसीह में लाने के लिये बाध्य नही करता है। इसका संदेश है" वो हर एक जो प्यासा है, तुम पानी में आओ' (यशायाह 55:1) । COLHin 179.1

"आत्मा और दुल्हन कहते है, आओकृकृकृकृऔर जो कोई भी, उसे जीवन का पानी स्वतंत्र रूप से लेने देगा।" (प्रकाशितवाक्य 22:17) परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह की शक्ति हमें आने के लिये विवश करती है। COLHin 179.2

उद्धारकर्ता कहता है, "देख मैं द्वार खड़ा हुआ खटखटाता है, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर खेलेगा तो मैं उसके घर के अन्दर आकर खाना खाऊंगा और वो मेरे साथ।" (प्रकाशितवाक्य 3:20)। वह डांट फटकार से नहीं या धमकी देकर अलग हो जाता है, लेकिन लगातार खोये हुये लोगो की तलाश करता है, कहता है, "मैं तुम्हें कैसे दूंगा?" (होशे 11:8) । उसका प्यार जिददी दिल से वापस चला जाता है वह अधिक बल के साथ विनती करता है, देखो मैं दरवाजे पर खड़ा हूँ और दस्तक देता हूँ।" उनके प्यार की जीत की शक्ति आत्माओं को अन्दर आने के लिये मजबूर करती है और मसीह के लिये वे कहते है, "तेरा सौभ्यता नफरत ने उन्हें महान बना दिया। (भजन संहिता 18:35)। COLHin 179.3

मसीह अपने दूतों को उसकी लालसा वाले प्रेम को प्रदान करेगा जो उसने खुद को खो जाने के लिये दिया है। हम कोमल कहने के लिये नहीं, "आओं' ऐसे लोग जो बुलाहट को सुनते है, लेकिन उनके काम भी इसके अर्थ में लेने के लिये सुस्त है उनकी आंखे उनके आसू उनके लिये स्टोर में कुछ भी अच्छा देखने के लिये अंधे है। बहुतों को अपने महान पतन का एहसास है। वे कहते हैं, मैं मदद करने लायक नहीं हूँ, मुझे अकेला छोड़ दो। लेकिन कार्यकर्ताओं को निराश नहीं होना चाहिये। कोमलता से प्यार में, निराशा और असहाय लोगों को पकड़े। उन्हें अपनी हिम्मत, अपनी आशा, अपनी ताकत दे। दया से उन्हें आने के लिये मजबूर करते है।" कुछ में करूणा होती है, एक अन्तर होता है, दूसरे लोग डर से बचाते है, उन्हें आग से बाहर निकालते है। (यहूदा 22, 23)। COLHin 179.4

यदि परमेश्वर के सेवक विश्वास में उसके साथ चलेगे, तो वह उनके संदेश को शक्ति देगा। उन्हें अपने प्रेम और ईश्वर की कृपा को अस्वीकार करने के खतरे को प्रस्तुत करने के लिये सक्षम किया जायेगा। ताकि पुरूषों को सुसमाचार स्वीकार करने के लिये विवश किया जा सके। यदि मनुष्य अपना ईश्वर प्रदत्त भाग करेगे तो मसीह अद्‌भुत चमत्कार करेगा। मानव हृदय में आज तक महान परिवर्तन हो सकता है जैसा कि पिछली पीढ़ियों में कभी भी नहीं हुआ है। जॉन बन्यन

को अपवित्रता से बचाया गया था और गुलाम व्यवहार से जॉच न्यूटन को एक उत्थान उद्धारकर्ता घोषित करने के लिये । एक बनियन और न्यूटन के आज पुरूषों के बीच से छुड़ाया जा सकता है। मानव ऐजेंटों के माध्यम से जो परमात्मा के साथ सहयोग करते है, कई गरीब जो बाहर है, उन्हें फिर से लाया जायेगा, और उनकी बारी में मनुष्य ईश्वर की छवि को बहाल करना होगा। ऐसे लोग है जिनके पास बहुत कम अवसर है, जो त्रुटि के तरीके से चले है क्योंकि वे नहीं जानते कि प्रकाश के बीम किसके पास आयेगो। जैसे कि मसीह का वचन जकई के पास आया, 'आज मुझे तेरे घर पर रहना है। (लूका 19:5) इसलिये ये वचन उनके पास आयेगा, और जो पाप करने वाले थे, उन्हें लगता है कि दिलों को कोमल समझेगे। एक बच्चे को क्योंकि मसीह ने उन्हें नोटिस करने के लिये नियुक्त किया है। बहुत से लोग गंभीर त्रुटि और पाप से आयेगे, और दूसरे की जगह लेगे, जिनके पास अवसर और विशेषाधिकार, लेकिन वो बेशकीमती नहीं है, कीमत और जब मसीह उसके राज्य में आयेगा, तो वे उसके सिहासन के पास खड़े होगे। COLHin 180.1

लेकिन "यह देखों कि तुम उसे नहीं बोलते हो,' (इब्रानियों 12:25)। यीशु ने कहा, "उन पुरूषों में से कोई भी जो प्रतिबंधित थे, मेरे समर्थक का स्वाद लेगें। COLHin 180.2

उन्होंने निमंत्रण को स्वीकार कर लिया था और उनमें से किसी को भी फिर से आमंत्रित नहीं किया जाना था। मसीह को अस्वीकार करने में, यहूदी अपने दिलों को सख्त कर रहे थे, और खुद को शैतान की शक्ति में दे रहे थे ताकि उनके लिये उनकी कृपा को स्वीकार करना असम्भव हो जाये, जो अब यह है। यदि ईश्वर के प्रेम की सराहना नहीं की जाती है और आत्मा को नरम और वश में करने के लिये एक प्रमुख सिद्धान्त नहीं बन जाता है, तो हम पूरी तरह से खो जाते है, खोये हुओं ने अपने प्यार का कोई बड़ा रूप नहीं दिया है जितना उसे देना है। यदि यीशु का प्रेम हृदय को वश में नहीं करता है तो कोई साधन नहीं है जिसके द्वारा हम तक पहुंचा जा सकता है। COLHin 180.3

हर बार जब आप दया का संदेश सुनने से इन्कार करते है तो आप अपने आप को विश्वास में मजबूत करते है। हर बार जब आप मसीह के लिये अपने दिल का दरवाजा खोलने मे विफल रहते है, तो आप उसे बोलने वाले की आवाज सुनने के लिये अधिक से अनिच्छुक हो जाते है। आप दया की आखिरी अपील पर प्रतिक्रिया देने के अपने अवसर को कम कर देते है। प्राचीन इजराएल के रूप में यह आप के बारे में नहीं लिखा जाना चाहिये, "एम मोतियों में शामिल हो गया है, उसे अकेला छोड़ दो। (होशे 4:17) | जैसा कि उसने येरूशलेम पर रोते हुये कहा, मसीह ने तुम्हारे बच्चों को एक साथ इकट्ठा किया है जैसा कि एक मुर्गी ने अपने पंखों के नीचे अपने को इकट्ठा किया है, और तुम अपना घर नहीं छोड़ोगे। (लूका 13:34, 35) COLHin 181.1

हम उस समय में रह रहे है जब दया का आखिरी संदेश, आखिरी निमंत्रण पुरूषों के बच्चों को लग रहा है। आदेश, राजमार्गो और सड़को में जाओ "अपनी अंतिम पूर्ति तक पहुंच रहा है।

हर आत्मा को मसीह का निमंत्रण दिया जायेगा। संदेशवाहक कह रहे है, "आओ क्योंकि चीजे अब तैयार है।" स्वर्गीय स्वर्गदूत अभी भी मानव ऐजेसियों के साथ सहयोग में काम कर रहे है। पवित्र आत्मा आपको आने के लिये, विवश करने के लिये, हर इच्छा को प्रस्तुत कर रहा है। मसीह कुछ ऐसे संकेत के लिये देख रहा है जो बोल्टों को हटाने और उनके प्रवेश के लिये आपके दिल के द्वार को खोलने की शर्त लगायेगा। स्वर्गदूतों को स्वर्ग में होने वाले कष्टों को सहन करने की प्रतीक्षा है कि एक और खोया हुआ पापी मिल गया है। स्वर्ग के मेजबान इंतजार कर रहे है, और अपनी वीणा पर प्रहार करने के लिये गाना गा रहे है कि एक और आत्मा ने सुसमाचार की दावत का न्यौते को स्वीकार किया है।

अध्याय 19 - क्षमा का माप

यह अध्याय मत्ती 18:22 पर आधारित है

पतरस इस सवाल के साथ मसीह के पास आया था, “मेरा भाई मेरे खिलाफ कितना पाप करेगा और मैं उसे माफ कर दूँ? सात बार तक?” रब्बियों ने क्षमा व्यायाम को तीन अपराधों तक सीमित कर दिया। पतरस मसीह की शिक्षा को, जैसा उसने सोचा था, उसे सात बार तक विस्तारित कर रहा, ये संख्या पूर्णता को दर्शाता है। लेकिन मसीह ने सिखाया कि हम कभी भी क्षमा करने से थके नहीं है। सात बार तक नहीं, लेकिन सत्तर गुना सात तक।” COLHin 182.1

फिर उसने वह सच्चा आधार दिखाया जिस पर क्षमा दी जानी है और एक अक्षम आत्मा को पोषित करने का खतरा है। एक दृष्टान्त में उन्होंने एक राजा से उन अधिकारियों के साथ व्यावहार करने की बात कहीं, जिन्होंने उनकी सरकार के मामलों का संचालन किया। इनमे से कुछ अधि कारी राज्य से संबधित बड़ी रकम की प्राप्ति में थे। उसके सामने एक आदमी लाया गया था, जिसके खाते में दस हजार प्रतिभाओं के योग के लिये उसके स्वामी का कर्ज था। उसके पास भुगतान करने के लिये कुछ भी नहीं था, और रिवाज के अनुसार राजा ने उसे बेचने का आदेश दिया, जिसके पास वह सब था, उसका भुगतान हो सकता है। लेकिन घबराया हुआ आदमी उसके पैरो पर गिर पड़ा, उसने कहा, “मेरे साथ सब्र रखो और में तुम सबको चुकाऊँगा। तब उस नौकर के मालिक ने दया से उसका उद्द शार माफ कर दिया। COLHin 182.2

“लेकिन वही नौकर बाहर गया और अपने एक साथी सेवक को पाया जिस पर उसका सौ मन बकाया था, उसने उस हाथ रखा और गले से पकड़कर कहा कि मेरा भुगतान करो, वो नौकर ने कहा मैं तुम्हारा पूरा भुगतान पूरा कर दूंगा। लेकिन उसने उसकी बात नहीं सुनी और उसे जेल में डाल दिया जब तक कि वो उसका भुगतान नहीं करेगा। जब उसके साथियों ने यह सब देखा तो वह बहुत पछताये और अपने प्रभु के पास एक ऐसा सन्देश आया था, जो उसके स्वामी ने उसे बाद में उसे बुलाया। उसने उससे कहा, “हे दुष्ट सेवक, मैं ने तेरा सारा कर्ज माफ कर दिया, क्योंकि तूने मुझे सबसे बड़ा माना” क्या तुझे भी तेरे सहपाठी पर दया नहीं आई यहां तक कि मुझे तुम पर दया आयी थी। और उसका स्वामी बहुत अधिक क्रोधित हो गया और उसे सतानेवालो के हवाले कर दिया जब तक कि वो उसका पूरा कर्जा न चुकाये । COLHin 182.3

यह दृष्टान्त विवरण प्रस्तुत करता है, जो चित्र से भरने के लिये आवश्यक होता है, लेकिन जिसका अध्यात्मिक महत्व में कोई प्रतिपक्ष नहीं होता है। उन पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिये। कुछ महान सच्चाईयों को चित्रित किया गया है और इन पर हमारा विचार दिया जाना चाहिये। COLHin 183.1

इस राजा द्वारा दी गयी क्षमा सभी पापों की एक दिव्य क्षमा का प्रतिनिधित्व राजा द्वारा किया जाता है जो करूणा के साथ आगे बढ़ता है। अपने सेवक का कर्ज माफ करता है। मनुष्य टूटे हुये

कानून की निंदा के अधीन था। वह खुद को नहीं बचा सका, और इसी कारण से मसीह इस दुनिया में आया, मानवता के साथ अपनी दिव्यता को जिया और अनन्यायी के लिये अपना जीवन दिया। उसने हमारे पापो के लिये खुद को दिया, और हर आत्मा को वह स्वतन्त्र रूप से रक्त खरीदी क्षमा प्रदान करता है। "ईश्वर के साथ दया और उसके साथ है अत्याधिक उद्धार ।" (भजन संहिता 130:7)। COLHin 183.2

यही वह आधार है जिस पर हमें अपने साथी पापियों के प्रति करूणा का प्रयोग करना चाहिये। "यदि ईश्वर हमसे प्यार करते है तो हमें भी एक दूसरे से प्यार करना चाहिये। (यहून्ना 4:11)।" स्वतन्त्र रूप से आपको प्राप्त हुआ है, "मसीह कहते है, "स्वंतत्र रूप से दें" (मत्ती 10:8)। COLHin 183.3

दष्टान्त ने जब ऋणी ने विलम्ब के लिये निवेदन किया, इस वादे के साथ, "मेरे साथ धैर्य रखो और मैं तुम सबका भुगतान कर दूंगा" वाक्य निरस्त कर दिया गया। पूरा कर्ज रदद कर दिया गया। उसने जल्दी ही उस गुरू के उदाहरण का अनुसरण करने का अवसर दिया जिसने उसे माफ कर दिया था। बाहर जाकर वह एक साथी सेवक से मिला जिसने उसे एक छोटी राशि देनी थी। उस दस हजार मुद्रायें को माफ कर दिया गया था, ऋणी में उस पर सौ मुद्रायें का बकाया कर दिया। लेकिन वह जो बहुत दयालु था, अपने साथी मजदूर के साथ पूरी तरह से अलग तरीके से पेश आया। उसके कर्जदार ने उससे एक अपील की, जो उसने खुद राजा से की थी, लेकिन एक समान परिणाम के बिना। वह जो हाल ही में माफ कर दिया गया था, वह कोमल और दयनीय नहीं था। दया ने उसे दिखाया उसने अपने संगी-साथियों के साथ व्यवहार नहीं किया। उन्होंने धैर्य रखने का अनुरोध नहीं किया। उसके लिये जो छोटी रकम बकाया थी, वह सभी कप्तधन नौकर को ध्यान में रखनी थी। उसने सभी को मांग की, कि वह अपने नियम समय के बारे में सोचे और एक वाक्य को लागू करें, जो उसके लिये गम्भीर था। COLHin 183.4

आज कितने लोग उसकी भावना को प्रकट कर रहे है। जब ऋणी ने अपने स्वामी से दया की याचना की, तब उन्हें अपने ऋण की महानता का कोई सही अर्थ नहीं था। उसे अपनी लाचारी का एहसास नहीं था उसने वह खुद को देने की आशा व्यक्त की "मेरे साथ धैर्य रखो' उसने कहा, "और मैं सब चुकाऊंगा।" इसलिये ऐसे बहुत से लोग है जो अपने स्वयं के कार्यों से आशा करते है कि वे परमेश्वर के पक्ष में योग्यता प्राप्त करेंगे। वे अपनी लाचारी से संबंधित नहीं है। वे ईश्वर की कष्पा को मुफ्त उपहार के रूप में स्वीकार नहीं करते है। बल्कि स्वयं को धार्मिकता में ढालने का प्रयास कर रहे हैं। उनका अपना टूटा नहीं है, और पाप के कारण दीन है और वे दसरों के प्रति सही और अक्षम है। ईश्वर के खिलाफ उनके अपने पापों की तुलना में उनके भाई के पापों के साथ-साथ एक सौ मुद्राऐं के लिये हजार मुद्राएं है-लगभग एक हजार से एक, अभी तक वे उनमे माफ करने की हिम्मत नहीं। COLHin 184.1

दृष्टान्त ने स्वामी ने स्वार्थी ऋणी को बुलाया और उससे कहा, "हे दुष्ट सेवक मैं ने तेरा वह कर्जा माफ कर दिया है क्योंकि मुझे सबसे ज्यादा पसन्द किया। क्योंकि तुझे भी मेरे सहवास पर दया नहीं आई होगी, तुझे और उसके स्वामी को तबाह किया गया, और उसे तड़पाने वालों तक पहुंचाया। जब तक कि उसके कारण वह सब तुम अपने दिलों से हर भाई को उनके अत्याचारों पर माफ नहीं करते। "वह जो क्षमा करने में इंका करता है, वह क्षमा की अपनी आशा को दूर कर रहा है।" COLHin 184.2

लेकिन इस दृष्टान्त की शिक्षा को गलत तरीके से पेश नहीं किया जाना चाहिये। हमारे प्रति परमेश्वर की क्षमा किसी भी बुद्धिमान में कम नहीं है कि हमारा कर्तव्य उसका पालन करे। इसलिये हमारे साथी पुरूषों के प्रति क्षमा की भावना सिर्फ दायित्व का दावा कम नही करती है। प्रार्थना मे जो मसीह ने अपने शिष्यों को सिखाया उसने कहा, "हमें हमारे ऋणों को माफ कर दो, क्योंकि हम अपने देनदारों को दया करते है।" (मत्ती 6:12) । इसके द्वारा उनका यह मतलब नहीं था कि हमारे पापों को क्षमा करने के लिये हमें अपने देनदारों से हमारे बकाया की पुनः प्राप्ति नहीं करनी चाहिये। यदि वे भुगतान नहीं कर सकते है, भले ही यह नासमझ या कठोर व्यवहार किया जाना चाहिये, लेकिन दृष्टान्त हमें असहिष्णुता को प्रोत्साहित करने के लिये नहीं सिखाता है। परमेश्वर का वचन घोषित करता है कि यदि कोई आदमी काम नहीं करेगा, न ही वह भोजन करेगा। (2 थिस्सलुकियों 3:10) प्रभु को मेहनत करने वाले व्यक्ति आलस्य में दूसरों का समर्थन करने की आवश्यकता चाहते है। अगर इन लोगों के पास समय का अभाव है, प्रयास की कमी है, जो गरीबी चाहते है। अगर इन दोषं को उन लोगों द्वारा नहीं किया जाता है जो उन्हें लिप्त करते है तो उनकी ओर से किया जाने वाला सब कुछ खजाने के साथ बैग में डालने जैसे होगा। अभी तक अपरिहार्य गरीबी है, और हम उन लोगों के प्रति एक उदासीनता दिखाते है जो दुर्भाग्यपूर्ण है। हम दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये जैसे कि हम स्वयं करते है, जैसे परिस्थितियों में वह इलाज करना चाहते है। COLHin 185.1

प्रेषित पौलुस के जरिये पवित्र आत्मा हमें आरोपित करता है "सो यदि मसीह में कुछ शान्ति और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता और कुछ करूणा और दया है। तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बढ़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन् दूसरो की हित भी चिन्ता करो। जैसे मसीह का स्वभाव था वैसा तुम्हारा भी स्वभाव हो। COLHin 185.2

लेकिन पाप को हल्के में नहीं माना जाता है। प्रभु ने हमें आज्ञा दी है कि हम अपने भाई पर गलत प्रभाव न डाले। वह कहता है, "यदि तेरा भाई तेरे खिलाफ अत्याचार करता है तो उसे "डांटे' (लूका 17:3)। पाप को उसके सही नाम से बुलाया जाना है और गलत तरीके से पेश आने से पहले स्पष्ट रूप से रखा जाना है। COLHin 185.3

विरोधी के अपने आरोप में, पवित्र आत्मा द्वारा पौलुस लिखते हे, "कि तू वचन को प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलहाना दे, और डांट और समझा। (2 तिमिथियस 4:2) और तीतस को वो लिखते है क्योंकि बहत से लोग निरंकुश बकवादी और धोखा देने वाले है, विशेष कर खतना वालो में से । इनका मुँह बन्द करना चाहिये, ये लोग नीच कमाई के लिये अनुचित बाते सिखा कर घर के घर बिगाड़ देते है। उन्हीं में से एक जन ने जो उन्हीं का भविष्यवक्ता कहा है, क्रेती लोग सदा झूठे, दुष्ट प्रशु, आलसी और पेटॅ होते है। यह गवाही सच है इसलिये उन्हें कड़ाई से चिनौती दिया कर कि वे विश्वास में पक्के हो जाये । (तीतुस 1:10-13) यदि तेरा भाई तेरे विरूद्ध जायेगा तो मसीह ने कहा, "यदि तेरा बन्धु तेरे साथ कोई बुरा व्यवहार करे तो अकेले में जाकर आपस में ही उसे उसका दोष बता। यदि वो तेरी सुन ले तो तूने अपने बन्धु को फिर जीत लिया है, पर यदि वो तेरी न सुने तो दो एक को ले जा ताकि हर बात की दो तीन गवाही हो सके। यदि वह उनकी न सुने तो कलीसिया को बता दे । और यदि वह कलीसिया को भी न माने, तो तू उससे ऐसा व्यवहार कर जैसे वह विधर्मी हो या वसूलने वाला हो। (मत्ती 18:15-17) COLHin 186.1

हमारे ईश्वर सिखाते है कि मसीहों के बीच कठिनाई के मामलों को चर्च के भीतर सुलझाया जाता है। उन्हें उन लोगों के सामने नहीं खोला जाना चाहिये जो ईश्वर से नहीं डरते। यदि एक मसीही अपने भाई के अन्याय करता है, तो उसे न्याय की अदालत में अविश्वासियों के लिये अपील न करे। मसीह के द्वारा दी गई तन्त्रिका को उसका अनुसरण करने दो। खुद का बदला लेने की कोशिश करने बजाय, उसे अपने भाई को बचाने की कोशिश करें। ईश्वर उन लोगों के हितों की रक्षा करेगा, जो उसे एक प्यारे से प्यार करते है और विश्वास के साथ हम अपने मामले को सही तरीके से न्याय कर सकते है। बहुत बार गलतियां बार-बार की जाती है, और गलत काम करने वाला अपनी गलती कवूल करता है, तो घायल हो जाता है, और सोचता है कि उसने काफ माफ कर दिया है। लेकिन उद्धारकर्ता ने स्पष्ट रूप से हमें बताया है कि किस तरह से गलत व्यवहार किया जाता है। "यदि तेरा भाई तेरे खिलाफ अत्याचार करता है, तो उसे डांटे और यदि वह पश्चाताप करे, तो उसे क्षमा कर" (लूका 17:3, 4) और उसे अपने आत्मविश्वास के योग्य न माने। विचार करें, "अपने आप को, ऐसा न हो कि आप भी परीक्षा में पड़ जायें। (गलतियों 6:1) COLHin 186.2

यदि आपके भाई गलत करते हैं तो आप उन्हें माफ कर देगें। फिर वे आपके पास स्वीकारोकित के साथ आते है, आपको नहीं कहना चाहिये। मुझे नहीं लगता कि वे पर्याप्त विनम्र है। मुझे नहीं लगता कि वे अपनी स्वीकारोकित महसूस करते है। आपके पास उन्हें जज करने का क्या अधि कार है जैसे कि आप दिल पढ़ सकते है? ईश्वर का वचन कहता है, "यदि वह अपने किये पर पछताये तो उसे क्षमा कर दो। यदि हर दिन वह तेरे विरूद्ध सात बार पाप करे और सातो बार लौटकर तुमसे कहे कि मुझे पछतावा है, तो तू उसे क्षमा कर दे। और न केवल सात बार, बल्कि सत्तर गुना सात ऐसे रूप में अक्सर ईश्वर माफ कर देता है। COLHin 187.1

हम स्वयं ईश्वर की स्वतन्त्र कष्पा के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते है। वाचा में अनुग्रह ने हमें अपना लिया। उद्धारकर्ता में अनुग्रह ने हमारे छुटकारे, हमारे उत्थान को प्रभावित किया। इस कष्पा को दूसरों पर प्रकट करने दी। हतोत्साहित करने के लिये किसी को कोई अवसर न दे | पीड़ित होने के लिये और अपने भाई को चोट पहुंचाने के लिये एक कठिन कठोरता नहीं है। मन या दिल में कोई कड़वा चूंट न दे। आवाज में तिरस्कार का कोई स्वर प्रकट न होने दे। यदि आप अपनी बात कहते है। यदि आप उदासीनता का रवैया अपनाते है, या संदेह या अविश्वास दिखाते है तो यह आत्मा की बर्बादी साबित हो सकती है। उसे मानवता के दिल को छूने के लिये सहानुभूमि के बड़े भाई के दिल के साथ एक भाई की आवश्यकता है। उसे एक सहानुभूति का मजबूत पकड़ महसूस करने दे, और कानाफूसी सुने और प्रार्थना करे। ईश्वर आप दोनो को एक समष्द्ध अनुभव देगे। प्रार्थना हमें एक दूसरे के साथ और ईश्वर के साथ एक जुट करती है। प्रार्थना यीशु को हमारे पक्ष में लाती है, और दुनिया, और शैतान को दूर करने के लिये बेहोश, हैरान आत्मा को नई ताकत देती है। प्रार्थना शैतान के हमलों को एक तरफ कर देती है। COLHin 187.2

जब कोई यीशु को देखने के लिये मानवीय खामियों से दूर जाता है, तो चरित्र में दिव्य परिवर्तन हो जाता है। दिल पर काम करने वाले मसीह की भावना उसकी छवि के अनुरूप है। फिर इसे यीशु को उठाने का प्रयास करने दे। मन की "ईश्वर की आत्मा मोने को निर्देशित किया जात, जो दुनिया के पाप को दूर करता है।" (यहून्ना 1:29)। और जब आप इस काम संलग्न होते है, तो याद रखे, "जो किसी पापी को पाप के मार्ग से लौटा लाता है, वह उस पापी की आत्मा को अनन्त मष्त्यु से बचाता है और उसके उनके पापों को क्षमा किये जाने का कारण बनता है। (याकूब 5:20)| COLHin 187.3

लेकिन अगर आप अपने अत्याचारों को क्षमा नहीं करते है तो न तो आपके पिता आपके अत्याचारों को क्षमा करेंगे। (मत्ती 6:15)। कुछ भी एक अटूट भावना को सहीं नहीं ठहरा सकता। वह जो दूसरों की क्षमा की गई गलती का हष्दय असीम प्रेम के महान हष्दय के करीब आ जाता है। ईश्वरीय करूणा का ज्वार पापी की आत्मा में और उससे दूसरें की आत्माओं में प्रवाहित होता है। मसीह ने जाता दया और दया प्रकट की है वह अपने में अनमोल है। जीवन उन लोगों में देखा जायेगा जो उनकी कष्पा के हिस्सेदार बनते है। लेकिन "अगर किसी में मसीह की भावना नहीं है तो वह उनका कोई नहीं है। (रोमियों 8:9)। वह ईश्वर से अलग-अलग है, केवल उससे अलग होने के लिये सनातन से अलग होते। COLHin 188.1

यह सच है कि उसे एक बार माफी मिल सकती है लेकिन उसकी अदम्य भावना दिखाती है कि वह सब परमेश्वर के प्यार को अस्वीकार कर देता है। उसने आपको ईश्वर से अलग कर लिया है और क्षमा करने से पहले जैसी हालत में है। उसने अपने पश्चाताप से इन्कार किया है, और उसके पाप उस पर है जैसे कि उसने पश्चाताप नहीं किया था। लेकिन दष्टान्त का महान सबक ईश्वर की करूणा और मनष्य की कठोरता के बीच विपरीत है इस तथ्य में कि ईश्वर की क्षमा दया हमारे

स्वयं का उपाय है। “कया तुम्हें भी अपने सहचर पर दया नहीं करनी चाहिये थी क्योंकि मुझे तुम पर दया आयी थी? COLHin 188.2

हमें माफ नहीं किया जाता, क्योंकि हम क्षमा करते है लेकिन जैसा कि हम क्षमा करते है सभी क्षमा का आधार ईश्वर के इक तरफा प्यार में पाया गया है। लेकिन दूसरों के प्रति हमारे रवैया से हम दिखाते है कि क्या हमने उस प्यार को अपना बनाया है। इसके अलावा मसीह कहता है, “तुम किस निर्णय के साथ न्याय करोगे, और किस उपाय से तुम मिलोगे, ये तुम्हारे लिये फिर से मापा जायेगा।

अध्याय 20 - हानि जो लाभ है

"यह अध्याय लूका 12:13-21 पर आधारित है"

यीशु मसीह दूसरों को खुश करना सिखा रहे थे इसके अलावा उनके शिष्य उनके बारे में इकट्ठा हुये थे। वह उन दष्श्यों के बारे में बात कर रहे थे जिनमें वे जल्द ही एक भाग का अभिनय करने वाले थे। विदेश में उन सच्चाईयों को प्रकाशित करने के लिये थे जो उन्होंने उनके लिये प्रतिबद्ध की थी, और उन्हें इस दुनिया के शासकों के साथ संघर्ष में खरीदा जायेगा। उनकी खातिर उन्हें अदालतों में, और मजिस्ट्रेट और राजाओं से पहले बुलाया जायेगा। उन्होंने उन्हें ज्ञान का आश्वासन दिया था, जो किसी को नहीं मिला। अपने स्वंय के शब्द जो भीड़ के दिलों को स्थानांतरित कर देते है और उनकी पत्नी के विरोध के भ्रम में लाते है जो कि उनके अनुयायियों से वादा किया था, उस आत्मा को विचलित करने की शक्ति का गवाह था। COLHin 189.1

लेकिन कई ऐसे भी थे जो केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये स्वर्ग की कष्पा चाहते थे। उन्होंने सत्य को स्पष्ट प्रकाश में स्थापित करने में मसीह की अद्भुत शक्ति को पहचान लिया। उन्होंने शासकों और मजिस्ट्रटों के सामने अपनी बुद्धि के अनुयायियों से बात करने का वादा सुना। क्या वह अपनी शक्ति को अपने सांसारिक लाभ के लिये उद्धार नहीं देगा। COLHin 189.2

"एक साथी ने उनसे कहा, गुरू मेरे भाई से बात करते है कि वह मेरे साथ विरासत को विभाजित करते है। मूसा के माध्यम से ईश्वर ने सम्पत्ति के प्रसारण के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश दिये थे। बड़े बेटे को पिता की सम्पत्ति का दुगुना हिस्सा मिला। (व्यवस्थाविवरण 21:17)। जब कि छोटे भाई एक जैसे थे। यह आदमी सोचता है कि उसके भाई ने उसे उसकी विरासत के लिये धोखा दिया है। अपने स्वयं के प्रयासों को सुरक्षित करने में विफल रहा है जो वह अपने नियम के रूप में मानता है, लेकिन अगर अन्त में हस्तक्षेप करेगा तो निश्चित रूप से प्राप्त होगा। उसने मसीह की सरगर्मी अपीले सुनी है और उसके शास्त्रों और फरीसियों की निन्दा की। अगर इस तरह के आदेश के शब्दों को इस बात से की जा सकती है तो वह दुखी आदमी को उसके हिस्से से इन्कार करने की हिम्मत नही करेगा। COLHin 189.3

मसीह द्वारा दिये गये एक मात्र निर्देश के बीच में, इस व्यक्ति ने अपने स्वार्थपूर्ण स्वभाव का खुलासा किया था। वह प्रभु की उस क्षमता की सराहना कर सकता है जो अपने स्वंय के मामलों की उन्नति के लिये काम कर सकती, लेकिन अध्यात्मिक सच्चाईयों न उसके दिलो दिमाग पर कोई पकड़ नहीं बनाई थी। COLHin 190.1

उत्तराधिकार प्राप्त करना उनका शोषक विषय था। यीशु महिमा के राजा, जो अमीर थे, फिर भी हमारे गरीब होने के कारण उनके लिये दिव्य प्रेम का खजाना था। पवित्र आत्मा ने उनसे यह आग्रह किया था कि वे विरासत के उत्तराधिकारी बने जो "अजेय और अपरिभाषित है, यह कि दूर नहीं। (पतरस 1:4)। उसने मसीह की शक्ति के प्रमाण देखे थे। अब महान शिक्षक से बात करने

का मौका था, अपने दिल में इच्छा रखने वाले को ऊपर उठाने का। लेकिन बनयन के रूपक में रेक के साथ आदमी की तरह। उसकी आंखे पृथ्वी पर टिकी थी। उसने अपने सिर के ऊपर मुकट नहीं देखा। साइमन मैगस की तरह वह सांसारिक लाभ के साधन के रूप में ईश्वर के उपहार को महत्व देता था। COLHin 190.2

पष्थ्वी पर उद्धारकर्ता का मिशन तेजी से एक निकटता के लिये आकर्षित कर रहा था। अपनी कष्पा के राज्य की स्थापना में, जो कुछ भी वह करने आया था उसे पूरा करने के लिये केवल कुछ महीने ही शेष थे, फिर भी मानव लालच ने भूमि के एक टुकड़े पर विवाद को उठाने के लिये उसे अपने काम से बदल दिया। लेकिन यीशु को अपने मिशन से अलग नहीं होना था। उनका जवाब था, किसने मुझे जज बनाया था और तुम्हारे ऊपर विभक्त किया? COLHin 190.3

यीशु इस आदमी को सिर्फ वहीं बता सकते थे जो सही था। वह मामलों में सहीं जानता था लेकिन भाई झगड़े में थे क्योंकि दोनो ही लोभी थे। मसीह ने वस्तुतः कहा, इस तरह के विवादों को निपटाना मेरा काम नहीं है। वह एक और उद्देश्य के लिये आया था, सुसमाचार का प्रचार करने के लिये और इस तरह पुरूषों को शाश्वत वास्तविकताओं की भावना पैदा करने के लिये। COLHin 190.4

इस मामले में मसीह के उपचार में उन सभी के लिये एक सबक है जो उनके नाम पर सेवक है। जब उन्होंने बारह को आगे भेजा, तो उन्होंने कहा, "चलते-चलते प्रचार करो और कहो स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। बीमारों को चंगा करो। मरे हुओ की जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालों तूने सेंत-मेंत पाया है, सेंत-मेंत दो। (मत्ती 10:7, 8)। वे लोगो के लौकिक लोगों को बसाने के लिये नहीं थे। उनका काम पुरूषों को ईश्वर से सामंजस्य बनाने के लिये राजी करना था। इस काम में मानवता को आशीर्वाद देने के लिये अपनी शक्ति को रखो। पुरूषों के पापों और दुखों का एक मात्र उपाय मसीह है, उनकी कृपा की सुसमाचार ही समाज को अभिशाप देने वाली बुराईयों को ठीक कर सकता है। गरीबी के प्रति अमीरों को अन्याय, गरीबों के प्रति घृणा । अमीर एक जैसे स्वार्थ में अपनी जड़ रखते है। वह अकेले, पाप के स्वार्थी दिल के लिये प्यार का नया दिल देता हैकृकृचलो मसीह के सेवकों को आत्मा के साथ सुसमाचार प्रचार करते है। स्वर्ग से नीचे और पुरूषों के हित के लिये उन्होंने काम किया। COLHin 191.1

जब इस तरह के परिणाम मानव जाति के आशीर्वाद और उत्थान में प्रकट होगे। क्योंकि मानव शक्ति द्वारा पूरी तरह से अंसभव है। हमारे मानव शक्ति द्वारा प्रश्नकर्ता और सभी समान विवादों को परेशान करने वाले चक्कर की जड़ पर प्रहार करते हुये उन्होंने कहा, तो और लोभ का अनुभव करो, क्योंकि मनुष्य का जीवन उन वस्तुओं की बहुतायत में नहीं है, जो उसके पास है। COLHin 191.2

“और वह उन्हें एक दष्टान्त देते हुये कहता है, एक निश्चित अमीर आदमी की जमीन बहुत खुशी से सामने आयी और उसने खुद को सोचकर कहा, मैं क्या करूंगा, क्योंकि मेरे पास अपना फल देने के लिये कोई जगह नहीं है? और उसने कहा, मैं यह करूंगा, मैं अपने खलिहान नीचे खीचूंगा, और अधिक से अधिक निर्माण करूंगा, वहां मैं अपने सभी फलों और अपने सामानों को तैयार करूंगा। और मैं अपनी आत्मा से कहूंगा, आत्मा तू बहुत वर्षो से छाये गये सामनों को खा रहा है, खाओं, पियो प्रफुल्लित रहे। लेकिन ईश्वर ने उससे कहा, मूर्ख इस रात तुम्हारी आत्मा को तुम्हारी आवश्यकता होगी तो ये चीजे किसी होगी। जो तू ने प्रदान की है? तो क्या वह अपने लिये खजाना बिछा रहा है। ईश्वर की ओर अमीर नहीं है। COLHin 191.3

मूर्ख अमीर आदमी के दष्टान्त से मसीह ने उन लोगो को मूर्खता दिखाई जो दुनिया को अपना सब कुछ बनाते है। इस आदमी ने ईश्वर से सब कुछ प्राप्त किया था। सूरज को अपनी भूमि पर चमकने की अनुमति दी गई थी, इसकी किरणें सिर्फ और सिर्फ अन्याय पर पड़ती है। स्वर्ग की बौछार बुराई पर और अच्छे पर उतरती है। प्रभु ने वनस्पति की फलने फूलने के लिये खेतों को बहुतायत से लाने के लिये प्रेरित किया था। धनी व्यक्ति को अपनी उपज के साथ क्या करना चाहिये इसके विषय में चिन्ता थी। उसके खालिहान जरूरत से अधिक भरे हुये थे। और उनके पास अपनी फसल के अधिशेष को रखने के लिये क्यों कोई जगह नहीं थी उसने ईश्वर के विषय में नहीं सोचा था जिससे उसके सभी दयालु आ गये थे उसे इस बात का एहसास नहीं था कि ईश्वर ने उसे अपने सामनों को भण्डार बना दिया है जिससे वो जरूरतमन्दों की मदद कर सके । उनके पास ईश्वर के सर्वशक्तिमान होने का एक धन्य अवसर था, लेकिन केवल अपने आराम के सेवक बनने के बारे में सोचा। COLHin 192.1

गरीब अनाथ, विधवा, पीड़ित की स्थिति को इन अमीर आदमी के कान में लाया गया था, ऐसे कई स्थान थे जिनमें अपना माल जमा करना था। वह आसानी से अपने बहुतायत के एक हिस्से से छुटकारा पा सकता था और कई जो भूखे थे उन्हे खिलाया जायेगा। कई नग्न कपड़े पहुने हुये, कई दिल खुश हो गये, रोटी और कपड़े के लिये कई प्रार्थनाओं का जवाब दिया और स्तुति का माधुर्य स्वर्ग तक चढ़ गया होगा। प्रभु ने जरूरतमन्दों की प्रार्थना सुनी थी और उनकी भलाई के लिये उन्होंने गरीबों के लिये तैयार किया था। (भजन संहिता 68:10) COLHin 192.2

कई लोगों की इच्छाओं के प्रचुर प्रावधान अमीर आदमी को शुभकामनाओं देने वाले आशीर्वाद में किये गये थे। लेकिन अपने दिल को जरूरतमन्दों के रोने के लिये बन्द कर दिया, और नौकरों से कहा, “यह मैं करूंगा, मैं अपने खालिहान नीचे गिराऊगा और अधिक से अधिक निर्माण करूंगा और मैं अपने सभी फलों और माल को सर्वश्रेष्ठ करूंगा और मैं कहूंगा, मेरी आत्मा, आत्मा तूने बहुत वर्षों तक माल जमा किया है, सकून ले खा, पी और मस्त रह।” COLHin 192.3

इस आदमी का उद्देश्य उन जानवरों की तुलना में अधिक नहीं था जो नाश होते है। वह ऐसे रहता था जैसे कोई ईश्वर कोई स्वर्ग कोई भावी जीवन न हो, जैसे कि उसके पास जो कछ भी था. वह उसका अपना था और वह ईश्वर या मनुष्य के लिये कुछ नहीं चाहता था। भजनहार इस अमीर आदमी का वर्णन किया जब उसने लिखा, "मूर्ख ने अपने दिल में कहा, कोई ईश्वर नही है।" (भजन संहिता 14:1) । COLHin 193.1

इस आदमी ने स्वंय के जीवन यापन किया। वह देखता है कि भविष्य बहुतायत से प्रदान किया जाता है, और उसके लिये और अब और कुछ नहीं है। लेकिन अपने मजदूरों के फलों का खजाना और आनन्द लेने के लिये । वह खुद को अन्य पुरूषों से ऊपर का पक्षघर मानता है और अपने साथी शहरवासियों द्वारा अच्छे निर्णय और समृद्ध नागरिकों के रूप में सम्मानित किया जाता है। "जब तुम अपने आप को अच्छा करोगे तो पुरूष तुम्हारी प्रशंसा करेगे।' (भजन संहिता 49:18) COLHin 193.2

लेकिन इस संसार की बुद्धिमान्ता ईश्वर के साथ मूर्खता है। (1 कुरिन्थियों 3:10)। जबकि धनी व्यक्ति वर्षों तक भोग के लिये तत्पर रहता है, प्रभु अलग-अलग योजनाओं की खोज कर रहा है। इस निराले भण्डार पर संदेश आता है, "तुम मूर्ख हो, रात को तुम्हारी आत्मा तुमसे ले ली जायेगी;; यह एक मांग है कि धन की आपूर्ति नहीं हो सकती है। जिस ६ न की उसने कुर्बानी की है, उसकी प्रतिपूर्ति खरीद सकते है। एक पल में जिसे वह अपने पूरे जीवन में सुरक्षित रखने के लिये जिम्मेदार है, वह बेकार हो जाता है। वे कौन सी वस्तुयें है जो आपने प्रदान की है,? उसके विस्तष्त क्षेत्र और अच्छी तरह से भरे हुये भण्डार उसके नियंत्रण में से गुजरते है, वह धन का ढेर लगाता है और यह नहीं जानता कि कौन उन्हें इक्ट्ठा करेगा।" (भजन संहिता 39:6)। COLHin 193.3

केवल एक चीज जो उसके लिये महत्वपूर्ण होगी वह अब सुरक्षित नहीं है। स्वयं के लिये जाने में उन्हें उस दिव्य प्रेम को अस्वीकार कर दिया है जो उनके साथी पुरूषों के लिये दया में बह गया होगा। इस प्रकार उसने जीवन को अस्वीकार कर दिया। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है, प्रेम ही जीवन है। इस आदमी ने संसार को अध्यात्मिक के बजाय शारीरिक की और दिया है। COLHin 193.4

"आदमी जो सम्मान में है और समझ नहीं है कि जानवरों की तरह जो नाश हो जाता है। (भजन संहिता 49:20) । COLHin 194.1

तो क्या वह उसके लिये खजाने का खजाना है और ईश्वर के प्रति समष्द्ध नहीं है। तस्वीर हर समय के लिये सच है। आप केवल अच्छे स्वार्थी के लिये योजना बना सकते है। आप एक साथ खजाना इकट्ठा कर सकते है। आप शानदार और उच्च निर्माण कर सकते है जैसे कि प्राचीन बेबीलोन के बिल्डरों ने किया था, लेकिन आप दीवार को इतना ऊँचा या फाटक नहीं बना सकते, जितना कि कयामत के दूतों को बन्द करना। बेलशाजर राजा ने "अपने महल में दावद दी" और सोने और चांदी के देवताओं की, पीतल, लोहे और पत्थर, लेकिन एक दश्य का हाथ उसकी दीवारों

पर कयामत के शब्दों में लिखा था। इस महल के द्वारा शगुतापूर्ण सेनाओं के चलने की आवाज सुनी गई “उस रात बेलशाजर, चालदियो के राजा मारे गये” और एक विदेशी सम्राट सिंहासन पर बैठा। (दानिय्येल 5:50)। COLHin 194.2

स्वंय के लिये जीना नाश होना है। लोभ स्वयं के लिये लाभ की इच्छा, आत्मा को जीवन से काट देती है। यह शैतान की आत्मा है कि वह स्वयं को आकर्षित करे। यह मसीह की आत्मा है कि वह माता की भलाई के लिये स्वंय का बलिदान दे। “और यह वह नियम है, जो ईश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में है। वह पुत्र को जीवित करता है, और वह जो ईश्वर का पुत्र नहीं है, वह जीवन नहीं है। (यहून्ना 5:11, 12)। COLHin 194.3

जहाँ वह कहता है, “लो और लोभ से सावधान है, क्योंकि अमन के जीवन में उन चीजों को बहुतायत नहीं है जो उसके पास था’।

अध्याय 21 - एक महान खाड़ी को स्थिर करना

यह अध्याय लूका 16:19-31 पर आधारित है

अमीर आदमी और लाजर के दृष्टान्त में, मसीह दिखाते है कि इस जीवन में पुरूष अपने अनन्त भाग्य का फैसला करता है। परिवीक्षाधीन समय के दौरान ईश्वर की कष्पा हर आत्मा को प्रदान की जाती है। लेकिन अगर पुरूष स्वयं सुख में अपने अवसरो को बर्बाद करते है, तो वे खुद को सदावहार चमक काट लेते है। परिवीक्षा के बाद उन्हें कोई अनुमति नहीं दी जायेगी। अपनी पसन्द से उन्होंने अपने और अपने ईश्वर के बीच एक अमोघ तय की है। COLHin 195.1

यह दष्टान्त उन अमीरों के बीच एक विरोधाभाष बनाता है जिन्होंने ईश्वर को अपनी निर्भरता नहीं बनाया है। मसीह दिखाता है कि समय आ रहा है जब दो वर्गो की स्थिति को उलट दिया जायेगा। जो लोग इस दुनिया के सामनों में गरीब है, फिर भी जो ईश्वर पर भरोसा रखते है, दुख में धैर्य रखते है, एक दिन उन लोगों से ऊपर हो जायेगा जो दुनिया के सबसे बड़े पद को दे सकते है, लेकिन जिन्होंने ईश्वर के सामने अपना जीवन समर्पण कर दिया। COLHin 195.2

“एक निश्चित अमीर आदमी था” मसीह ने कहा, “जो बैंगिनी और महीन लिनिन के कपड़े पहने हुये था, और हर दिन जमकर खाता था । और निश्चित भिखारी का नाम लाजर था, जो उसके दखाजे पर रहता था वो घावों से भरा हुआ था और उजाड़ हो गया था। अमीर आदमी की मेज से गिरे टुकड़ों से अपना पेट भरता था। COLHin 195.3

अमीर उस अन्यायी जज का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्ग के नहीं थे, जिन्होंने खुले तौर पर ईश्वर और मनुष्य के लिये अपनी अवहेलना की घोषणा की थी। उसने इब्राहीम का पुत्र होने का दावा किया। उन्होंने भिखारी के साथ हिंसा का व्यवहार नहीं किया था, उसे दूर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि उसकी दषष्ट असहनीय थी, यदि मानवता के गरीब, घर्षणत नमूने को उसके द्वार में प्रवेश करने से दिलासा दिया जा सकता है, क्योंकि वह अमीर आदमी तैयार था कि लेकिन वह अपने पीड़ित भाई की जरूरतों के लिये स्वार्थी था। COLHin 195.4

तब कोई अस्पताल नही था जिसमें बीमारों की देखभाल की जा सके दुख और जरूरतमन्दों को उन लोगो के ध्यान में लाया गया जिनके लिये ईश्वर ने धन सौपा था कि वे सहायता और सहानुभूति प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार यह भिखारी और अमीर आदमी के साथ था। लाजर को मदद की बहुत जरूरत थी, क्योंकि वो मित्र, घर, धन या भोजन के बिना था। फिर भी उन्हें दिन इस स्थिति में बने रहने दिया गया, जब कि धनी महान व्यक्ति के पास आपूर्ति की इच्छा थी। जो बहुतायत से अपने साथी प्राणी के दुखों को दूर करने में सक्षम था, वह आज जितने जीते है, उतने ही जीवित रहते है। COLHin 196.1

आज हमारे पास कई ऐसे है जो भूखे, नग्न और बेघर है। इन जरूरतमंदों के लिये हमारे साधनों को लागू करने की उपेक्षा, पीड़ित हमारे ऊपर अपराध का बोध डालती है जिसे पूरा करने के लिये हम एक दिन सभी लोग की मूर्तिपूजा के रूप में निंदा की जाती है। सभी स्वार्थी लोग ईश्वर की दषष्ट में एक अपराध में है। COLHin 196.2

ईश्वर ने अमीर आदमी को अपना साधन बना लिया था और उसका कर्तव्य था कि भिखारी के रूप में सिर्फ ऐसे मामलों में भाग ले। आज्ञा दी गई थी, तूने अपने परमेश्वर यहोवा से पूरे प्रेम से, और अपनी सारी आत्मा के साथ और अपनी सारी शक्ति के साथ प्रेम कर ।" (व्यवस्थाविवरण 6:5) और "तू अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्रेम कर" (लेव्यवस्थाविवरण 19:18) अमीर आदमी एक यहूदी था, और वह ईश्वर की आज्ञा से परिचित था। लेकिन वह भूल गया कि वह अपने सौंपे साधनों और क्षमताओं के उपयोग के लिये जवाब देह था। प्रभु का आशीर्वाद उस पर बहुतायत से विश्राम करता था, लेकिन उन्हें स्वार्थी रूप से नियुक्त करता था, खुद को सम्मानित करने के लिये और अपने निर्माता के लिये नही। उनकी बहुतायत के अनुपात में मानवता के उत्थान के लिये अपने उपहारों का उपयोग करना उनका दायित्व था। यह प्रभु की आज्ञा थी लेकिन अमीर व्यक्ति ने ईश्वर के प्रति अपने दायित्व के बारे में नहीं सोचा था। उन्होंने पैसे उधार दिये और वापस लिये। जिस चीज के लिये उसने कर्ज लिया था, लेकिन उसने ईश्वर के लिये जो कुछ उधार दिया था, उसके लिये उसने कोई दिलचस्पी नहीं ली। उसे एक प्रतिभा का ज्ञान था, लेकिन उसके सुध गार नही सका। ईश्वर के प्रति अपनी जवाब देही को भलकर उसने अपनी सारी शक्तियों को भोगने के लिये समर्पित किया। मनोरंजन का दौर, प्रशंसा और अपने दोस्तो की चापलूसी, अपने स्वार्थ भोग के लिये किया, वो इतना तल्लीन था कि दोस्तों के समाज में कि उसने दया के अपनी सेवकाई के साथ सहयोग करने के लिये अपनी जिम्मेदारी के सभी अर्थ खो दिये। उसे परमेश्वर के वचन को समझने और उसकी शिक्षाओं का अभ्यास करने का अवसर मिला, लेकिन जिस सुख प्रेमी समाज को उसने चुना, उसने अपने समय पर इतना कब्जा कर लिया कि वह अनन्त काल के ईश्वर को भूल गया। COLHin 196.3

वह समय आया जब दो आदमियों की हालत में बदलाव आया। गरीब आदमी दिन पर दिन पीड़ित था, लेकिन धैर्यपूर्वक और चुपचाप उसने सहन किया। समय के साथ वह मर गया और उसे दफना दिया गया। उसके लिये विलाप करने वाला कोई नहीं है, लेकिन दुख ने अपने धैर्य से उसने मसीह के लिये देखा था। उसने अपने विश्वास की परीक्षा को समाप्त कर दिया था और मष्त्यु के समय उसका प्रतिनिधित्व स्वर्गदूतों द्वारा अब्राहीम के शरीर में किये जाने के रूप में किया जाता है। लाजर मसीह पर विश्वास करने वाले पीड़ित गरीबों का प्रतिनिधित्व करता है। जब तुरही बजाती है और कब्र में रहने वाले सभी लोग यीशु की आवाज सुनते है तो उन्हें उनका इनाम मिलेगा। ईश्वर में उनके विश्वास के लिये एक मात्र सिद्धान्त नहीं था लेकिन एक वास्तविकता थी। COLHin 197.1

अमीर आदमी भी मर गया और उसे दफनाया गया और नाटक में वह उसने अपनी आखों को ऊपर उठाकर देखा और लाजर को उसकी गोद में देखा। उसने रोकर कहा, पिता अब्राहम मुझे पर दया करो, और लाजर को भेजो कि वह अपनी ऊंगली के किनारे को पानी में डुवाये और मेरी जीभ को ठंडा कर दे क्योंकि मैं इस भाग में तड़प रहा हूँ | COLHin 197.2

इस दष्टान्त में मसीह अपने ही आधार पर लोगों से मिल रहे थे। मष्यु और पुन्तरूत्थान के बीच आस्तित्व की एक सचेत स्थिति का सिद्धान्त उन लोगों में से कई के पास था जो मसीह के शब्दों को सुन रहे थे। उद्धारकर्ता को उनके विचारों के बारे में पता था, और उन्होंने दष्टान्त को तैयार किया ताकि इन पूर्ववर्ती राय के माध्यम से महत्वपूर्ण सच्चाइयों को उबारा जा सके। वह अपने श्रोताओं के सामने एक दर्पण रखता था, जिसमें वे स्वयं को ईश्वर के प्रति अपने वास्तविक सम्बन्ध में देख सकते थे। उन्होंने प्रचलित राय का इस्तेमाल इस विचार को व्यक्त करने के लिये किया कि वह सभी को प्रमुख बनाना चाहते थे कोई भी व्यक्ति अपनी संपत्ति के लिये मूल्यवान नही है, क्योंकि वह केवल प्रभु द्वारा उधार लिये गये है। इन उपहारों को दुरूपयोग उसे सबसे गरीब और सबसे पीड़ित व्यक्ति के नीचे रखेगा। जो ईश्वर से प्यार करता है और उस पर भरोसा करता है। COLHin 197.3

मसीह अपने श्रोताओं को यह समझने की इच्छा रखता है कि मष्यु के बाद आत्मा के उद्धार को सुरक्षित करना पुरूषों के लिये असम्भव है। "बेटे अब्राहम के जवाब देने के रूप में दर्शाया गया है, "याद रखे के आप अपने जीवनकाल में आपकी अच्छी चीजों को प्राप्त करते है, और इसी तरह बुरे कामों को करते है, लेकिन अब वह शान्त है और आप कला में तड़प रहे है और ये सब हमारे और आपके बीच है। गहराई खाई तय है, ताकि वे जो आप से पारित नहीं कर सकते है और ना ही वे हमारे पास से जा सकते है जो चोरी से आयेंगे" इस प्रकार मसीह ने दूसरी परिवीक्षा की आशा की निराशा को दोहरा दिया। यह जीवन ही मनुष्य को दिया गया है जो अनन्त काल के लिये तैयार है। COLHin 198.1

अमीर आदमी ने इस विचार को नहीं छोड़ा था कि वह अब्राहम का बच्चा था और उसकी व्यथा में उसे सहायता के लिये पुकारने के रूप में दर्शाया गया है। "अब्राहम" उन्होंने प्रार्थना की, "मुझ पर दया करो" उसने ईश्वर से प्रार्थना नहीं की, लेकिन अब्राहम से। इस प्रकार उसने दिखाया कि उसने अब्राहम को ईश्वर से ऊपर देखा, और यह कि वह अब्राहम के उद्धार के अपने रिश्ते पर निर्भर था, क्रूस पर मौजूद चोर ने अपनी प्रार्थना मसीह को दी। "मुझे याद करना जब तू अपने राज्य में आये" उसने कहा (लूका 23:42)। और एक बार प्रतिक्रिया आई तो आज में आपसे कहता हूँ (जैसा कि अपमान और पीड़ा में क्रूस पर हाथ करता हूँ) आप मेरे साथ स्वर्ग में होगे। लेकिन अमीर आदमी ने इब्राहीम से प्रार्थना की और उसकी याजिका मंजूर नहीं की गई। अकेले मसीह को "एक राजकुमार और उद्धारकर्ता होने के लिये" कहा जाता है। (प्रेरितों के काम 5:31) "न ही किसी और में मोक्ष है" (प्रेरितोंके काम 4:12) COLHin 198.2

अमीर आदमी ने आत्म सुख में अपना जीवन बिताया था और देर से उसने देखा कि उसने अनन्त काल के लिये कोई प्रावधान नहीं किया था। उसने अपने आप को महसूस किया, और अपने भाईयों के बारे में सोचा जो जीवन को खुश करने के लिये जी रहे थे। तब उसने निवेदन किया, "मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि पिता की कि आप उसे (लाजर को) मेरे पिता के पास भेज दे क्योकि वहां मेरे पांच भाई है उससे कहा, उनके पास मूसा और भविष्यवक्ता है, उनके सुनने दो। और उसने कहा पिता इब्राहीम यदि कोई मरे हुओ में जाये तो वे विश्वास करेगे और पश्चाताप करेगे। और उन्होंने उससे कहा, यदि वे मूसा और भविष्यवक्ताओं की न सुने तो वो मरे हुओं में से जो वहाॅ जायेगा उसकी कैसे सुनेगे। COLHin 199.1

जब अमीर आदमी अपने भाईयों के लिये अतिरिक्त सबूतों की मांग की, तो उन्हें स्पष्ट रूप से कहा गया कि यह सबूत दिया जाना चाहिये, उन्हें राजी नहीं किया जायेगा। उनके अनुरोध ने ईश्वर पर एक प्रतिबिम्ब डाला। ये ऐसा था जैसे अमीर आदमी ने कहा था अगर तुमने मुझे पूरी तरह से चेतावनी दी थी तो मुझे अब यहाँ नहीं होना चाहिये। इस अनुरोध के अब्राहम ने कहा कि आपके भाईयों को पर्याप्त चेतावनी दी गई है। प्रकाश उन्हें दिया गया है, लेकिन वे नहीं देखेगे, साथ उन्हें प्रस्तुत किया है, लेकिन उन्होंने सुना नहीं है। COLHin 199.2

यदि वे मूसा और भविष्यवक्ताओं को नहीं सुनते है तो वे मरे गये लोगों में से एक गुवाह से सहमत हो जायेगें, लेकिन यहूदी राष्ट्र के इतिहास यह शब्द सही साबित हुये है। यीशु का अंतिम और मुकुट चमत्कार बेथनी में लाजर का जिलाया जाना था उसके बाद वही नहीं था। चाद दिन हो चुके थे। यहूदियों के उद्धारकर्ता की दिव्यता का यह अद्भुत सबूत दिया गया लेकिन उन्होंने इसे अस्वीकार फिर दिया लाजर मृतकों से जी उठे और उन्होंने सबके सामने अपनी गवाही दी, लेकिन उन्होंने सभी सबूतों के खिलाफ अपने दिल को कठोर कर दिया, और यहाँ तक कि उसे टोने की मांग की। (यहून्ना 12:9-11) कानून और भविष्यवक्ता पुरूषों के उद्धार के लिये ईश्वर की नियुक्ति ऐजेंसियां है। यीशु ने कहा, उन्हें सबूतों पर ध्यान देना चाहिये। यदि वे अपने वचन से ईश्वर की आवाज नहीं सुनते है तो मष्तको में से गवाह की गवाही को ध्यान में नहीं रखा जायेगा। COLHin 199.3

जिन लोगों ने मूसा और नबियों को ध्यान में रखा, उन्हें ईश्वर से अधिक प्रकाश की आवश्यकता नहीं होनी, लेकिन अगर पुरूष प्रकाश को अस्वीकार करते है और उन्हें दिये गये अवसरो की सराहना करने में विफल रहते है तो वे ये नहीं सुनेंगे कि क्या मष्तकों में से उन्हें एक सन्देश के साथ आना चाहिये । वे इस साक्ष्य में आश्वास्त नहीं होगें, उन लोगों के जो कानून और नबियों को अस्वीकार करते है, उनके दिलों को इतना कठोर कर देते है कि वे सभी प्रकाश को अस्वीकार कर देगे। COLHin 200.1

अब्राहम और एक बार अमीर आदमी के बीच की बातचीत आलंकारिक है इससे मिलने वाला सबक यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के उसके लिये आवश्यक कर्तव्यों के निर्वाहन के लिये याप्त रोशनी दी जाती है। मनुष्य के उत्तरदायित्व उसके अवसरों और विशेषाधिकारों के अनुपात में है। ईश्वर हर एक को पर्याप्त प्रकाश और अनुग्रह देने के लिये वह कार्य करता है जो उसने उसे करने के लिये दिया है। यदि मनुष्य ऐसा करने में विफल रहता है, जो थोड़ा प्रकाश अपने कर्तव्य को दर्शाता है। तो अधिक से अधिक प्रकाश केवल विश्वासघात को प्रकट करेगा, दिये गये आशीर्वाद को बेहतर बनाने के लिये उपेक्षा करेगा। "वह जो उसमें विश्वासयोग्य है जो कम से कम वफादार भी है, और वह कम से कम अन्यायी वो बहुत में भी अन्यायी है। (लूका 16:10)। जो लोग मूसा और नबियों द्वारा दी गयी इच्छा को मान लेते है तो वे आश्वस्त नहीं होगें। COLHin 200.2

अमीर आदमी और लाजर के दष्टान्त से पता चलता है कि इन लोगो द्वारा प्रतिनिधित्व की गई दो जाति कैसे अन्देखी दुनिया में अनुमानित है। धनवान होने में कोई पाप नही है यदि धन अन्याय से अर्जित न हो। एक अमीर आदमी के पास धन होने के लिये निन्दा नहीं की जाती है, लेकिन निंदा उस पर टिकी हुई है। यदि उसे सौंपा गया धन ईश्वर के सिंहासन के पास रख सकता है। इसका उपयोग वह अच्छा करने के लिये कर सकता है। मष्क किसी भी आदमी को गरीब नहीं बना सकती है। जो इस प्रकार खुद को अनन्त धन की तलाश में समर्पित करता है। लेकिन जो आदमी अपना खजाना स्वयं के पास रखता है, उसे स्वर्ग में कोई नही ले सकता। उन्होंने खुद को बेवफा साबित किया है। अपने जीवनकाल के दौरान उनके पास अपनी आधी चीजों थी, लेकिन वे ईश्वर के प्रति अपने दायित्व को भूल गये थे। वह स्वर्गीय खजाने को हासिल करने में विफल रहे। COLHin 200.3

जिस अमीर व्यक्ति के फल इतने विशेषाधिकार थे, वह हमारे रूप में प्रतिनिधित्व करता है, जिसे अपने उपहारों की खेती करनी चाहिये थी, ताकि उसके कार्य महान हो, उनके साथ अध्यात्मिक लाभ में सुधार हो। COLHin 201.1

- यह पाप से छुटकारा पाने का उद्देश्य है, न केवल पाप को हवा देना। बल्कि मनुष्य को उन अध्यात्मिक उपहारों को वापस देने है जो पाप की बोनी शक्ति के कारण खो गये है। धन अगले जीवन में नहीं ले जाया सकता है। यह वहां की नहीं है लेकिन मसीह को जीतने वाले आत्माों मे किये गये अच्छे कामों को स्वर्गीय अदालतों में ले जाया जाता है। लेकिन जो लोग स्वार्थी रूप से ईश्वर के उपहारों को खर्च करते है, वे बिना किसी सहायता के अपने जरूरत मंद साथी जीवो को छोड़ देते है और दुनिया में ईश्वर के काम के आगे बढ़ाने के लिये आंनदित होते है और उनके निर्माता को बदनाम करते है। स्वग की किताबों में उनके नाम के विपरीत रोबरी ऑफ गॉड लिया, गया है। COLHin 201.2

धनी व्यक्ति के पास वह सब धन था, जो वो खरीद सकता था, लेकिन उसके पास वह धन नही था जो उसके खाते को ईश्वर के साथ सही रखता। वह इस तरह रहता था जैसे कि उसके पास जो कुछ था। उन्होंन पीड़ित गरीबों के दाबो की ईश्वर की पुकार की उपेक्षा थी। एक पुकार आती है जिसे वह उपेक्षित नहीं कर सकता है या उसका विरोध नहीं कर सकता है जिसके उसे उस परिसर के छोड़ने की आज्ञा दी गई है, जिससे वह अब वंचित नहीं है। एक अमीर आदमी आशाहीन गरीबी की ओर बढ़ जाता है। मसीह की धार्मिकता की बागडोर, स्वर्ग के घर में बुनी उसे कभी ढक नहीं सकती। वह जो एक बार सबसे अमीर बैंगानी, सबसे अच्छा लिनन पहनता था, वह नग्नता के लिये कम हो गया है। उसकी परिवीक्षा समाप्त हो गयी है। वह दुनिया में कुछ भी नहीं लाया और वह इसमें से कुछ भी नहीं ले सकता है। COLHin 201.3

मसीह ने पर्दा उठाकर और पुजारियों और शासको, शास्त्रियों और फरीसियों के सामने यह चित्र प्रस्तुत किया। इसे देखो, तुम जो संसार के माल के धनी हो और ईश्वर के प्रति धनी नहीं हो, कया आप इस दृश्य पर चिंतन नहीं करेंगे, जो पुरूषों के बीच बहुत सम्मानित है वह ईश्वर की दृष्टि में घृणित है। मसीह का कहना है, "यह एक आदमी को क्या लाभ होगा, अगर वह पूरी दुनिया को हासिल करेगा और अपनी आत्मा के बादले में क्या देगा? (मत्ती 8:36, 37) COLHin 201.4

यहूदी राष्ट्र के लिये आवेदन

जब मसीह ने अमीर आदमी और लाजार का दष्टान्त प्रस्तुत किया, तो यहूदी देश में कई लोग अमीर आदमी की दयनीय स्थिति में थे, स्वार्थी सन्तुष्टी के लिये, ईश्वर के सामान का उपयोग करते हुये, खुद को संजा सुनने के लिये तैयार कर रहे थे, "तू कोस और अध्यात्मिक आशीर्वाद का पक्षधर था, लेकिन उसनके इन आशीषों के इस्तेमाल में परमेश्वर का साथ देने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार यह यहूदी राष्ट्र के साथ था। COLHin 202.1

यहोवा ने यहूदियों को पवित्र सत्य का निसेपागार बनाया। उसने उन्हें अपनी कष्पा के बजीर नियुक्त किया था। उन्होंने उन्हे हर अध्यात्मिक और लौकिक लाभ दिया था, और उन्होंने उन्हें आशीर्वाद प्रदान करने का अहसान किया। विशेष निर्देश उन्हें उनके उपचार के सम्बन्ध में दिये गये थे, जो उनके द्वार के भीतर अजनबी लोगों के क्षम में और गरीबों के बीच में थे। वे अपने लाभ के लिये सब कुछ हासलि करने की तलाश में नहीं थे, बल्कि जरूरतमंद लोगो के याद करने और उनके साथ साझा देने के लिये थे। और ईश्वर ने उन्हें अपने प्यार और दया के कर्मो के अनुसार आशीर्वाद देने का वायदा किया। लेकिन अमीर आदमी की तरह, उन्होंने मानवता की अस्थायी या अध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करने के लिये हाथ आगे बढाया। गर्व से भरे वे खुद को ईश्वर के चुने हुये और ईष्ट लोगों के रूप में मानते थे, फिर भी उन्होंने परमेश्वर की सेवा या पूजा नहीं की। उन्होंने इस बात पर अपनी निर्भरता रखी कि वे अब्राहम के बच्चे थे। "हम अब्राहम के बीज है,

“उन्होंने गर्व से कहा (यहून्ना 8:35)। जब संकट आया तो यह पता चला कि उन्होंने खुद को ईश्वर से अलग कर लिया। इब्राहीन पर अपना भरोसा रखा है जैसे की वह ईश्वर है। COLHin 202.2

मसीह ने लोगों के अंधेरे दिमाग में प्रकाश को देने की कोशिश की। उसने उनसे कहा, “यदि तुम इब्राहीम की सन्तान होते, तो इब्राहीम के समान काम करते। परन्तु अब तुम ऐसे मनुष्य को भार डालना चाहते हो, जिसने तुम्हें वह सत्य वचन बताया, जो परमेश्वर से सुना, यह तो इब्रीहम से नहीं किया था। (यहून्ना 8:39, 40)। COLHin 202.3

मसीह ने वंश में कोई गुण नहीं पहचाना। उन्हें सिखाया कि अध यात्मिक सबन्ध सभी प्राकतिक संबंधो को प्रभावित करता है। यहूदियों ने अब्राहम के कार्यो को करने में असफल होने, पर उन्होंने साबित कर दिया कि वे उनमें कोई सच्चाई नहीं है। केवल वे ही जो ईश्वर की आवाज का पालन करके इब्राहिम के साथ अध्यात्मिक रूप से स्वयं को सिद्ध करते है, सच्चाई के रूप में प्रतिध्वानित होते है। हांलाकि वह भिखारी वर्ग का है, पर पुरूषों ने उसे हीन समझ लिया था। मसीह ने उसे एक के रूप में पहचाना जिसे इब्राहीम बहुत करीबी दोस्ती में लायेगा। COLHin 203.1

अमीर आदमी, हांलाकि सभी तरह की जीवन शैली से घिरा हुआ था, वह इतना अज्ञानी था कि उसने अब्राहम को ईश्वर पर छोड़ दिया। यदि उसने अपने श्रेष्ठाधिकारी की सरहाना की होती और ईश्वर की आत्मा को दिमाग और दिल को बदलने की अनुमति दी होती, तो उसके पास एक अलग स्थिति होती । इसलिये राष्ट्र के साथ उन्होंने प्रतिनिधित्व किया। यदि उन्होंने ईश्वरीय आदान का जबाव दिया होता, जो उनका भविष्य पूरी तरह से अलग होता। उन्होंने सच्चा अध्यात्मिक विवेक दिखाया होगा। उनके पास साधन थे। COLHin 203.2

उनके पास इसका मतलब था कि ईश्वर ने पूरी दुनिया को आशीर्वाद देने और प्रबुद्ध करने के लिये पर्याप्त बना दिया होगा। वे प्रभु की व्यवस्था से इतने अलग हो गये थे कि उनका पूरा जीवन वासना से भरा हुआ था। वे सत्य और धार्मिकता के अनुसार ईश्वर के भण्डार के रूप में अपने उपहारों में हमारे लिये असफल रहे। अनन्त काल उनके सम्मान में नहीं था और उनकी बेवफाई का परिणाम परे राष्ट के लिये बर्बाद हो गया। COLHin 203.3

मसीह जानता था कि येरूशेलेम के विनाश के समय यहूदियों को उसकी चेतावनी याद है। और ऐसा ही था । जब येरूशेलेम पर विपत्ति आई जब भूखमरी दष्टान्त को समझा। उन्होंने अपनी उपेक्षा से अपनी पीड़ा को अपने ईश्वर-प्रदत्त को दुनिया के सामने चमकाने के लिये लिया था। COLHin 203.4

आखरी दिनों में

इस धरती के इतिहास के समापन दष्श्यों को अमीर आदमी के इतिहास के समापन में चित्रित किया गया है। अमीर आदमी ने अब्राहाम का बेटा होने का दावा किया, लेकिन वह अब्राहाम से एक अगणित खाड़ी से अलग हो गया था—एक चरित्र गलत तरीके से विकसित हुआ। विश्वास और आज्ञाकारिता में उनके वचन का पालन करते हये अब्राहम ने ईश्वर की सेवा की। लेकिन अमीर आदमी ईश्वर से पीड़ित मानवता की जरूरतों से बेखबर था। उसके और अब्राहित के बीच तभी की गई बड़ी खाड़ी अवाज्ञा की खाई थी। आज कई ऐसे है जो उसी पाठ्यक्रम का अनुसरण कर रहे हैं। हालांकि चर्च के सदस्य, वे अनियंत्रित है। वे चर्च की सेवा में भाग ले सकते हैं, वे भजन का जाप कर सकते है "जैसे हिरणों नदी के जल के लिये हांफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हांफता हूँ।" (भजन संहिता 42:1)। लेकिन वे एक झूठ की गवाही देते है। वे ईश्वर की दषष्ट से अधिक धर्मी नहीं है, जो सबसे बड़ा पापी है। सांसारिक सुख की उत्तेजना के बाद जो आत्मा लम्बी होती है, वह मन जो प्रर्दशन के लिये प्रेम से भरा होता है, ईश्वर की सेवा नहीं कर सकता। दष्टान्त के धनी व्यक्ति की तरह, इस तरह के शरीर की वासना के खिलाफ युद्ध करने के कोई झुकाव नही है। वह भूख को बढ़ाने के लिये तरसता है। उसने पाप का वातावरण चुना। वह अचानक मष्यु से छीन लिया जाता है और वह शैतानी ऐजेसियों के साथ अपने जीवन काल के दौरान चरित्र के साथ कब्र में चला जाता है। अनुग्रह में उसके पास कुछ भी चुनने की शक्ति नहीं है, चाहे वो अच्छा हो या बरा, उस दिन के लिये जब अमन भर जाता है, उसके विचार नष्ट हो जाते है। (भजन संहिता 146:4, समोपदेशक 9:5, 6)। COLHin 204.1

जब परमेश्वर की आवाज मरे हुये लोगो की जगाती है वह उस कब्र की भूख और जनुन के साथ आयेगे, वही पसन्द और नापसन्द जिसे वह जीवित रहते हुये पोषित करता है। ईश्वर किसी ऐसे व्यक्ति को फिर से बनाने के लिये कोई चमत्कार नहीं करता है, जिसे तब दोवारा नही बनाया जायेगा। जब उसे हर अवसर हर सुविधा के साथ दिया जाय । अपने जीवन काल के दौरान उन्होंने न तो ईश्वर को प्रसन्न किया और न ही उनकी सेवा में आनन्द पाया । उसका चरित्र ईश्वर के अनुरूप नहीं है और वह स्वर्गीय परिवार में खुश नहीं रह सकता। COLHin 204.2

आज हमारी दुनिया में एक वर्ग ऐसा है जो आत्म धार्मिक है। वे लोलुप नहीं है, वे शराबी नहीं है, वे काफिर नहीं है, लेकिन वे खुद के लिये जीना चाहते है ईश्वर के लिये नहीं। वह उनके विचारों में नहीं है, इसलिये उन्हें अविश्वासियों के साथ वर्गीकृत किया जाता है। क्या उनके लिये परमेश्वर के शहर के द्वार में प्रवेश करना सम्भव था, उन्हें जीवन के पेड़ पर कोई अधिकार नहीं हो सकता था जब उनके सभी बाध्यकारी दावों के साथ उनके सामने ईश्वर की आज्ञा रखी गई थी, तो उन्होंने कहा, न ही उन्होने यहाँ ईश्वर की सेवा नहीं की है। इसलिये वे उसके बाद सेवा नहीं करेगे। वे उसकी उपस्थिति में नहीं रह सकते थे। और वे महसूस करेगे कि कोई भी स्थान स्वर्ग के लिये बेहतर था। COLHin 205.1

मसीह को सीखने का अर्थ है उनकी कष्पा प्राप्त करना, जो उनका चीजों लोग धरमी पर दिये गये बहुमूल्य अवसरो और पवित्र प्रभावों की सरहाना और उपयोग नहीं करते है, उन्हें स्वर्ग की शुद्ध भक्ति में भाग लेने के लिये फिर नही किया जाता है। इनके पात्रों को ईश्वरीय अनुकरण के अनुसार नहीं ढाला जाता है अपनी उपेक्षा से उन्होंने एक ऐसी चौकी बनाई है जो कुछ भी नहीं पा सकती। उनके और धर्म के बीच एक बड़ी खाई है। COLHin 205.2

अध्याय 22 - कह और कर

"यह अध्याय मत्ती 23-32 पर आधारित है"

एक व्यक्ति के दो बेटे थे, वो पहले अपने बेटे के पास आया और कहा, बेटा आज मेरी दाख की बार में काम करो। उसने जवाब दिया और कहा, मैं नहीं करूंगा। लेकिन बाद में पछताया और काम कर दिया। फिर वो दूसरे बेटे के पास और उसे भी काम करने के लिये कहा। उसने जबाव दिया और मैं जाता हूँ और नहीं गया। उन दोनों में से किसने पिता की आज्ञा का पालन किया। वे कहते है कि पहला वाला। COLHin 206.1

पहाड़ी उपदेश में मसीह ने कहा, "जो मुझे हे प्रभु कहता है उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा। परन्तु जो मेरे पिता की ईच्छा को पूरी करता है। (मत्ती 7:2)। ईमानदारी की परीक्षा शब्दों में नहीं कर्मो में होती है। यीशु किसी भी आदमी से नहीं कहता, तुम दूसरों से क्या कहतो हो? लेकिन "दूसरों की तुलना में अधिक क्या है।" (मत्ती 5:47) | पूर्ण अर्थ है उनके शब्द "अगर वो इन बातों को जानते है तो खुश है यदि आप उन्हें करते है।" (यहून्ना 13:7)। शब्द बिना मूल्य के होते है जो उचित कर्मो के साथ होता है। ये दो बेटो के दृष्टान्त में पढ़ाया गया पाठ है। COLHin 206.2

अपनी मष्य्यु से पहले यीशु की येरूशेलेम की अंतिम यात्रा से दष्टान्त बोला गया था उन्होंने खरीददारों और विक्रेताओं को रोम मन्दिर से निकाल दिया था। उनकी आवाज ने ईश्वर की शक्ति के साथ उनके दिल की बात से कहीं थी हैरान और भयभीत बिना किसी बहाने और या प्रतिरोध की उनकी आज्ञा का पालन किया था। COLHin 206.3

जब उनके आतंक को समाप्त कर दिया था तो पुजारी और बुजुर्ग मन्दिर में लौंट आये। उन्होंने मसीह को बीमार और मरते हुये पाया । उन्होंने आनन्द की और प्रशंसा का गीत सुना था। मन्दिर में ही जिन बच्चों की तबीयत ठीक हो गई थी वे ताड़ की शाखाओं को गाते हुये खजूर की टहनियों को लहरा रहे थे। बच्चों की आवाजें महान चिकित्सक की प्रशंसा कर रहे थे। फिर भी पुजारी और बड़ों के साथ यह सब उनके पूर्वाग्रह और ईर्ष्या को दूर करने के लिये पर्याप्त नहीं है। COLHin 206.4

अगले दिन तक मसीह मंदिर मे शिक्षा दे रहा था, तब लोगों के मुख्य याजक और बुजुर्ग उसके पास आये और कहा, "तुम किस अधिकार से यह सब कर रहे हो? ये अधिकार तुम्हें किसने दिया? COLHin 207.1

याजकों और बुजुर्गो के पास मसीह की शक्ति का अचूक सबूत था। मंदिर की सफाई में उन्होंने स्वर्ग के अधिकार को अपने चेहरे पर चमकते देखा था। वे उस शक्ति का विरोध नहीं कर सकते थे जिसके द्वरा उन्होंने अपने प्रश्न का उत्तर दिया था। लेकिन अपने अधिकार के प्रमाण दिये थे जो कि विकृत नही किये जा सकते थे। लेकिन यह सबूत नहीं था कि वह क्या चाहता था। याजक

और बुजुर्ग यीशु के लिये खुद को मसीहा घोषित करने के लिये उत्सुक थे। वे उनके शब्दों का गलत इस्तेमाल कर सकते है और लोगों को उनके खिलाफ भड़का सकते है। वे उसके प्रभाव को नष्ट करना चाहते थे और उसे मौत के घाट उतारना चाह रहे थे। COLHin 207.2

यीशु को पता था कि यदि वे उसे ईश्वर नहीं पहचान सकते है या उसके शब्दों में उसके दिव्य चरित्र के प्रमाण देख सकते है तो वे स्वयं की गवाही पर विश्वास नहीं करेंगे कि वह मसीह था। अपने जवाब में वह उस मुददे को उजागर करता है जिसके बारे में वे आशा करते हैं कि वह खुद पर निंदा करता है। मैं भी आपसे पूछता हूँ, "उन्होंने कहा' अगर तुम मुझे बताओ तो बुद्धिमानी से तुम्हें बताऊंगा कि मैं इन अधिकारो से ये सब काम करता हूँ। यहून्ना का बपतिस्मा कहां से था? स्वर्ग से या पुरूषों से? COLHin 207.3

याजक और शासक हैरान थे "वे अपने आप से कहते है, अगर हम कहेंगे, स्वर्ग से, वह हमसे कहेगे, तो तुमने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया? लेकिन अगर हम कहेंगे, पुरूषों का, तो हम लोगों को डर है, के लिये, तो सभी यहून्ना को भविष्यवक्ता मानते है उन्होने यीशु को जवाब दिया और कहा हम नहीं बता सकते। उसने उनसे कहा तो मैं भी तुम्हें नहीं बता सकता कि मैं किस अधिकार से यह सब करता हूँ। COLHin 207.4

हम नहीं बता सकते है। "यह जवाब एक झूठा था" लेकिन याजक ने जिस स्थिति में थे उसे देखा और खुद अपमानित होने से रोकने के लिये झूठ बोला। यहून्ना बपतिस्मा देने वाले असरदार गवाह आये जिनके अधि कार पर वे सवाल कर रहे थे। उन्होंने उसे ईशारा किया था यह कहते हुये कि "परमेश्वर के मेम्ने को देखो जो संसार के पाप को दूर करता है।" (यहून्ना 1:19)। उसने उसका बपतिस्मा लिया था और ईश्वर की आत्मा कबतरी की नाई उस पर ठहरा गया। और स्वर्ग से एक आवाज आई "ये मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्याधिक प्रसन्न हूँ।" (मत्ती 5:1) COLHin 207.5

यह याद करते हुये कि कैसे यहून्ना ने मसीह के बारे में भविष्यवाणियों को दोहराया था, यीशु के बपितस्मा के दष्य्य को याद करते हुये, याजको ने यह कहते हिम्मत नहीं थी कि यहून्ना का बपतिस्मा स्वर्ग से है। यदि उन्होंने यहून्ना को भविष्यवक्ता माना जैसे कि वो मानते थे कि वो है, क्या उसकी गवाही का इन्कार कर सकते है कि नासरत का यीशु परमेश्वर का पुत्र था? और वे ये नहीं कह सकते थे कि यहून्ना का बपतिस्मा पुरूषों का था, क्योंकि उन लोगों के बारे में जो यहून्ना को नबी मानते थे। तो उन्होंने कहा, "हम नहीं बता सकते" | COLHin 208.1

फिर मसीह ने पिता और दोनो पुत्रों के दष्टान्त दिये। जब पिता पहले बेटे के पास गया, तो उसने कहा, "मेरे दाख की बारी में आज काम करने जाओ' बेटे ने तुरन्त जवाब दिया, "मैं नहीं करूंगा।" उसने आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया और खुद को दुष्ट तरीको और संघो के लिये छोड़ दिया। लेकिन बाद में उन्होंने पश्चाताप किया और आज्ञा का पालन किया। COLHin 208.2

पिता उसी आदेश के साथ दूसरे बेटे के पास गये, “मेरे दाख की बारी में आज काम करो, “इस बेटे ने जवाब दिया मैं जाता हूँ, सर लेकिन वह नहीं गया। COLHin 208.3

इस दष्टान्त में पिता परमेश्वर का प्रतिनिधित्व किया जाता है। बेटे ने आज्ञा का पालन करने से इन्कार करते हुये कहा, “मैं नहीं करूंगा” उन लोगो का प्रतिनिधित्व किया, जो खुले अपराध में रह रहे थे, जिन्होंने ध् गर्मनिष्ठता को कोई पेश नहीं किया था। जिन्होंने खुले तौर पर संयम और आज्ञाकारिता के दायरों में आने से इन्कार कर दिया, जो ईश्वर की पुकार का पालन किया। जब यहून्ना बपतिस्मा देने वाले के संदेश में सुसमाचार उनके पश्चाताप किया और अपने पापों को स्वीकार किया। (मत्ती 3:2) । COLHin 208.4

बेटा जिसने कहा, “मैं जाता हूँ, श्रीमान, और नहीं गया, इससे फरीसियों के चरित्र का पता चलता। इस बेटे की तरह, यहूदी नेता अवैध और आत्म निर्भर थे। यहूदी राष्ट्र का धार्मिक जीवन एक ढोंग बन गया था। जब ईश्वर की आवाज से सिने पर्वत पर घोषित कानून, सभी लोगों ने खुद को मानने का वचन दिया। उन्होंने कहा, “मैं करता हूँ, सर” लेकिन वे नहीं गये। जब मसीह उनके सामने कानन के सिद्धान्तों को स्थापित करने के लिये आया, तो उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। मसीह ने अपने समय के यहूदी नेताओं को उनके अधिकार और ईश्वरीय शक्ति के प्रचुर सबूत दिये थे, लेकिन यद्यपि वे आश्वस्त थे, वे सबूतों को स्वीकार करेंगे। मसीह ने उन्हें दिखाया था कि वे अविश्वास करना जारी रखते थे क्योंकि उनके पास आत्मा नहीं थी जो आज्ञाकारिता की ओर ले जाती है। उसने उन्हें घोषित कर दिया था, “सुनो तुम्हारी पंरपराओं के बिना किसी भी प्रभाव के ईश्वर की आज्ञा बना दीकृव्यर्थ ही वे मुझे पूजते है, पुरूषों की आज्ञाओं को सिखाते है।” (मत्ती 15:6, 19)। COLHin 209.1

मसीह से पहले शास्त्री और फरीसी थे, याजक और शासक थे और दो बेटों का दृष्टान्त देने के बाद मसीह ने अपने सुनने वालों को इस सवाल का जवाब दिया, “क्या उनके पिता की इच्छा थी?” अपने आप को भूलकर, फरीसियों ने उत्तर दिया, “पहला” उन्होंने ऐसा इसलिये कहा क्योंकि वे खुद के खिलाफ सजा सुना रहे थे। तब मसीह के होठों से यह निन्दा हुई, “वास्तव में मैं तुमसे कहता हूँ कि प्रचारक और सिपहसालार तुम्हारे सामने परमेश्वर के राज्य में जाते है। क्योंकि यहून्ना धर्म के लिये तुम्हारे पास आया था, और तुमने उस पर विश्वास नहीं किया, लेकिन जनता और वेश्याओं ने उस पर विश्वास किया, तुमने देखाा परन्तु पश्चाताप नहीं किया। COLHin 209.2

यहून्ना बपतिस्मा देने वाला सत्य का प्रचार करने आया था और उसके उपदेश से पापियों को धर्मातरित किया गया। इससे पहले कि वे आत्म धार्मिकता का विरोध करते हुये स्वर्ग के राज्य में चले जाये, उन्होंने चेतावनी का विरोध किया। प्रचारक और सिपहसालार अज्ञानी थे लेकिन ये विद्वान लोग सच्चाई का तरीका जानते थे। फिर भी उन्होंने रास्ते में चलने से इन्कार कर दिया, जो परमेश्वर के राज्य की ओर ले जाता है जो सत्य उन्हें जीवन के लिये एक जीवन शैली के लिये होना

चाहिये वो मौत के लिये मौत बन गया। खुले पापियों ने खुद को यहून्ना के हाथों से बपतिस्मा प्राप्त किया था। लेकिन ये शिक्षक पांखडी थे। जिद्दी दिलों पर उनकी सच्चाई को प्राप्त करने में बाधा थी। उन्होंने परमेश्वर की आत्मा के विश्वास का विरोध T किया। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से इन्कार कर दिया। COLHin 209.3

मसीह ने उनसे नहीं कहा, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते, लेकिन उन्होंने कहा कि बाधा उन्हें प्रवेश करने से रोकती थी, वह उनके स्वयं के निर्माण की थी। इन यहूदी नेताओं के लिये अभी भी दरवाजा खुला था, आमंत्रण अभी भी जारी है। मसीह उन्हें दोषी और रूपांतरित होते देखने के लिये तरस गया। COLHin 210.1

इजराएल के याजकों और बुजुर्गो ने धार्मिक समारोहों में अपना जीवन बिताया, जिसे वे धर्म निरपेक्ष व्यवस्था से जुड़े होने के लिये बहुत पवित्र मानते थे। इसलिये उनका जीवन पूरी तरह से धार्मिक माना जाता था लेकिन उन्होंने पुरूषों द्वारा देखे जाने के लिये अपने समारोहो का प्रदर्शन किया ताकि वो सो कि बड़े व्यक्ति पवित्र और समर्पित होंगे। COLHin 210.2

आज्ञा मानने के दौरान उन्होंने परमेश्वर को आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। वे उस सत्य के कर्ता नहीं थे जिसे उन्होंने पढ़ाना स्वीकार किया था। COLHin 210.3

मसीह ने यहून्ना बपतिस्मा देने वाले को सबसे महान भविष्यवक्ता घोषित किया और उन्होंने अपने सुनने वालों को शाप दिया कि उनके पास पर्याप्त सबूत है कि यहून्ना ईश्वर के दूत के रूप में थे। जंगल से प्रचारक की आवाज में शक्ति थी उसने अपने संदेश के बेपर्दा करते हुये याजको और शासकों के पापों को झिड़कते हुये, और उन पर स्वर्ग के राज्य के शब्दों को उकेरा। उसने उन्हें बताया कि उनके पापों को झिड़कते हुये और उन पर स्वर्ग के राज्य के शब्दों को उकेरा। उसने उन्हें बताया कि उनके पापा ने उन्हे नियुक्त कार्य करने से इंकार करने के लिये अपने पिता के अधि कार की अवहेलना की। उसने पाप के साथ कोई समझौता नहीं किया और कई लोग अपने अधर्म से बदल गये। COLHin 210.4

अगर यहूदी नेताओं का पेशा सच्चा होता तो उन्हें यहून्ना की गवाही मिलती और वो यीशु की मसीह के रूप में स्वीकार करते है। लेकिन उन्होंने पश्चाताप और कठोरता का फल नहीं दिखाया। जिन लोगों ने उन्हें तिरस्कप्त किया था, वे उनसे पहले परमेश्वर के राज्य में दबाव डाल रहे थे। COLHin 210.5

दष्टान्त मे जिस बेटे ने कहा, "मैं जाता है, सर "ने खुद को वफादार और आज्ञाकारी के रूप में प्रतिनिधित्व किया, लेकिन समय ने साबित कर दिया कि उनका पेशा वास्तविक नहीं है। उसके पास अपने पिता के लिये कोई सच नहीं था। इसलिये फरीसियों ने अपनी पवित्रता के बारे में खुद को उकसाया, लेकिन जब चाहा तो उसे परखा। जब ऐसा करने के लिये उन्होंने इच्छा जाहिर की तो उन्होंने कानून की आवश्यकताओं को बहुत सटीक बनाया, लेकिन आज्ञाकारिता की

आवश्यकता थी, तो चालाक परिष्कार द्वारा उन्होंने ईश्वर के उपदेशों के बल को दूर कर दिया। उनमें से मसीह ने घोषणा की "उनके कार्यो के बाद तुम मत करो, क्योंकि वे कहते है परन्तु करते नहीं। (मत्ती 23:3)। उन्हें ईश्वर या मनुष्य से कोई सच्चा प्रेम नहीं था। ईश्वर ने उन्हे दुनिया को स्वीकार कर लिया, लेकिन काम करने के समय उन्होंने आज्ञाकारिता से इन्कार कर दिया। उन्होंने स्वंय पर भरोसा किया और अपनी अच्छाई पर गर्व किया, लेकिन उन्होंने ईश्वर के आदेशों की अवहेलना की। उन्होंने उस काम को करने से इन्कार कर दिया जो ईश्वर ने उन्हे नियुक्त किया था उनके अपराध के कारण ईश्वर ने उनके बारे में अवज्ञाकारी राष्ट्र से खुद को तलाक देने को कहा। COLHin 211.1

आत्म धार्मिकता सच्चाई धार्मिकता नहीं है, और यह घातक हो सकता है कि एक घातक धारणा को धारण करने के परिणाम को छोड़ दिया जाय। आज कई लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का दावा करते है, लेकिन वे दूसरों के समान तैरने के लिये अपने दिल में ईश्वर का प्यार नही रखते है। मसीह उन्हें दुनिया को बचाने के लिये अपने काम में एक जुट करने के लिये कहता है, लेकिन वे खुद को यह कहते हुये संतुष्ट करते है, "मैं जानता हूँ 'सर' लेकिन ये नहीं जावें। COLHin 211.2

वे उन लोगों के साथ सहयोग नहीं करते है जो ईश्वर की सेवा कर रहे है। वे आलसी है। बेवफा बेटे की तरह, वे परमेश्वर से झूठा वायदा करते है। अपने आप को चर्च की एकमात्र वाचा पर लेने के लिये उन्होंने खुद को ईश्वर की सेवा प्राप्त करने और पालन करने का वचन दिया है, खुद को ईश्वर की सेवा के लिये देने के लिये, लेकिन वे ऐसा नहीं करते है, पैरों में वे ईश्वर के बेटे होने का दावा करते हैं, लेकिन जीवन और चरित्र में वे रिश्ते से इन्कार करते है। वे ईश्वर के प्रति इच्छा शक्ति का समर्पण नहीं करते है। वे झूठ में जी रहे हैं COLHin 211.3

आज्ञाकारिता का वादा वे पूरा करते दिखाई देते है, जब इसमें कोई बलिदान नहीं होता, लेकिन जब आत्म इन्कार और आत्म बलिदान की आवश्यकता होती है, तो जब वे कूस को उठाते देखते है, तो वे पीछे हट जाते है। इस प्रकार कर्तव्य की दष्ठता दर हो जाती है, और परमेश्वर की आज्ञाओं का ज्ञात प्रतिगमन आदत बन जाता है। कान ईश्वर का वचन सुन सकते है, लेकिन अध्यात्मिक अवधाराणात्मक शक्तियाँ विदा हो गयी है। हष्दय कठोर हो जाता है, अन्तरात्मा छलनी हो जाती है। COLHin 212.1

यह मत सोचिये कि क्योंकि आपने प्रकट रूप से मसीह के प्रति शत्रुता का निर्णय लिया है। इसलिये आप उनकी सेवा कर रहे है। इस प्रकार हम अपनी आत्माओं को धोखा देते है। ईश्वर ने हमें उसकी सेवा में उपयोग करने के लिये, यह समय या साधन या उसके द्वारा दिये गये उपहारों में से किसी एक को छोड़कर हम उसके खिलाफ काम करते है। COLHin 212.2

शैतान अपनी ताकतों को और आत्माओं को अपने पक्ष में मजबूत करने के लिये, मसीही की निन्दाहीन, निंदनीय, अकर्मण्यता का उपयोग करता है। बहुत से लोग सोचते है कि यद्यपि वे मसीह के लिये कोई वास्तविक कार्य नहीं कर रहे है, फिर भी वे अभी भी उनके पक्ष में, वे दुश्मन को जमीन पर कब्जा करने और लाभ प्राप्त करने में सक्षम कर रहे है। गरू के लिये मेहनती कार्यकर्ता होने में उनकी विफलता सो कर्तव्यों को पूर्ववत और शब्दों को छोड़कर वे आत्मा पर नियंत्रण पाने के लिये शैतानी करते है जो मसीह के लिये जीता जा सकता है। COLHin 212.3

हमें कभी भी अकर्मण्यता और गतिविधि में नहीं बचाया जा सकता है। वास्तव में एक असहायक, बेकार जीवन जीने वाले व्यक्ति के रूप में ऐसी कोई चीज नहीं है। हमारे लिये स्वर्ग में जाना संभव नहीं है। कोई भी तस्कर वहां प्रवेश नहीं कर सकता। अगर हम राज्य में प्रवेश पाने की कोशिश नहीं करते है। अगर हम यह जानने के लिये इमानदारी से प्रयास नहीं करते है कि इसके कानून क्या है, तो हम इसमें भाग नहीं लेते है। जो लोग पष्थ्वी पर ईश्वर का साथ देने से इन्कार करते है, वे स्वर्ग में ईश्वर का साथ नहीं देंगे। उन्हें स्वर्ग में ले जाना सुरक्षित नहीं होगा। COLHin 212.4

परमेश्वर के वचन को जानने वालों की तुलना में जनता और पापियों के लिये अधिक आशा है कि लेकिन इसे मानने से इन्कार करते है। वह जो अपने पाप के लिये खुद को पापी नहीं देखता है, जो जानता है कि वह आत्मा के शरीर और आत्मा को ईश्वर के सामने भ्रष्ट कर रहा है, ऐसा न हो कि वह स्वर्ग के राज्य से सदा के लिये अलग हो जाये। COLHin 213.1

वह अपनी रोग्रस्त स्थिति का एहसास करता है, जो महान भौतिक विज्ञानी से उपचार करता है, जिसने कहा, "मेरे लिये वह आता है, मैं किसी भी बुद्धिमान बाहर नहीं होउंगा। (यहून्ना 6:37)। ये आत्मायें अपने दाख की बार में श्रमिकों के रूप में उपयोग कर सकती है। COLHin 213.2

एक समय बेटे ने अपने पिता को आज्ञा का पालन करने से इन्कार कर दिया क्योंकि मसीह द्वारा निंदा नहीं की गई थी, न तो उसने तारीफ की। आज्ञा मानने से इन्कार करने वाले वर्ग को इस पद को धारण करने का कोई श्रेय नहीं है। उनकी स्पष्टता के एक गुण के रूप में नही माना जाता है। सत्य और पवित्रता से पवित्र, यह पुरूषों को मसीह के लिये साहसिकता प्रदान करेगा, लेकिन इसका उपयोग पापी द्वारा किया जाता है। यह अपमान जनक और दोषपूर्ण वास्तव में पापी नहीं बनाता है। जब पवित्र आत्मा की अपीलें दी जाने लगी तो वो उसे वास्तव में पापी नहीं बनाता है। जब पवित्र आत्मा की अपीलें दिल में आती है तो हमारी एक मात्र सुरक्षा उन्हे देरी से जवाब देने में निहित होती है। जब बुलाहट आती है, "मेरे दाख की बारी में आज काम पर जाओ' निमंत्रण को मना मत करो।" आज अगर तुम उसकी आवाज सुनोगे, तो तुम्हारा दिल कठोर नहीं होगा' (इब्रानियों 4:7) आज्ञाकारिता में देरी करना असुरक्षित है। आप फिर से निमंत्रण कभी नहीं सुन सकते। COLHin 213.3

चलो कोई भी अपने आप को चापलूसी नहीं करता है कि एक समय के लिये पोषित पाप आसानी से और दिया सकता है। ऐसा नहीं है। हर पाप का पात्र चरित्र को कमजोर करता है और आदत को मजबत करता है, और भौतिक, मध्य और नैतिक विकषत परिणाम हैं आपने जो गलत किया है उसके बारे में आपको पछतावा हो सकता है और अपने पैरो को सही रास्तों में सेट कर सकते है, लेकिन आपके दिमाग का सच्चाई और बुराई से आपकी परिचितता आपके लिये सही और गलत में अन्तर करना कठिन कर देगी। गठित गलत आदतों के माध्यम से, शैतान आप पर बार-बार हमला करेगा। COLHin 213.4

आज्ञा में, मेरे दाख की बारी में आज काम पर जाओ, ईमानदारी की परीक्षा हर आत्मा के लिये लाई जाती है। क्या शब्दों के रूप मे कर्म होंगे? क्या दाखलता के मालिक के लिये निष्ठापूर्वक, निष्ठा से काम करते हुये, अपने पास मौजुद सभी ज्ञान का उपयोग करने के लिये कहा जायेगा। COLHin 214.1

प्रेरित पतरस हमे उस योजना के अनुसार निर्देश देता है जिस पर हमें काम करना चाहिये। उन्होंने कहा, "ईश्वर के ज्ञान के और हमारे प्रभु यीशु के अनुसार, अनुग्रह और शांति आपके लिये कई गुना बढ़ जाती है जैसे कि उनके ईश्वर ने हमें ईश्वर के ज्ञान के माध्यम से जीवन और ईश्वर से संबंधित सभी चीजे दी है। जिसने हमें महिमा और पुण्य के लिये बुलाया, जिससे हमें महान और अनमोल वादों को पूरा करने के लिये दिया जाता है ताकि आप इन दैवीय प्रकृति के भागीदार हो सकें, जो दुनिया में व्याप्त भ्रष्टाचार से बच गये है। इसी कारण तुम सभी परिश्रम देते हुये, अपने विश्वास पुन्य में जोड़े और पुण्य ज्ञान के लिये और ज्ञान संयम के लिये, संयम धैर्य के लिये भक्ति। और भक्ति पर भाई चारे की प्रीति और भाई चारे की प्रति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। (1 पतरस 5-7)। COLHin 214.2

यदि आप इमानदारी से अपनी आत्मा की दाख की बारी पर खेती करते हैं तो परमेश्वर आपको एक मजदूर बना रहा है। और आपके पास न केवल अपने लिये, बल्कि दूसरों के लिये भी काम होगा। कलिसिया को वे बेदखलदार के रूप में पेश करने में, मसीह यह नहीं सिखाता है कि हम अपनी सहानुभूति और मजदूरों को अपनी संख्या तक सीमित रखे। ईश्वर की फसल को बढ़ाना है। पष्थ्वी के सभी हिस्सों में वह इसे बढ़ाये जाने की इच्छा रखता है। जैसे कि हम ईश्वर की शिक्षा और अनुग्रह प्राप्त करते है, हमें दूसरों को ज्ञान देना चाहिये कि कीमती पौधों की देखभाल कैसे करनी चाहिये। इस प्रकार हम यहोवा को दाख की बारी का विस्तार कर सकते है। परमेश्वर हमारे विश्वास, प्रेम और धैर्य के प्रमाण के लिये देख रहा है। वह यह देखना चाहता है कि क्या हम पष्थ्वी पर उसके दाख की बारी में कुशल श्रमिक बनने के लिये हर अध्यात्मिक लाभ का उपयोग कर रहे है कि हम ईश्वर के स्वर्ग में प्रवेश में कर सके, कि आदम और हवा को संक्रमण से बाहर रखा गया। COLHin 214.3

परमेश्वर एक पिता के सम्बन्ध में अपने लोगों के साथ खड़ा है और हमारी विश्वास योग्य सेवा के लिये उसके पास एक पिता का दावा है। मसीह के जीवन पर विचार करो। मानवता के सिर पर खड़े होकर, अपने पिता की सेवा करते हुये वह एक उदाहरण है कि हर बेटे को क्या होना चाहिये और क्या हो सकता है। मसीह ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। आज परमेश्वर हमसे चाहता है। उन्होंने अपने पिता की इच्छा और स्वतंत्रता के साथ प्यार किया है। "मैं तेरी इच्छा करने के लिये खुश हूँ, हे ईश्वर "उसने घोषणा की हॉ तुम्हारा कानून मेरे दिल के भीतर है' (भजन संहिता 40:8)। मसीह ने कोई बलिदान महान नहीं माना और परिश्रम को कठिन नहीं ताकि वह उस काम को पूरा कर सकते, जो वो करने आया था। बारह वर्ष की आयु में उन्होंने कहा, "क्या तुम नहीं चाहते कि मैं अपने पिता के व्यवसाय में रहूँ?" (लूका 2:49)। उन्होंने बुलाहट को सुना था और काम किया, "मेरा काम" उन्होंने कहा, "उसे मेरे द्वारा भेजे गये की इच्छा को पूरा करना है और मुझे अपना काम खत्म करना है।" (यहून्ना 4:34)। COLHin 214.4

इस प्रकार हम ईश्वर की सेवा करने के लिये है। वह केवल वही कार्य करता है जो आज्ञाकारिता के उच्चतम स्तर तक कार्य करता है। वे सभी जो पुत्र और पुत्रियाँ होगी, ईश्वर, मसीह स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ सह-कार्यकर्ता साबित होंगे। यह हर आत्मा के लिये वे सबसे अच्छा है, जो लोग इमानदारी प्रभु की सेवा करते हैं वे कहते है, "वे मेरे होंगेकृकृकृउस दिन जब मैं उनसे कोमलता करूंगा, जैसे कोई अपने सेवा करने वाले पुत्र से करें। (मलाकी 3:7)। COLHin 215.1

परमेश्वर के महान कार्य में उनकी भविष्यवाणी में से एक है, पुरूषों का प्रयास करना उन्हे चरित्र विकसित करने का अवसर देना। इस प्रकार वह साबित करता है कि वे आज्ञाकारी है या उसकी आज्ञाओं के प्रति अवज्ञाकारी है। अच्छे कार्य ईश्वर के प्रेम को नहीं खरीदते है लेकिन बतायेगें कि हम उस प्रेम को प्राप्त करते है। अगर हम ईश्वर की इच्छा को आत्म समर्पण करते है, तो हम परमेश्वर के प्यार को अर्जित करने के लिये काम नही करेंगे। एक निःशुल्क उपहार के रूप मे उनका प्यार आत्मा मे प्राप्त होगा, और प्रेम से हम उनकी आज्ञाओं का पालन करने के लिये आनन्दित होगें। COLHin 215.2

आज दुनियाँ में केवल दो प्रकार के लोग है और केवल दो वर्गो को निर्णय में मान्यता दी जायेगी-जो ईश्वर के कानून का उल्लंघन करते है और जो इस मानते है। मसीह वह परीक्षा देता है जिसके द्वारा हमारी निष्ठा या अरूचि साबित होती है। अगर तुम मुझसे प्यार करते हो, वह कहता है, "मेरी आज्ञाओं को मानोकृकृकृवह मेरी आज्ञा का पालन करता और उन्हें मानता है क्योंकि वो मुझे प्यार करता है।' जो मुझे प्यार करता है वो पिता से भी प्यार करेगा और मैं उससे प्यार करूंगा और वह अपने आप को प्रकट करेगाकृकृकृवो मुझे प्यार करता है, मेरे कहने को नहीं रखता, मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उनके प्रेम का पालन करता हूँ। (यहून्ना 14:15-24, 15:10)।

अध्याय 23 - परमेश्वर की दाख की बारी

"यह अध्याय मत्ती 21:33-44 पर आधारित है"

यहूदी राष्ट्र

दो बेटो के दष्टान्त का पालन दाख की बारी के बाद किया गया था। एक में मसीह ने यहूदी शिक्षकों के सामने आज्ञाकारिता के महत्व को निर्धारित किया था। दूसरे में उसने इजराएल पर दी गयी समष्द्ध आशीषों COLHin 217.1

की ओर इशारा किया और इसमें परमेश्वर के उद्देश्य की महिमा को स्थापित किया जो आज्ञाकारिता के माध्यम से उन्होंने पूरा कया होगा। भविष्य से परदा हटाते हुये, उन्होंने दिखाया कि कैसे, अपने उद्देश्य को पूरा करने में असफल होने के कारण पूरा देश उनके आशीर्वाद नष्ट कर रहा था और खुद को बर्बाद कर रहा था। COLHin 217.2

"एक निश्चित ग्रह स्वामी था, मसीह ने कहा, "जिसने एक दाख की बारी लगाई, उसके बारे में एक दौर की शुरूआत की और उसमे एक शराब बनाने की जगह तैयार की और एक टीला बनाया और उसे किसानों के हवाले किया और दूर देश में चला गया। COLHin 217.3

इस दाख की बारी का वर्णन यशायाह भविष्यवक्ता ने दिया है, "अब मैं प्रिय के लिये और उसकी दाख की बारी के विषय में गाना गाऊंगा, एक अति टीले पर मेरे प्रिय की एक दाख की बारी थी। उसने उसकी मिटटी खोदी और उसके पत्थर बीनकर उसमे उत्तम प्रकार की दाख की बारी लगाई। उसके बीच में उसने गुम्मटद बनाया और दाखरस के लिये एक कुण्ड भी खोदा, तब उसने दाख की आशा की, उसमें निकम्मी दाखे ही लगी।" (यशायाह 5:1, 2) COLHin 217.4

मालिक जंगल से जमीन का टुकड़ा चुनता है, वह बाढ़ लेता है, साफ करता है और उसे तैयार करता है उसे अपनी पसन्द की लाताओं के साथ रोपता है, एक समष्द्ध फसल की उम्मीद करता है। जमीन की यह साजिश उसकी बेकार की श्रेष्ठता में है, वह उसे उसकी देखभाल के परिणाम और उसकी खेती में परिश्रम दिखाने के द्वारा ऐसे लोगों को चुना है जो मसीह के द्वारा शिक्षित और शिक्षित होंगे। भविष्यवक्ता कहते है, "मेजबानों के ईश्वर के दाख की बारी इजराएल का घर है और यहदा के लोग उसका सुखद पौधा है। (यशायाह 5:7) इन लोगों के ऊपर परमेश्वर ने महान विशेषाधिकार दिये थे, उन्हें प्रचुर मात्रा में भलाई के लिये आशीर्वाद दिये। COLHin 217.5

उन्होंने फल की पैदावार करके उन्हें सम्मानित करने के लिये उनकी तलाश की। उन्हें अपने राज्य के सिद्धान्तों को प्रकट करना था। पतित, दुष्ट दुनिया के बीच में ईश्वर के चरित्र का प्रतिनिधित्व करने वाले थे। COLHin 218.1

ईश्वर की दाख की बारी के रूप में वे पूरी तरह से बुतपरस्ती, दुष्टता से अलग फल का उत्पादन करने के लिये थे। हिंसा और अपराध, लालच, उत्पीड़न और भ्रष्ट व्यवहार बिना वे संयम

के लिप्त थे। अधर्म पतन और दुख, भ्रष्ट के वक्ष के फल है। ईश्वर के रोपण की बेल पैदा हाने वाले फल के रूप में चिहिनत विपरीत हैं। COLHin 218.2

यह यहूदी राष्ट्र के विशेषाधिकार के रूप में ईश्वर के चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि ये मूसा को पता था। मूसा की प्रार्थना के जबाव में, "मुझे तेरा गौरव दिखाओं' प्रभु ने वायदा किया, "मैं तुम्हारे सामने से अपना सब कुछ गुजार दूंगा।' (निर्गमन 33:18, 19)। और प्रभु उसके सामने से गुजरा और घोषणा की, प्रभु, प्रभु—प्रभु, दयालु और अनुग्रहकारी, सहनशीलता करने वाला, अच्छाई और सच्चाई प्रचुर मात्रा में, हजारों लोगों के लिये दया रखते हुये, अधर्म और अपराध और पाप को क्षमा करते हुये।" (निर्गमन 34:6, 7) | यह वह फल था कि "प्रभु का कानून परिपूर्ण है, आत्मा को परिवर्तित कर रहा है। (भजन संहिता 19:7)। COLHin 218.3

यहूदी राष्ट्रों के माध्यम से सभी लोगो का समष्द्ध आशीर्वाद प्रदान करना ईश्वर का उद्देश्य है। इजराएल के माध्यम से जिस तरह से पूरी दुनिया ने भ्रष्ट आचरण के प्रकार के लिये तैयार किया जाना था। दुनियाँ के राष्ट्रों ने भ्रष्ट आचरण के माध्यम से परमेश्वर के ज्ञान को खो दिया था। फिर भी उनकी दया में ईश्वर ने उन्हें अस्तित्व से नहीं निकाला। उसने उन्हें अपने कलिसिया के माध्यम से उससे परिचित होने का अवसर देने के लिये पीछा किया। उन्होंने अपने लोगों ईश्वर को नैतिक छवि को बहाल करने का माध्यम होना चाहिये। COLHin 218.4

यह इस उद्देश्य को सिद्धि के लिये था कि परमेश्वर ने इब्राहिम को अपनी मूर्तिपूजा से बाहर बुलाया और उसे कनान देश में रहने के लिये उकसाया। COLHin 219.1

"मैं तुम्हें एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।" उसने कहा, "और मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा, और तुम्हारा नाम महान करूंगा और तुम पर आशीर्वाद बना रहेगा।" (उतपत्ति 12:2) COLHin 219.2

अब्राहाम, याकूब और उसके वंशजों को मिस्र में लाया गया कि उस महान और दुष्ट राष्ट्र के बीच मे वे परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों को प्रकट कर सके। युसुफ की अखंडता और पूरे मिस्र के लोगों के जो वचन को पाने में उनके अद्भुत काम मसीह के जीवन का प्रतिनिधित्व थे। मूसा और कई अन्य लोग ईश्वर के साक्षी थे। COLHin 219.3

मिस्र ने इजराएल को आगे लाने में, प्रभु ने फिर से अपनी शक्ति और उसकी दया प्रकट की। बंधन से उनके उद्धार में उनके अद्भुत काम और जंगल के माध्यम से उनकी यात्रा में उनके साथ काम करना अकेले उनके लाभ के लिये नहीं था। ये आस-पास के देशों के लिये एक वस्तु पाठ के रूप में होना • प्रभु ने स्वयं को सभी मानव अधिकारों और महानता से ऊपर के ईश्वर के रूप में प्रकट किया। अपने लोगों की ओर से उन्होंने जो संकेत और चमत्कार दिये, वह प्रकृति पर और प्रकृति की पूजा करने वालों में सबसे बड़ी शक्ति थी। परमेश्वर ने मिस्र की गौरवपूर्ण भूमि के माध्यम से चलाया क्योंकि पिछले दिनों में वह पृथ्वी के माध्यम से जायेगा। आग और तबाही, भूकम्प और मौत के साथ, महान मैं हू, ने अपने लोगों को छुड़ा लिया। वह उन्हें बन्धन की भूमि से

बाहर ले गया। उसने उन्हें, और उस बड़े भयानक जंगल में से ले आया, जहॉ तेज विष वाले सर्प और बिच्छु है। (व्यवस्थाविवरण 8:15)। उसने उन्हें "चकमक पत्थर की चट्टान से पानी निकाला और "स्वर्ग का मन्ना खिलाया (भजन संहिता 78:24)। मूसा ने कहा, क्योंकि यहोवा का अंश गरजने वालों से भरी मरूभमि में पाया, उसने रक्षा की, और अपनी आंख का पुतली के नाई उसकी सुधि रखी। जेसे उकाब अपने घोसले को हिला कर अपने बच्चों के ऊपर मण्डलाता है। वैसे ही उसने अपने पंख फेलाकर उसको अपने परों पर उठा लिया, यहोवा अकेले ही उसकी अगुवाई करता रहा। (व्यवास्थाविवरण 32:9-12)। इस प्रकार वह उन्हें अपने पास ले आया और वे परमप्रधान की छाया के नीचे निवास कर सकते थे। COLHin 219.4

यीशु अपने जंगल में भटकते हुये मसीह के बच्चों का नेतष्त्व करने वाला था। दिन के हिसाब से बिजली के खम्भे और रात तक आग के खम्भे में बंधा हुआ, उसने उनका नेतष्त्व किया और उनका मार्गदर्शन किया। उसने उन्हें जंगल की परिधि के प्रति संरक्षित किया, वह उन्हें वादे की भूमि में ले आया और इन सभी राष्ट्रों की दषष्ट जिन्होंने ईश्वर को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने इजराएल को अपने चुने हुये प्रभु के रूप में स्थापित किया। COLHin 220.1

इसके लिये लोगों को ईश्वर के तांडव के लिये प्रतिबद्ध किया गया था उनके कानून, सत्य, न्याय और पवित्रता के चिरस्थायी सिद्धान्तों का पूर्वधारणाओं के बारे में उनसे बचाव किया। COLHin 220.2

इन सिद्धान्तों का पालन करना उनकी सुरक्षा करना था, क्योंकि ये उन्हें पापी प्रथाओं द्वारा खुद को नष्ट करने से बचायेगा। और दाख की बारी में टीले के रूप में ईश्वर अपने पवित्र मंदिर की भूमि के बीच में रखा। COLHin 220.3

मसीह उनका प्रशिक्षक था। चूंकि वह जंगल में उनके साथा था, इसलिये वह उनका शिक्षक और मार्गदर्शक होना बाकी था। झांकि और मन्दिर में उनकी महिमा दया का शेकिना सिर के ऊपर दया के सिंहासन पर स्थित की गयी ये अपनी ओर से लगातार अपने प्यार और धैर्य के धन को प्रकट करता है। COLHin 220.4

परमेश्वर ने अपने लोगों को इजराएल की प्रशंसा और गौरव बनाने की इच्छा की। प्रत्येक अध्यात्मिक लाभ उन्हें दिया गया। ईश्वर ने उनसे चरित्र के निर्माण के लिये अनुकूल कुछ भी नहीं लिया जो उन्हें स्वयं का प्रतिनिधि बना दे। COLHin 220.5

परमेश्वर के कानून के लिये उनकी आज्ञाकारिता उन्हें दुनिया के देशों के सामने समषद्ध का चमत्कार बना देगी। वह जो उन्हें सभी चालाक कामों में ज्ञान और कौशल दे सकता था, वह शिक्षक बना रहेगा और अपने नियमों का पालन करने के लिये उन्हें उत्साहित और उन्नत करेगा। यदि आज्ञाकारी है, तो वे अन्य राष्ट्रों को पीड़ित करने वाली बीमारियों से सुरक्षित रहेगे, और बुद्धि के साथ आशीर्वाद प्राप्त करेगे। ईश्वर की महिमा, उनकी महिमा और शक्ति, उनकी सभी समषद्ध

में प्रकट होनी थी। याजकों और राजकुमारों का एक राज्य होना था। परमेश्वर ने उन्हें पष्ब्वी पर सबसे महान राष्ट्र बनने के लिये हर सुविधा से सुसज्जित किया। COLHin 220.6

मूसा के सबसे निश्चित तरीके से मसीह ने उन्हें परमेश्वर के उद्देश्य के सामने खडा किया था. और उनकी समषद्ध की शर्तो को स्पष्ट किया था. “तू अपने ईश्वर के पास लिये पवित्र व्यक्ति है, “वह खुद, उन सभी लोगों से ऊपर है जो पष्ब्वी के चेहरे पर हैकृकृइसलिये जानते है कि ईश्वर वफादार है, जो वाचा रखता है, उनके साथ दया करो जो उनसे प्यार करते है और एक हजार पीढ़ियो तक उनकी आज्ञाओं को मानते है। इसलिये आज्ञाओं प्रतिभाओं और निर्णयों की जो मैं तुम्हे आदेश देता हूँ, उन्हें निभाने के लिये रखो, यदि इनसे निर्णयों को सुनेगा और उन्हें मानेगा तो प्रभु तेरा परमेश्वर जो वाचा और दया जो वह तुम्हारे प्रीति करता है, वह तुझ से प्यार करेगा और तुझे आशीर्वाद देगा और बढ़ायेगा, वह तेरी कोख, और तेरा देश तेरे मकई और तेरा दाखमधु का फल और तेरा तेल, तेरी परिजनों की वर्षद्ध का आशीर्वाद देगा। तेरी भेड़ों की झुण्ड, जिसे देश में वह तेरे बाप को देने का वादा करते है। COLHin 221.1

तू सब लोगों के ऊपर धन्य हो जायेगाकृकृकृऔर प्रभु तुझ से सब बीमारी दूर कर देगा, और मिस्र के किसी भी बुरे रोग को नहीं रखेगा, जिसे तू जानता है। (व्यवास्थाविवरण 7:6,9, 11-15) COLHin 221.2

यदि वे उसकी आज्ञाओं को मानेगे, तो परमेश्वर ने उन्हें गर्मी का बेहतरीन लाभ देने और उन्हें शहद को चट्टान से बाहर निकालने का वादा किया। लम्बे जीवन के साथ वह उन्हें सन्तुष्ट करेगा और अपना उद्धार दिखायेगा। COLHin 221.3

_ईश्वर के प्रति अवज्ञा के माध्यम से आदम और हवा ने अदन को खो दिया था और पाप के कारण पूरी पष्ब्वी शापित की। लेकिन अगर परमेश्वर के लोगों ने उनकी हिदायत को ठुकरा दिया, तो उनकी जमीन उर्वरता और सुन्दरता के लिये बहाल हो जायेगी। स्वर्ग ईश्वर ने उन्हें मिट्टी की संस्कषत के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश दिये थे और उसकी बहाली में सहयोग करना था। इस प्रकार सम्पूर्ण भूमि परमेश्वर के नियंत्रण में, अE यात्मिक सत्य का एक वस्तु पात्र बन जायेगा। जैसे कि उनके प्राकषतक नियमों के पालन में पष्ब्वी को अपने खजाने का उत्पादन करना चाहिये, इसलिये उनके नैतिक कानून के अनुसार लोगों के दिलों में उनके चरित्र की विशेषताओं को प्रतिबंधित करना था। यहाँ तक बुत-परस्ती में रहने वाले लोग उन लोगों की श्रेष्ठता को पहचानते है जो जीवित परमेश्वर की आराध गाना करते है। COLHin 221.4

देखों मूसा ने कहा, “मैं ने तुम्हें कानून और निर्णय सिखाये है, विधि यों की मैं ने तुमको शिक्षा दी है। मैं ने यहोवा के इन नियमों की शिक्षा इसलिये दी कि जिस देश में प्रवेश करने और जिसे अपना बनाने के लिये तैयार हो उसमें उनका पालन कर सके। इन नियमों का सावधानी से पालन करो। ये अन्य राष्ट्रों को सूचित करेगा कि तुम बुद्धि और समझ रखते हो। जब उन देशों के लोगो

इन नियमों के विषय में सुनेगे तो वे कहेगे कि "सचमुच इस महान राष्ट्र इजराएल के लोग बुद्धिमान और समझदार है। किसी राष्ट्र के कोई देवता उनके साथ नहीं रहता है जिस तरह हमारा परमेश्वर यहोवा जो हम लोगों के पास रहता है, जब हम उसे पुकारते है। और कोई दूसरा राष्ट्र इतना महान नहीं कि उसके पास वे अच्दे विधि और नियम हो जिनका उपदेश मैं आज कर रहा हूँ। COLHin 222.1

इजराएल के बच्चों को उन सभी क्षेत्रों पर कब्जा करना था जो परमेश्वर ने उन्हें नियुक्त किया था जिन राष्ट्रों में सच्चे परमेश्वर की उपासना और सेवा को अस्वीकार कर दिया था, उन्हें दर किया जाना था। लेकिन यह ईश्वर का उद्देश्य कि इजराएल के माध्यम से उनके चरित्र के रहस्योघाटन द्वारा पुरूषों को उसके प्रति आकर्षित किया जाये। सारी दनिया को ससमाचार का निमंत्रण दिया जाना चाहिये। बलिदान सेवा के शिक्षण के माध्यम से मसीह को राष्ट्रो के सामने उत्थान करना था, और जो भी उसे देखना चाहता है, उसे जीना चाहिये। सभी जैसे राहाब जो कनानी, रूत मोआबी बुत परस्ती से सच्ची आराधना में बदल गये अपने चुने हुये लोगों को एक जुट करने के लिये। COLHin 222.2

जब तक इजराएल की संख्या बढ़ी उन्हें अपनी सीमाओं को बढ़ाना था, जब तक के उनके राज्य को दुनिया ने गले नहीं लगा लिये। COLHin 222.3

ईश्वर ने सभी लोगों को अपने दयालु शासन के तहत लाने की इच्छा की। उसकी इच्छा थी कि पृथ्वी को आनन्द और शान्ती से भर दिया जाय । उसने मनुष्य को आनन्द के लिये बनाया और उसने स्वर्ग की शांति के साथ मानव के दिलों को भरने की लालसा की उनकी इच्छा है कि परिवार के लोग ऊपर दिये गये महान परिवार के प्रतीक होगें। COLHin 222.4

लेकिन इजराएल ने परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा नहीं किया। प्रभु ने घोषणा की, मैंने तुम्हें विशेष अंगूर की बेल की तरह रोपा। तुम सभी अच्छे बीज के समान थे। तुम भिन्न-भिन्न बल में कैसे बदले जो बुरे फल देती है। (यिर्मयाह 2:21)। इजराएल एक ऐसी दाखलता जिस पर बहुतेरे फल लगते है। (होशे 10:1)। "हे येरूशेलेम के लोगों और यहूदा के वासियों मेर COLHin 223.1

और मेरे अंगूर के बाग के बारे में निर्णय करो। मैं और क्या अपने बाग के लिये कर सकता था, मैंने वो सब किया जो मैं कर सकता था। मुझे उत्तम अंगूरों की लगने की आशा की, किन्तु वहाँ बुरे अंगूर ही लगे, ऐसा हुआ। अब मैं तुमको बताऊँगा कि मैं अपने अंगूर के बगीचे में क्या कुछ करूंगा। वह कटीली झाड़ी जो खेत की रक्षा करती है, उसे उखाड़ दूंगा और उन झाड़ियों की आग में जला दूंगा। पत्थर का परकोटा तोड़ कर गिरा दूंगा। बगीचे को रौंद दिया जायेगा। अंगूर के बगीचे को मैं खाली खेत में उगा करेगे। मैं बादलों को आदेश दूंगा कि वे वहाँ न बरसे। सर्वशक्तिशाली यहोवा का अंगूर का बगीचा इजराएल का राष्ट्र है और अंगूर की बेले जिन्हें यहोवा प्रेम करता है यहूदा के लोग है। यहोवा ने न्याय की आशा की थी किन्तु वहॉ हत्या बस रही। यहोवा

ने निष्पक्ष की आशा की थी, किन्तु वहाँ बस सहायता मांगने वालो का रोना रहा जिनके साथ बुरा किया गया था। (यशायाह 5:3-7) COLHin 223.2

यहोवा ने मूसा के माध्यम से अपने लोगों के सामने अविश्वास का परिणाम निर्धारित किया था। अपनी वाचा को रखने से इन्कार करने पर, वे खुद को परमेश्वर के जीवन से अलग कर देगे और उनका आशीर्वाद उन पर नहीं आ सकता था। खबरदार "मूसा ने कहा' सावधान राहे, यहावा अपने परमेश्वर को न भूलो, सावधान रहो, आज मैं जिन आदेशों, विधियों और नियमों को दे रहा हूँ उसका पालन करो। तुम्हारे खाने के लिये बहुत अधिक होगा और तुम अच्छे मकान बनाओंगे और उनमें रहोगे। तुम्हारे गाय, मवेशी और भेड़ों के झुण्ड बहुत बड़े होंगे, तुम अधिक से अधिक सोना और चांदी पाओंगे और तुम्हारे पास बहुत सी चीजे होगी। जब ऐसा होगा तो तुम्हें सावधान रहना चाहिये कि तुम्हें घमण्ड न हो। तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर को भूलना नहीं चाहिये । वह तुमको मिस्र से लाया, जहाँ तुम दास थे। अपने मन में कभी ऐसा न सोचा, "मैंने यह सारी सम्पत्ति अपनी शक्ति और योग्यता से पायी है। यहोवा अपने परमेश्वर को कभी न भूलों तुम किसी दूसरे देवता की पूजा या सेवा के लिये उसका अनुसरण न करो, यदि तुम ऐसा करोगे तो निश्चय ही नष्ट हो जाओंगे। यहोवा तुम्हारे लिये अन्य को नष्ट कर रहा हूँ। तुम भी उन्हीं राष्ट्रो की तरह नष्ट हो जाओगे जिन्हें यहोवा तुम्हारे सामने नष्ट कर रहा है। यह होगा, क्योंकि तमने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया है। (व्यवस्थाविवरण 8:11-14, 17, 19, 20) COLHin 223.3

यहूदी लोगों द्वारा चेतावनी के रूप में चेतावनी नहीं दी गई। वे ईश्वर को भूल गये और अपने प्रतिनिधियों के रूप में उच्च विशेषाधिकार की दषष्ट खो गई। उन्हें जो आशीर्वाद मिला था वह दुनिया के लिये कोई आशीर्वाद नहीं था। उनके स्वयं के महिमा मंडल के लिये उनके सभी लाभों को विनियोजित किया गया था। उन्होंने ईश्वर उस सेवा के लिये लूटा जो उन्हें उनकी आवश्यकता थी, और उन्होंने धार्मिक मार्गदर्शन के साथी पुरूषों और पवित्र उदाहरण के अपने साथियों को लूट लिया। रूढ़िवासी दुनिया के निवासियों की तरह, उन्होंने अपने बुरे दिलो की हर कल्पना का पालन किया। इस प्रकार, उन्होंने पवित्र चीजों को एक दिखावा करते हुये कहा, "ईश्वर का मंदिर ये है" (यिर्मयाह 7:4) जब कि उसी समय वे ईश्वर के चरित्र को गलत तरीके से पेश कर रहे थे। उनका नाम बदनाम कर रहे थे और उनका प्रदूषण कर रहे थे। COLHin 224.1

जिन काश्तकारों को ईश्वर की दाख की बारी के प्रभारी के रूप में रखा गया था, वे अपने भरोसे पर खरे नहीं उतरे याजक और शिक्षक लोगो के वफादार प्रशिक्षक नहीं थे। वे ईश्वर की भलाई, और दया और उनके प्यार और सेवा के लिये उनके दावे के सामने नहीं रखते थे। इन काश्तकातरों ने अपनी शान की मांग की। उन्होंने दाख की बारी के फल को उपयुक्त बनाने की इच्छा की। यह उनका ध्यान आकर्षित करने और खुद को श्रद्धांजली देने के लिये अध्ययन के रूप में। COLHin 224.2

इजरायल में इन नेताओं का अपराध बोध साधारण पापी के अपराध न के बोद्ध की तरह नहीं था। ये लोग परमेश्वर के लिये सबसे अधिक दायित्व के तहत खड़े थे। उन्होंने खुद को "इस प्रकार ईश्वर की शिक्षा देने और अपने व्यवहारिक जीवन में आज्ञाकारिता लाने का संकल्प लिया था ऐसा करने के बजाये वे धर्म ग्रन्थों को तोड़ रहे थे। उन्होने पुरूषों पर भारी बोझ डाला। जीवन में हर कदम पर पहुंचने वाले समारोहों को लागू किया। लोग लगातार अशांति में रहते थे, क्योंकि वे रब्बियों द्वारा निर्धारित आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते थे। जैसा कि उन्होंने मानव निर्मित आज्ञाओं को रखने की असंभवता को देख, वे परमेश्वर की आज्ञाओं के सम्बन्ध में लापरवाह हो गये। COLHin 224.3

प्रभु ने अपने लोगों को निर्देश दिया कि वह दाख की बारी के मालिक थे और यह कि उनकी सारी सम्पत्ति उन्हें उनके लिये इस्तेमाल होने के विश्वास में दी गई थी, लेकिन याजक और शिक्षक अपने पवित्र कार्यालय आसिफ का काम नहीं करते थे, वे ईश्वर की सम्पत्ति को संभाल रहे थे। वे उनके काम की उन्नति के लिये उन्हें उनके द्वारा सौंपे गये साध नों और सुविधाओं की व्यवस्थित रूप से लूट कर रहे थे। COLHin 225.1

उनके लोभ और लालच के कारण उन्हें तन्हाई से भी घष्णा करनी पड़ी। इस प्रकार ईश्वर के चरित्र और उसके राज्य के कानूनों की गलत व्याख्या करने के लिये अन्य जातियों को अवसर दिया गया। COLHin 225.2

एक पिता के दिल के साथ, ईश्वर ने लोगों को सहन किया। वह उनके द्वारा दिये गये दया और दया उनसे ले ली गयी। धैर्यपूर्वक उसने उनके सामने अपने पापों को निर्धारित किया, और उनकी स्वीकारोकित के लिये मना किया। भविष्यवकता और दूतों को काश्तकार पर ईश्वर के दावे का आग्रह करने के लिये भेजा गया था, लेकिन उनका स्वागत करने के बजाय, उन्हें दुश्मन माना गया। काश्तकारों ने उन्हें सताया और मार डाला। ईश्वर ने अभी भी अन्य दतों को भेजा लेकिन उन्हें पहले जैसा ही उपचार मिला, केवल यही कि काश्तकार अब भी अधिक दष्ढ़ घष्णा दिखाते है। COLHin 225.3

अंतिम साधन के रूप में, ईश्वर ने अपने पुत्र को यह कहते हुये भेजा कि वे मेरे पुत्र की श्रद्धा करेगे। लेकिन उनके प्रतिरोध ने उन्हें दष्ढ़ बना दिया था, और आपस में कहा, "यह वारिस है, आओं हम उसे मार दे और हमें उसकी विरासत पर कब्जा कर ले। फिर हमे दाख की बारी का आनन्द लेने के लिये छोड़ दिया जायेगा और जैसा कि हम फल के साथ कष्पा करते हैं। COLHin 225.4

यहूदी शासक ईश्वर से प्यार नहीं करते थे, इसलिये उन्होंने खुद को उससे दूर कर लिया, और एक बसावट के लिये उसके जितने भी काम थे, उन्हें खारिज कर दिया, मसीह परमेश्वर का प्रिय, दाख की बारी के मालिक के दावों का दावा करने आया था, लेकिन काश्तकार ने उसे चिन्हित

अवमानना के साथ व्यवहार किया, यह कहते हुये कि हमारे पास शासन करने के लिये यह आदमी नहीं होगा। उन्होंने यीशु के चरित्र की सुन्दरता को उकेरा। उनके पढ़ाने का तरीका उनसे बहुत बेहतर था, उन्होंने उनकी सफलता के लिये दुस्साहस किया। वह उनके साथ अनुनासिक, उपचार कपटी का अनावरण करता है और उन्हें उनकी कार्रवाही के निश्चित परिणाम दिखाता है। इससे उनमें पागलपन पैदा हो गया। वे फटकार के तहत होशियार थे कि वे चुप नहीं रह सकते थे। वे धार्मिकता के उच्च स्तर से नफरत करते थे जो मसीह ने लगातार प्रस्तुत किया था। उन्होंने देखा कि उनकी शिक्षा उन्हें दे रही थी, जहाँ उसके स्वार्थवश अनियंत्रित थे और उन्होंने उसे मारने की ठान ली थी। वे सच्चाई और पवित्रता अपने उदाहरण से नफरत करते थे उन्होने जो कुछ भी सभी में अE यात्मिक का पता चला। उनका पूरा जीवन स्वार्थ के लिये एक निन्दा या और जब अंतिम परीक्षण आया, तो परीक्षण का अर्थ था जो शाश्वत जीवन के प्रति आज्ञाकारिता यह अनन्त मृत्यु के प्रति अवज्ञा, उन्होंने इजरायल के पवित्र एक को अस्वीकार कर दिया। फिर उन्हें मसीह और बरअब्बास के बीच चुनाव करने के लिये कहा गया, उन्होंने चिल्लाते हुये हा, "बरअब्बास को छोड़ दो।" (लूका 23:18) और जब पिलातुस ने पूछा "तब मैं यीशु के साथ क्या करूं, उन्होंने चिल्लाकर कहा "उसे क्रूस पर चढ़ाया जाये | (मत्ती 27:22)। COLHin 225.5

"क्या मैं तुम्हारे राजा को सूली पर चढ़ा दूंगा?" पिलातुस ने पूछा, और याजकों और शासकों से जवाब आया, "हमारे पास कोई राजा नहीं है, लेकिन सीजर है" (यहून्ना 19:15)। जब पिलातुस ने अपने हाथ धोये, तो कहा, "मैं इस न्यायपूर्ण व्यक्ति के खून का निर्दोशी हूँ "याजक अज्ञानी भीड़ के साथ भावुक रूप से घोषणा करते हुये कहते है" उनका खून हम पर हमारे बच्चो पर हो। (मत्ती 27:24, 25)। COLHin 226.1

इस प्रकार यहूदी नेताओं ने अपनी पंसद बनाई। उनका निर्णय उस पुस्तक में दर्ज किया गया जिसे यहून्ना ने हाथ में देखा जो कि सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक जिसे कोई भी व्यक्ति नहीं खोल सकता था। अपनी पूरी निष्ठा के साथ यह निर्णय उनके सामने उस दिन आयेगा, जब यह पुस्तक यहूदा के गोत्र के शेर द्वारा अनसुनी कर दी जाती है। COLHin 226.2

यहूदी लोगों ने इस विचार को घोषित किया कि वे स्वर्ग के पसंदीदा थे, और यह कि उन्हें हमेशा ईश्वर की कलीसिया के रूप में उत्कृष्ट माना जाता था। वे अब्राहाम के बच्चे थे, उन्होंने अपने अधिकारों के प्रसार के लिये पष्थ्वी और स्वर्ग की तुच्छ समझा। लेकिन विश्वासघाती जीवन से वे ईश्वर से अलग होने के लिये स्वर्ग की निन्दा की तैयारी कर रहे थे। COLHin 227.1

दाख की बारी में जब मसीह ने याजकों के साथ दुष्टतापूर्ण व्यवहार करने से पहले उनका चित्रण किया था, तो उन्होंने प्रश्न किया, "जब दाख की बारी के स्वामी के रूप में ईश्वर है तो वे उन काश्तकारों का क्या होगा?" याजक गहरी रूचि के साथ क्या अनुसरण कर रहे थे और खुद के विषय का संबन्ध पर विचार किये बिना वे लोगों के साथ जवाब देने में शामिल हो गये, "वह उन

दुष्ट पुरूषों को बुरी तरह से नष्ट कर देगा और अपने दाख की बारी की अन्य काश्तकार पर छोड़ देगा, जो करेगा उन्हें उनके मौसम में फल प्रदान करें। COLHin 227.2

अनजाने में उन्होंने अपना अन्त सुनाया। यीशु ने उन पर ध्यान दिया और उनकी खोज की निगाह में उन्हें पता था कि उन्होंने उनके दिल के रहस्यों को पढ़ा था। उनकी दिव्यता उनके सामने अदष्ष्य शक्ति के साथ चमक उठी। उन्होंने काश्तकार की एक तस्वीर में खुद को देखा और "अनजाने में कहा' "ईश्वर ने करें।" COLHin 227.3

पूरी तरह से और अफसोस के साथ मसीह ने पूछा, "क्या तुमने कभी शास्त्रों में नहीं पढ़ा। जिस पत्थर को बिल्डरों ने अस्वीकार कर दिया, वही कोने का प्रमुख बन गया? ये प्रभु का काम है और ये हमारी नजर में अद्भुत है। इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ, परमेश्वर का राज्य आपसे लिया जायेगा और वो फल देने वाले राष्ट्र को दिया जायेगा। और जो भी इस पत्थर पर गिरेगा वह टूट जायेगा। लेकिन जिस पर भी यह गिरेगा, वह उसे सत्ता में पीस देगा।" COLHin 227.4

यदि लाग उन्हें प्राप्त कर लेते तो मसीह यहूदी राष्ट्र का कयामत टाल देता। लेकिन ईर्ष्या ने उन्हें नपुसंक बना दिया। उन्होने निर्धारित किया कि वे नासरत के यीशु को मसीह के रूप में प्राप्त नहीं करेंगे। दुनिया की रोशनी को खारिज कर दिया और आधी रात के अंधेरे के रूप में अधेरे से घिरे उनके जीवन को शांत कर दिया। विनाश यहूदी राष्ट्र पर आया था। उनके अपने भंयकर जुनून, अनियंत्रित और उनके खण्डहर को गढ़ा । अपने अंधे क्रोध में उन्होंने एक दूसरे को नष्ट कर दिया। उनका विद्रोही, अडिग अभिमान उन्हें अपने रोमन विजेता के क्रोध पर ले आया। येरूशेलेम को नष्ट कर दिया, मंदिर खंडहर में तब्दील हो गया और उसकी जगह एक खेत की तरह गिरवी रख दी गई। यहूदी के बच्चे मृत्यु के सबसे भयानक रूपों से पीड़ित थे। लाखों बेच दिये गये। तपती भूमि में बन्धुआ के रूप में सेवा करने के लिये। COLHin 227.5

एक लोगों के रूप यहूदी ईश्वर के उद्देश्य को पूरा करने में विफल रहे थे और उनसे दाख की बारी ली गई थी। विशेषधिकार का दुरूपयोग करते हुये उन्होंने जो काम किया था, उसे दूसरों को सौंपा गया था। COLHin 228.1

आज की कलीसिया

दाख की बारी का दष्टान्त यहूदी राष्ट्र के लिये अकेला है। यह हमारे लिये एक सबक है। इस पीढ़ी में कलीसिया को ईश्वर द्वारा बहुत विशेषाधिकार और आशीर्वाद के साथ संपन्न किया गया है और वह इसी रिर्टन की उम्मीद करता है। COLHin 228.2

हमें एक मंहगी फिरौती दी गई है। इस फिरौती की महानता से ही हम इसके परिणाम की कल्पना कर सकते है। इस धरती पर, जिस पर की, ईश्वर के बेटे के आंसू और खून से है, उसे फिरदौस के अनमोल फल दिये जायेगे। परमेश्वर के लोगों के जीवन में उनके वचन के सत्य उनकी

महिमा और उत्कष्टता को प्रकट करते हैं। अपने लोगों के माध्यम से मसीह अपने चरित्र और अपने राज्य के सिद्धान्तों को प्रकट करना है। COLHin 228.3

शैतान ईश्वर के काम का मुकाबला करना चाहता है, और वह लगातार पुरूषों से अपने सिद्धान्तों को स्वीकार करने का आग्रह कर रहा है। वह एक प्रबुद्ध लोगों के रूप में ईश्वर के चुने हये लोगों का प्रतिनधित्व करता है। वह भाईयों का अभियुक्त है, उसकी आरोपित शक्ति उन लोगों के खिलाफ काम करती है जो धार्मिकता का काम करते है। प्रभु अपने लोगों के माध्यम से सही सिद्धान्तों के लिये आज्ञाकारिता के परिणामों को दिखाकर शैतान के आरोपों का जवाब देने की इच्छा रखते है। COLHin 228.4

इन सिद्धान्तों को व्यक्तिगत मसीही, परिवार में, चर्च में, ईश्वर की सेवा के लिये स्थापित प्रत्येक संस्थान में प्रकट किया जाना है। सभी इस बात के प्रतीक है कि दुनिया के लिये क्या किया जा सकता है। वे सुसमाचार की सच्चाईयों की बचत शक्ति के प्रकार से है। सभी मानव जाति के लिये ईश्वर के महान उद्देश्य की पूर्ति में ऐजेंसियाँ है। COLHin 228.5

यहूदी नेताओं ने उनके शानदार मंदिर और उनकी धार्मिक सेवा के संस्कारों पर गर्व के साथ देखा, लेकिन न्याय, दया और ईश्वर के प्यार में कमी थी। मन्दिर की महिमा, उनकी सेवा का वैभव, उन्हें ईश्वर के लिये सफारिश नहीं कर सकता था। उनके लिये जो उनकी दृष्टि में अकेले मूल्य का है, उन्होंने नहीं दिया। उन्होंने उसे एक विनम्र और विपरीत आत्मा के बलिदान को नहीं लिया। यहां तक होता है, जब परमेश्वर के राज्य के महत्वपूर्ण सिद्धान्त खो जाते है कि समारोह बहुपक्षीय और असाधारण हो जाते है। यह तब होता है तब चरित्र निर्माण की उपेक्षा की जाती है, जब आत्मा में अंगार की कमी होती है, जब ईश्वस्तत्व की सादगी खो जाती है, उस गर्व और प्रदर्शन का प्यार शानदार कलीसिया की मूर्तियों की मांग करता है, शोभा देता है, और समारोह आयोजित करता है। इस सब में ईश्वर को सम्मानित नहीं किया जाता है। एक फैशनेबल धर्मगीत, जिसमें समारोहों, दंगे और प्रदर्शन शामिल है, उसे स्वीकार्य नहीं है। इसकी सेवाओं को स्वर्गीय दूतों से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती है। COLHin 229.1

ईश्वर की दषष्ट में कलीसिया बहुत मूल्यवान है। वह इसे बाहरी फायदे के लिये नहीं बल्कि ईमानदारी से धर्मनिष्ठता के लिये महत्व देते है वह अध्यात्मिक ज्ञान में उनकी प्रगति के अनुसार, मसीह के ज्ञान में सदस्यों की वषद्ध के अनुसार इसका अनुमान लगाते है। COLHin 229.2

मसीह को अपनी दाख की बारी से पवित्रता और निःस्वार्थता का फल प्राप्त करने की भूख है। वह प्यार और अच्छाईयों के सिद्धान्तों की तलाश करता है। जो लोग मसीह के प्रतिनिधि है, उन सभी में कला की सुन्दरता की तुलना स्वभाव और चरित्र की सुन्दरता के साथ नहीं की जा सकती है। यह अनुग्रह का वातावरण है जो विश्वासियों की आत्मा मन और हष्दय पर काम करने

वाली पवित्र आत्मा को घेरता है, जो उसे जीवन के प्रति जीवन का एक स्वाद बनाता है, और ईश्वर को अपने काम को आशीर्वाद देने में सक्षम बनाता है। COLHin 229.3

एक मण्डली भूमि में सबसे गरीब हो सकती है। यह किसी भी जावक शो के आकर्षण के बिना हो सकता है, लेकिन अगर सदस्य मसीह के चरित्र के सिद्धान्तों का पालन करते है तो उनकी आत्मा में उनकी खुशी होगी। स्वर्गदूत उनकी चिता मे उनके साथ एक जुट होगे। कृतज्ञ हृदय से आभार प्रकट करने वाला ईश्वर एक मधुर विस्मृति के रूप में ईश्वर के पास जायेगा। COLHin 229.4

। प्रभु की इच्छा है कि हम उनकी अच्छाई का उल्लेख करे और उनकी शक्ति के बारे में बताये। उन्हें प्रशंसा और धन्यवाद की अभिव्यक्ति से सम्मानित किया जाता है। वे कहते है, "किसने इतनी प्रशंसा की, जिसने मुझे गौरवान्वित किया।" (भजन संहिता 50:23) । इजराएल के लोग, जंगल में यात्रा करते हुये पवित्र गीत में परमेश्वर की स्तुति करते थे। COLHin 230.1

प्रभु की आज्ञाओं और वादों का संगति के लिये निर्धारित किया गया था। और सभी यात्रा के दौरान ये तीर्थ यात्रा द्वारा गये थे। और कनान में जैसा कि वे अपने पवित्र पर्वो पर मिले, तो परमेश्वर के अद्‌भुत कामों को याद किया जाना था और उनके नाम के प्रति आभार व्यक्त किया जाना था। ईश्वर ने चाहा कि उनके लोगों का पूरा जीवन प्रशंसा का जीवन है। इस प्रकार उनका रास्ता सभी देशों के बीच "स्वास्थ पर ज्ञात" स्वस्थ्य बनाया जाना था। (भजन संहिता 67:2) । COLHin 230.2

तो यह अब होना चाहिये। दुनिया के लोग झूठे देवताओं की पूजा कर रहे हैं। उनकी झूठी उपासना से, उनकी मूर्तियों का खंडन सुनने से नहीं, बल्कि कुछ बेहतर करने से ईश्वर की अच्छाई से अवगत होना है, "ये मेरे गवाह है, यहोवा की यही वाणी है, मैं ईश्वर हूँ।" (यशायाह 43:12) । COLHin 230.3

प्रभ हमें मक्ति की महान योजना की सराहना करने, ईश्वर की संतान के रूप में हमारे उच्चाधिकारी का एहसास करने और कप्तज्ञतापूर्ण धन्यवाद के साथ आज्ञाकारिता में उसके समक्ष चलने की इच्छा करता है। वह हमें हर दिन खुशी के साथ जीवन के नयेपन में सेवा करने की इच्छा रखता है। वह हमारे दिलों में भलाई के लिये कप्तज्ञत देखने के लिये तरसते है क्योंकि हमारे नाम मेम्रे जीवन की पुस्तक में लिखे गये है। क्योंकि हम अपना सारा ध्यान उसी पर लगा सकते है जो हमारी परवाह करता है। वह हमे आनन्दित करता है क्योंकि हम प्रभु की धरोहर है, क्योंकि मसीह की धार्मिकता उसके धर्मियों को सफेद लिबास है। क्योंकि हमें अपने उद्धारकर्ता के जल्द आने की धन्य आशा है। COLHin 230.4

ईश्वर की पूर्णता और इमानदारी से हष्दय से प्रशंसा करना उतना ही कर्तव्य है जितना की प्रार्थना। हम दुनिया को और सभी स्वर्गीय बुद्धिमताओं को दिखाने के लिये है कि हम गिरी हुई मानवता के लिये ईश्वर के अद्‌भुत प्रेम की सराहना करते है और हम उसकी असीम परिपूर्णता से

बड़े और अभी तक बड़े आशीर्वाद की उम्मीद कर रहे है। जितना हम करते है उससे कही अधिक हमें अपने अनभव में अनमोल अध्यायों की बात करनी चाहिये । पवित्र आत्मा की एक विशेष चौकी के बाद में प्रभु में हमारी खुशी और उनकी सेवा में हमारी दक्षता उनके बच्चों की ओर से उनकी अच्छाई और उनके अद्‌भुत कार्यों को पढ़कर बहुत बढ़ जायेगी। COLHin 231.1

ये अभ्यास शैतान की शकित लाते है। वे बड़ बड़ाहट और शिकायत की भावना को बाहर निकालते है और परीशिक्षित व्यक्ति अपने रास्ते से भटक जाते है। वे चीजे की उन विशेषताओं पर खेती करते है जो स्वर्गीय हवेली के लिये पृथ्वी पर रहने वालों को फिर कर देंगे। COLHin 231.2

इस प्रकार की गवाही का दूसरो पर प्रभाव पड़ेगा। मसीह को जीने वाली आत्माओं के लिये और कोई अधिक साधन नियोजित नहीं किया जा सकता है। COLHin 231.3

हम परमेश्वर की स्तुति करने के लिये भूर्त सेवा द्वारा उसके नाम की महिमा को आगे बढ़ाने के लिये अपनी शक्ति में सभी कर रहे है। परमेश्वर ने हमें अपने उपहार दिये है, जो हम भी दे सकते हैं और इस प्रकार दुनिया को उनका चरित्र ज्ञात करा सकते है। यहूदी अर्थव्यवस्था के तहत, उपहार और दान ने ईश्वर की पूजा का एक अनिवार्य हिस्सा बनाया। इजराएलियों को यह सिखाया गया कि वे अपनी सारी आय का एक हिस्सा गर्भग्रह की सेवा में समर्पित करे। इसके अलावा वे पाप पुण्य, मुफत उपहार और कृतज्ञता का दान लेने वाले थे। परमेश्वर हमसे यह उपेक्षा नहीं करता कि वह अपने लोगों से उसकी उपेक्षा से कमतर है। आत्माओं के उद्धार के लिये महान कार्य को आगे बढ़ाने चाहिये। दशमांश में, उपहार और दान के साथ, उन्होंने इस काम के प्रावधान किया है। इस प्रकार उनका इरादा है कि सुसमाचार की सेवकाई कायम रहेगी। वह दशमांश को अपने होने का दावा करता है और इसे कभी भी एक पवित्र रिर्जव के रूप में माना जाना चाहिये। अपने कारण के लाभ के लिये अपने खजाने में रखा जाना चाहिये। वह हमारी मुफत इच्छा उपहार और कृतज्ञता की पेशकश के लिये भी पूछता है। सभी को धरती के सुसमाचार के प्रति ईश्वर की सेवा में निजी सेवकाई शामिल है। व्यक्तिगत प्रयास से हम दुनिया को बचाने के लिये उसके साथ सहयोग करना चाहते है। मसीह का आदेश "पूरी दुनिया मे जाओं, प्रत्येक प्राणी को सुसमाचार का प्रचार करो" उसके सभी अनुयायियों से बात की जाती है। (मरकुस 16:15) मसीह के जीवन के लिये दोषी ठहराये गये सभी लोगों को उनके साथी परूषों के उद्धार के काम करने के लिये ठहराया जाता है। उनके दिल मसीह के दिल के साथ एक जुट हो जायेंगे। आत्माओं के लिये वही लालसा जो उन्होंने महसूस की है, उनमें प्रकट होगी। सभी एक ही जगह को नहीं भर सकते है लेकिन सभी के लिये एक जगह और काम है। COLHin 231.4

प्राचीन काल में, अब्राहम, इसाहक, याकूब, मूसा अपनी विनम्रता और बुद्धिमता के साथ यहोशू अपनी विभिन्न क्षमताओं के साथ सभी ईश्वर की सेवा में सूची बद्ध थे। मिरियम का संगीत,

डेबेरा का साहस और पवित्रता रूप का फिल्मी स्नेह, शमूएल की आज्ञाकारिता और विश्वासशीलता, ऐलिय्या की बड़ी निष्ठा, ऐलीशा के नरम प्रभाव को कम करने के लिये सभी की आवश्यकता थी। इसलिये अब जिन्हें का आशीर्वाद मिला है उन्हें वास्तविक सेवा द्वारा जवाब देना है, प्रत्येक उपहार को उसके राज्य की उन्नति और उसके नाम की महिता के लिये नियोजित किया जाना है। COLHin 232.1

सभी जो एक व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में मसीह को प्राप्त करते है वे सुसामचार की सच्चाई और जीवन पर उसकी बचत शक्ति का प्रदर्शन करते है इसकी पूर्ति के लिये प्रावधान किये बिना ईश्वर को कोई आवश्यकता नहीं है। मसीह की कृपा से हम वह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं जो परमेश्वर की आवश्यकता है। स्वर्ग के सभी धन ईश्वर के लोगों के माध्यम से प्रकट किये जाने है। "यहाँ मेरे पिता की महिमा है" मसीह कहते है कि तुम बहुत फल लाओं, इसलिये तुम मेरे शिष्य बनोगे। (यहून्ना 15:8) । COLHin 232.2

परमेश्वर पूरी पष्थ्वी को अपने दाख की बारी के रूप में दावा करता है। हालांकि अब यह सूदखोर के हाथ में है, यह ईश्वर का है। छुटकारे से कोई सष्जन से कम नहीं है। दुनिया के लिये मसीह की कुर्बानी दी गई। "ईश्वर ने दुनिया से इतना प्यार किया कि उसने अपने इकलौते बेटे को दिया।" (यहून्ना 3:16)। यह उस उपहार के माध्यम से है जो पुरूषों के लिये हर दूसरे को प्रदान किया जाता है। पूरे विश्व को ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त था। बारिश की हर बूंद हर अचूक दौड़ पर, प्रकाश की किरण, हर पत्ती और फूल और फल ईश्वर की लम्बी तपस्या और उसके महान प्रेम की गवाही देते है। COLHin 232.3

और महान दाता को क्या वापिस दिया जाता है? परमेश्वर के दावे को कैसे मानने वाले लोग है। अपने जीवन की सेवा देने के लिये आम जनता किसके पास जाती है। वे धन दौलत में लगे हुये है। दुनिया में धन, पद, सुख उनका उद्देश्य है धन लूट से प्राप्त होता है केवल मनुष्य का नहीं बल्कि ईश्वर का । पुरूष अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये अपने उपहारों का उपयोग कर रहे है। सब कुछ वे समझ सकते है, सेवकाई को अपने लालच और स्वार्थी आनन्द के लिये किया जाता है। COLHin 233.1

दनिया का पाप आज वह पाप है जो इजराएल पर विनाश लाता है और ईश्वर के प्रति समर्पण, अवसरो की उपेक्षा और ईश्वर के उपहारों की स्वार्थी विनय को आशीर्वाद देना इजराएल पर कोध खरीदने वाले पाप में शामिल थे। वह आज दुनियां को बर्बाद कर रहे है। COLHin 233.2

जैतून पर मसीह ने जो आंसू बहाये, वह चुने हुये शहर की अनदेखी करते हुये साथ नहीं थे। येरूशेलेम के भाग्य में उन्होंने दुनिया के विनाश को स्वीकार किया COLHin 233.3

"और कहा, क्या ही भला होता, किन्तु हॉ तू ही इसी दिन मे कुशल की बाते जानता, परन्तु अब वो तेरी आंखों से छिप गयी है। COLHin 233.4

वो दिन करीब आ रहा है। दया और विशेषाधिकार की अवधि अच्छी तरह से समाप्त हो गई है। प्रतिशोध के बादल जमा हो रहे है। ईश्वर की कष्पा के अस्वीकार करने वाले तेज और अपरिर्वतननीय खंडहर में शामिल होने वाले है। COLHin 233.5

फिर भी दुनिया से रही है। लोगों को उनकी यात्रा का समय नहीं पता है। इस संकट में, चर्च कहाँ पया जाता है। क्या इसके सदस्य परमेश्वर के दावों को पूरा कर रहे है। क्या वे अपना कमीशन पूरा कर रहे है, और दुनिया के लिये अपने चरित्र का प्रतिनिधित्व कर रहे है? क्या वे अपने साथी आदमियो को चेतावनी के अंतिम दयालु संदेश पर ध्यान देने का आग्रह कर रहे हैं। COLHin 233.6

पुरूष संकट में है, लाखों लोग खत्म हो रहे है, लेकिन इन आत्माओं के लिये मसीह के कितने ही अनुयायी बोझ है। एक दुनिया की निर्मित आधार मे लटक गयी, लेकिन यह शायद ही कभी उन लोगों के लिये भी चलती है जो नम्बर को दिये सबसे दूर हो गयी सत्य पर विश्वास करने का दावा करते है। उसे प्रेम की कमी है जिसके कारण मसीह ने अपने स्वर्गीय घर को छोड़ दिया और मनुष्य के स्वभाव को ले लिया कि मानवता, मानवता को छू सके और उसे देवत्व की ओर आकर्षित कर सके। ईश्वर के लोगों पर एक स्तूप, एक पक्षाघात है, जो उन्हें घंटे के कर्तव्य को समझने से रोकता है। COLHin 233.7

जब इजराएलियों ने कनान मे प्रवेश किया उन्होंने पूरी भूमि पर कब्जा करके परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा नहीं किया। आंशिक विजय प्राप्त करने के बाद, वे अपनी जीत के फल का आनन्द लेने के लिये चल बसे। अपने विश्वास और सहजता के प्यार में वो नये इलाको पर कब्जा करने के लिये आगे बढ़ने के बजाय पहले से ही जीते गये हिस्सो मे अलग हो गये। इस प्रकार वे ईश्वर से विदा होने लगे। अपने उद्देश्य को पूरा करने में विफलता के द्वारा उन्होंने उनके लिये अपने आशीर्वाद के बादे को पूरा करना असम्भव बना दिया। क्या आज का चर्च ऐसे ही काम नहीं कर रहा है? उनके सामने पूरी दुनिया के साथ सुसमाचार की जरूरत है, जो कि वे खुद को आत्मघात कर सकते है, वे मसीही विशेषण का आनन्द ले सकते है। नये क्षेत्रो से परे ले जाते है। उन्होंने मसीह के निर्देश को पूरा करने से इन्कार कर दिया। तुम सब दुनिया में जाओ, और प्रत्येक प्राणी का सुसमाचार का प्रचार करो। (मरकुस 16:15)। क्या वे यहूदी चर्च से कम दोषी थे। COLHin 234.1

स्वर्ग के ब्रहामण्ड से पहले मसीह के सिद्ध अनुयायी परीक्षण पर है, लेकिन उनके उत्साह की ठंडक और ईश्वर की सेवा में उनके प्रयासों की कर्तव्यहीनता उन्हें बेवफा करार देती है। यदि वो जो कर रहे है बेह सबसे अच्छा कर सकते थे, तो निंदा उन पर आराम नहीं करेगी, लेकिन उनके दिल काम में मग्न थे। वे और भी बहुत कुछ कर सकते थे। वे जानते है और दुनिया जानती है कि उनके पास बहुत हद तक आत्म अस्वीकार की भावना होती है। कई ऐसे है जिनके नाम स्वर्ग की पुस्तक में लिखे गये है, न कि निर्माता लेकिन उपभोक्ता। कई लोग जो मसीह के नाम को

धारण करते है उनकी महिमा अस्पष्ट है, उनकी सुन्दरता पर पर्दा पड़ा है, उनके सम्मान को रोक दिया गया। COLHin 234.2

कई ऐसे है जिनके नाम कलीसिया की पुस्तकों में है, लेकिन जो मसीह के शासन में नहीं है। वे उसक निर्देश पर ध्यान नहीं दे रहे है तथा अपना काम कर रहे है। इसलिये वे दुश्मन के नियंत्रण में है। वो कोई सकारात्मक अच्छा नहीं कर रहे है, इसलिये वे आस-पास नुकसान कर रहे है क्योंकि उनका प्रभाव जीवन के लिये जीवन का एक स्वाद नहीं है, यह मृत्यु के लिये मौत का स्वाद है। COLHin 235.1

प्रभु कहते है, "क्या मैं इन वीजों के लिये नही जाऊंगा' (यिर्मयाह 5:9)। क्योंकि वे परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने में विफल रहे थे, इजराएल के बच्चों को अलग रखा गया था और परमेश्वर का एहसान अन्य लोगों के लिये बढ़ाया गया था। अगर वे भी बेवफा साबित हाते है, तो क्या इस तरह से खारिज नहीं किये जायेगे। COLHin 235.2

अंगूर के काम के दष्टान्त ये काश्तकार था जिसे मसीह ने दोषी ठहराया था। यह वे थे जिन्होंने अपने स्वामी को अपने जमीन के फल को वापस करने से इन्कार कर दिया था। यहूदी राष्ट्र में इतने याजको और शिक्षको को रखा, जिन्होंने लोगों को गुमराह करके उस परमेश्वर की सेवा को लूट लिया था जिसका उन्होंने दावा किया था। यह वे जिन्होंने राष्ट्र को मसीह से अलग कर दिया। COLHin 235.3

मानवीय परम्परा से बेपर्दा ईश्वर का कानून मसीह द्वारा आज्ञाकारिता के महान मानक के रूप मे प्रस्तुत किया था इससे रब्बियों में दुश्मनी और बढ़ गई। उन्होंने परमेश्वर के वचन के ऊपर मानव शिक्षण स्थापित किया था, और लोगों को उनके उपदेशों से दूर किया था। वे परमेश्वर के वचन की आवश्यकताओं को पालन करने के लिये अपने मानव निर्मित आदेशो को नहीं छोड़ेगे। वे इस कारण से, गर्व और पुरूषों की प्रशंसा का त्याग नहीं करेगे। जब यीशु आये तो राष्ट्र को ईश्वर के दासों के सामने पेश करते हुये याजकों और बुजुर्गों ने उनके और लोगों के बीच हस्तक्षेप करने के अपने अधिकार से इन्कार कर दिया। वे उसकी फटकार और चेतावनियो को नहीं स्वीकारेगें और उन्होंने लोगों को उसके खिलाफ होने और उसके विनाश के लिये तैयार किया। COLHin 235.4

हमारे दिन में काम पर एक ही प्रभाव नहीं है? प्रभु के दाख की बारी के काश्तकार यहूदी नेताओं के कदमों को पालन नहीं कर रहे है। COLHin 235.5

क्या धार्मिक शिक्षक पुरूषों को परमेश्वर के वचन की सादी आवश्यकताओं दूर नहीं कर रहे है? क्या वे परमेश्वर के नियम का पालन करने के लिये उन्हे शिक्षित करने के बजाय उन्हे अपराध में शिक्षित नहीं कर रहे हैं? चर्च के कई हिस्सों से लोगों को सिखाया जाता है कि ईश्वर का कानून उन पर बाध्यकारी नहीं है। मानव परंपराएं, अध्यादेश और रीति रिवाज अतिरंजित है, ईश्वर के

दावो के कारण अभिमान और आत्म सन्तुष्टि को बढ़ावा मिलता है, जब कि ईश्वर के दावों का अनदेखा किया जाता है। COLHin 235.6

ईश्वर के कानून को अलग करने में पुरूषों को नहीं पता कि वे क्या कर रहे है। ईश्वर का नियम उनके चरित्र की प्रतिलेख है। यह उनके राजय के सिद्धान्तों का प्रतीक है। वह जो इस सिद्धान्तों को स्वीकार करने से इन्कार करता है, वह खुद को चैनल के बाहर रख रहा है जहाँ ईश्वर का आशीर्वाद है। COLHin 236.1

इजराएल के सामने जो शानदार संभावनाये है, उन्हे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के जरिये ही महसूस किया जा सकता है। चरित्र का वहीं उत्थान, आशीर्वाद की वही परिपूर्णता मन और आत्मा और शरीर का आशीर्वाद, घर और मैदान पर आशीर्वाद, इस जीवन का आशीर्वाद और आने वाले जीवन के लिये आज्ञाकारिता से ही हमारे लिये संभव है। COLHin 236.2

प्राकतिक दुनिया की तरह अध्यात्मिक में, परमेश्वर के नियमों को पालन करना फल देने की स्थिति है और जब लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना करना सिखाते है, तो वे उन्हें उसकी महिमा के लिये फल देने से रोक रहे है। वे प्रभु से अपनी दाख की बारी के फल को वापस लेने के लिये दोषी है। COLHin 236.3

हमारे लिये ईश्वर के दत मास्टर की बोली पर आते है। वे मांग करते है जैसे कि मसीह, परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं। वे दाख की बारी के फल, प्रेम के फल और विनम्रता और आत्म त्याग को सेवा के लिये अपना दावा पेश करते है। यहूदी नेताओं की तरह, क्या दाख की बारी के कई काश्तकार गुस्से में नहीं थे? जब लोगों के सामने परमेश्वर के नियम का दावा किया जाता है, तो क्या ये शिक्षक इसे अस्वीकार करने के लिये अग्रहणी पुरूषों में अपने प्रभाव का उपयोग नहीं करते है। ऐसे शिक्षक ईश्वर को वेबफा नौकर कहते है। COLHin 236.4

प्राचीन इजराएल के लिये ईश्वर के वचन आज कलीसिया और उसके नेताओं के लिये एक चेतावनी है। इजराएल में से यहोवा ने कहा, "मैं तो उनके लिये अपनी व्यवस्था की लाखों बाते लिखता आया हूँ, परन्तु वे उन्हे पराया समझते है।" (होशे 8:12)। और याजको को और शिक्षको को उसने घोषणा की, "मेरे जाने के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गयी, तूने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊंगा। इसलिये कि वो परमेश्वर की व्यवस्था को भूल गये है, मैं भी बच्चों को भूला दूंगा। COLHin 236.5

क्या ईश्वर द्वारा दी गई चेतावनियों को अनसुना करके पारित किया जाना चाहिये? क्या सेवा के अक्सर होंगे? दुनिया का तिरस्कार कारण की सवारी, मानवीय रीति-रिवाजों और पंरपराओ के अनुरूप, मसीह की सेवा से लेकर उसके प्रति अनुगामी अनुयायियों को पकड़ेगे? क्या वे परमेश्वर के वचन को अस्वीकार कर देगे क्योंकि यहूदी नेताओं ने मसीह को अस्वीकार कर दिया था।

इजराएल के पाप का नतीजा हमारे सामने है। क्य आज की कलीसिया चेतावनी लेगी।? COLHin 237.1

और यदि किसी ने कुछ डालियो को तोड़ दिया और तू जंगली जलपाई होकर उनमें साथ गया, और जलपाई की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है तो तू डालियों पर घमण्ड न कर फिर तू कहेगा, डालियाँ इसलिये तोडी गई कि मैं साटा जाऊ, भला वे तो अविश्वास के कारण तोड़ी गई, परन्तु तू विश्वास से बना रहता है, इसलिये अभिमानी न हो परन्तु भय कर । क्योंकि जब परमेश्वर ने स्वभाविक डालियो न छोड़ी, तो तुझे भी न छोड़ेगा। (रोमियों 11:17—21) COLHin 237.2

अध्याय 24 - एक शादी परिधान के बिना

“यह अध्याय मत्ती 22:1-14 पर आधारित है”

शादी के परिधान का दृष्टान्त हमारे सामने उच्चतम परिणाम का एक पाठ खोलता है। विवाह द्वारा उस चरित्र का प्रतिनिधित्व किया जाता है, जिसके लिये सभी को विवाह के उपयुक्त अनुमान लगाना चाहिये। COLHin 238.1

इस दष्टान्त में जैसा कि महान समर्थक के रूप में है सुसमाचार का निमंत्रण इसकी अस्वीकषत को चित्रित करता है, यहूदी लोगो द्वारा और अन्य जातियों पर दया की प्रकार, लेकिन उन लोगो की ओर आमंत्रण अस्वीकार करने वाला, यह दष्टान्त एक गहन अपमान और एक अधिक भयानक सजा को देखने के लिये लाता है। दावत का आह्वान एक राजा का निमंत्रण है। यह एक से आगे बढ़ता है जो शक्ति के साथ निहित होता है। यह उच्च सम्मान प्रदान करता है। अभी तक सम्मान नहीं है। राजा का अधि कार तिरस्कप्त है। जब कि गष्ह स्वामी के निमंत्रण को उदासीनता के माना जाता था। राजा का अपमान और हत्या के साथ मुलाकात की जाती है। उन्होंने अपने सेवको को तिरस्कार के साथ व्यवहार किया, इसके बाबजूद उनका इस्तेमाल किया और उन्हें मार डाला। COLHin 238.2

गष्हस्वामी ने उनके निमंत्रण को थोड़ा देखते हुये घोषणा की कि जिन पुरूषो पर प्रतिबन्ध लगाया गया था, उनमे से किसी को भी अपने खाने का स्वाद नहीं लेना चाहिये । लेकिन उन लोगो के लिये जिन्होने राजा के बाबजूद किया था, उनकी उपस्थिति और उनकी तालिका से बहिष्करण से अधिक निर्णायक है। “उसने अपनी सेनाओं को भेजा और उन हजारों को नष्ट कर दिया और उनके शहर पर बोझ डाला।” COLHin 238.3

दोनो दृष्टान्तों में मेहमानो के साथ दावत दी जाती है, लेकिन दूसरा, वहाँ होता है जो दावत में शामिल होने वाले सभी लोगो के लिये तैयार किया जाता है। जो लोग इस तैयारी की उपेक्षा करते हैं उन्हें बाहर कर दिया जाता है। जो राजा मेहमानों को देखने के लिये आया था, “और वहाँ एक आदमी को देखा जो शादी के परिधान में नहीं था, उसने कहा, मित्र तू शादी के परिधान में नहीं है और वो चुप था, कुछ बोल नहीं पाया। तब राजा ने सेवको से कहा, “इसके हाथ और पैर बांधो और इसे अंधरे में ले जाओं जहाँ पर रोना और दांतो का पीसना हो रहा है।” दावत का बुलावा मसीह के चेलो ने दिया था। हमारे ईश्वर ने बारह और बाद में सत्तर बाहर भेजा था, ये घोषणा करते हुये कि ईश्वर का राज्य हाथ में था, और पुरूषों को पश्चाताप करने सुसमाचार पर विश्वास करने का अहसास किया। लेकिन बुलाहट पर ध्यान नहीं दिया गया। जो लोग दावत के लिये प्रतिबंधित है वो नहीं आये। नौकरों को यह कहने के लिये बाद में भेजा गया, “देखो मैं ने अपना रात्रिभोज तैयार कर लिया है, मेरे बैलों और वाघियों को मार दिया गया है और सभी चीजे तैयार हो गयी है, शादी के लिये तैयार हो जाओ।’ यह मसीह के क्रूस पर चढ़ाने के बाद यहूदियों को दिया गया

सन्देश था। लेकिन जिस देश ने परमेश्वर के अजीबों गरीब लोगो का दावा किया था, उसने पवित्र आत्मा की शक्ति में लाये गये सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया। कई लोगो ने इसे सबसे अधिक अपमानजनक तरीके से किया। मुक्ति की पेशकश, ईश्वर की जय को ठुकराने के लिये क्षमा की पेशकश से अन्य लोग इतने अधिक उत्तेजित हो गये थे कि उन्होंने संदेश देने वालो पर पलटवार किया। "घोर उत्पीड़न" (प्रेरितो के काम 8:1)। कई पुरूषो और महिलाओं दोनो को जेल में डाल दिया गया और स्टीफन और याकूब के रूप में ईश्वर के कुछ दूतो को मौत के घाट उतार दिया था। COLHin 238.4

इस प्रकार यहूदी लोगो ने ईश्वर की दया को अस्वीकार कर दिया। परिणाम दृष्टान्त में मसीह द्वारा निर्धारित किया गया था। राजा ने अपनी सेनाओ को भेजा, उन हत्यारो को नष्ट कर दिया और उनके शहर को जला दिया "सुनाया गया निर्णय यहूदियों के येरूशेलेम के विनाश और राष्ट्र बिखेरने पर आया।" COLHin 239.1

दावत की तीसरी बुलाहट, अन्य जातियों को सुसमाचार देने का प्रतिनिधित्व करती है। राजा ने कहा, "शादी के लिये सब तैयार है, लेकिन वे जो प्रतिबधित थे वे योग्य नहीं थे। इसलिये तुम राजमार्गों में जाओ, जितने भी तुम पाओगे, शादी के लिये बुलाकर लाओ। COLHin 239.2

राजा के सेवक जो राजमार्गों में निकलते थे, "वे सभी अच्छे और बुरे इकटठे होते थे" यह एक मिले जुले लोग थे। उनमें से कुछ के पास दावत देने वाले के लिये और अधिक वास्तविक सम्बन्ध नहीं थे, जिन्होंने बुलाहट को अस्वीकार कर दिया था। पहले जिस वर्ग पर प्रतिबन्ध लगाया था, वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था, उन्होंने राजा के भोज मे शामिल होने के लिये किसी भी सांसारिक लाभ का त्याग करने की सोची। जिन लोगो ने निमंत्रण स्वीकार किया, उनमे से कुछ ऐसे थे जिन्होंने केवल खुद को लाभ पहुंचाने की सोची। ये दावत के प्रावधानों को साझा करने के लिये आये थे, लेकिन राजा को सम्मान देने की कोई इच्छा नहीं थी। COLHin 240.1

जब राजा मेहमानों को देखने आया तो सभी का असली चरित्र सामने आया। दावत में हर मेहमान के लिये शादी का लिबास उपलब्ध कराया गया था। यह लिबास राजा का एक उपहार था। इसे पहनकर मेहमानों ने दावत देने वालो के प्रति अपना सम्मान दिखाया। लेकिन एक आदमी अपने आम नागरिक की पोशाक पहने हुये था। उसने राजा द्वारा आवश्यक तैयारी से इन्कार कर दिया था। उनके लिये पहना जाने वाला लिबास काफी मंहगा था, जिसे उसने पहनना पसन्द नहीं किया। इस प्रकार उसने अपने स्वामी का अपमान किया। राजा की मांग के अनुसार "शादी के लिबास में नहीं होने के कारण आप यहाँ कैसे पहुंचे" वह कुछ भी जवाब नहीं दे सका। उन्होंने आत्म निंदा की तब राजा ने कहा, उसके हाथ और पैर बांधो, और उसे दूर ले जाओ और उसे बाहर अंधेरे में डाल देगा।' COLHin 240.2

दावत में मेहमानों की राजा की परीक्षा द्वारा निर्णय के कार्य प्रतिनिधित्व किया जाता है। सुसमाचार की दावत में अतिथि वे होते है जो ईश्वर की सेवा करने में माहिर होत है जिनका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा जाता है, लेकिन सारे जो खुद को मसीही कहते हैं वो सच्चे षिष्य नहीं है। अंतिम इनाम दिये जाने से पहले यह तय किया जाना चाहिये कि धर्मी की विरासत को साझा करने के लिये तैयार है। यह निर्णय स्वर्ग के बादलों में मसीह के दूसरे आगमन से पहले किया जाना चाहिये, जब वह आता है तो उसका प्रतिफल उसके साथ होता है, "प्रत्येक मनुष्य को उसे अनुसार काम देना चाहिये । (प्रकाशितवाक्य 22:12)। उसके आने से पहले तक हर आदमी के काम का चरित्र निर्धारित किया होगा, मसीह के हर एक अनुयायी को उनके कार्यो के अनुसार इनाम दिया जायेगा। COLHin 240.3

यह तब है जब पुरूष अभी भी पष्थ्वी पर निवास कर रहें कि जांच अदालत का काम स्वर्ग की अदालतों में होता है। परमेश्वर के सामने उसके सभी अनुयायी का जीवन समीक्षा में गुजरता है। स्वर्ग की पुस्तकों के रिकॉर्ड के अनुसार सभी की जाँच की जाती है और उनके कर्मो के अनुसार प्रत्येक की नियति हमेशा के लिये तय हो जाती है। COLHin 241.1

दष्टान्त में शादी का कपड़ा, शुद्ध, बेदाग चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है जो मसीह के सच्चे अनुयायियों के पास होगा। कलीसिया को यह दिया गया है कि "उसे महीन लिनेन साफ और सफेद में पिरोया जाना चाहिये। "बेदाग, शिकन या ऐसी कोई चीज नहीं' (प्रकाशितवाक्य 19:8, इफिसियों 5:27)| महिन लिनन, शास्त्र कहता है। धमिर्यो की धार्मिकता है उसका स्वयं का निष्कलंक चरित्र है कि विश्वास के माध्यम से सभी को प्रदान किया जाता है जो विश्व उन्हें अपने निजी उद्धारकर्ता के रूप में प्राप्त करते है। COLHin 241.2

जब हमारे पवित्र माता-पिता ने पवित्र वस्त्र पहना जब उन्हें अदन की वाटिका में ईश्वर ने रखा वे ईश्वर को इच्छा के अनुरूप थे। उनके प्यार की सारी ताकत उनके स्वर्गीय पिता को दी गई थी। एक सुन्दर कोमलता, ईश्वर की ज्योति, पवित्र जोड़ी को बनाये रखती है। प्रकाश का यह बाग स्वर्गीय निर्दोषित के उनके अध्यात्मिक वस्त्रों का प्रतीक था। अगर वे ईश्वर के प्रति सच्चे होते तो यह उन्हें हमेशा के लिये जारी रख सकता था। COLHin 241.3

जब पाप ने प्रवेश किया, तो उन्होंने ईश्वर के साथ चिकित्सा सम्बन्ध को विच्छेद कर दिया और प्रकाश ने उन्हें घेर लिया। नग्न और शर्मिंदा के कारण उन्होने एक आवरण के लिये अंजीर के पत्तो को एक साथ सिलाई करके स्वर्गीय वस्त्रों के स्थान की आपूर्ति करने की कोशिश की। COLHin 241.4

आदम और हवा की अवज्ञा के दिन से ईश्वर के कानून के अपराधि गयों ने यही किया है। उन्होंने एक साथ अंजीर के पत्तो को स्थानातरित किया है ताकि संक्रमण के कारण होने वाले नग्नता को कवर दिया जा सके। उन्होने अपने वशीकरण के वस्त्र पहन रखे हैं, अपने स्वयं के कार्यो से

उन्होंने अपने पाप को ढंकने की कोशिश की है और स्वयं को ईश्वर के साथ स्वीकार्य बनाया है। COLHin 241.5

लेकिन यह वे कभी नही कर सकते। अपनी मासूमियत की खोई हुई जगह की आपूर्ति करने के लिये मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। कोई अंजीर कपड़ा नहीं छोड़ता, कोई सांसारिक नागरिक पोशाक नहीं पहन सकता, जो मसीह के साथ बैठते है और भेड़ के बच्चे को विवाह स्थल पर स्वर्गदूत होते है। COLHin 242.1

केवल वही आवरण जो मसीह ने स्वंय प्रदान किया है वह हमे ईश्वर की उपस्थिति में प्रकट होने के लिये मिल सकता है। यह आवरण उसकी अपनी धार्मिकता का आधार है, मसीह प्रत्येक पश्चाताप, आत्मा पर विश्वास करे। मैं तुम्हें सलाह देता हूँ "वह कहते है" मुझे खरीदने के लियेकृ कृसफेद रस्म है कि आप सबसे कपड़े पहने हो सकते है, और यह कि आपकी नग्नता की शर्म नहीं दिखाई देती है।" (प्रकाशितवाक्य 3:18)। COLHin 242.2

स्वर्ग के करघे में बुने गये इस बागे में इंसानों का एक भी धागा नहीं है। काइस्ट इन हिज हयूमैनिटी में एक आदर्श चरित्र का निर्माण किया और इस चरित्र को उन्होंने हमे प्रदान करने का प्रस्ताव दिया। "हमारी सारी धार्मिकता गंदी लकीरो के समान है" (यशायाह 64:6)। सब कुछ जो हम स्वयं कर सकते है वह पाप से अपवित्र है, लेकिन परमेश्वर का पुत्र "हमारे पापो को दूर करने के लिये प्रकट हुआ था, और वह कोई पाप नहीं है। पाप को "कानून का उल्लंघन' के रूप में परिभाषित किया गया है। (1 यहून्ना 3:4,5)। लेकिन मसीह कानून की हर आवश्यकता के लिये आज्ञाकारी था, उसने खद से कहा, "मैं तम्हारी इच्छा को परी करने के लिये खश है. हे मेरे ईश्वर, हॉ तुम्हारा कानून मेरे दिल के भीतर है' (भजन संहिता 90:8) जब पष्थ्वी में उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, "मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं का मान रखा है। जब हम आप को मसीह के पास लाते है तो हष्दय उनके साथ एक हो जाता है, इच्छा शक्ति उनकी विलीन हो जाती है, मन उनके मन के साथ एक हो जाता है, विचारों को उसकी कैद में लाया जाता है। COLHin 242.3

हम उसका जीवन जीते है। यही उसका धर्म के परिधान के साथ पहना जाने का अर्थ है। तब जैसे प्रभु हमे देखता है, वह देखता है, न कि पत्ती का वस्त्र, नंगापन और विकषत नहं, पाप लेकिन उसकी अपनी ६ पार्मिकता, जो यहोवा के कानून का सही पालन है। COLHin 242.4

राजा द्वारा शादी की दावत में आये मेहमानो का निरीक्षण किया गया। केवल उन लोगो को स्वीकार किया गया जिन्होंने उनकी आवश्यकताओं का पालन किया था और शादी के परिधान पर डाल दिया था। तो ये मेहमानों के साथ सुसमाचार भी दावत में है। सभी को महान राजा की जांच से गुजरना चाहिये और केवल वे ही प्राप्त होते है जिन्होंने मसीह की ६ पार्मिकता को भनाया है। धार्मिकता सही है, और यह उनका कर्म है कि सभी का न्याय किया जायेगा। हमारे चरित्रों का पता चलता है कि हम क्या करते है। काम दिखाते है श्रद्धा वास्तविक है या नहीं। COLHin 243.1

हमारे लिये यह मानना पर्याप्त नहीं है कि यीशु एक धर्मनिरपेक्ष नहीं है और यह कि बाइबल का धर्म कोई चालाकी से तैयार की गई कल्पना नहीं है। हम विश्वास कर सकते है कि यीशु का नाम स्वर्ग के नीचे एकमात्र ऐसा नाम है जिससे मनुष्य को बचाया जा सकता है, और फिर भी हम विश्वास के माध्यम से उसे अपना निजी उद्धारकर्ता नहीं बना सकते । सत्य के सिद्धान्त को मानना पर्याप्त नहीं है। यही मसीह में विश्वास का एक पेशा बनाने के लिये पर्याप्त नहीं है और हमारे नाम चर्च के रोल पर दर्ज है। "और जो उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह उस में और वह उनमे बना रहता है।" (1 यहून्ना 3:24, 1 यहून्ना 2:3)। यह धर्मातरण का वास्तविक प्रमाण है। जो कुछ भी हमारे पेशे में है वह तब तक कुछ भी नहीं है जब तक कि मसीह धर्म के कार्यो में प्रकट नहीं होता। COLHin 243.2

सत्य को हष्दय में लगाना है। यह मन को नियंत्रित करना और स्नेह को नियंत्रित करना है। पूरे चरित्र को दैवीय कथनों से मौहर लगानी चाहिये। ईश्वर के शब्द के जोत और शीर्षक को दैनिक व्यवहार में लाना है। COLHin 243.3

वह जो ईश्वरीय प्रकर्षत का सहभागी बन जाता है, वह ईश्वर के महान धर्म, उसके पवित्र नियम के अनुरूप होगा। यह वह नियम है जिसके द्वारा परमेश्वर पुरूषो के कार्यो को मापता है। यह निर्णय में चरित्र की परीक्षा होगी। COLHin 243.4

कई लोग है जो दावा करते है कि कानून को समाप्त कर दिया गया था, लेकिन इसमें उन्होंने मसीह के अपने शब्दों का खंडन किया "यह न समझो कि मैं या भविष्यवक्ताओं की पुस्तको को लोप करने आया हूँ। लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूँककृकृजब तक कि आकाश और पृथ्वी टल न जाये, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी पूरा किया हुये टलेगा। (मत्ती 5:17, 18)। यह मनुष्य के कानून के उल्लंघन के लिये प्रायश्चित करने के लिये था कि मसीह ने अपना जीवन लगा दिया। COLHin 243.5

अगर कानून बदल सकता तो मसीह को मरने की जरूरत नहीं थी। पष्थ्वी पर अपने जीवन के द्वारा उन्होंने ईश्वर के कानून का सम्मान किया। अपनी मष्त्यु से उन्होंने इसे स्थापित किया। अपनी मष्यु से, उन्होंने इसे स्थापित किया। उन्होंने अपना जीवन एक बलिदान के रूप में दिया, ईश्वर के कानून को नष्ट करने के लिये एक निचले स्तर को बनाने के लिये नहीं, लेकिन यह है कि न्याय को बनाया रखा जा सकता है कि कानून को अपरिवर्तनीय दिखाया जा सकता है यह हमेशा के लिये तेजी से खड़ा हो सकता है। COLHin 244.1

शैतान ने दावा किया था कि मनुष्य के लिये परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना असम्भव था, और हमारी अपनी ताकत में यह सच है कि हम उनकी बात नहीं मान सकते। लेकिन मसीह मानवता के रूप में आया और अपनी पूर्ण आज्ञाकारिता से उसने साबित किया कि मानवता और देवत्व संयुक्त ईश्वर के हर एक उपदेश को मान सकते है। COLHin 244.2

"जितने उन्हें प्राप्त हुये, उन्होंने उन्हें ईश्वर के पुत्र बनने की शक्ति दी, यहाँ तक कि उनके नाम पर विश्वास करने की भी।' (यहून्ना 1:12)। यह शक्ति मानव एजेंट में नहीं है। यह ईश्वर की शक्ति है, जब कोई आत्मा मसीह को प्राप्त करता है तो वह मसीह का जीवन जीने के लिये शक्ति प्राप्त करता है। COLHin 244.3

परमेश्वर को अपने बच्चो की पूर्णता की आवश्यकता है। उनका कानून उनके चरित्र पर एक प्रतिलेख है, और यह सभी चरित्र का मानक है। यह अनन्त मानक सभी के सामने प्रस्तुत किया जाता है कि परिजनों के सम्बन्ध में कोई गलती हो जिससे परमेश्वर को अपने राज्य की रचना करनी होगी। पथ्वी पर मसीह का जीवनकाल ईश्वर के नियम के एक आदर्श अभिव्यक्ति था, उनका दावा है कि ईश्वर के बच्चे चरित्र में मसीही के समान हो जाते है, वे ईश्वर की आज्ञाओं के आज्ञाकारी होते है। तब प्रभु उन पर भरोसा कर सकते है जो स्वर्ग के परिवार की रचना करेगे। मसीह की धार्मिकता के गौरवशाली दष्ष्य में कपड़े पहने हुये, उनके पास राजा की दावत में एक जगह है। उन्हें खून से धोये गये सिंहासन में शामिल होने का अधिकार है। COLHin 244.4

शादी के कपड़ो के बिना दावत में आये व्यक्ति आज हमारी दुनिया में कई लोगो की हालत का प्रतिनिधित्व करते है, वे मसीही होने का दावा करते है और सुसमाचार का आशीर्वाद और विशेषाधिकारों का दावा करते है। फिर भी उन्हे चरित्र परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने पाप के लिये सच्चा पश्चाताप महसूस नहीं किया। उन्हे मसीह की, उनकी आवश्यकता का एहसास नहीं होता है और न ही वह उनके बारे में जानकारी देता है। उन्होंने यह स्वीकार नहीं किया कि वे अपने आप में काफी अच्छे, मसीह में विश्वास के बजाय योग्यता पर बाकी आराम करते है। शब्दो को सुनने वाले, वे भोज में आते है, लेकिन उन्होंने मसीह की ६ पार्मिकता को भनाया नहीं है। COLHin 245.1

पवित्र आत्मा का काम उनके लिये एक अजीब काम है। वे शब्द के कर्ता नहीं है। स्वर्गीय सिद्धान्त जो उन लोगो में भेद करते है जो मसीह के साथ एक है जो दुनिया के साथ एक है, वे लगभग अविभाज्य बन गये है। मसीह के प्रवीण अनुयायी अब एक अलग और अजीब लोग नहीं है। सीमांकन की रेखा अविभाज्य है। लोग अपन प्रथाऐं अपने रीति रिवाजों, अपने स्वार्थ के लिये खुद को दुनिया के अधीन कर रहे है। चर्च कानून के पालन में कलीसिया के उपर चला गया है। रोजाना कलीसिया को दुनिया में बदला जा रहा है। COLHin 245.2

ये सभी मसीह की मष्यु से बचने की उम्मीद करते है, जब कि वे अपनी आत्म-त्याग जीवन जीने से इन्कार करते है। वे निःशुल्क अनुग्रह के धन का विस्तार करते है और अपने चरित्र के दोषों की जांच करने की उम्मीद करते हुये, धार्मिकता की उपस्थिति के साथ खुद को ढंकने का प्रयास करते हैं लेकिन उनके प्रयासों का ईश्वर के दिन में कोई फायदा नहीं होगा। COLHin 245.3

मसीह की धार्मिकता एक पोषित पाप को कवर नहीं करेगी। एक आदमी दिल में कानून तोड़ने वाला हो सकता है, फिर भी यदि वह अपराध|का कोई बाहरी कार्य नहीं करता है, तो उसे दुनिया द्वारा महान अखंडता के साथ माना जा सकता है। लेकिन परमेश्वर का नियम दिल के रहस्यो को देखता है। हर अधिनियम को उन उद्देश्यो से आंका जाता है जो इसे संकेत देते है। केवल वही जो परमेश्वर के कानून के सिद्धान्तों के अनुरूप है, निर्णय में खड़ा होगा। COLHin 245.4

ईश्वर प्यार है। उसने मसीह के उपहार में वह प्यार दिखाया है। जब उसने अपना एक इकलौता पुत्र हमको दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये' (यहून्ना 3:16)। उसने अपने खरीदे हुये कब्जे से कुछ नहीं पाया। उसने सारा स्वर्ग दे दिया, जिससे हम शक्ति और दक्षता प्राप्त प्राप्त कर सकते है कि हम दुखी नहीं। हमारे विरोधी से दूर रहे। लेकिन ईश्वर का प्यार उसे पाप का बहाना नहीं देता। उसने शैतान में इसका बहाना नहीं बनाया, उसने आदम और कैन में कोई बहाना नहीं बनाया और न ही वह पुरूषों के बच्चो में से किसी में भी इसका बहाना करेगा। वह हमारे पापों पर विश्वास नहीं करेगा या हमारे चरित्र के दोषों को नजर अंदाज नहीं करेगा। वह हमेशा अपेक्षा करता है कि हम उसके नाम पर विचार करे। COLHin 246.1

जो लोग मसीह की धार्मिकता के उपहार को अस्वीकार करते है। वे चरित्र की विशेषताओं को अस्वीकार कर रहे है जो ईश्वर के बेटे और बेटियों का गठन करेगें। वे इसे खारिज कर रहे है जो अकेले उन्हें शादी की दावत में एक जगह के लिये उपयुक्तता दे सकता है। COLHin 246.2

दष्टान्त में राजा ने पूछताछ की, "शादी के परिधान में नहीं होने के कारण आप कितने बड़े है? " वह आदमी अवाक था। तो वह महान निर्णय दिन में होगा। पुरूष अब अपने चरित्र के दोषो का बहाना कर सकते है लेकिन उस दिन वो कोई बहाना नहीं देगे। COLHin 246.3

इस पीढी में यीशु के उत्कष्ट चर्च उच्चतम विशेषाधिकार प्राप्त है। प्रभु हमें कभी-कभी बढ़ती हुई रोशनी में प्रकट करते है। हमारे विशेषाधि कार ईश्वर के प्राचीन लोगो के विशेषाधिकार से कही अधिक है। हमारे पास केवल इजराएल के प्रति प्रतिबद्ध प्रकाश नहीं, लेकिन हमारे पास मसीह के माध्यम से लाये गये, महान मोक्ष के बढ़े हुये प्रमाण है। जो यहूदियों के लिये प्रकार और प्रतीक था, वह हमारे लिये वास्तविकता है। उनके पास पुराने नियम का इतिहास था, हमारे पास वह और नया नियम भी है। हमारे पास एक उद्धारकर्ता का अश्वासन है जो आया है, एक उद्धारकर्ता जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया, जो उठ गया है और युसुफ के किराये पर लेने वाले अधिक ने घोषणा की है, "मैं पुनरूत्थान और जीवन हूँ। मसीह और उसके प्रेम के हमारे ज्ञान, परमेश्वर का राज्य हमारे बीच में रखा गया है। मसीह हमें धर्मीपदेशों मे प्रकट करता है और गीतो में हमे जापता है। समष्द्ध भोज में हमारे सामने अध्यात्मिक भोज निर्धारित किया गया है। अनन्त लागत पर प्रदान की जाने वाली शादी का कपड़ा हर आत्मा को मुफत में दिया जाता है। ईश्वर के दूतो

द्वारा हमे मसीह की धार्मिकता, विश्वास के द्वारा औचित्य ईश्वर के वचन के महान और अनमोल वचनों, मसीह द्वारा पिता को मुफत आत्मीयता, आत्मा को शान्ति, शाश्वत जीवन का सुविचारित आश्वासन दिया जाता है। ईश्वर के राज्य में हम क्या कर सकते है जोकि उसने महान भोज, स्वर्गीय भोज प्रदान करने में नहीं किया है। COLHin 246.4

स्वर्ग में यह मंत्री स्वर्गदूतों द्वारा कहा गया है। जिस सेविका को हमारे द्वारा किये प्रदर्शन के लिये कमीशन किया गया है। हमने दुष्ट स्वर्गदूतों की सेवा को भगाया। हमने पुरूषों की आत्माओं में चमक और प्रकाश भेजा, यीशु में व्यक्त ईश्वर के प्रेम की उनकी स्मषत को तेज किया। हमने उनकी आंखो को मसीह के कूस पर आकर्षित किया। परमेश्वर के पुत्र को कूस पर चढ़ाने वाले पाप की भावना से उनके दिल गहरा गये, उन्हें दोषी ठहराया गया। उन्होंने रूपातंरण में उठाये जाने वाले कदमों को देखा, उन्होंने सुसमाचार की शक्ति को महसूस किया, उनके दिलों को कोमल बनाया गया क्योंकि उन्होंने ईश्वर के प्यार की मिठास देखी। वे मसीह के चरित्र की सुन्दरता को निहारते है। लेकिन कई के साथ यह सब व्यर्थ था। वे अपनी आदतो और चरित्र के प्रति समर्पण नहीं करते। वे स्वर्ग के बागे से लिपटे रहने के लिये धरमी के वस्त्र नहीं उतारते। उनके दिल उनके लालच को दिये गये थे। वे दुनिया के संघो से अधिक प्यार करते थे जितना कि वे अपने ईश्वर से प्यार करते थे। COLHin 247.1

अन्तिम निर्णय का दिन संगीन होगा। भविष्यवक्ता की दषष्ट में प्रेरित यहून्ना इसका वर्णन करता है, “मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसकी जो उस पर बैठा हुआ है, देखा जिसके समाने से पष्थ्वी और आकाश भाग गये, और उनके लिये जगह न मिली। फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुये देखा और पुस्तके खोली गयी, और फिर एक पुस्तक खोली गई, अर्थात जीवन की पुस्तक, जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार मरे हुओ का न्याय किया गया। (प्रकाशितवाक्य 20:112)। COLHin 247.2

दुख उस दिन पीछे हट जायेगा। जब पुरूष अनन्त काल तक आमने-सामने रहेगे पूरी जिन्दगी अपने आपको वैसा ही पेश करेगे। जैसे वह कर रहे है। दुनिया के सुख, धन और सम्मान तब इतने महत्वपूर्ण नहीं लगेगे। पुरूष तब देखेंगे कि उन्होंने जिस धार्मिकता से घष्णा की वह महत्वपूर्ण है। इसके बाद पुरूष शैतान के भ्रामक गठजोड़ो के तहत, अपने किरदारों को निभायेगे। जिन कपडो को उन्होंने चना है, वे पहले आभार प्रकट करने के लिये उनकी निष्ठा का वचन है। फिर वे अपनी पसन्द के परिणाम देखेंगे। उन्हें इस बात का ज्ञान होगा कि ईश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करने का क्या अर्थ है। COLHin 248.1

इसमें भविष्य की कोई परिवीक्षा नहीं होगी जिसमे अनन्तकाल तक पछताना पड़े। यह इस जीवन में है कि हमे मसीह की धार्मिकता के आधार पर रखना है। यह घर के लिये चरित्र बनाने

का हमारा एक मात्र अवसर है जिसे मसीह ने उन लोगों के लिये तैयार किया है जो उनकी आज्ञाओं का पालन करते है। COLHin 248.2

हमारी परिवीक्षा के दिन तेजी से बन्द हो रहे हैं। अंत समीप है। हमे चेतावनी दी गई है कि सावधान राहे, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाये, और वह दिन तुम पर फन्दे की नाई अचानक आ पड़े। (लूका 21:34)। सावधान रहो कही तुम तैयार न पाये जाओ, कहीं तुम बिना परिधान के शादी में पाये जाओं। COLHin 248.3

इसलिये भी तुम तैयार रहो, कयोंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जायेगा। देखों मैं चोर की नाई आता हूँ, धन्य वह है जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र की चौकसी करता है कि नग्न न फिरे और लोग उसका नंगापन न देखे। (मत्ती 24:44, प्रकाशितवाक्य 16:15) COLHin 248.4

अध्याय 25 - तोड़े

(यह अध्याय मत्ती 25:13, 30)

जैतुन के पर्वत पर मसीह ने दुनिया के अपने दूसरे आगमन के विषय में शिष्यों से बात की थी। उन्होंने संकेत निर्दिष्ट किये कि जो यह दिखाने के लिये थे कि उनका आने वाला समय निकट था, और अपने चेलों को देखने और तैयार होने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, फिर से, चेतावनी को दोहराया, “देखों इसलिये, क्योंकि न तो वह दिन और न ही वह समय है जिसमें मनुष्य का पुत्र आता है’ फिर उसने दिखाया कि उसके आने को कौन सी घड़ी है। समय बिताने के लिये है, निष्कय प्रतीक्षा में नहीं, बल्कि मेहनत काम करने में, यह सबक उन्होंने प्रतिभाओं को दष्टान्त में सिखाया। COLHin 249.1

“स्वर्ग का राज्य” उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति ऐसे देश में यात्रा कर रहा है, जिसने अपने स्वयं के सेवकों को बुलाया और उन्हें उनके सुर्पद कर दिया, और एक को उन्होनें पांच तोड़े दिये, दूसरे को दो तोड़े, तथा तीसरे को एक तोड़ा दिया। प्रत्येक को अपनी क्षमता के अनुसार तोड़ दिया गया, इसके पश्चात वह अपनी यात्रा पर चला गया। COLHin 249.2

एक दूर देश की यात्रा करने वाला आदमी मसीह का प्रतिनिधित्व करता है, जो इस दष्टान्त को बोलते हुये जल्द ही इस धरती पर से स्वर्ग को प्रस्थान करने वाला था। “बन्धुओं” या दास, दष्टान्त के मसीह के अनुयायियों का प्रतिनिधित्व करते है। हम अपने नहीं है। हमें “एक मूल्य के साथ खरीदा गया है।” (1 कुरिन्थयों 6:20) “चांदी और सोने के रूप में भ्रष्ट चीजों के साथ नहींकृकृकृलेकिन मसीह के कीमती रक्त के साथ” (1 पतरस 1:18, 19)। क्योंकि वे शालीन रहते है, इसलिये वे स्वयं जीवित हो गये। (2 कुरिन्थियों 5:15) COLHin 249.3

सभी पुरूषों को इस अनंत मूल्य के साथ खरीदा गया है। इस संसार में स्वर्ग का सारा खजाना डालकर हम सभी स्वर्ग में मसीह को देकर, परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य की इच्छा, स्नहें, मन और आत्मा को खरीदा है। चाहे आस्तिक हो या अविश्वासी, सभी लोग प्रभु की सम्पत्ति है। सभी को उनके लिये सेवा करने के लिये कहा जाता है, और जिस तरह से वे इस वादे को पूरा करते है, सभी को महान निर्णय के दिन एक खाता प्रस्तुत करना होगा। COLHin 250.1

लेकिन ईश्वर के दावों को सभी के द्वारा पहचाना नहीं जाता है। यह वह है, जिन्होंने मसीह की सेवा को स्वीकार किया है, जो दष्टान्त में अपने स्वयं के सेवको के रूप में प्रतिनिधित्व करते है। COLHin 250.2

मसीह के अनुयायियों को सेवा के लिये फिर से तैयार किया गया है। हमारे ईश्वर सिखाते है कि जीवन की सच्ची वस्तु सेवकाई है। मसीह खुद एक कार्यकर्ता था, और अपने सभी अनुयायियों को वह सेवा का नियम देता है-ईश्वर और उनके साथी पुरूषों की सेवा । यहाँ मसीह ने दुनियाँ को

जीवन का एक उच्च गर्भाधन प्रस्तुत किया है जो वो कभी नहीं जानते थे। दूसरों की सेवा करने से, मनुष्य को मसीह के सम्बन्ध में लाया जाता है। सेवा का नियम जोड़ने वाली कड़ी बन जाता है जो हमे ईश्वर और हमारे साथी पुरूषों के लिये बाध्य करता है। COLHin 250.3

उनके सेवकों के लिये मसीह "उसका भला' करता है उसके उपयोग करने के लिये कुछ, वह "हर आदमी को अपना काम देता है" प्रत्येक के पास स्वर्ग की अनन्त योजना में अपना स्थान है। प्रत्येक के साथ काम करना है। आत्माओं की मुक्ति के लिये मसीह निश्चित रूप से स्वर्गीय हवेली में हमारे लिये तैयार किया गया स्थान वह विशेष स्थान नहीं है जो पष्थ्वी पर निर्दिष्ट है हम ईश्वर के लिये काम करते है। COLHin 250.4

पवित्र आत्मा के उपहार

मसीह ने अपनी कलीसिया को जो प्रतिभाये सौंपी है, वे विशेष रूप से पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान किये गये उपहार और आशीर्वाद व प्रतिनिधित्व करते है। "कयोंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती है, दूसरे को उसकी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बाते और किसी को उसी आत्मा से विश्वास और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है, फिर किसी किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति । किसी को भविष्यवाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को उनके प्रकार की भाषा और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है। (1 करिन्थियों 12:8-11)। सभी पुरूषों को समान उपहार नहीं मिलते है, लेकिन मास्टर के हर नौकर को आत्मा का कुछ उपहार देने का वादा किया जाता है। COLHin 250.5

इससे पहले कि वह अपने शिष्य को छोड़ता, मसीह ने यह कहकर उन पर फूंका और उनसे कहा, पवित्र आत्मा लो' (यहून्ना 20:22) | और फिर उसने कहा "और देखों, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने भी की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा। (लूका 24:4) लेकिन तब तक नहीं जब तक कि उद्गम के रूप में उपहार अपनी पूर्णता में प्राप्त नहीं होता। विश्वास और प्रार्थना के माध्यम से नहीं, शिष्यों ने अपने काम के लिये खुद को पूरी तरह से आत्म निर्माण कर दिया था कि क्योंकि आत्मा को प्राप्त करने का काम बाहर रखा गया था। फिर एक विशेष अर्थ में स्वर्ग के समान मसीह के अनुयायियों के लिये प्रतिबद्ध थे। इसलिये वह कहता है कि वह ऊँचे पर चढ़ा और बन्धुबाई को बान्ध ले गया और मनुष्यों को दान दिये। (इफिसियों 4:8)। "पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिणाम से अनुग्रह मिला है। (इफिसियों 4:7, 1 कुरिन्थियों 1:12)|उपहार मसीह में पहले से ही हमारे है, लेकिन उनका वास्तविक कब्जा ईश्वर की आत्मा के हमारे स्वागत पर निर्भर करता है। COLHin 251.1

आत्मा के वचन की सराहना नहीं की जानी चाहिये, क्योंकि यह होना चाहिये। इसकी पूर्ति का एहसास नहीं है क्योंकि यह हो सकता है। यह आत्मा की अनुपस्थिति है जो सुसमाचार की

सेवकाई को इतना शक्तिहीन बनाती है। सीखने, प्रतिभा, वाग्मिता हर प्राकृतिक या अधिग्रहित हो सकती है, लेकिन परमेश्वर का आत्मा की उपस्थिति के बिना, किसी भी दिल को नहीं छुआ जायेगा, कोई भी पापी मसीह के लिये नहीं जीता जायेगा। दूसरे और यदि वे मसीह के साथ जुड़े है, यदि आत्मा के उपहार उनके है, तो उनके शिष्यों में सबसे गरीब और सबसे अधिक अज्ञानी के पास एक शक्ति होगी जो दिलों पर बनायेगी। ईश्वर उन्हें ब्रहमाण्ड में सबसे अधिक प्रभाव के परिश्रम के लिये चैनल बनाता है। COLHin 251.2

अन्य तोड़े (प्रतिभायें)

आत्मा के विशेष उपहार के दृष्टान्तों में दर्शाय गये एक मात्र प्रतिभा नहीं है। इसमें सभी उपहार और बन्दोबस्त शामिल थे चाहे मूल या अधिग्रहित प्राकतिक या अध्यात्मिक, सभी को मसीह की सवा में नियुक्त किया जाना है। उनके शिष्य बनने में, हम अपने आप को उस सब के साथ आत्म समर्पण कर देते है जो हम है। ये तोहफे वह हमारे लिये लौटाता है और अपने साथ लोगों को आशीर्वाद देने में उसकी महिमा के लिये इस्तेमाल किया जाता है। COLHin 252.1

प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर ने "अपनी कई क्षमता के अनुग्रह" दिया है। प्रतिभाओं को अच्छी तरह से नहीं लगाया जाता है। वह जो पांच प्रतिभाओं का उपयोग करने की क्षमता रखता है, पांच प्राप्त करता है। वह जो सुधार सकता है लेकिन दो प्राप्त करता है। वह जो बुद्धिमानी से केवल एक का उपयोग करता है, एक प्राप्त करता है, किसी को भी विलाप की आवश्यकता नहीं है उन्हें बड़े उपहार नहीं मिले है। COLHin 252.2

क्योकि वह हर आदमी की योग्यता रखता है, वह प्रत्येके ट्रस्ट के सुधार से समान रूप से सम्मानित होता है, चाहे वो महान या छोटा। जिस पर पांच प्रतिभाये प्रतिबद्ध है, वह पांच के सुधार को प्रस्तुत करना है, वह जिसके पास एक है, एक का सुधार हैं "मन की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है। (2 कुरिन्थियों 8:12)। COLHin 252.3

उस दष्टान्त में जिसने पांच प्रतिभाओं को प्राप्त किया और उसी के साथ व्यापार किया और उन्हें अन्य पांच प्रतिभायें बनायी, और इसी तरह उसे जो दो प्राप्त हुये उसने अन्य दो भी प्राप्त किये। COLHin 252.4

हालांकि कुछ प्रतिभाओं को उपयोग में लाना है। यह सवाल कि सबसे ज्यादा चिंता हमें नहीं है, मुझे कितना मिला है? लेकिन, मैं उसके साथ क्या कर रहा हूँ जो मेरे पास है? मैं उसके साथ क्या कर रहा हूँ जो मेरे पास है। हमारी सभी शक्तियों का विकास हमारा पहला कर्तव्य है जो हम ईश्वर और अपने साथी से नहीं बढ़ रहा है, वह जीवन के उद्देश्य को पूरा कर रहा है। मसीह मे विश्वास का एक पेशा बनाने के लिये, हम अपने आपको वह सब बनने की प्रतिज्ञा करते है जो हमारे लिये, गुरू के लिये श्रमिक के रूप में संभव है, और हमें प्रत्येक संकाय को उच्चतम स्तर

की पूर्णता के लिये खेती करनी चाहिये, ताकि हम सबसे अच्छी राशि प्राप्त करने में हम सक्षम है। COLHin 252.5

प्रभु के पास एक महान काम है और वह भविष्य के जीवन में उन लोगों के लिये सबसे अधिक योग्य होगा जो वर्तमान जीवन में सबसे वफादार, इच्छुक सेवा करते है। प्रभु स्वयं के एजेंटो का चयन करता है और प्रत्येक दिन विभिन्न परिस्थितियों में वह उन्हें अपने संचालन की योजना में एक परीक्षण देता है। प्रत्येक सच्चे दिल से उनकी योजना को पूरा करने का प्रयास करते हैं। वह अपने ऐजेंटो को इसलिये चुनता है क्योंकि वे परिपूर्ण नहीं है, क्योंकि उसके साथ संबन्ध के माध्यम से, वे पूर्णता प्राप्त कर सकते है। COLHin 253.1

ईश्वर केवल उन्हीं को स्वीकार करेगा जो उच्च उद्देश्य के लिये दष्ढ़ संकलित हैं वह प्रत्येक मानव एजेंटो को दायित्व देता है कि वह अपनी अदबी करे। नैतिक पूर्णता सभी की आवश्यकता है। गलत काम करने के लिये विरासत में मिली या खेती की प्रवपत्त को समायोजित करने के लिये हमें कभी भी धार्मिकता के स्तर को कम नहीं करना चाहिये। हमें यह समझने की जरूरत है कि चरित्र की अपूर्णता मापने योग्य है। चरित्र की अपूर्णता पाप है। चरित्र के सभी धर्मी गुण एक संपूर्ण सामंजस्यपूर्ण रूप में ईश्वर में वास करते है, और एक व्यक्ति उद्धारकर्ता में हर एक मसीह को इन विशेषताओं के अधिकारी होने का विशेषाधिकार प्राप्त है। COLHin 253.2

और जो ईश्वर के साथ मिलकर काम करेंगे, उन्हें शरीर के हर अंग और मन की गुणवत्ता के लिये प्रयास करना चाहिये। सच्ची शिक्षा हर कर्तव्य के प्रदर्शन के लिये शारीरिक, मानसिक और नैतिक शक्तियों की तैयारी है, यह ईश्वरीय सेवा के लिये शरीर और आत्मा का प्रशिक्षण है। यह वह शिक्षा है जो अनन्त जीवन के लिये महान होगी। COLHin 253.3

प्रत्येक मसीही जीवन मे प्रभु हर व्यक्ति में दक्षता और क्षमता में वषद्ध को प्राप्त करते है। मसीह ने हमें अपनी मजदूरी, यहां तक कि अपनी खुद की रक्त की पीड़ा का भुगतान किया है ताकि हमारे इच्छुक सेवा को सुरक्षित किया जा सके। वह हमें इस बात का उदाहरण देने के लिये हमारी दुनिया में कि हमें कैसे काम करना चाहिये और उसमें किस भावना को अपने श्रम में लाना चाहिये। वह हमें अध्ययन करने की इच्छा करता है कि हम उसके काम को कैसे आगे बढ़ा सकते है और दुनिया में उसका नाम गौरवान्वित कर सकते है, सम्मान के साथ सबसे बड़े प्यार और भक्ति के साथ, पिता जिसने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये। (यहून्ना 3:16) COLHin 253.4

लेकिन मसीह ने हमें कोई आश्वासन नहीं दिया है कि चरित्र पूर्णता प्राप्त करना एक आसान मामला है। एक महान, सभी दौर चरित्र विरासत में नहीं मिला है। यह दुर्भाग्यवश से हमारे पास नहीं आता है। मसीह के गुणों और अनुग्रह से एक महान, सभी दौर के चरित्र को व्यक्तिगत प्रयास

से अर्जित किया जाता है, ईश्वर प्रतिभा, मन की शक्तियाँ देता है। हम चरित्र बनाते है। यह कठिन, कड़ी लड़ाइयों से बनता है। संघर्ष के बाद संर्घष, प्रवतियों के खिलाफ होना चाहिये। हमे स्वयं की कड़ी आलोचना करनी होगी और किसी भी प्रतिकूल लक्षण को ठीक नही रहने देना चाहिये। COLHin 254.1

किसी को कहने न दे, मैं अपने चरित्र के दोषो का उपाय नहीं कर सकता। यदि आप इस निर्णय पर आते है तो आप निश्चित रूप से हमेशा की जिन्दगी में पाने में असफल होते हैं यदि आप बीमार नहीं है तो आप पर काबू नही पा सकते है। वास्तविक कठिनाई अचेतन हृष्दय के भ्रष्टाचार से उत्पन्न होती है और ईश्वर के नियंत्रण में प्रस्तुत करने की। COLHin 254.2

बहुत से लोग जिन्हें परमेश्वर ने उत्कष्ट कार्य करने की योग्यता दी है, क्योंकि वे बहुत कम प्रयास करते है। हमारे लोग जीवन से गुजरते है जैसे कि उनके पास इस तरह से उनके कार्यो के लिये एक अनुपातिक अनुपात प्राप्त होगा। COLHin 254.3

याद रखे कि आप अपने आप को सेट करने की तुलना से उच्च स्तर तक कभी नहीं पहुँचेगे। वे अपना निशान ऊंचा और कदम से कद निध रित करें। भले ही दर्दनाक प्रयास से हो, आत्म अस्वीकार और बलिदान द्वारा प्रगति की सीढ़ी की पूरी लम्बाई पर चढ़ता है। आप कुछ भी बाधा न डाले । भग्य ने किसी भी इन्सान के बारे में इतनी दष्ढ़ता से अपना जाल नहीं बुना है कि उसे असहायक और अस्वस्थ रहने की आवश्यकता है। विपरीत परिस्थितियों से उबरने के लिये दष्ढ़ निश्चय करना चाहिये। एक बाधा के टूटने से आगे जाने की अधिक क्षमता और साहस मिलेगा। सही दिशा में दष्ढ़ संकल्प के साथ दबायें और परिस्थितियों आपकी मददगार होगी, न कि आपकी अड़चने । COLHin 254.4

मास्टर की महिमा के लिये महत्वकांशी बने। चरित्र के हर अनुग्रह की खेती करें। अपने चरित्र निर्माण के हर चरण में आप ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये है। यह आप कर सकते है, हनूक ने उसे पतित युग में रहते हुये प्रसन्न किया। और हमारे दिन में इस तरह के उत्साह है। COLHin 255.1

दानिय्येल की तरह दष्ढ़ रहिये, वह वफादार राजनेता, जिसे कोई प्रलोभन भ्रष्ट नहीं कर सकता। उसे निराश मत करो जो तुमसे इतना प्यार करता है कि उसने तुम्हारे पापों को खारिज करने के लिये अपना एकमात्र जीवन दे दिया। वह कहता है, “मेरे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते” (यहून्ना 15:5)। यह याद रखना यदि आपने गलतियों की है तो आप यकीनन जीत हासिल कर सकते है, यदि आप इन गलतियो को देखते है और उन्हे चेतावनी के रूप में मानते है। इस प्रकार आप हार को जीत में बदल सकते है, दुश्मन को निराश कर सकते हैं और अपने उद्धारक को सम्मानित करते है। COLHin 255.2

ईश्वरीय समानता के अनुसार एक चरित्र ही एक मात्र खजाना है जिसे हम इस दुनिया से ले जा सकते है। जो लोग इस संसार मे मसीह के निर्देशन में है, वे हर दिव्य प्राप्ति को अपने साथ स्वर्गीय हवेली में ले जायेगे। और स्वर्ग में हम लगातार सुधार कर रहे है। कितना महत्वपूर्ण, फिर इस जीवन में चरित्र का विकास । COLHin 255.3

स्वर्गीय बुद्धि मानव ऐजेंट के साथ काम करेगी जो दष्ढ़ विश्वास के साथ काम करती है और चरित्र की पूर्णता, जो कार्यवाही में पूर्णता तक पहुँच जायेगी। इस काम में लगे सभी लोगो को मसीह कहता है, मैं आप की मदद करने के लिये आपके दाहिने हाथ में हूँ| COLHin 255.4

जैसे मनुष्य की इच्छा ईश्वर की इच्छा से चलती है, वह सर्वशक्तिमान हो जाता है। जो कुछ भी, उसकी आज्ञा पर किया जाना है, वह उसकी सामर्थय में पूरा किया जा सकता है। उसकी सारी बोली लग रही है।

मानसिक संकाय

ईश्वर की मानसिक संकायों को प्रशिक्षण की आवश्यकता है। वह डिजाइन करता है कि उसके नौकरों में दुनियादारी की तुलना में अधिक बुद्धिमता और स्पष्ट विवेक निहित होगा, और वह उन लोगों से अप्रसन्न होता है जो कुशल, सुप्रतिष्ठत, कार्यकर्ता बनने के लिये बहुत लापरवाह या अकर्मण्य होते है। प्रभु हमसे प्रेम करते है, सभी आत्मा क्षमता के लिये बुद्धि को विकसित करने का दायित्व देता है कि सभी मन से हम निर्माता को जानते है और प्यार करते है। COLHin 255.6

यदि उसकी आत्मा को नियंत्रण में रखा जाता है, तो जितनी अच्छी तरह से बुद्धि को खेती की जाती है, उतना ही प्रभावी रूप से ईश्वर के प्रति अभिमान रखता है और उसकी सेवा में प्रभु द्वारा उपयोग किया जाता है लेकिन जो लोग समान भावना को साथ पूरी तरह से शिक्षा का लाभ उठा चुके हैं, वे मसीह के लिये और अधिक व्यापक कार्य कर सकते है। वे सहूलियत के आधार पर खड़े है। COLHin 256.1

दूसरों को अपना ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से हम सभी शिक्षा को संभव बनाने की इच्छा रखते है। कोई भी नही जान सकता है कि उन्हे श्रम के लिये कहाँ या कैसे कहा जा सकता है या ईश्वर के लिये बोलना है। हमारे स्वर्गीय पिता अकेले देखते है कि वह पुरूषों को क्या बना सकते है। हमारे सामने ऐसी संभावनायें है, जिनके विषय में हमारा विश्वास योगय नहीं है। हमारे दिमागों को इतना प्रशिक्षित होना चाहिये कि यदि आवश्यक हो तो हम उनके शब्द के सत्य को उच्चतम सांसारिक अधिकारियों के सामने इस तरह से प्रस्तुत कर सके। जैसे कि उनके नाम की महिमा करें। हमे अपने आप को ईश्वर के लिये काम करने के लिये बौद्धिक रूप से अर्हता प्राप्त करने के एक भी अवसर को जिसने नहीं देना चाहिये। COLHin 256.2

उसे युवा होने दे जो इसे प्राप्त करने के लिये दष्ढ़ संकल्प के साथ काम करने के लिये शिक्षा की आवश्यकता है। उदघाटन के लिये प्रतीक्षा न करें, एक स्वयं के लिये बनाओ। खुद को प्रस्तुत करने वाले किसी भी छोटे तरीके से पकड़ लें। अर्थव्यवस्था का अभ्यास करे। भूख की सन्तुष्टि चाहने वाले के लिये अपने साधनों को खर्च न करें। ईश्वर के रूप में उपयोगी और कुशल बनने के लिये दष्ढ़ संकल्पित करें। आप जो भी कार्य करते है, उसमें पूरी तरह से विश्वास रखे। बुद्धि को मजबूत बनाने के लिये अपनी पहुँच के भीतर हर लाभ को साबित करें। पुस्तकों के अध्ययन को उपयोगी हाथ को परिश्रम के साथ जोड़ दे और विश्वास योग्य प्रयास, और प्रार्थना के ऊपर से प्राप्त ज्ञान को सुरक्षित करती है। यह आपको एक सर्वागुण शिक्षा देगा। इस प्रकार आप चरित्र मे वर्षद्ध कर सकते है और अन्य दिमागों पर प्रभाव प्राप्त कर सकते है जिससे आप उन्हें ईमानदारी और पवित्रता के मार्ग पर ले जा सकते है। COLHin 256.3

यदि हम अपने अवसरो, विशेषाधिकारों के प्रति जाग्रत होते हैं जो स्वयं शिक्षा के कार्य में अधिक निपुण हो सकते है। सच्ची शिक्षा का मतलब है कि कॉलेजों से अधिक शिक्षा। हालांकि विज्ञान के अध्ययन को उपेक्षित नहीं किया जाता है, लेकिन ईश्वर के एक महत्वपूर्ण सम्बन्ध के माध्यम से प्राप्त करने के लिये एक उच्च प्रशिक्षण है। हर छात्र अपनी बाईबल ले और खुद को महान शिक्षक के साथ संवाद में जगह दे। ईश्वरीय सत्य की खोज में कठिन समस्याओं से लड़ने के लिये मन को प्रशिक्षित और अनुशासित होने दे। COLHin 257.1

उन गुटों ने यह दावा किया है कि वे अपने साथी को आशीर्वाद दे सकते है कि वे स्वयं परमेश्वर से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। उनके अध्ययन से उनकी मानिसक शक्तियों को अर्जित करने के लिये प्रेरित किया जायेगा। एक विस्तार होगा, संकायों का एक अविकसिता, और मन कवि और दक्षता करेगा। COLHin 257.2

आत्म अनुशासन का अभ्यास हर किसी को करना चाहिये जो ईश्वर के लिये एक कार्यकता होगा। यह वाग्मिता या सबसे शानदार प्रतिभाओं से अधक को पूरा करेगा। एक सामान्य मस्तिष्क जो भली भांति अनुशासित है, सबसे अधिक शिक्षित और आत्म नियंत्रण के बिना सबसे अधि क दिमाग और सबसे बड़ी प्रतिभा की तुलना में अधिक काम पूरा करेगा।

भाषण

भाषण की शक्ति एक प्रतिभा है। भाषण जिसे परिश्रम से खेती की जानी चाहिये। ईश्वर से प्राप्त सभी उपहारों में से कोई भी इससे बड़ा वरदान पाने में सक्षम नहीं है। जिस आवाज को स्वर्ण हम जानते हैं, उसके साथ प्रार्थना और ईश्वर की स्तुति करते है। फिर कितना महत्वपूर्ण है, चाह है कि इसे इतना अच्छा होने के लिये सबसे प्रभावी होने के लिये प्रशिक्षित किया जाये। COLHin 257.4

आवाज की संस्कषत और सही उपयोग की बहुत उपेक्षा की जाती है, यहां तक कि बुद्धि और मसीही सक्रियता के व्यक्तियों द्वारा भी। बहुत से ऐसे है जो इतनी कम या इतनी तेजी से पढ़ते या बोलते है कि उन्हें आसानी से समझा नहीं जा सकता है। कुछ में मोटा, अविवेकी, उच्चरण है, अन्य लोग तीखे स्वर में उच्च कुंजी में बोलते है, जो श्रोताओं के लिये दर्दनाक हैं ग्रन्थों, भजनो और सार्वजनिक सभाओं से पहले प्रस्तुत की गई रिपोर्ट और अन्य कागजात कभी-कभी ऐसी खबरों में पढ़े जाते है कि उन्हें एक ऐसा शब्द नही समझा जाता जिससे उनका बल और प्रभाव नष्ट हो जाये। COLHin 258.1

ये एक बुराई है जिसे सुधारा जा सकता है और ठीक किया जाना चाहिये। इस बिन्दू पर बाईबल निर्देश देती है। लेवियों में से एज्रा के दिनों में लोगों ने पवित्र शास्त्र पढ़ा, यह कहा जाता है, "उन्होंने पुस्तक मे ईश्वर के कानून को अलग तरीके से पढ़ा और सम्मान दिया और उन्हें पढ़ने को समझने का कारण बना। (नहेमायाह 8:8)। COLHin 258.2

परिश्रमपूर्वक प्रयास करने से भी बुद्धिमानी से पढ़ने की शक्ति प्राप्त कर सकते है और एक पूर्ण, स्पष्ट, गोल स्वर में, एक अलग और प्रभावशाली तरीके से बोल सकते है। ऐसा करने से हम मसीह के लिये श्रमिको के रूप में आपकी दक्षता बढ़ा सकते है। COLHin 258.3

प्रत्येक मसीही को दूसरे मसीही के बेशुमार धन से अवगत कराने के लिये कहा जाता है, इसलिये उन्होंने भाषण में पूर्णता की तलाश की। उसे परमेश्वर के वचन को इस तरह प्रस्तुत करना चाहिये कि वह श्रोताओं की प्रशंसा करे। परमेश्वर यह नहीं समझता कि उसके मानव चैनल अकारण होंगे। यह उसकी इच्छा नहीं है कि मनुष्य उस स्वर्गीय धारा को भिन्न-भिन्न या नीचा दिखाये। जो उसके माध्यम से दुनिया मे आती है। COLHin 258.4

हमें यीशु की ओर देखना चाहिये, आदर्श स्वरूप, हमें पवित्र आत्मा की सहायता के लिये प्रार्थना करनी चाहिये, और उसकी ताकत में हमें हर अंग को सही काम के लिये प्रशिक्षित करना चाहिये। COLHin 258.5

विशेष रूप से यह उन लोगों के लिये सच है जिन्हें सार्वजनिक सेवा कहा जाता है। प्रत्येक सेवक और प्रत्येक शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिये कि वह लोगों को संदेश के रूप में दे रहा है जिसमे अनन्त हित शामिल है। सच बोला गया है कि उनका अंतिम गणना के महान दिन में न्याय किया जायेगा। और कुछ आत्माओं के साथ संदेश पहुंचाने वाले के तरीके से उसके स्वागत या अस्वीकृति का निर्धारण किया जायेगा, फिर इस शब्द को इतना बोलने दो कि यह समझ मे आये और दिल को प्रभावित करे। धीरे-धीरे, विशिष्ट रूप से, और पूरी तरह से इसे अभी पूरे जोश के साथ बोला जाना चाहिये, जो इसके महत्व की मांग करता है। COLHin 258.6

भाषण की शक्ति का सही संस्कृति और उपयोग करना मसीह के काम को हर पंकित के साथ करना है, यह गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है, और एक दूसरे के साथ हमारे सभी प्रकोपों में

सहायता करता है। हमें अपने आप को सुखद स्वर में बोलने के लिये, शुद्ध और सही भाषा और उन शब्दों का उपयोग करने के लिये आदी होना चाहिये, जो दयालु और विनम्र है। मीठे, दयालु शब्द आत्मा को ओस और कोमल वर्षा के रूप में है। इंजील मसीह के बारे में कहता है कि अनुग्रह उसके होठों में डाला गया था कि वह "जानता हैं कि उसे मौसम में काम कैसे करना है, यह थका हुआ है" (भजन संहिता 45:12, यशायाह 50:4)। और प्रभु हमसे बोलता है, "अपने भाषा को हमेशा कपा के साथ रहने दो' (कलस्सियों 4:6)। यह श्रोताओं के लिये कृपा कर सकता है। (इफिसियों 4:29)। COLHin 259.1

दूसरों को सुधारने या सुधारने के लिये हमे अपने शब्दों से सावध शान रहना चाहिये। वे जीवन के लिये जीवन या मौत के लिये जीवन का एक स्वाद होगा। फटकार या परमार्श देने में तेज, गंभीर भाषा में बहुत लोग, घायल आत्मा को ठीक करने के लिये अनुकूलित नहीं होते है। इन असभ्य भावा द्वारा आत्मा को जकड़ लिया जाता है और अक्सर गलत करने वालों को विद्रोह करने के लिये उकसाया जाता है। सब को सिद्धान्तों की वकालत करने वाले सभी को प्यार के स्वर्गीय तेल को प्राप्त करने की आवश्यकता है। सभी परिस्थितियो में फटकार और प्यार में बात करनी चाहिये ।तब हमारे शब्द सुधरेंगे, लेकिन अति रंजित नहीं होगे। उसकी पवित्र आत्मा द्वारा मसीह बल और शक्ति की आपूर्ति करेगा, यह उनका काम है। COLHin 259.2

एक भी शब्द बिना सलाह के नहीं बोलना है। कोई बुरा नहीं बोल रहा है, कोई तुच्छ बात नहीं है, कोई भयावह दोराव या अशुद्ध सुझाव नहीं है, जो मसीह का अनुसरण कर रहा है उसके होंठ बच जायेगें। प्रेरित पौलुस, पवित्र द्वारा लिखता है, कहता है, "कोई भी भ्रष्टसंचार अपने मुँह से न निकलने दे। (इफिसियों 4:29) एक भ्रष्ट संचार का मतलब केवल उन शब्दों से नहीं जो निष्फल है। इसका अर्थ है पवित्र राजसी शुद्ध और अपरिभाषित धर्म के विपरीत कोई भी अभिव्यक्ति । इसमे अशुद्ध संकेत और बुराई के गुप्त आवरण शामिल है। जब तक तुरन्त विरोध नहीं किया जाता, ये महान पाप के कारण बनते है। COLHin 259.3

प्रत्येक परिवार में, प्रत्येक व्यक्ति पर मसीही पर भ्रष्ट भाषण के खिलाफ रास्ता बन्द करने का कर्तव्य निर्धारित किया जाता है। जब उन लोगों की संगति मे जो मूर्खतापूर्ण बात करते है, तो यह हमारा कर्तव्य है कि यदि संभव हो तो बातचीत के विषय बदल दे। ईश्वर की कष्पा की मदद से हमे चुपचाप शब्दों को छोड़ देना चाहिये या एक विषय को पेश करना चाहिये जो बातचीत को एक लाभदायक चैनल में बदल देगा। COLHin 260.1

भाषण की उचित आदतों के लिये अपने बच्चों को प्रशिक्षित करना माता-पिता का काम है। इस संस्कषत के लिये सबसे अच्छा स्कूल घर का जीवन है। शुरूआती वर्षों से बच्चों को सम्मानपूर्वक और प्यार से अपने पिता-माता और एक दूसरे से बात करना सिखाया जाना चाहिये। उन्हें सिखाया जाना चाहिये कि केवल सज्जनता, सच्चाई और पवित्रता के शब्दों को अपने शब्दों

को मानना चाहिये। बात दे कि माता-पिता स्वंय मसीह के स्कूल में दैनिक शिक्षार्थी है। फिर उदाहरण के द्वारा वे अपने बच्चों को ‘ध्वनि भाषण” का प्रयोग सिखा सकते है, जिसकी निन्दा नहीं की जा सकती। (तीतुस 2:8) यह उनके कर्तव्यों में सबसे महान और सबसे अधिक जिम्मेदारी है। COLHin 260.2

मसीह के अनुयायियों के रूप मे हमें अपने शब्दों को ऐसे बनाना चाहिये, जैसे कि मसीही जीवन मे एक दूसरे की सहायता और प्रोत्साहन हो, जितना हम करते है, उससे कही अधिक, हमें अपने अनुभव मे अनमोल अध्यायों की बात चाहिये। हमे ईश्वर की दया और कृपा की बात करनी चाहिये, जो कि प्रेमी के प्रेम की अतुलनीय गहराइयों मे है। हमारे शब्दों मे शुद्ध और धन्यवाद के शब्द होने चाहिये। यदि मन और हृदय ईश्वर के प्रेम से भरे है, जो वार्तालाप में प्रवृत होगा। जो अध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करता है, उसे प्रदान करना कोई कठिन बात नहीं होगी। महान विचार, महान आकाक्षाऐं, सच्चाई को स्पष्ट धाराणाये, निस्वार्थ उद्देश्य, पवित्रता और पवित्रता के लिये तड़प, उन शब्दों मे फल देगे जो हृदय के खजाने के चरित्र को प्रकट करते है। जब मसीह इसी प्रकार हमारे भाषण में प्रकट होता है तो उसके पास आत्माओं के जीतने की शक्ति होगी। COLHin 260.3

हमे उन लोगो से मसीह की बात करनी चाहिये जो उन्हें नहीं जानते है। हमे वैसा ही करना चाहिये जैसा मसीह ने किया। जहाँ भी वह समास्थल में सड़क के किनारे, नाव से थोड़ी दूर जमीन पर, फरीसी की दावत या प्रचार की मेज पर वह उच्चतर से सम्बन्धित चीजों के परूषों से बात करता थाकृकृप्रकर्षत की बातें, दैनिक जीवन की घटनाये उनके द्वारा सत्य के शब्दों से बंधी हुई थी। उसके सुनने वालों के दिल उसके लिये तैयार थे। क्योंकि उसने बीमारों को चंगा किया। अनेक दुखियों को दिलासा और अनेक बच्चों को गोद में लिया और आशीर्वाद दिया था, जब उसने बोलने के लिये अपने होठ खोले । COLHin 261.1

तो उनका ध्यान उसी पर गया और हर शब्द के रूप में आत्मा का जीवन के लिये एक स्वाद था। तो यह हमारे साथ होना चाहिये। हम जहाँ भी है, हमें उद्धारकर्ता के दूसरों से बात करने के अवसर देखने चाहिये। यदि हम अच्छा करने में मसीह के उदाहरण का अनुसारण करते हैं, तो हमारे दिल खुले रहते है, जैसा कि उन्होंने उनके साथ किया था। कोई अचानक नहीं लेकिन ईश्वरीय प्रेम से पैदा हुई, हम उन्हें उनके बारे मे बता सकते है। जो “दस हजार में सबसे मुख्य” है और एक “पूरी तरह से प्यारा।” (गीत 3:10,16) | यह उच्चतम काम है जिसमें हम भाषण की प्रतिभा को नियोजित कर सकते है। यह हमारे लिये था कि हम मसीह को पाप मुक्ति रक्षक के रूप में प्रस्तुत कर सकते है। COLHin 261.2

प्रभाव

यीशु मसीह का जीवन एक व्यापक, प्रभावहीन प्रभाव था, एक ऐसा प्रभाव जिसने उन्हें ईश्वर और पूरे मानव परिवार के लिये बाध्य किया। मसीह के माध्यम से परमेश्वर ने मनुष्य को एक ऐसे प्रभाव के साथ निवेश किया है जो उसके लिये स्वंय का जीना अंसभव बनाता है। व्यक्तिगत रूप से हम अपने साथी पुरूषों के साथ जुड़े हुये है। ईश्वर को महान हिस्सा है और हम आपसी दायितवों के तहत खड़े है। कोई भी आदमी अपने साथी पुरूषों से स्वतंत्र नही हो सकता है, प्रत्येक की भलाई के लिये दूसरों को प्रभावित करता है। यह ईश्वर का उद्देश्य है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वंय को दूसरो के प्रति उदासीन महसूस करें, और खुशी को बढ़ावा दे। COLHin 261.3

प्रत्येक आत्मा अपने स्वयं के वातावरण से घिरा हुआ है-एक वातावरण, यह विश्वास, साहस और आशा का जीवन शक्ति के साथ आरोपित हो सकता है। या ये भारी हो सकता और असन्तोष और स्वार्थ की भावना के साथ ठंडा हो सकता है, हमारे आस-पास के वातारण से प्रत्येक व्यक्ति जिसके साथ हम सम्पर्क में आते है वह जानबूझकर या अनजाने में प्रभावित होता है। COLHin 262.1

यह एक जिम्मेदारी है जिससे हम खुद को मुक्त नहीं कर सकते है। हमारे शब्दों, हमारे कृत्यों, हमारी पोशाक, हमारे निर्वासन यहाँ तक कि अभिव्यक्ति का प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार की बनी हुई धारण के कारण अच्छे या बुरे परिणाम सामने आते है जिन्हें कोई भी व्यक्ति नहीं माप सकता। प्रत्येक आवेग से करे। इस प्रकार लगाया जाता है कि बीज बोया जाये और इसकी फसल का उत्पादन करें। यह मानव घटनाओं की लम्बी श्रृंखला में लिखे है जिसका विस्तार हम जानते है कि कही नहीं है। यदि हमारे उदाहरण से हम अच्छे सिद्धान्तों के विकास में दूसरों की सहायता करते है, तो हम उन्हें अच्छा करने की शक्ति देते है। COLHin 262.2

अपनी बारी में वे दूसरों पर समान प्रभाव डालते है और वे अभी भी दूसरे पर प्रभाव डालते जिससे हमारे अचेतन प्रभाव से हजारो धन्य हो सकते है। COLHin 262.3

झील में एक कंकड़ फेंको और एक लहर बनती है, और दूसरी ओर जब तब वे चक्र को चौड़ा नहीं कर लेते, तब तक वह किनारे तक नहीं पहुँचता। ऐसा ही हमारा प्रभाव है, हमारे ज्ञान से परे या उसे आशीर्वाद देने या कोसने मे दूसरों पर निर्भर करता है। COLHin 262.4

चरित्र शक्ति है। एक सच्चे निःस्वार्थ, ईश्वरीय जीवन का मूख्य गवाह लगभग एक अनूठा प्रभाव रखता है। हमारे जीवन पर मसीह के चरित्र को प्रकट करके हम आत्माओं को बचाने के काम में उनके साथ सहयोग करते हैं, यह हमारे जीवन में उनके चरित्र को प्रकट करते है कि हम उनके साथ सहयोग करते है और हमारे प्रभाव का दायरा जितना व्यापक होगा हम उतना ही अच्छा करेगे। जब परमेश्वर की सेवा करने वाले लोग मसीह के उदाहरण का पालन करते है, तब प्रत्येक कार्य इस बात की साक्षी देता है कि वे परमेश्वर को और अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करे तो क्या कलीसिया में दुनिया को स्थानांतरित करने की शक्ति होगी। COLHin 262.5

लेकिन यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि प्रभाव किसी बुराई के लिये कम नहीं है। अपनी आत्मा खो देना एक भयानक बात है, लेकिन उन्य आत्माओं के नुकसान का कारण भी अधिक भयानक है। हमारे प्रभाव को मष्यु के लिये एक मौत का नैतिक होना चाहिये, एक भयपूर्ण विचार है, अभी तक यह संभव है। कई लोग मसीह के साथ इकटठा होने का दावा करते है, वे उससे बिखर रहे है। यही कारण है कि कलीसिया इतनी कमजोर है। कई स्वतन्त्र रूप से आलोचना और आरोप लगाते है। संदेह, ईर्ष्या और अंसतोष को अभिव्यक्ति देकर, वे स्वयं को शैतान के रूप में उपजाते है। वे जो कुछ भी कर रहे है उसे महसूस करते हुये उनके माध यम से विरोधी न उसके माध्यम से अपना उद्देश्य पूरा किया। बुराई की छाप बनाई गयी है, छाया डाली गयी है, शैतान के तीरों ने अपना निशान पाया है। अविश्वास और नीच बेवफाई ने उन शैतान के लिये कार्यकर्ता उन लोगों के प्रति शालीनता से पेश आते है, जिन पर उन्हें सन्देह किया है और जिन्हे अब फटकार और भड़काने की कोशिश की जाती है। वे इन आत्माओं की तुलना में खुद की चापलूसी करते है, वे सदाचारी और धर्मी होते हैं उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि चरित्र के ये दुखद मलबे उनके अपनी जुबान और विद्रोही दिल के काम है। यह उनके प्रभाव के माध्यम से है प्रलोभन गिर गये है। COLHin 263.1

इतनी फजीहत, स्वार्थी, भोग और लापरवाह उदासीन मसीही की ओर से जीवन के पथ से कई आत्माओं को दूर कर रहे है। कई लोग ऐसे है जो ईश्वर से मिलने से डरते है, ईश्वर के प्रभाव के परिणाम से। COLHin 263.2

यह ईश्वर की कष्पा से ही है कि हम इस बन्दोबस्त का सही उपयोग कर सके। अपने आप में कुछ भी ऐसा नहीं है, जिसके द्वारा हम अच्छे के लिये प्रभावित कर सके। यदि हम अपनी असहायता और अपनी दिव्य शक्ति की आवश्यकता का एहसास करते है, तो हमें खुद पर भरोसा नहीं होगा। हम जानते है कि एक दिन, एक घंटे या एक पल का क्या परिणाम हो सकता है। यह निर्धारित नहीं करना चाहिये कि हम अपने स्वर्गीय पिता के लिये अपने तरीके के बिना दिन की शुरूआत करनी चाहिये । हमारे स्वर्गदूतों को हमारे ऊपर देखने के लिये नियुक्त किया जाता है, और अगर हम खुद को उनकी सरंक्षकता के तहत रखते है, तो हर खतरे में हमारे दाहिने हाथ में होंगे। जब अनजाने में हम एक गलत प्रभाव को खत्म करने के खतरे में है, तो स्वर्गदूत हमारी और से होंगे, हमे एक बेहतर पाठ्यक्रम के लिये प्रेरित करेगें, हमारे लिये हमारे शब्दों का चयन करेगे और हमारे कार्यों को प्रभावित करेंगे। इस प्रकार हमारा प्रभाव शान्त हो सकता है, लेकिन दूसरों को मसीह और स्वर्गीय दुनिया के लिये आकर्षित करने में शक्तिशाली शक्ति हो सकती है।

समय

हमारा समय ईश्वर का है। हर पल उसका है, और हम इसे उसकी महिमा में सुधार करने के लिये सबसे अधिक दायित्व के अधीन है। मेरे द्वारा दी गई प्रतिभा में से मुझे अपने समय की तुलना में अधिक हिसाब की आवश्यकता है। COLHin 264.1

समय का मूल्य संगणना से परे है। मसीह ने हर पल को अनमोल माना और वह यह है कि हमें इसका सम्मान करना चाहिये। जीवन बहुत छोटा है जिसे दूर किया जा सकता है। हमारे पास कुछ दिनों की परिवीक्षा है जिसमें अनन्तकाल की तैयारी है। हमारे पास बर्बाद करने का समय नहीं है, स्वार्थी भक्ति करने का समय नहीं है, पाप के भोग का समय नहीं है। अब यह है कि हमे भविष्य, अमर जीवन के लिये चरित्र बनाने है। अब यह है कि हम खोज के निर्णय के लिये तैयार है। COLHin 264.2

जब वे जीना शुरू करते है, तो मानव परिवार मुश्किल से मरने के कगार पर आ जाता है, और जब तक अनन्त जीवन के सम्बन्ध में एक सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता है, तब तक दुनिया मे लगातार श्रम समाप्त हो जाता है। वह व्यक्ति जो अपने लिये और एक ऐसे जीवन के लिये फिर बैठता है जो अमर है। यह अच्छी तरह से है कि वह पैदा हुआ था। COLHin 264.3

हमें समय को भुनाने के लिय कहा जाता है। लेकिन समय की बर्बादी कभी वापिस नहीं मिल सकती। हम इसे एक पल भी वापिस नहीं बुला सकते। एक मात्र तरीका जिसमें हम अपने समय को भुनाते है, वह सबसे अधिक बना रहता है, परमेश्वर के साथ सहकार्यकर्ता होने के नाते, छुटकारे की योजना। COLHin 264.4

जो ऐसा करता है वह चरित्र का रूपतंरण करता है। मैं शाही परिवार का सदस्य बन गया हूँ जो स्वर्गीय राजा का बच्चा है, उसे स्वर्गीदूतों का साथी माना जाता है। COLHin 264.5

अब हमारे साथी पुरूषों के उद्धार के लिये श्रम करने का समय है। कुछ ऐसे है जो सोचते है कि यदि वे मसीह के कारण पैसा देते है, तो यह सब उन्हें करने की आवश्यकता है, वह कीमती समय जिसमें वे उसके लिये व्यक्तिगत सेवा कर सकते थे, असम्न्ध था। लेकिन ये सभी का विशेषाधि कार और कर्तव्य है जिनके पास ईश्वर को सक्रिय सेवा प्रदान करने के लिये स्वास्थ्य और शक्ति है, सभी आत्माओं को मसीह में लाने के लिये काम करना है। धन का दान इस का स्थान नहीं ले सकता।। COLHin 264.6

हर पल शाश्वत परिणामों से भरा हुआ है छोटे से छोटे व्यक्ति को भी हम एक मिनट के नोटिस पर सेवा के लिये तैयार रहना है। वह अवसर जो किसी जरूरतमंद आत्मा को बोलने के लिये दिया जाता है वो कभी नहीं मिल सकता है। ईश्वर उस एक से कह सकते है, इस रात तुम्हारी आत्मा को तुम्हारी आवश्यकता होगी, और हमारी उपेक्षा के माध्यम से ईश्वर को कैसे सौंपे दें। COLHin 265.1

जीवन बहुत ही अस्थायी है और सांसारिक मामलों में ध्यान की परंपरा में परवाह किये बिना उन चीजों के लिये एक चिंता का विषय है जो शाश्वत ब्याज की चीजों की तुलना में एक परमाणु है। फिर भी परमेश्वर ने हमे जीवन के अस्थायी मामलों में उसकी सेवा करने के लिये बुलाया है। उस कार्य में परिकम उतना ही सच्चा धर्म है जितनी भक्ति है। बाईबल आलस्य को दूर नहीं करती है। यह सबसे बड़ा अभियान है जो हमारी दुनया को प्रभावित करता है। प्रत्येक पुरूष और महिला जो वास्तव में बीमार है, एक मेहनती कार्यकता है। COLHin 265.2

हमारे समय के सही सुधार पर ज्ञान और मानसिक संस्कषत प्राप्त करने में हमारी सफलता पर निर्भर करती है। बुद्धि की खेती को गरीबी, विनम्र भूल या प्रतिकूल परिवेश से रोका जाना चाहिये। केवल क्षणों को मूल्यवान होने दो। कुछ क्षण इधर और कुछ उधर की बाते में हताश हो सकता है, सुबह के घंटे अक्सर बिस्तर में बर्बाद हो जाते है। ट्रम या रेलवे कारो पर यात्रा या स्टेशन पर प्रतीक्षा करने में बिताया गया समय, भोजन की प्रतीक्षा के क्षण उन लोगों की प्रतीक्षा में जो नियुक्ति को ध्यान में रखते हुये थक गये थे, यदि कोई पुस्तक हाथ में रखी गयी थी, और समय के इन टुकड़ों को अध्ययन, पढ़ने या सावधान सोच में सुधार किया गया था, तो क्या पूरा नहीं किया जा सकता है। एक दष्ढ़ उद्देश्य, एक निरंतर उद्योग और समय की सावधानी पूर्वक अर्थव्यवस्था पुरूषों को ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनायेगी और मानसिक अनुशासन उन्हें बीमार कर देगी जो उन्हें प्रभाव और उपयोगिता की किसी भी स्थिति के लिये योग्य बनाते है। COLHin 265.3

। प्रत्येक मसीही का कर्तव्य है कि आदेश की आदतों और घष्णा की आदतो को प्राप्त करे, किसी भी चरित्र के काम में धीमी गति से उछाल का कोई बहाना नहीं है जब कोई हमेशा काम पर होता है और काम पूरी नहीं होता है तो ऐसा इसलिये होता है क्योकि मन और दिल को श्रम में नहीं लगाया जाता है। जो धीमा है और जो एक नुकसान में काम करता है वह यह दावा करता है कि इन दोषो को ठीक किया जाना है उसे योजना बनाने में अपने दिमाग का उपयोग करने की आवश्यकता है कि कैसे सर्वश्रेष्ठ परिणामों को सुरक्षित करने के लिये समय का उपयोग किया जाये। चतुर्थ और विधि के अनुसार, कुछ लोग पांच घंटे के रूप में ज्यादा से ज्यादा पांच घंटे पूरा करेगे। कुछ लोग जो घरेलू श्रम में लगे हुये है वे हमेशा काम में होते है क्योंकि उनके पास ऐसा करने के लिये बहुत कुछ नहीं होता। क्योंकि वे समय बचाने के लिये योजना नहीं बनाते है अपने ६ मे परिश्रम से वे बहुत कम काम कर पाते है। लेकिन सभी जो उधम मचाते है, सुस्त आदतों को दूर कर सकते है। अपने काम में उन्हें एक निश्चित उद्देश्य देना चाहिये। यह निर्धारित करें कि किसी दिये गये कार्य के लिये कितने समय की आवश्यकता है और फिर दिये गये समय में कार्य को पूरा करने की दिशा में हर संभव प्रयास करें। इच्छा शक्ति का अभ्यास हाथो को चतुराई से आगे बढ़ायेगा। COLHin 266.1

खुद को हाथ में लेने और सुधार करने के लिये दष्ढ़ संकल्प के माध यम से व्यक्ति गलत तरीके से कार्यवाही करने के लिये बाध्य हो सकता है, या अपनी शक्तियों को खेती करके वे बहुत

अच्छी सेवा करने की क्षमता प्राप्त कर सकते । तब वे कही भी और खुद को मांग में पायेगे। हर जगह वह सभी के (पराहन) लायक है। COLHin 266.2

कई बच्चो और युवाओ द्वारा समय बर्बाद किया जाता है कि घर के बोझ उठाने में खर्च हो सकता है, और इस प्रकार पिता और माता में एक प्रेमपूर्ण रूचि दिखा सकता है। युवा अपने मजबूत युवा कंधो को कई जिम्मेदारियों को निभा सकते है जो किसी को वहन करना चाहिये। COLHin 266.3

अपने शुरूआती वर्षों से मसीह का जीवन ब्यान गतिविधि का जीवन था। वह खुद को खुश करने के लिये नहीं रहता था। वे अनन्त ईश्वर के पुत्र थे, फिर भी उन्होंने अपने पिता युसुफ के साथ बढ़ाई का व्यापार के रूप में काम किया। उनका व्यापार काफी महत्वपूर्ण था। वह चरित्र निर्माता के रूप में दुनियां मे आये थे और इस प्रकार उनके सभी काम सहीं थे। अपने सभी धर्म निरपेक्ष परिश्रम के वह अपनी ईश्वरीय शक्ति के द्वारा बदल रहे पात्रो में उतनी ही पूर्णता लाया जो हमारा उदाहरण है। COLHin 266.4

माता-पिता को अपने बच्चो को समय का मूल्य और सही उपयोग सिखाना चाहिये। उन्हें सिखाये कि कुछ ऐसा करे जो ईश्वर का सम्मान करे। और मानवता को आशीर्वाद दे, इसके लिये प्रयास करने लायक है। अपने शुरूआती वर्षों में भी दे मिशनरी हो सकते है। COLHin 267.1

माता-पिता अपने बच्चो को कुछ नहीं करने की अनुमति देने की तुलना में अधिक पाप नहीं कर सकते। बच्चे जल्द ही आलस से प्यार करना सीख जाते है, और वे बड़े होकर बेकार मर्द और औरत बन जाते है। जब वे अपने जीवन को अर्जित करने और रोजगार खोजने के लिये पर्याप्त बूढ़े हो जाते है तो वे एक आलसी ड्रोन तरीके से काम करते है, फिर भी उतना ही भुगतान करने की उपेक्षा करते है जितना कि वे विश्वास योग्य थे। श्रमिको के इस वर्ग और उन लोगों के बीच विश्वव्यापी अंतर है जो महसूस करते है कि उन्हें वफादार भंडारी होना चाहिये। COLHin 267.2

धार्मिक, लापरवाह आदतों के कारण धर्मनिरपेक्ष कार्य को धार्मिक जीवन में लाया जायेगा और ईश्वर के लिये किसी भी कुशल सेवा को करने के लिये किसी को भी अनफिट किया जायेगां। मेहनती श्रम के माध्यम से कई लोग दुनिया के लिये एक आशीर्वाद हो सकते है, आलस्य के माध्यम से बर्बाद हो गये है रोजगार का आभाव और लगातार उद्देश्य एक हजार प्रलोभनो के द्वारा खोलता है। दुष्ट साथी और शातिर आदते मन और आत्मा को दर्शाती है और उसका परिणाम इस जीवन और आने वाले जीवन के लिये बर्बाद हो जाता है। COLHin 267.3

हम किस भी कार्य में संलग्न है, ईश्वर का शब्द हमें, व्यापार में आलसी नहीं, आत्मा में परोपकार, प्रभु को सेवा करना सिखाता है। "जो कुछ भी करने के लिये दिया जाय उसे अपनी पूरी ताकत से करो।" यह जानकर कि तुम प्रभु की विरासत का प्रतिफल प्राप्त करोगे, क्योंकि तुम

प्रभु मसीह की सेवा करोगे। (रोमियो 12:11, समोपदेशक 9:10, कुलुस्सिया 3:24) COLHin 267.4

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य एक आशीर्वाद है जिसमे से कुछ मूल्य की सराहना करते है, अभी तक इस पर हमारी मानसिक और शारीरिक शक्तियो की दक्षता काफी हद तक निर्भर करती है। हमारे आवेगो और जूनून में शरीर में अपनी जगह है और शारीरिक रूप से सबसे अधिक हमारी प्रतिभा को उच्चतम उपयोग में लाया जा सके। COLHin 268.1

जो कछ भी शारीरिक शक्ति को कमजोर करता है वह मन को प्रभावित करता है और सही और गलत के बीच भेदभाव करने में सक्षम बनाता है। हम अच्छा करने की इच्छा शक्ति को कम करने में सक्षम हो जाते है जिसे हम सही होना जानते है। COLHin 268.2

हमारी भौतिक शक्तियों का दुरूपयोग उस मसय की अवधि को छोटा करता है जिसमें हमारे जीवन का उपयोग ईश्वर की महिमा के लिये किया जा सकता है। और हमें उस कार्य को पूरा करने के लिये प्रेरित करता है जो परमेश्वर ने हमे करने के लिये दिया है अपने आप को गलत आदतों की अनुमति देकर, देर से घंटे रखकर स्वास्थ्य के लिये नीव रखते है। शारीरिक व्यायाम की उपेक्षा करके अधिक काम करने वाले मन या शरीर द्वारा हम तांत्रिक तंत्र को असंतुलित करते है। जो लोग अपने जीवन को छोटा करते है और प्रकृति के नियमों की अवहेलना करते हुये सेवा के लिये खुद को अनफिट करते है, वे ईश्वर के प्रति लूट के दोषी है। वे अपने साथी आदमियों को भी लूट रहे हैं। दूसरो को आशीर्वाद देने का अवसर जिस कार्य के लिये ईश्वर ने उन्हें संसार में भेजा था, उनके अपने कर्मो में कमी आई है। और उन्होंने अपने आप को ऐसा करने के लिये उकसाया है, जो उस समय की संक्षिप्त अवधि में है जो उन्होंने पूरा किया होगा। प्रभु हमे दोषी ठहराता है जब हमारी गलत आदतो द्वारा हम इस प्रकार अच्छे संसार को वंचित करते है। COLHin 268.3

भौतिक कानून का परिवर्तन नैतिक कानून का परिवर्तन है, क्योंकि ईश्वर नैतिक कानूनों के लेखक के रूप में भौतिक कानूनों के लेखक है। उनका कानून हर तंत्रिका हर पेशी हर संकाय पर अपनी उंगली से लिखा गया है, जिसे मनुष्य को सौंपा गया है। और हमारे जीव के किसी भी हिस्से का हर दुरूपयोग उस कानून का उल्लंघन है। COLHin 268.4

सभी को मानव नक्शे का एक बुद्धिमान ज्ञान होना चाहिये कि प्रभ के कार्य करने के लिये आवश्यक स्थिति में रख सके। उन्हें भौतिक जीवन को सावधानीपूर्वक संरक्षित और विकसित करना है कि मानवता के माध्यम से दिव्य प्रकषत अपनी पूर्णता में प्रकट हो सकती है। शारीरिक जीवों का सम्बन्ध अध्यात्मिक जीवन को शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण शाखाओं में से एक है। इसे घर में और स्कूल में सावधानीपूर्वक प्राप्त करना चाहिये। सभी को उनकी शारीरिक संरचना और प्राकतिक जीवन को नियत्रित करने वाले कानूनो से परिचित होने की आवश्यकता है। वह जो

अपने भौतिक अस्तितव के नियमों के लिये अज्ञानता में रहता है और सभी को खुद को जीवन और स्वास्थ्य के लिये सर्वोत्तम संभव सम्बन्ध में रखना चाहिये। हमारी आदतें एक व्यक्ति के नियंत्रण में आ गई है, जो खुद ईश्वर के नियंत्रण में है। “क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम लेकर मौल लिये गये हो, इसलिये अपनी दे देह द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।” (1 कुरिन्थयों 6:19, 20) COLHin 268.5

शक्ति

हमे ईश्वर से प्रेम करना है, केवल हष्दय, मन और आत्मा के नहीं, बल्कि पूरी शक्ति से। इसमें भौतिक शक्तियों का पूर्ण, बुद्धिमान उपयोग शामिल है। COLHin 269.1

मसीह लौकिक के साथ-साथ अध्यात्मिक चीजो में एक सच्चा कार्यकर्ता था अपने सभी कार्यो में उसने अपने पिता की ईच्छा को पूरा करने का दष्ढ़ संकल्प लिया। स्वर्ग और पष्थ्वी को चीजे अधिक निकटता से जुड़ी है। कई लोगो की तुलना में सीधे मसीह की देख रेख में है। यह मसीह था जिसने पहले सांसारिक झांकी की व्यवस्था की योजना बनाई थी। उसमे सुलेमान के मंदिर के निर्माण के सम्बन्ध में हर विनिर्देश दिया। जो अपने सांसारिक जीवन ने नासरत गांव में एक बढ़ाई के रूप में काम करता था वह स्वर्गीय वास्तुकार था जिसने पवित्र इमारत की योजना को चिन्हित किया था जहाँ उसके नाम का सम्मान किया जाना था। COLHin 269.2

यह मसीह था जिसने सबसे कुशल और सुन्दर कारीगिरी को निष्पादित करने के लिये सारणी ज्ञान के बिल्डरों को दिया था। उन्होंने कहा, “सुन मैं ऊरी के पुत्र दसलेल को, जो दूर का पौता और यहूदा के गोत्र का है, नाम लेकर बुलाता हूँ। और मैं उसको परमेश्वर की आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान और सब प्रकार के कार्यो की समझ देने वाली आत्मा है परिपूर्ण करता हूँ जिससे वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से निकाल कर सब भांति की बनावट में, अर्थात सोने, चांदी और पीतल में और जड़ने के लिये मणि काटने और लकड़ी के खोदने में काम करें। और सुन मैं दान के गोत्र अहीसामाक को उसके संग करा देता हूँ, बरन् जितने बुद्धिमान है उन सभी के हष्दय में मैं बुद्धि देता हूँ जिससे जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं ने तुझे दी है उन सभी को वे बनाये। (निर्गमन 31:2—6) COLHin 269.3

ईश्वर की इच्छा है कि हर पंक्ति में उनके कार्यकर्ता उनके पास जो कुछ भी है उनके दाता के रूप में उन्हें देखे। सभी अविष्कारो और सुध गारो में उनका स्रोत है जो परामर्श में अद्भूत है और काम करने में उत्कष्ट है। चिकित्सक के हाथ का कुशल स्पर्श, तांत्रिका और मांसपेशियों पर उसकी शक्ति, शरीर के नाजुक जीव का ज्ञान, दिव्य शकित का ज्ञान, दुख की ओर से उपयोग करता है, वह जिस कौशल के साथ बढ़ई हथौड़ा का उपयोग करता है। वह ताकत जिसके साथ लोहार एनावल रिंग बनाता है, ईश्वर से आता है। उन्होंने पुरूषों को प्रतिभा के साथ सौंपा है, और

वह उनसे अपेक्षा करते है कि वे उन्हें परामर्श के लिये देखे। हम जो भी काम करते है, उसे जिस भी विभाग में रखा जाता है, वह हमारे दिमाग को नियंत्रित करने की इच्छा रखता है कि हम सही काम कर सके। COLHin 270.1

धर्म और व्यवसाय दो अलग चीजे नहीं है, वे एक है। बाईबल धर्म को हम जो भी कहते है, उसके साथ जुड़ता है। COLHin 270.2

दिव्य और मानव ऐजेंसियों को अस्थायी रूप से अध्यात्मिक उपलब्लि यों के रूप में अस्थायी रूप से संयोजित करना है। वे सभी मानवीय गतिविधियों में एक जट यांत्रिक और कषषि प्रयोग शालाओं में व्यापारिक और वैज्ञानिक उद्यमों में एक जुट होना है। मसीही गतिविधि अपनाई गई हर चीज में सहयोग होना चाहिये। COLHin 270.3

ईश्वर ने उन सिद्धान्तों की घोषणा की है जिन पर अकेले यह सहयोग संभव है। उसकी महिमा सभी का मकसद होना चाहिये जो उसके साथ मजदूर है। हमारा सारा काम प्रेम से ईश्वर के साथ और उसकी इच्छा के अनुसार होना चाहिये। COLHin 270.4

किसी धार्मिक सेवा में भाग लेने के दौरान भवन का निर्माण करते समय ईश्वर की इच्छा को पूरा करना आवश्यक है। और अगर दलालों चरित्र निर्माण पर सही सिद्धान्तों को लाने है तो हर इमारत के निर्माण में वे अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ेगे। COLHin 270.5

लेकिन ईश्वर सबसे बड़ी प्रतिभा या सबसे शानदार सेवा के स्वीकार नहीं करेगा जब तक कि वेदी पर आजीविका न हो, एक जीविन भस्म बलिदान। जड़ को पवित्र होना चाहिये, अन्यथा ईश्वर को कोई फल स्वीकार्य नहीं हो सकता है। COLHin 271.1

यहोवा ने दानिय्येल और युसुफ चतुर प्रबन्धको को बनाया। वह उनके माध्यम से जीत सकता था क्योंकि वे अपने स्वयं के झुकाव को खुश करने के लिये नहीं बल्कि ईश्वर को खुश करने के लिये जीतते थे। COLHin 271.2

दानिय्येल का मामला हमारे लिये एक सबक है। यह इस तथ्य को प्रकट करता है कि एक व्यापारी जरूरी एक तेज, नीति आदमी नही है। उसे हर कदम पर ईश्वर द्वारा निर्देश दिया जा सकता है। बाबुल राज्य के प्रध नमंत्री के रूप में दानिय्येल, ईश्वर के एक भविष्यवक्ता के रूप में, दानिय्येल स्वर्गीय प्रेरणा का प्रकाश प्राप्त करते हैं। सांसारिक महत्वकांशी राजनेताओं को ईश्वर के शब्द में घास के रूप में दर्शाया जाता है जो बड़े होते है और घार के फूल के रूप में दिखते है। फिर भी प्रभु की इच्छा है कि उनकी सेवा में बुद्धिमान पुरूष, काम की विभिन्न रेखाओं के लिये योग्य हो। ऐसे व्यवसायियों को आवश्यकता है जो सत्य के भव्य सिद्धान्तों को अपने सभी लेन-देन में बदल देगे। और उनकी प्रतिभा को पूरी तरह से अध ययन और प्रशिक्षण द्वारा सिद्ध किया जाना चाहिये। अगर काम की किसी भी पंकित में पुरूषों को बुद्धिमान और कुशल बनने के अवसरो में

सुधार करना होगा। ये वे है जो हमारी दुनिया में परमेश्वर के राज्य के निर्माण अपनी क्षमता का उपयोग कर रहे है। दानिय्येल से हम सीखते है कि उनके सभी व्यापिक लेन-देन, जब निकटतम जांच के अधीन थे, तो एक भी गलती या त्रुटि नहीं पायी जा सकती थी। वह इस बात का एक नमूना था कि प्रत्येक व्यवसायी क्या हो सकता है। उनका इतिहास बताता है कि मस्तिष्क और हड्डी और मांसपेशियों की शक्ति, हृदय और जीवन की शक्ति को ईश्वर की सेवा करने वाले व्यक्ति द्वारा पूरा किया जा सकता है।

पैसा

ईश्वर भी पुरूषों को साधन सौंपता है। वह उन्हें धन पाने की शक्ति देता है। वह स्वर्ग की ओस के साथ जाता, वर्षा की बौछारों के साथ पृथ्वी को पानी देता है। वह सूर्य के प्रकाश को देता है, जो पृथ्वी को गर्म करता है, प्रकृति की चीजों को जीव में जागृत करता है, फलता फूलता है। वह अपनी खुद को वापसी के लिये पूछता है। COLHin 271.4

हमारा पैसा हमें नहीं दिया गया है कि हम खुद को सम्मानित और गोरवान्वित कर सके। विश्वास योग्य जंजीरों के रूप मे हम इस ईश्वर के सम्मान और गौरव के लिये उपयोग करते हैं। कुछ लोग सोचते है कि उनके साधनों का केवल एक हिस्सा ईश्वर का है। जब उन्होंने धार्मिक और धर्मार्थ उद्देश्यों के लिये एक हिस्से का अलग कर दिया है, तो वे शेष का अपने जैसा मानते है, जेसे कि वे फिट देखते है। लेकिन इसमे वे गलती करते है। हमारे पास जो कुछ भी वह प्रभु का है और हम लेकिन इसमे वे गलती करते हैं। हमारे पास जो कुछ भी वह प्रभु का है और हम उसके उपयोग के लिये उसके प्रति जवाब देह है। हर पैसे के उपयोग में, यह देखा जायेगा कि क्या हम ईश्वर को बहुत प्यार करते है और अपने पड़ोसी को भी। COLHin 272.1

धन का बहुत मूल्य है, क्योंकि यह बहुत अच्छा कर सकता है। ईश्वर के बच्चो के हाथो में भूख के लिये भोजन है, प्यासे के लिये पानी है, नंगे के लिये कपड़े है। यह शोषितो के लिये रक्षा और बीमारों की मदद का साधन है। लेकिन धन का बालू से अधिक कोई महत्व नहीं है, केवल इसे जीव की आवश्यकताओं के लिये दूसरों को आशीर्वाद देने और मसीह के कारण को आगे बढ़ने में उपयोग करने के लिये रखा जाता है। COLHin 272.2

बटोरा हुआ धन केवल बेकार ही नहीं, यह एक अभिशाप है। इस जीवन में, यह आत्मा के लिये एक घिनोनापन है, स्वर्ग के खजाने से दूर आकषतयों को खींचता है। ईश्वर के महान दिन में प्रतिभाओं और उपेक्षित अवसरो के लिये इसके गवाह, इसके स्वामी की निन्दा करेगे। इंजील में कहा गया है, "हे धनवालें सुन लो, तुम अपने आने वाले क्लेशों पर चिल्लाकर-चिल्लाकर रोओगे। तुम्हारा धन बिगड़ गया और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गये । तुम्हारे सोने-चांदी में काई लग गई है, और वह कई तुम पर गवाही देगी, और आग की तरह तुम्हारा मांस रखा जायेगी, तुम ने अंतिम युग से धन बटोरा है। देखो, जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेत काटे, उन की मजदूरी जो तुमने धोखा

देकर रख ली है चिल्ला रही है और लवने वालों की दोहाई, सेनाओं के प्रभु के कानो तक पहुंच गई है। (याकूब 5:1-4) COLHin 272.3

लेकिन यीशु ने किसी भी माध्यम का प्रयोग नहीं करा। अर्थव्यवस्था में उनका सबक, "उन अवशेषों को इकट्ठा करना है, जो कुछ भी याद नहीं करते है। उनके सभी अनुयायियों के लिये है। (1 यहून्ना 6:12) उससे पता चलता है कि उसका धन ईश्वर की एक प्रतिभा है जो आर्थिक रूप से उसका उपयोग करेगा और वह उसे बचाने का कर्तव्य महसूस करेगा जो वह कर सकता है। COLHin 273.1

जितना अधिक हम प्रदर्शन और आत्म योग में खर्च करते है, उतने ही कम भूखे को खाना खिलाना पड़ सकता है और नग्न को कपड़े देना पड़ सकता है। हर पैसे अनावश्यक रूप से अच्छा करने के अनमोल अवसर के खर्च से वंचित करता है। यह सम्मान और गौरव के देवता को लूट रहा है, जो कि उनकी सौंपी गई प्रतिभाओं के सुधार के माध्यम से उनके पास वापस आना चाहियें COLHin 273.2

दयालु आवेग, दयालु स्नेह, उदार आवेग और अध्यात्मिक चीजों की एक त्वरित आंशका की कीमती प्रतिभाये है, और एक वजनदार जिम्मेदारी के तहत अपने पास रखते है। सभी को ईश्वर की सेवा में उपयोग किया जाना है। लेकिन यहाँ कई गलतियाँ है। इन गुणो के कब्जे से सन्तुष्ट, वे उन्हें दूसरे के लिये सक्रिय सेवा में लाने में विफल होते है। वे अपने आप को चापूलूसी करते है कि अगर उनके पास अवसर था, अगर परिस्थियाँ अनुकूल थी तो वे एक महान और अच्छा काम करेगे। लेकिन उन्हें मौके का इन्तजार है। वे गरीब कंजूस की संकीर्णता का तिरस्कार करते है। वे देखते है कि वह स्वयं के लिये जी रहा है, और वह अपना दुरूपयोग की प्रतिभाओं के लिये जिम्मेदार है। अपने मतलब के पड़ोसी, पड़ोसियों की तुलना में बहुत अधिक अनुकूल है। लेकिन वे खुद को धोखा दे रहे है। आप्रयुकत गुणों के अधिपत्य से ही उनकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। जो लोग बड़े स्नेह रखते है। उनके लिये ईश्वर के प्रति दायित्व है कि वे केवल अपने दोस्ती पर ही नहीं बल्कि उन सभी की मदद करे, जिन्हें उनकी मदद की जरूरत है। सामाजिक लाभ प्रतिभा है, और हमारे प्रभाव की पहुंच के भीतर सभी के लाभ के लिये उपयोग किया जाना है। वह प्रेम जो केवल कुछ को ही दया देता है, वह प्रेम नही बल्कि स्वार्थ है। यह किसी भी तरह से आत्माओं की भलाई या ईश्वर की महिमा के लिये काम नही करेगा। इस प्रकार जो अपने गुरू की प्रतिभा को छोड़ देते है, वे उससे भी अधिक दोषी है जिनके लिये वे ऐसी अवमानना करते है। उनके लिये यह कहा जायेगा, ये तो आपके स्वामी की इच्छा है, लेकिन ऐसा नहीं किया। COLHin 273.3

उपयोग द्वारा गुणा की गई प्रतिभा

उपयोग की जाने वाली प्रतिभाएं कई गुना प्रतिभा होती है। सफलता का मौका या भाग्य का परिणाम नहीं है। वह ईश्वर की अपनी सिद्धता, विश्वास और विवेक का प्रतिफल है, पुण्य और दष्ढ़

प्रयास का परिचायक है। प्रभु की इच्छा है कि हम अपने घर उपहार का उपयोग करें और यदि हम ऐसा करते है, तो हमारे पास उपयोग के लिये अधिक से अधि क उपहार होगे। वह अलौकिक रूप से हमें उस योगयता से सम्पन्न नही करता है जिसकी हमारे पास कमी है, लेकिन जब हम उसका उपयोग करते है, तो वह हमारे लिये हर संकाय को बढ़ाने और मजबूत हमारी ताकत बढ़ेगी। जब हम पवित्र आत्मा के काम करने के लिये खुद को साधन के रूप में उपजते है तो ईश्वर की कष्पा हमारे लिये पुराने झुकावों को नकारने, शक्तिशाली प्रवर्षत को दूर करने और नई आदतों को बनाने के लिये काम करती है। जैसा कि हम आत्मा के उत्साह का पालन करते है, हमारे दिल को उसकी शक्ति के अधिक से अधिक प्राप्त करने के लिये, और अधिक और बेहतर काम करने के लिये बढ़ाया जाता है। गुप्त उर्जाऐ उत्तेजित होती है, और पक्षघात संकायों को नया जीवन मिलता है। COLHin 274.1

विनम्र कार्यकर्ता जो आज्ञाकारी रूप से ईश्वर के आह्वान का जवाब देता है, वह दिव्य सहायता प्राप्त करने के लिये सुनिश्चित हो सकता है। इतना महान और पवित्र को स्वीकार करने के लिये एक जिम्मेदारी ही चरित्र को बुलन्द करती है। यह सर्वोच्च मानसिक और अध्यात्मिक शक्तियों को बुलाता है और मन और हृदय को मजबूत और शुद्ध करता है। ईश्वर की शक्ति में विश्वास के माध्यम से यह अद्भुत है कि एक कमजोर आदमी कितना मजबत हो सकता है उसने अपने प्रयासो को कैसे तय किया महान परिणाम कैसे प्राप्त होगे। वह जो थोड़े से ज्ञान के साथ शुरू होता है, एक विनम्र व्यंग्य में, और वह जानता है कि वह आगे के ज्ञान के लिये लगन से खोजते हुये, पूरी भारी खजाने को अपनी मांग का इन्तजार कर पायेगा। जितना अधिक वह प्रकाश प्रदान करना चाहता है। उतना अधिक प्रकाश उसे प्राप्त होगा। अधिक से अधिक ईश्वर के शब्द को दूसरों को समझाने की कोशिश करता है, आत्माओं के लिये प्यार के साथ यह खुद को जितना स्पष्ट करता है। हम अपने ज्ञान का उपयोग करते है। और अपनी शक्तियों का प्रयोग करते है जितना अधिक ज्ञान और शक्ति हमारे पास होगी। मसीह के लिये किया गया, हर प्रयास स्वंय को आशीर्वाद देने में प्रतिक्रिया करेगा। अगर हम उसकी महिमा के लिये हमारे साधनों को उपयोग करते है, तो वह हमे दे देगा। जैसे कि हम दूसरों को मसीह के लिये जीतना चाहते है हमारी प्रार्थनाओं में आत्माएँ के बोझ को सहन करना, हमारे अपने दिल, ईश्वर की कृपा के तेज प्रभाव से धड़केगें, हमारे स्वयं के स्नेह अधिक दिव्य उत्साह के साथ चमकेगा, हमारा पूरा मसीही जीवन एक वास्तविकता से अधिक समृद्ध, अधिक प्रार्थनापूर्ण होगी। COLHin 274.2

परमेश्वर को जानने के लिये मनुष्य के मूल्य का अनुमान हष्दय की क्षमता के अनुसार स्वर्ग में लगाया जाता है। यह ज्ञान वह वसन्त है जिसमें से सारी शक्ति बहती है। ईश्वर ने मनुष्य को बनाया है कि हर संकाय परमात्मा के मन का संकाय हो सके, और वह कभी मानव मन को परमात्मा के साथ लाने की कोशिश कर रहा है। वह हमें दुनिया के लिये अपनी कष्पा प्रकट करने

में मसीह के साथ सहयोग का विशेषाधिकार प्रदान करता है कि हम स्वर्गीय चीजों को बढ़ा ज्ञान प्राप्त कर सके। COLHin 275.1

यीशु की खोज में हम परमेश्वर के विषय में और अधिक स्पष्ट विचार प्राप्त कर सकते है और निहारने से हम बदल जायेगे। हमारे साथी पुरूषों के लिये अच्छाई, प्यार, हमारी स्वभाविक प्रवत्ति बन जाती है। हम एक ऐसे चरित्र का विकास करते है जो ईश्वरीय चरित्र का प्रतिरूप है, उसकी समानता में बढते हये हम ईश्वर को जानने की अपनी क्षमता को बढ़ाते है। अधिक से अधिक स्वर्गीय दुनिया के साथ मैत्री में प्रवेश करते है और हमारे पास अनन्त काल के ज्ञान और ज्ञान के धन को प्राप्त करने के लिये लगातार बढ़ती शक्ति है। COLHin 275.2

एक प्रतिभा

जिस व्यक्ति को प्रतिभा प्राप्त हुई, “वह गया और पथ्वी में खुदाई करके अपने ईश्वर के धन को छिपा दिया। COLHin 275.3

यह सबसे छोटा उपहार था, जिसने अपनी प्रतिभा को छोड़ दिया। इसमें उन सभी को चेतावनी दी जाती है, जिन्हें लगता है कि उनके बन्दोबस्ती का छोटापन उन्हें मसीह के लिये सेवा से निकाल देता है। यदि वे इतना महान कार्य कर सकते है तो वे कितनी खुशी से इसे शुरू करेगे, लेकिन क्योंकि वे केवल छोटी चीजों में सेवा कर सकते है, वे खुद को कुछ भी नहीं करने के लिये उचित समझते है। इसमे वे गलती करते है। उपहारो के वितरण में प्रभु चरित्र की परिक्षण कर रहा है। अपनी प्रतिभा को निखारने के लिये उपेक्षा करने वाले व्यक्ति ने खुद को एक बेवफा सेबक साबित कर दिया। अगर उसे पांच प्रतिभाये मिल जाती तो वह उन्हें भी दफन कर देता, क्योंकि वह उन्हें दफना देता। एक प्रतिभा के उनके दुरूपयोग ने दिखाया कि उसने स्वर्ग के उपहारों का तिरस्कार किया। COLHin 275.4

वह जो इसमें विश्वासयोग्य है, वह कम से कम विश्वासयोग्य भी है। (लूका 16:10)। छोटी चीजों का महत्व अक्सर कम होता है, क्योंकि वे छोटे होते है, लेकिन वे जीवन के वास्तविक अनुशासन की बहुत आपूर्ति करते है। वास्तव में कोई भी गैर महत्वपूर्ण नहीं है। मसीही जीवन में, हमारा चरित्र निर्माण तक पूर्ण होगा जब हम छोटी चीजों के महत्व को समझते हैं। COLHin 276.1

वह जो कम से कम अन्यायपूर्ण है वह बहुत ज्यादा अन्यायपूर्ण है छोटे-छोटे कर्तव्यों में भी अविश्वास करने से, मनुष्य अपनी सेवा के निर्माता को लूटता है, जो उसका कारण है। COLHin 276.2

यह विश्वासघात अपने आप पर प्रतिक्रिया करता है। वह अनुग्रह, शक्ति चरित्र का बल पाने में विफल रहता है, जो कि ईश्वर को अनपेक्षित सम्पूर्ण के माध्यम से प्राप्त होता है। मसीह से अलग रहकर वह शैतान के प्रलोभनों के अधीन है और वह मास्टर के लिये अपने काम में गलतियाँ करता

है। क्योंकि वह छोटी चीजों में सही सिद्धान्तों द्वारा निर्देशित नहीं होता है। वह उन महान मामलों में ईश्वर आज्ञाओं का पालन करने में विफल रहता है जिन्हें वह अपने विशेष कार्य के रूप में मानता है। जीव के मामूली विवरणों से निपटने में पोषित दोष अधिक महत्वपूर्ण मामलों में गुजरते है। वह उन सिद्धान्तों पर कार्य करता है जिनके लिये वह स्वयं आदी हो चुका है। इस प्रकार क्रिया में दोहराई जाती है, आदते, आदते चरित्र का निर्माण करती है, और चरित्र द्वारा हमारी नियति, समय और अनन्तकाल के लिये तय की जाती है। छोटी-छोटी बातों में विश्वास करके ही आत्मा की बड़ी जिम्मेदारियों के तहत निष्ठा के साथ काम करने के लिये प्रशिक्षित किया जा सकता है। ईश्वर बाबुल के महापुरूषों के सम्बन्ध में दानिय्येल और उसके साथियों को लाया कि ये कट्टर पुरूष सच्चे धर्म के सिद्धान्तों से परिचित हो सके। मूर्तिपूजकों के एक देश के बीच, दानिय्येल को ईश्वर के चरित्र का प्रतिनिधित्व करना था। इतने विश्वास और सम्मान की स्थिति के लिये वह कैसे फिट हो गया? ये उनका छोटी-छोटी बातों में उनका विश्वास था, जिन्होंने उनके पूरे जीवन को जटिलता दी। उन्होंने ईश्वर को सबसे छोटे कर्तव्यों में सम्मानित किया और ईश्वर ने उनका सहयोग किया। दानिय्येल उसके साथियों के लिये ईश्वर ने "सभी सीखने और ज्ञान में ज्ञान और कौशल दिया और दानिय्येल के पास सभी अपने सपने थे।" (दानिय्येल 1:17) | COLHin 276.3

जैसे कि परमेश्वर ने दानिय्येल को बाबुल में उसके लिये गवाही देने के लिये बुलाया था, इसलिये वह आज हमें दुनिया में उसका गवाह कहता है। सबसे छोटे और साथ ही जीवन के सबसे बड़े मामलों में वह पुरूषों से उनके राज्य के सिद्धान्तों को प्रकट करने की इच्छा रखता है। COLHin 277.1

धरती पर अपने जीवन में मसीह ने छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने का पाठ पढ़ाया। छुटकारे का महान कार्य उनकी आत्मा पर तौला गया, जैसा कि वह सिखा रहा है या और उपचार कर रहा था, मन और शरीर की सभी उर्जाओं पर अत्याधिक कर लगाया गया था। फिर भी उन्होंने जीवन के प्रकृति में सबसे सरल चीजों पर ध्यान दिया, उनके सबसे शिक्षाप्रद था, वे जिनमें प्रकृति की सरल बातों से उन्होंने परमेश्वर के राज्य की महान सच्चाईयों का वर्णन किया था। उसने अपने सेवकों की जरूरतों के नजर अन्दाज नहीं किया। उसके कान ने जरूरत का हर रोना सुना। वह भीड़ में पीड़ित महिला के स्पर्श के लिये जाग रहा था । विश्वास के बहुत स्पर्श एक प्रतिक्रिया लाया। जब वह मरे हुओं में से जायरीस की बेटी की तरफ बढ़ा, तो उसने उसके माता-पिता को याद दिलाया कि उसके पास खाने के लिये कुछ होना चाहिये। COLHin 277.2

जब उनकी अपनी शक्तिशाली शक्ति से वह कब्र से उठे तो उन्होंने तय करने के लिय कब्र के कपड़ों का तिरस्कार नहीं किया और उचित स्थान पर सावधानी पूर्वक रख जिससे उन्हें दूर रखा गया था। COLHin 277.3

जिन कार्यो को मसीही कहा जाता है, उन्हें आत्माओं के उद्धार के लिये मसीह के साथ सहयोग करना है। यह काम हमने उसके साथ वाचा में प्रवेश किया है। काम की उपेक्षा करने के लिये मसीह के प्रति अरूचि साबित करना है। लेकिन इस काम को पूरा करने के लिये हमें छोटी-छोटी बातों पर उनके वफादार, कर्तव्यनिष्ठ ध्यान की मिसाल पर चलना चाहिये। यह मसीही प्रयास और कौशल और ज्ञान को समझने में प्रभाव की हर पंकित में सफलता का मूलमंत्र है, क्योंकि हम ईश्वर और उनकी शक्ति में मानव हृदय पर काम करने में विश्वास करते हैं। COLHin 277.4

जिन लोगों के पास उपहारों का बड़ा बन्दोबस्त नही है, उन्हें हतोत्साहित होने की जरूरत नही है। उनके पास जो कुछ भी है उसका उपयोग करना चाहिये है, विश्वासपूर्वक अपने पात्रों में हर कमजोर बिन्दु की रक्षा करनी चाहिये है। इसे मजबूत बनाने के लिये दिव्य अनुग्रह की मांग करनी चाहिये है। जीवन की प्रत्येक क्रिया को हम विश्वास और निष्ठा से बुनते है उन गुणा की खेती करते है जो हमे कार्य पूरा करने में सक्षम बनायेंगे। COLHin 278.1

लापरवाही की आदत को पूरी तरह से दूर किया जाना चाहिये। कई लोग सोचते है कि यह भुल्क्कड़, त्रुटियों को दूर करने के लिये एक पर्याप्त बहाना है। लेकिन क्या वे औरों के साथ-साथ बौद्धिक संकायों के अधिकारी नहीं है। तब उन्हें अपने मन को प्रतिशोधी होने के लिए अनुशासित करना चाहिये। लापरवाही से पाप करना भूल जाना पाप है, यदि आप लापरवाही की आदतत बनाते है तो आप अपनी खुद की आत्मा के उद्धार की उपेक्षा कर सकते है और अन्त में पाते है कि आप ईश्वर के राज्य के लिये तैयार नहीं हैं। COLHin 278.2

महान सच्चाईयों को छोटी चीजों में लाना चाहिये। व्यवहारिक धर्म को दैनिक जीवन के नीच कर्तव्यों में ले जाना है। किसी भी आदमी के लिये सबसे बड़ी योग्यता है कि वह प्रभु के वचन का पालन करे। COLHin 278.3

क्योंकि वे कुछ घिनौने धार्मिक कार्यो से नहीं जुड़े है, कई लोग महसूस करते है कि उनका जीवन बेकार है कि वे परमेश्वर के राज्य की उन्नति के लिये कुछ नहीं कर रहे है। लेकिन यह एक गलती है। अगर काम उनका वह है जो किसी को करना चाहिये तो उन्हें खुद को ईश्वर के महान घर में बेकार का आरोप नहीं लगाना चाहिये। नम्र कामों को नजर अन्दाज नही किया जाना चाहिये। COLHin 278.4

कोई भी इमानदार कार्य एक आशीर्वाद है, और इसमें विश्वासयोग्यता उच्च विश्वासों के लिये एक प्रशिक्षिण साबित हो सकती है। COLHin 278.5

हालांकि नीचता, स्वयं के पूर्ण, सम्पूर्ण के साथ ईश्वर के लिये किया गया कोई भी कार्य उतना ही स्वीकार है जितना सर्वोच्च सेवा। कोई भी पेशकश छोटी नहीं है, यह दिल और आत्मा की खुशी के साथ दिया जाता है। COLHin 279.1

जहाँ कही भी हम मसीह के विषय में बोलते है हम उस कर्तव्य को अपनाते है जो स्वयं को प्रस्तुत करते है। यदि यह घर में है, तो घर को सुखद स्थान बनाने के लिये स्वेच्छा और इमानदारी से पकड़े। यदि आप एक मां है, तो अपने बच्चों को प्रशिक्षित करें। यह वास्तव में ईश्वर के लिये एक काम है जैसे कि पुल्पिट पर याजक का। यदि आपका कर्तव्य रसोई में है, तो एक आदर्श बनना बनाने के लिये ऐसा भोजन तैयार करे, जो पौष्टिक और स्वादिष्ट हो। और कि आप भोजन तैयार करने में सबसे अच्छे साम्रगी को याद करते हैं कि आप अपने दिमाग को सबसे अच्छा विचार देने के लिये तैयार करे। यह मिट्टी तक आपका काम है या किसी अन्य व्यापार या व्यवसाय में संलग्न होना, वर्तमान कर्तव्य को सफल बनाना है। अपना दिमाग लगाओं कि तुम क्या कर रहे हो। आप किन कार्यों में मसीह का प्रतिनिधित्व करते है। जैसा वह तुम्हारे लिये पर करेगा वैसा ही करो। COLHin 279.2

हालांकि, आपकी प्रतिभा छोटी है ईश्वर के लिये एक जगह हैं। वह एक प्रतिभा जो बुद्धिमानी से उपयोग की जाती है, अपने नियत कार्य को पूरा करेगी। थोड़े से कर्तव्यों में विश्वास रखकर, हम जोड़ घटाव की योजना पर काम कर रहे है। और वो हमारे लिये गुणा की योजना पर काम करेगा। ये छोर उनके काम में सबसे कीमती प्रभाव बन जायेगे। COLHin 279.3

एक छोटे से कर्तव्यों के प्रदर्शन के माध्यम से सोने के धागों की तरह जीवित आस्था को लेने दे। तब सभी दैनिक कार्य मसीही विकास को बढावा देगे, यीशु के सामने नित्य खोज होगी उसके लिये प्यार हर चीज के लिये महत्वपूर्ण शन्ति देगा। इस प्रकार हमारी प्रतिभाओं के सही उपयोग के माध्यम से हम खुद को एक सुनहरी श्रृंखला से उच्च दुनिया से जोड़ सकते है। यह सच्चा पवित्रीकरण है, संस्कार के लिये ईश्वर की इच्छा के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में दैनिक कर्तव्यों के हसमुख प्रदर्शन में शामिल है। COLHin 279.4

लेकिन मसीही किसी महान काम के लिये उन्हें लाने की प्रतीक्षा कर रहे है। क्योंकि वे जीवन के सामान्य कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाने में विफल होते है। ये उन्हें निर्बंध लगते है। दिन-प्रतिदिन के ईश्वर के अपनी आस्था दिखाने के लिये अवसर खो देते है। जब वे किसी महानकार्य की प्रतीक्षा कर रहे है तो जीवन बीत जाता है, इसके उद्देश्य प्रभावित हो जावे हैं इसका कार्य अस्वीकार्य हो जाते है। COLHin 279.5

प्रतिभाओं को वापिस किया गया

एक लम्बे समय के बाद उन सेवको के ईश्वर और उनके प्रतिध्वनि, जब प्रभु अपने सेवको का हिसाब लेता है तो हर प्रतिभा की वापसी की जांच की जायेगी। इससे किये गये कार्यकर्ता के चरित्र का पता चलता है। COLHin 280.1

जिन लोगों ने पांच और दो प्रतिभाये प्राप्त की है, वे प्रभु के उपहार में अपनी वर्षद्ध के साथ लौटाते है। ऐसा करने में वे अपने लिये कोई योग्यता नहीं होने का दावा करते है। उनकी प्रतिभा

वे है जो उन्हें वितरित की गई है, उन्होंने अन्य प्रतिभाओं को प्राप्त किया है, लेकिन जमा राशि को हासिल करने से कोई लाभ नहीं हो सकता है। वे देखते हैं कि उन्होंने केवल अपना कर्तव्य निभाया। पूंजी थी प्रभु का सुधार उसका है। यदि उद्धारकर्ता ने प्यार और अनुग्रह नहीं दिया, तो वे अनन्तकाल के लिये दिवालिये हो जाते है। COLHin 280.2

लेकिन जब गुरू को प्रतिभा प्राप्त होती है, तो वह श्रमिकों को मंजूरी देता है और पुरूस्कार देता है जेसे कि उनकी योग्यता है। उसका प्रतिज्ञान आनन्द और सन्तुष्टि से भरा है। वह इस बात से प्रसन्न होता है कि वह उन्हें आशीर्वाद दे सकता है। प्रत्येक सेवा और हर बलिदान के लिये उन्हें उनकी आवश्यकता होती है इसलिये नहीं कि यह ऐसा ऋण है, जो उनके अपर बकाया है, बल्कि इसलिये कि उनका हृष्दय प्रेम और कोमलता के साथ बह रहा है। "शाबाश! तुम भरोसे के लायक अच्छे दास हो, तुम थोड़ी सी वस्तुओं में वफादार रहे, मैं तुम्हें और अधिक अधिकार दूंगा, आओं और अपने पिता की प्रसन्नता में शामिल हो। COLHin 280.3

यह विश्वासयोग्यता ईश्वर के प्रति निष्ठा, प्रेममयी सेवा है, जो ईश्वरीय अनुमोदन को जीत लेती है। पवित्र आत्मा के प्यार प्रत्येक आवेग पुरूष को अच्छाई और ईश्वर की ओर अग्रसर करते है। जिसका उल्लेख स्वर्ग की पुस्ताकों में किया गया है। एक दिन ईश्वर का दिन है, जिसके माध्यम से उन्होंने जो काम किया है, उसकी प्रशंसा की जायेगी। COLHin 280.4

वे प्रभु के आनन्द मे प्रवेश करेगे, जैसे कि वे अपने राज्य में देखते है, जिन्हें उनके साधन के माध्यम से भुनाया गया है और उन्हें वहाँ उनके काम में भाग लेने का सौभाग्य मिला, क्योंकि उन्होंने यहाँ उनमें भाग लेकर इसके लिये एक फिटनेस प्राप्त की है। हम जो स्वर्ग में होंगे, वह इस बात का प्रतिबिंब है कि अब चरित्र और पवित्र सेवा में है। मसीह जिसने स्वयं से कहा, मनुष्य का पुत्र सेवकाई कराने नहीं आया परन्तु सेवा करने आया है। (मत्ती 20:28) यह पष्थ्वी पर उसका काम, स्वर्ग में उसका काम है और इस दुनिया में मसीह के साथ कार्य करने के लिये हमारा पुरूस्कार आने वाली दुनिया में उसके साथ काम करने की अधिक शक्तिशाली और व्यापक विशेषाधिकार है। COLHin 280.5

"तब जिसको एक तोड़ा मिला, उसने आकर कहा, हे स्वामी, मैं तुझे जानता था कि तू कठोर मनुष्य है, और जहाँ नहीं बोता वहाँ से बटोरता है। सो मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया, देख जो तेरा है, वह यह है।" COLHin 281.1

इस प्रकार पुरूष ईश्वर के उपहारों की उपेक्षा करते है। वे ईश्वर को गम्भीर और अत्याचारी के रूप में देखते है, जैसे कि उनकी गलतियों की जासूसी करने और उन्हें निर्णय के साथ देखने के लिये। वे उसे मांगने के लिये दोष लगाते है जो उसने कभी नहीं किया है जहाँ उसने नहीं बोया झूठा है। COLHin 281.2

ऐसे कई लोग है, जो अपने दिल में ईश्वर को एक कठिन स्वामी होने के कारण दोष लगाते है, क्योंकि वह अपनी सम्पत्ति और उनकी सेवा का दावा करता है। लेकिन हम ईश्वर के लिये कुछ भी नही ला सकते जो उसका है। "सभी वस्तुयें उसी से है" राजा दाऊद ने कहा "तेरा ही हमने तुझे दिया है। (1 इतिहास 29:14) सभी चीजे ईश्वर की है, ने सषष्ट से ही नहीं, बल्कि मुक्ति से भी। इस जीवन और में वाले जीवन के सभी आशीर्वाद को हमें कलवरी के कूस के साथ मुहर लगा दी है। इसलिये ये आरोप कि ईश्वर कठोर गुरू है, जहाँ उसने बोया नहीं है, झूठे हैं। COLHin 281.3

गुरू दुष्ट सेवक के आरोप से इन्कार नहीं करता, जैसा कि अन्यापूर्ण है, लेकिन उसे अपनी जमीन पर ले जाने से पता चलता है कि उसका आचरण बिना किसी बहाने के है। तरीके और साधन प्रदान किये गये, वे जिससे मालिक के लाभ में सुधार किया जा सकता था। "तूने कहा" उन्होनें कहा, "मेरे पैसे बदलने के लिये डाल दिया है और फिर मेरे आने पर मुझे अपना खुद का आश्रय प्राप्त करना चाहिये। COLHin 281.4

हमारे स्वर्गीय पिता को न तो इससे अधिक की आवश्यकता है और न ही उससे कम की हमे करने की क्षमता दी गई है। वह अपने नौकरी पर बोझ डालता है कि वे सहन नहीं कर पा रहे है। "वह हमारे फेम को जानता है, उसे याद है कि हम धूल है' (भजन संहिता 103:14)। दिव्य अनुग्रह के माध्यम से प्रदान कर सकते है। COLHin 282.1

"जिस किसी को भी बहुत कुछ दिया गया है, उससे वह बहुत कुछ की आवश्यकता होगी।" (लूका 1:48)। हमे व्यक्तिगत रूप से एक जोत से कम करने के लिये जिम्मेदार ठहराया जायेगा, जो हमारे पास करने की क्षमता है। प्रभु सेवा के लिये हर संभावना को सटीकता के साथ मापता है। क्षमताओं को अधिक से अधिक ध्यान में लाया जाता है जो कि बेहतर होती है। उन सभी के लिये जो हम अपनी प्रतिभा के सही उपयोग के माध्यम से बन सकते है जो हमें जिम्मेदार ठहराते हैं। हमे उसके अनुसार न्याय करना चाहिये जो हमने किया है, लेकिन पूरा नहीं किया है क्योंकि हमने अपनी शक्तियों का उपयोग ईश्वर की महिमा करने के लिये किया है। भले ही हम अपनी आत्माओं को न खोये। हम अपनी अप्रयुक्त तिभाओं का परिणाम अनन्तकाल में महसूस करेंगे। उन सभी ज्ञान और क्षमता के लिये जिन्हें हमने प्राप्त किया है और जो एक नुकसान होगा। COLHin 282.2

लेकिन जब हम अपने आप को ईश्वर के लिये पूरी तरह से देते है और हमारे काम में उनकी दिशाओं का पालन करते है तो वह अपनी उपलब्धि के लिये खुद को जिम्मेदार बनाता है। वह हमारे इमानदार प्रयासो की सफलता के रूप में हमें अनुमान नहीं लगायेगा। एक बार भी हमे असफलता के बारे में नहीं सोचना चाहिये। हम एक ऐसे व्यक्ति के साथ सहयोग करना चाहते है जो असफलता को जानता है। COLHin 282.3

हमे अपनी कमजोरी और अक्षमता की बात नहीं करनी चाहिये। यह परमेश्वर का प्रकट अविश्वास है, जो उसके वचन का खंडन है। जब हम अपने बोझ के कारण बड़ बड़ाते है या उन जिम्मेदारियों से इन्कार करते है, जिन्हें वह सहन करने के लिये कहता है, तो हम वास्तव में कह रहे है कि वह कठोर गुरू है, उसे वह करने की आवश्यकता है जो उसने हमे करने की शक्ति दी है। COLHin 282.4

दास सेवक की भावना हम अक्सर विनम्रता करते है। लेकिन सभी विनम्रता से कहते है जो कि व्यापक रूप से अलग है। विनम्रता के साथ कपड़े पहनने का मतलब यह नहीं है कि हम बुद्धि में बौने है, आकांक्षा में कमी है और अपने जीवन में कायरतापूर्ण, तेजस्वी बोझ की तरह हम उन्हें सफलतापूर्वक ताकत के आधार पर पूरा करते है। COLHin 282.5

परमेश्वर जिसके द्वारा काम करेगा, वह कभी-कभी सबसे बड़ा काम करने के लिये नम्र साधन का चयन करता है, क्योंकि उसकी शक्ति पुरूषों की कमजोरी के माध्यम से प्रकट होती है। हमारे पास मानक है, और इसके द्वारा हम एक बात को महान और दूसरे को छोटा बताते है, लेकिन ईश्वर हमारे नियम के अनुसार अनुमान नहीं लगाते है हम यह नहीं मान सकते है कि जो हमारे लिये महान है वह ईश्वर के लिये महान होना चाहिये या जो हमारे छोटा है वह उससे छोटा होना चाहिये। यह हमारी प्रतिभाओं पर निर्णय पारित करने या अपना काम चुनने के लिये हमारे साथ आराम नहीं करता है। हम उन बोझो को उठाने के लिये है जिन्हें परमेश्वर नियुक्ति करता है, हमारा कार्य, परमेश्वर को पूरे मनोभाव, हंसमुख सेवा द्वारा सम्मानित किया जाता है। वह प्रसन्न होता है जब हम कृतज्ञता के साथ अपने कर्तव्यों को पूरा करते है, यह मानते हुये कि हम उसके साथ सह—श्रमिक होने के योग्य है।

प्रतिभा हटायी

सुयोग्य सेवक के रूप में वाक्य, "इसलिये उससे प्रतिभा ले लो और उसे दे दे जो उस प्रतिभा यहाँ के रूप में वफादार के इनाम में, न केवल अंतिम निर्णय पर इनाम का संकेत दिया जाता है बल्कि कमिक इस जीव में प्रतिशोध की प्रक्रिया। COLHin 283.2

जैसा कि अध्यात्मिक दुनिया में स्वाभाविक है, उप्रयुक्त हर शकित क्षीण और क्षय होगी गतिविधि जीवन का नियम है। आलस्य मृत्यु है। "आत्मा की अभिव्यक्ति हर आदमी को लाभ कमाने के लिये दी जाती है।" (1 कुरिन्थियो 12:7)। दूसरों को आशीर्वाद देने के लिये नियुक्त, उसके उपहार बढ़ जाते है और अन्त मे वापिस ले लिये जाते है। वह जो उसे प्राप्त करने से इंकार करता है जो उसे प्राप्त होता है वह अन्त में पता चलता है कि उसके पास देने के लिये कुछ भी नहीं है। वह एक ऐसी प्रक्रिया के लिये सहमति दे रहा है जो निश्चित रूप से बौना है और अन्त में आत्मा के संकाओं को नष्ट कर देता है। COLHin 283.3

किसी को यह न माने कि वे स्वार्थ का जीवन जी सकते है, और फिर अपने अन्तर पर सेवा करते हुये, प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर, निस्वार्थ प्रेम की खुशी में वे भाग नहीं ले सकते थे। उन्हें स्वर्गीय अदालतों के लिये फिट नहीं किया जायेगा। वे प्रेम के शुद्ध वातावरण को सराहना नहीं कर सकते जो स्वर्ग में व्याप्त हो. स्वर्गदतों की आवाज और उनके वीणा के संगीत उन्हें सन्तुष्ट नहीं करते। उनके दिमाग में स्वर्ग का विज्ञान एक रहस्य के रूप में होगा। COLHin 284.1

महान फैसले के दिल, जो लोग साथ चले गये है, कोई जिम्मेदारी नही ले रहे है, खुद के बारे में सोचकर? खुद को प्रसन्न करते हुये उन सभी पष्थ्वी को न्यायधीशो के साथ रखा जायेगा। जिन्होने गुराई की। उन्हें वही निंदा मिलती है। COLHin 284.2

कई जो मसीही होने का दावा करते है, वे ईश्वर के दावों की उपेक्षा करते है, और फिर भी उन्हें ऐसा नहीं लगता है कि इसमे कोई गलत है। वे जानते है कि निन्दा करने वाला, हत्या करने वाला, व्यभिचारी, दंड का हकदार है, लेकिन वे सुसमाचार का प्रचार सुनना पंसद करते है, और इसलिये वे खुद को मसीही मानते हे। यद्यपि उन्होंने अपने जीवन को स्वयं के लिये खर्च करने में व्यतीत किया है, लेकिन वे उतना ही आश्चर्यचकित होगे इस वाक्य को सुनने को, जितना की विश्वासघात सुनने के लिये था, "उससे प्रतिभा ले ले" यहूदियो की तरह वे उनके द्वारा किये जाने उपयोग के लिये उनके आशीर्वाद का आनन्द लेने की गलती कर रहे है। COLHin 284.3

कई जो मसीही प्रयास से खुद बहाना करते है, वे काम करने के अपनी अक्षमता का अनुरोध करते है। लेकिन क्या ईश्वर ने उन्हें इतना असमर्थ बना दिया। नहीं कभी नहीं, यह अक्षमता है उनकी निष्क्रियता से उत्पन्न हुई है और उनकी जानबूझकर पंसद वे बनी हुई है। पहले से ही, अपने स्वयं के चरित्र में, अपने स्वयं के चरित्र में, वे वाक्य के परिणाम का एहसास कर रहे है, "उससे प्रतिभा ले लो।" उनकी प्रतिभा का लगातार दुरूपयोग उन्हें पवित्र आत्मा के लिये प्रभावशाली रूप से बुझा देगा, जो एक मात्र प्रकाश है। वाक्य "तुमे अप्राकतिक सेवक को बाहरी अंधकार में डाल देता है, स्वर्ग को मुहर को उस पसन्द पर निर्भर करता है जो उन्होंने स्वयं अनन्त काल के लिये बनायी थी। COLHin 284.4

अध्याय 26 - अधर्म के धन से मित्र

"यह अध्याय लूका 16:1-9 पर आधारित है।"

मसीह का आगमन गहन विश्वकाल के समय हुआ। पुरूष शाश्वत को लौकिक वर्तमान के मामलों के लिये भविष्य के दावों के अधीन कर रहे थे। वे प्रेम के लिये वास्तविकताओं के लिये प्रेत है। वे विश्वास के द्वारा अनदेखी और बड़े नहीं थे। शैतान ने उनके सामने इस जीवन की बातों का आकर्षक और सभी अवशोषित के रूप में प्रस्तुत किया और उन्होंने अपने प्रलोभनो को ध्यान में रखा। COLHin 285.1

मसीह इस आदेश को बदलने के लिये आया था। उन्होंने हिचखोले खाकर उन लोगो को मंत्रमुग्ध करने की जो बेखौफ उसे तोड़ा। अपने शिक्षण में उन्होंने स्वर्ग और पष्थ्वी के दावो को समायोजित करने की मांग की ताकि पुरूषों के विचारों को वर्तमान से भविष्य में बदल सके। समय की चीजो के अपने पीछे से, उन्होंने उन्हें अनन्तकाल के लिये प्रावधान करने के लिये बुलाया। COLHin 285.2

वहाँ एक एक आदमी था, उन्होंने कहा, जो एक डरा हुआ था, उसी पर आरोप लगाया कि उसने अपना माल बर्बाद कर दिया। अमीर आदमी ने इस नौकर के हाथो में अपनी सारी सम्पत्ति छोड़ दी, लेकिन नौकर बेवफा था और गुरू को यकीन था कि उसे व्यवस्थित रूप से लूटा जा रहा है। उन्होंने उसे अब अपनी सेवाये ना बनाये रखने का दष्ढ़ निश्चय किया COLHin 285.3

और उन्होंने अपने खेतो की जांच के लिये बुलाया। "यह कैसे है, "उन्होंने कहा, "कि मैं तुम्हारी यह बात सुनता हूँ। अपने भंडारीपन का हिसाब दो, क्योंकि हो सकता है कि तुम अब और भंडारी न रहोगे। COLHin 285.4

उसके सामने निर्वहन की संभावना के साथ, भंडारी ने अपनी पसन्द के लिये तीन रास्ते खोले । उसे श्रम, बिस्तर या भूखा रहना पड़ेगा। उसने खुद से कहा, "मैं क्या करूंगा, मेरे ईश्वर मुझसे भंडारीपन ले लेगा, मैं खुदाई नहीं कर सकता, भीख मांगने के लिये मैं शर्मिंदा हूँ। मुझे क्या करना जब मुझे भंडारीपन से निकाल दिया जायेगा। हो सकता है वो मुझे अपने घंटों काम करने के लिये ग्रहण करे। इसलिये उसने अपने प्रभु के एक कर्जदार को अपने पास बला लिया. पहले से कहा तझ पर प्रभ कितना कर्जा है। उसने कहा, तेल के एक सौ उपाय । उसने उससे कहा, यह खाता लो और इसमें पचास लिख दो। फिर उसने दूसरे कहा कि तेरा कितना कर्जा है? उसने कहा कि गेहूँ के सौ उपाय उसने उससे कहा ये खाता लेकर इसमे अस्सी लिख दें। COLHin 285.5

इस बेवफा सेवक ने अपनी बेइमानी में दूसरो को भी साझेदार बना दिया उसने उन्हें फायदा पहुंचाने के लिये अपने गुरू को धोखा दिया और अपने लाभ के लिये खुद को अपने घरो में एक दोस्त के रूप में प्राप्त करने के लिये दायित्व के तहत रखा। COLHin 286.1

“और प्रभु ने अन्यायपूर्ण भंडार की प्रंशसा क्योंकि उन्होंने बुद्धिमानी से काम किया था सांसारिक व्यक्ति ने उस आदमी की तीखेपन की प्रशंसा की जिसने उसे धोखा दिया था। लेकिन अमीर आदमी की प्रशंसा ईश्वर की प्रशंसा नहीं थी। COLHin 286.2

मसीह ने अन्यायपूर्ण भण्डार की प्रंशसा नहीं की, लेकिन उसने जो सबक सिखाने की इच्छा की, उसे स्पष्ट करने के लिये एक सुविख्यात घटना का उपयोग किया “अपने आप को दोस्तो को धन दौलत के अधर्म बनाओं” उन्होंने कहा “जब ये विफल हो जायेगे तो वे अपको अनन्त सारणी में प्राप्त कर सकते है। COLHin 286.3

सार्वजनिक और पापियों के साथ घुलने मिलने के लिये फरीसियों द्वारा उद्धारकर्ता को रोकने की कोशिश गयी। लेकिन उनके प्रति उनकी दिलचस्पी कम नही हुई और न ही उनके लिये उनके प्रयास बन्द हये। उन्होंने कहा कि उनका रोजगार उन्हें प्रलोभन में लाता है। वे बुराई के मोह से घिरे हुये थे। पहला गलत कदम आसान था और वंश तेजी से अधिक बेइमानी और बढ़ते अपराधो के लिये था। यीशु हर माध्यम से उन्हें उच्च उद्देश्यों और कुलीन सिद्धान्तो के लिये जीतना चाहते थे। यह उद्देश्य उनके मन में था। वहां लोगो के बीच बस एक ऐसा मामला था जो दष्टान्त ने दर्शाया गया था और मसीह के वर्णन में उन्होंने अपने स्वयं के अभ्यासो को मान्यता दी थी। उनका ध्यान आकर्षित किया गया था, और अपने स्वयं के बेइमान व्यवहार की तस्वीर से उनमे से कई ने आघात अध्यात्मिक सच्चाई का सबक सीखा। COLHin 286.4

हालांकि दष्टान्त में वह सीधे चेलो से बात करता था। उनके लिये सबसे पहले सत्य का रिसवा हुआ और उनके माध्यम से दूसरो तक पहुँचना था। मसीह के शिष्यो का अधिंकाश शिक्षण पहली बार में समझ नहीं आया था और अक्सर उनके पाठ लगभग भूल गये लगते थे। लेकिन पवित्र आत्मा के प्रभाव के बाद में सत्य अलग होने के पुर्नजीवित हो गये और शिष्यों के माध्यम से वे नये स्थांतरित होने से पहले पूर्ण रूप से कलीसिया में जुड़ गये। और उद्धारकर्ता फरीसियों से भी बात कर रहा था। उन्होंने इस आशा को त्याग नहीं दिया कि वे उनके बल का अनुभव करेगें। बहुतों को गहरा दोषी ठहराया गया था, और जैसे कि वो पवित्र आत्मा की आज्ञा तहत सच्चाई सुनते है, कुछ मसीह में विश्वासी नहीं बोलेगें। COLHin 287.1

फरीसियों ने उसे प्रचारकों और पापियों के साथ मिलन का आरोप लगाकर मसीह को तिरस्कार में करने की कोशिश की थी। अब वह इन आरोपो पर पलटवार करता है। सार्वजनिक रूप से उनके द्वारा किये जाने वाले दष्य्य को उन फरीसियों के समक्ष रखा गया है दोनो को अपनी कार्यवाही के पाठयक्रम का प्रतिनिधित्व करने के रूप में एक मात्र तरीका दिखाते है और जिसमें वे अपनी त्रुटियों को भुनाते है। COLHin 287.2

बेईमान भंडारी को उनके ईश्वर के समान परोपकारी उद्देश्यों के लिये सौंपा गया था लेकिन उसने उन्हें अपने लिये इस्तेमाल किया था। तो इजराएल के साथ, ईश्वर ने इब्राहीम का बीज चुना।

एक भुजा के साथ उन्होंने मिस्र में बंधन से छुड़ाया था। उसने उन्हें दुनिया के आशीर्वाद के लिये पवित्र सत्य का निक्षेपागार बना दिया था। उसने उन्हें जीवित परमेश्वर के वचन को सौंपा था कि वे दूसरों को प्रकाश संचार कर सकते है। लेकिन उनके भंडारी ने इन उपहारो का उपयोग खुद को समष्द्ध और उत्कष्ट बनाने के लिये किया था। COLHin 287.3

आत्म महत्व और आत्म-धार्मिकता से भरे फरीसी, अपनी महिमा का उपयोग करने के लिये ईश्वर द्वारा उधार दिये गये सामान का दुरूपयोग कर रहे थे। दष्टान्त में नौकर ने भविष्य के लिये कोई प्रावधान नहीं किया था। अपने द्वारा उपयोग के बारे में सोचा था। जब उससे भंडारीपन लिया जायेगा तो उसके पास कुछ भी नहीं रहेगा। लेकिन उसके मालिक का माल अभी भी उसके हाथों में था। और उसने उन्हें इस्तेमाल करने के लिये निर्धारित किया, ताकि भविष्य के खिलाफ खुद को सुरक्षित कर सके। इसे पूरा करने के लिये उसे एक नई योजना पर काम किया। खुद को पाने के लिये उसे दूसरों को संस्कारित करना चाहिये । इस प्रकार वह दोस्तों को सुरक्षित कर सकता है, जिन्हें जब उसे बाहर निकाला जाये तो वह उसे प्राप्त करेगा। ऐसा फरीसियों के साथ भी था। उनसे लेने के लिये नेतष्व और भविष्य के लिये प्रदान करने के लिये कहा जाता है। केवल दूसरों की भलाई चाहने से वे खुद को लाभान्वित कर सकते थे। वर्तमान जीवन काल में केवल ईश्वर के उपहार प्रदान करने से वे अनन्त काल के लिये प्रदान कर सकते है। COLHin 287.4

दष्टान्त से संबंधित होने के पश्चात मसीह ने कहा, "इस जगत के बच्चे प्रकाश के बच्चो की तुलना में अपनी पीढ़ी के समझदार है' यह सांसारिक समझदार पुरूष स्वयं की सेवा में ईश्वर की सेवा करने वाले बच्चो की तुलना में स्वयं की सेवा करने में अधिक ज्ञान और ईमानदारी प्रदर्शित करते है। COLHin 288.1

तो यह मसीह के दिन में था तो अब यह है। कई लोगों के जीवन को देखो जो मसीही होने का दावा करते है। प्रभु ने उन्हें क्षमताओं, और शक्ति और प्रभाव के साथ संपन्न किया है, उसने उन्हें पैसे सौंपे है कि वे बड़े उद्धार में उनके सह-चालक संचालक हो सकते है। उनके सभी उपहारों का उपयोग मानवता को आशीर्वाद देने में किया जाता है, दुख और जरूरतमंदों को राहत देने में। हम भूखे को खाना खिलाना चाहते है, नग्न को कपड़े उढ़ाना चाहते है, विधवा को और पितृहीन की देखभाल करना चाहते है, व्यथित और दलितों की सेवकाई करना चाहते है। ईश्वर का मतलब कभी नहीं था कि दुनिया में व्यापक दुख मौजूद होना चाहिये। उनका कभी यह मतलब नही था कि एक आदमी के पास जीवन की विलासिता को बहुतायत होनी चाहिये, जबकि दूसरों के बच्चे रोटी के लिये रोते है। जीवन की वास्तविक आवश्यकताओं के ऊपर के साधन मनुष्य को अच्छाई करने, मानवता को आशीर्वाद देने के लिये सौंपे जाते है। प्रभु कहता है, "जो तुझे है, बेच दे और दान कर दो" (लूका 12:33) । वितरित करने के लिये तैयार रहे, संवाद करने के लिय तैयार रहे।" (1 तीमुथियुस 6:18) । "जब तुम एक दावत बनाते हो तो उन्हे कपड़े से ढक दो।' पीड़ित आत्मा को सन्तुष्ट करें। (यशायाह 58:6, 7,10) "तुम सब संसार में जाओं और प्रत्येक प्राणी को सुसमाचार

का प्रचार करो। (मरकूस 16:15)। ये प्रभु के आदेश है। क्या यह काम करने वाले मसीहों के महान शरीर है। COLHin 288.2

काश, कितने खुद को ईश्वर के उपहार के लिये तैयार कर सकते। कितने घर-घर जोड़ रहे है और जमीन से जमीन तक। कितने लोग आनन्द के लिये अपना पैसा खर्च कर रहे हैं, भूखे के सन्तुष्टि के लिये, असाधारण घरो, फर्नीचर और पोशाक के लिये। उनके साथी बिमारी और मौत के लिये दुख और अपराध के लिये छोड़ दिये जाते है। एक दयालु रूप, एक शब्द या सहानुभूति के विलेख के बिना बहुरूपताये खत्म हो रही है। COLHin 289.1

पुरूष ईश्वर के प्रति लूट का दोषी है। साधनों का उनका स्वार्थी उपयोग उस महिमा के ईश्वर को लूटता है जिसे पीड़ित मानवता आत्माओं को उद्धार की राहत में उसे वापिस परिलक्षित किया जाना चाहिये। वे उसके सौंपे गये सामान का गवन कर रहे है। प्रभु घोषणा करता है, “मैं तुम्हारे न्याय करने के लिये निकट आता हूँ और मैं उसके खिलाफ एक तेज गवाह बन जाता हूँककृकृजो अपने वेतन विधवा और पिताविहीन लोगों के किराये पर रखने पर अत्याचार करते है और वह अजनबी को अपने अधिकार से अलग कर देता है। “क्या एक आदमी ईश्वर की लूट लेता है? फिर मुझे लूट लिया है। परन्तु तुम कहते हो कि हमने तुम्हें कहां से लूटा है? दशमोश और उठाने के भेटो में। तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो, वरन् सारी जाति ऐसा करती है। (मलाकी 3:5,8,9)। “हे धनवानो सुन लो, तुम अपने आने वाले क्लेशों पर चिल्ला-चिल्लाकर रोओगे। तुम्हारा धन बिगड़ गया और तुम्हारे बस्त्रों को कीड़े खा गये। तुम्हारे सोने-चांदी मैं काई लग गयी है और वह काई तुम पर गवाही देगी और आग की नाई तुम्हारा मांस खायेगी तुम ने अन्तिम युग में धन बटोरा है। तुम पृथ्वी पर भोग-विलास में लगे रहे और बड़ा ही सुख भोगा। तुम ने इस वंध न के दिन के लिये अपने हृदय का पालन पोषण करके मोटा ताजा किया। देखो जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेत काटे, उन की वह मजदूरी जो तुम ने ६ गोखा देकर रख ली है, चिल्ला रही है, और लदने वालो की दोहाइी, सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुंच गई है। (याकूब 5:13,54) COLHin 289.2

सभी को अपने सौंपे गये उपहारों को प्रदान करना आवश्यक होगा। अंतिम निर्णय के दिन में पुरूषों की जमा की गई सम्पत्ति उनके लिये बेकार हो जायेगी। उनके पास कुछ भी नहीं है जिसे वे अपना कह सकते है। COLHin 290.1

जो लोग शब्दमयी रखने में अपना जीवन बिताते है, वे अपने शाश्वत सहयोग के लिये कम बुद्ध, कम विचार और अपनी शाश्वत भलाई की परवाह करते है। अपनी पीढ़ी में इस दुनिया के बच्चे की तुलना में कम समझदार ये प्रकाश के पेशेवर बच्चे है। ये वह है जिनमें से भविष्यवकता ने महान निर्णय दिवस की अपनी दृष्टि में घोषित किया। उस दिन लोग अपनी चांदी सौने की मूरतों को जिन्हें उन्होंने दण्डवत करने के लिये बनाया था, छछून्दरों और चमगादड़ों के आगे फेंकेगे और

जब यहोवा पृथ्वी को कम्पित करने लिये उठेगा तब वे उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे चट्टानों की दरारों और पहाड़ियों के छेदों में घुसेगें। (यशायाह 2:20,21) COLHin 290.2

धन-दौलत के अधर्मियों को दोस्त बनाये, "मसीह कहते है। जब यह विफल हो जायेगा, तो वे आपको अनन्त झांकी में प्राप्त कर सकते है।" ईश्वर, मसीह और स्वर्गदूत सभी पीड़ितो और पीड़ा के प्रति मंत्रणा कर रहे है, पापी अपने आप को इस काम के लिये ईश्वर को देता है, इस उद्देश्य के लिये उसके उपहार का उपयोग करें और आप स्वर्गीय प्राणियों के साथ साझेदारी में प्रवेश करे। आपका दिल उनके साथ सहानुभूति में धड़कता है। आपके चरित्र में उनके लिये आत्मघात किया जायेगा। अनन्त झांकी अजनबियों की नहीं होगी। जब सांसारिक चीजे समाप्त हो जायेगी, स्वर्ग के द्वार पर पहरेदार आपका स्वागत करेगे। और दूसरों को आशीर्वाद देने के लिये उपयोग किया जाने वाला साधन रिर्टन लायेगें। सही ढंग से नियोजित धन बहुत अच्छा पूरा करेगा। मसीह पर आत्माओं को जीता जायेगा। वह जो मसीह के जीवन की योजना अनुसरण करता है, वह ईश्वर के दरबार में उन लोगो को देखेगा जिनके लिये उसने धरती पर श्रम और बलिदान किया है। कष्तज्ञता से उन लोगों को याद किया जायेगा जो उनके उद्धार में सहायक रहे है। पष्थ्वी को बचाने के काम में वफादार रहे लोगो के लिये कीमती स्वर्ग बनाओ। COLHin 290.3

इस दष्टान्त का पाठ सभी के लिये है। मसीह के द्वारा दी गई कष्पा के लिये सभी को जिम्मेदार ठहरा जायेगा, लौकिक या सांसारिक मालों में लीन होने के लिये जीवन बहुत गम्भीर है। प्रभु की इच्छा है कि हम दूसरों से संवाद करें जो कि अनन्त और अनदेखे हम से संवाद करते है। COLHin 291.1

हर साल लाखों मानव आत्मायें अनन्त काल तक बिना चेतावनी और बगैर बचाये रहे है हमारे विविध जीवन के अवसरों घंटे-घंटे से आत्मा तक पहुँचाने और बचाने के अवसर हमारे लिये खुले है। यह अवसर लगातार आते और जाते रहते है। परमेश्वर हमें उनमे से सबसे ज्यादा बनाने की इच्छा रखता है। दिन, सप्ताह और महीने गुजर रहे हैं, हमारे पास एक दिन, एक महिना कम है जिसमें हमे अपना काम करना है। सबसे लम्बे समय तक कुछ साल और आवाज जिसे हम जवाब देने से इन्कार नहीं कर सकते है, यह कहते हुये सुना जायेगा, "अपने हिसाब का हिसाब दो।" COLHin 291.2

मसीह हर एक पर विचार करने के लिये कहता है एक इमानदार गणना करें। एक पैमाने पर रखो, यीशु जिसका अर्थ है अनन्त खजाना, जीवन सत्य, स्वर्ग और आत्माओं में मसीह का आनन्द, दुनिया की पेशकर कर सकते है हर आकर्षण में डाल दिया। एक पैमाने में अपनी आत्मा की हानि और उन लोगो की आत्माये, जिन्हें आप बचाने में सहायक रहे है, दूसरे में अपने लिये और उनके लिये, एक जीवन जो ईश्वर के जीवन के साथ मापता है। समय के लिये और अनन्त काल के लिये तौलना जब आप इस प्रकार लगे हुये होते है, तो मसीह बोलता है, "इससे मनुष्य का क्या लाभ

होगा, यदि प्रकार लगे हुये होते है, तो मसीह बोलता है, “इससे मनुष्य को क्या लाभ होगा, यदि वह पूरी दुनिया को प्राप्त करेगा और अपनी आत्मा को खो देगा। (मरकुस 8:36)। COLHin 291.3

ईश्वर हमे सांसारिक स्थान पर स्वर्गीय रूप से चुनने की इच्छा रखते है। वह हमारे सामने एक-एक स्वर्गीय निपेश की प्रतिज्ञाये खोलता है। वह हमारी पसन्द को सबसे सुरक्षित उद्देश्य, हमारी पसन्द के खजाने को सुरक्षा प्रदान करेगा। वह घोषणा करता है, “मैं आदमी को बढ़िया सोने से ज्यादा कीमती बनाऊंगा, यहाँ तक कि औंकार के सुनहरे किनारे से भी बड़ा आदमी।” (यशायाह 1:1) जब धन का नाश कीड़े करते है, और जंग के गलियारे बहने लगते है तो मसीह के अनुयायी अपने स्वर्गीय खजाने में आनन्दित हो सकते है, जो धन असंगत है। COLHin 291.4

दुनिया की सभी दोस्ती से बेहतर है मसीह की छुड़ाई हुई दोस्ती। पष्थ्वी पर रइसों के महल की उपाधि से बेहतर है कि हमारे प्रभु जिस भवन को तैयार करन के लिये गये है। वे वहाँ पर है। और सांसारिक प्रशंसा के सभी शब्दों से बेहतर उनके वफादार सेवकों को उद्धारकर्ता के शब्द होगे। तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालो से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ उस राज्य के अधिकारी हो जाओं, जो जगत के आदि से तम्हारे लिये तैयार किया है। (मत्ती 25:34) COLHin 292.1

उन लोगों के लिये, जिन्होंने अपने माल को खत्म कर दिया है, मसीह अभी भी स्थायी धन को सुरक्षित करने का अवसर देता है। “दिया करो, तो तुम्हे भी दिया जायेगा।” “और अपने लिये ऐसे बटुएं बनाओं, जो पुराने नहीं होते, अर्थात स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता और कीडा नहीं खराब करता। (लूका 6:38, 12:33)। “इस संसार के धनवानों को आज्ञा देकृकृकि वे भलाई करे और भले कामों में धनी बने, और उद्धार और सहायता देने में तत्पर हो। और आगे के लिये एक अच्छी नीव डाले कि सत्य जीवन को वश में कर ले। (1 तिमिथियुस 6:7-9) COLHin 292.2

फिर अपनी सम्पत्ति को पहले से स्वर्ग में जाने दे। ईश्वर के सिंहासन के बगल में अपने खजाने को रखे। सुनिश्चित करें कि आपका नाम मसीह के बेशुमार धन के लिये है। “अपने आपको अनीति के धन दौलत के माध्यम से दोस्त बनाये कि जब यह विफल हो जायेगा तो वे आपको अनन्त मंदिर में प्राप्त कर सकते है। COLHin 292.3

अध्याय 27 - कौन मेरा पड़ोसी है

"यह अध्याय लूका 10:25—37 पर आधारित है"

यहूदियों में यह प्रश्न था, "मेरा पड़ोसी कौन है?" अंतहीन विवाद का कारण बना। उन्हें तपस्वी और सामरी लोगों के रूप में कोई सन्देह नहीं था। ये अजनबी और दुश्मन है। लेकिन अपने ही राष्ट्र के लोगों और समाज के विभिन्न वर्गो के बीच का अन्तर कहाँ होना चाहिये? पड़ोसी के रूप में पुजारी, रब्बी, बड़े, किससे सम्बन्ध रखना चाहिये? उन्होंने खुद को शुद्ध बनाने के लिये कई समारोहो में अपना जीवन बिताया। अज्ञानी और लापरवाह भीड़ के साथ सम्पर्क, उन्होंने सिखाया, विकृति का कारण होगा जिसे हटाने के लिये पहनने का प्रयास की आवश्यकता होगी। क्या वे "अशुद्ध पड़ोसियों के रूप में मानते थे? COLHin 293.1

अच्छे सामरी के दष्टान्त में यीशु मसीह का प्रश्न उसने दिखाया कि हमारे पड़ोसी का मतलब चर्च, या आस्था से नहीं है, जिसके हम है। इसमे नस्ल, रंग या वर्ग भेद का संदर्भ नहीं है। हमारा पड़ोसी हर वह है जो जिसे हमारी सहायता की आवश्यकता है। हमरा पड़ोसी वो है जो घायल और चोटिल हुआ अपने दुश्मन के कारण हमारा पड़ोसी वो है जो ईश्वर की सम्पत्ति है। COLHin 293.2

अच्छे सामरी के दष्टान्त को कानूनू के एक चिकित्सक द्वारा मसीह के सामने रखे गये प्रश्न के लिये कहा गया। जेसे कि उद्धारकर्ता सिखा रहा था, "एक निश्चित वकील खड़ा हो गया और उसकी परीक्षा लेने के लिये उससे पूछा, "गुरू मैं अनन्त जीवन पाने के लिये क्या करूं? फरीसियो ने वकील को यह प्रश्न इसलिये सुझाया था कि वे मसीह को उसके शब्दों में उलझा सकें और के उसके उत्तर के लिये उत्सुकता से सुनते रहे। लेकिन उद्धारकर्ता बिना किसी विवाद के नहीं पड़ा लेकिन उसे प्रश्नकर्ता से उत्तर की आवश्यकता थी और उसने उससे कहा, "कानून में क्या लिखा है? तुम इसमे क्या पढ़ते है? यहूदियो ने अभी भी यीशु पर सिने से दिये गये कानून के बारे में हल्के ढंग से आरोप लगाया था, लेकिन उसने परमेश्वर के आदेशों को रखने पर सवाल करने के प्रश्न बदल दिये। COLHin 293.3

वकील ने कहा, "तुम अपने ईश्वर को दिल से प्यार करो, अपनी सारी आत्मा से, अपनी सारी शक्ति से और अपने सारे मन से और अपने पडोसी से भी अपने जैसे प्यार करो। "तने सही उत्तर दिया है, मसीह ने कहा, "ऐसे ही करो, तो तू जीवित रहेगा।" COLHin 294.1

वकील फरीसियों की स्थिति और कार्यो से सन्तुष्ट नहीं था। वह अपने वास्तविक अर्थ को जानने की इच्छा के साथ शास्त्रों का अध्ययन कर रहा था। उन्हें इस मामले में एक महत्वपूर्ण दिलचस्पी थी और उन्होंने इमानदारी से पूछा, "मैं क्या करूं?" इस उत्तर में कानून की आवश्यकताओं के अनुसार वह सभी औपचारिक और कर्म कांडो के उपदेशो से गुजरता था। इनके लिये उन्होंने कोई मूल्य नहीं होने का दावा किया,? लेकिन उन दो सिद्धान्तों को प्रस्तुत

किया, जिन पर सभी कानून और भविष्यवकता विश्वास करते थे। इस उत्तर के उद्धारकर्ता की प्रशंसा ने उन्हें पुराने जमीन पर रब्बियों के साथ रखा। वे इसे मंजूरी देने के लिये निंदा नहीं कर सकते, जो कानून के एक निष्पादक द्वारा उन्नत किया गया था। COLHin 294.2

"ऐसे करो और तुम जीवित रहोगे, मसीह ने कहा, अपने शिक्षण में उन्होंने कभी भी एक दिव्य एकता के रूप में कानून प्रस्तुत किया, ये दिखाते हुये कि एक उपदेश रखना है और दूसरे को रोटी देना असंभव है एक ही सिद्धान्त के लिये सभी के माध्यम से चलाता है। मनुष्य का भाग्य पूरे कानून का पालन करेगा। COLHin 294.3

_ मसीह जानता था कि कोई भी इस ताकत से बोये गये कानून का पालन नहीं कर सकता। उन्होंने वकील को स्पष्ट और अधिक महत्वपूर्ण शोध के लिये नेतृत्व करने की इच्छा व्यक्त की जो उन्हें सच्चाई के विषय में बता सके। केवल मसीह के गुण और अनुग्रह को स्वीकार करके हम कानून रख सकते है। पाप में रहते हुये विश्वास के द्वारा आदमी अपने पूरे दिल से ईश्वर और पड़ोसी को प्यार करने में सक्षम बनाता है। COLHin 294.4

वकील जानता था कि उसने न तो पहले चार और न ही आखिरी छः आज्ञाऐं रखनी है। उसे, मसीह के शब्दों के तहत दोषी ठहराया जाता, लेकिन उसने पाप को कबूल करने के बजाय बहाना बना दिया। सच्चाई को स्वीकार करने के बजाय उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया कि आज्ञा को पूरा करना कितना कठिन है। इस प्रकार उन्होंने दोनो को विश्वास दिलाने और लोगों को नजरो में खुद को ढालने की उम्मीद की। उद्धारकर्ता के शब्दों से पता चला था कि उसका प्रश्न अनावश्यक था, क्योंकि वह स्वयं इसका उत्तर देने में सक्षम था। फिर उसने एक और प्रश्न रखा, "मेरा पड़ोसी कौन है? COLHin 295.1

फिर से मसीह में विवाद में शामिल होने से इन्कार कर दिया। उन्होंने एक घटना से सम्बन्धित प्रश्न का उत्तर दिया जिसकी स्मृति उनके श्रोताओं के मन में ताजा थी। "एक आदमी, "उन्होंने कहा, "येरूशेलेम से यरीहो के लिये जा रहा था और चोरो ने पकड़कर उसे मारा और घायल करके अधमरी हालत में छोड़ कर चले गये।" COLHin 295.2

येरूशेलेम से यरीहो को यात्रा मे, यात्री को यहूदियो की खस्ता हालत के एक हिस्से से होकर गुजरना पड़ा। सड़क सुनसान बहुत पथरीली और मार्ग उबड़-खाबड़ था जो कि लुटेरो से प्रभावित था और अक्सर यही पर हिंसा होती रहती थी यहाँ तक की यात्री पर हमला किया जाता था और उसे अधमरा करके उससे सब कुछ छीन कर सड़क पर घायल अवस्था में छोड़ दिया। जब एक याजक उस मार्ग से गया उसने बिना किसी सहायता के उसे उसी हालत में छोड़ दिया। और दूसरी तरफ से गुजर गया। तभी एक लेवी प्रकट हुआ। यह जानने के लिये उत्सुक था कि क्या हुआ था, वह रूक गया और पीड़ित को देखा। उसे दोषी ठहराया गया, उसे मालूम था कि क्या करना चाहिये, लेकिन उसके लिये ये मुमकिन नहीं। उसने चाहा कि अगर वो इधर न आता तो इस घायल

को नहीं देख पाता। उन्होंने खुद को समझा दिया कि यह मामला उनकी चिंता का विषय नहीं है, और वह भी "दूसरी तरफ से गुजर गये।" COLHin 295.3

लेकिन उसी सड़क पर यात्रा कर रहे एक सामरी ने पीड़ित को देखा, और उसने ऐसा काम किया कि दूसरों ने करने से मना कर दिया। सज्जनता और दया के साथ उन्होंने घायल व्यक्ति की सेवा की। "जब उसने उसे देखा, तो वह उस पर दया कर रहा था और उसे पास गया और घावों को बांध दिय, तेल और शराब डालकर और अपने ही जानवर पर लिटा दिया और एक सराय मे ले आया और उसकी देखभाल की" जब वह जाने लगा अगले दिन तो उसने दो मुद्राये निकली और उन्हें मेजबान को दिया और उससे कहा कि उसकी देखभाल करो और जो भी तुम अधिक खर्च करते हो, जब मैं फिर आऊंगा तो मैं तुम्हें चुकाऊंगा। पादरी और लेबी दोनो ने धर्मनिष्ठता का परिचय दिया, लेकिन सामरी ने दिखाया कि वह वास्तव में परिवर्तित हो गया है। यह उसके लिये याजक और लंबी की तुलना में काम करने के लिये अधिक सहमत है लेकिन आत्मा और कार्यो में उसने खुद को ईश्वर के साथ समंजस्य स्थापित करने के लिये साबित किया। COLHin 295.4

इस पाठ देने में मसीह ने कानून के सिद्धान्तों को एक प्रत्यक्ष, जबरन तरीके से प्रस्तुत किया, अपने श्रोताओं को दिखाते हुये कि उन्होंने इन सिद्धान्तों को निभाने के लिये उपेक्षा की थी। उनके शब्द इतने निश्चित थे और इशारा करते थे कि श्रोताओं को झूठा इल्जाम लगाने को कोई अवसर नहीं मिल सकता था। मसीह के संबंध में उनका पूर्वाग्रह हटा दिया गया था। लेकिन उन्होंने सामरी को नाम से श्रेय देने के लिये अपनी राष्ट्रीय नापसन्द को पर्याप्त रूप से दूर नहीं किया। जब मसीह ने पूछा "इन तीनों में कौन सबसे बड़ा पड़ोसी था, उस व्यक्ति का जो चोरो द्वारा घायल किया था। उसने उत्तर दिया, "वो जिसने उस पर दया दिखायी। COLHin 296.1

"तब यीशु ने उससे कहा, जाओ और इसी प्रकार करो।" जरूरमन्दों को भी यही नम्रता दिखाओं। इस प्रकार आप सबूत देगे कि पूरे कानून को बनाये रखते है। यहूदियों और सामरियों के बीच बहुत बड़ा अन्तर धार्मिक विश्वास में था एक सवाल यह है कि सच्ची आराधना का क्या मतलब है। फरीसियों ने कहा कि सामरियों के बीच इतनी मजबूत दुश्मनी थी कि सामरी स्त्री को मसीह के लिये उसे एक पेय के लिये पूछना एक अजीब बात लगती थी। "यह कैसे है, "उसने कहा, "तू एक यहूदी होने के नाते, मुझसे पानी मांगता है, मैं सामरियां की स्त्री हूँ"? फिर "इंजीलवाद को जोड़ता है, "यहूदियो का सामरिया के साथ कोई व्यवहार नहीं है। (यहून्ना 4:9) और जब यहूदी मसीह के प्रति इतनी घष्णा से भरे हुये थे कि वे मंदिर में उस पर पत्थरबाजी करने के लिये उठे, तो उन्हें इससे बेहतर कोई शब्द नहीं मिला, जिससे वे अपनी घष्णा व्यक्त कर सकें। "हम अच्छी तरह से नहीं कहते कि तू एक सामरी है और जल्दबाजी करने के लिये उठे, तो उन्हें इससे बेहतर कोई शब्द नही मिला, जिससे वे अपनी घष्णा व्यक्त कर सके, "हम अच्छी तरह से नहीं कहते कि तू एक सामरी है और जल्दबाजी करता है, "शैतान' (यहून्ना 8:46)। फिर भी याजक

और लेवी ने उन कामों की उपेक्षा की जो प्रभु ने उन पर लागू किये थे अपने ही देशवासियों में से एक के लिये घष्णा करने वाले सामरी को छोड़ दिया था। COLHin 296.2

सामरी ने यह आज्ञा पूरी की, "तुम? अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो' इस प्रकार यह दर्शाता है कि वह उन लोगों से अधिक धर्मी था, जिनके द्वारा उसने निन्दा की है। अपनी जान जोखिम में डालकर उन्होने घायल व्यक्ति को अपना भाई माना था। यह सामरी मसीह का प्रतिनिधित्व करता है। हमारा उद्धारकर्ता हमारे लिये एक ऐसा प्रेम प्रकट करता है जो प्रेम करने वाला कभी नहीं कर सकता। जब हम घायल है तो वो हम पर दया कर रहा था। उसने हमे दूसरी तरफ से नहीं छोड़ा और ना ही हमे छोड़ा, न असहाय छोड़ा। वह अपने पवित्र और सुखी घर में नहीं रहा जहाँ वह सभी जजमानों का प्रिय था। उन्होंने हमारी व्यवस्था की आवश्यकता को स्वीकार किया, उन्होंने हमारे मामले को आगे बढ़ाया और मान्यताओं को लोगो के साथ उनके अन्तर की पहचान की। वह अपने दुश्मन को बचाने के लिये मर गया। उन्होंने अपने हत्यारों के लिये प्रार्थना की। अपने स्वयं के उदाहरण को इंगित करते हुये वह अपने अनुयायियों से कहा है, कि मैं तुम्हे आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो।' (यहून्ना 15:17, 13:34) COLHin 297.1

याजक और लेवी उस आराधनालय अराधाना के लिये गये थे जिसकी सेवा में भाग लेने के लिये महान और विशेषाधिकार और याजक और लेवी ने महसूस किया कि इस तरह से सम्मानित किया गया था, यह सड़क के किनारे एक अज्ञात के लिये सेवा करने उनके लिये नीचा काम था। COLHin 297.2

इस प्रकार उन्होंने उस विशेष अवसर की उपेक्षा की जिसे ईश्वर ने उन्हें अपने ऐजेंटो के रूप में एक साथी को आशीर्वाद देने के लिये पेश किया था। COLHin 297.3

आज कई लोग ऐसी गलती कर रहे है। वे अपने कर्तव्य को अलग-अलग वर्गों में विभाजित करते है। एक वर्ग ईश्वर की व्यवस्था द्वारा विनियमित होने वाली महान चीजों से बना है। अन्य वर्ग तथा कथित छोटी चीजो से बना है, जिसे में आदेश "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर को नजर अंदाज कर दिया जाता है। काम के उस क्षेत्र को झुकाव आवेग या आवेग के अधीन छोड़ दिया जाता है। चरित्र विवाहित है और मसीह के धर्म को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है। COLHin 297.4

ऐसे लोग है जो मानवता को पीड़ित करने के लिये अपनी गरिमा को कम करने लिये इसे काम करते हैं। कई लोग उदासीनता के साथ देखते हैं और उन लोग पर अवमानना करते है जिन्होंने आत्मा के मंदिर को खंडहर मे डाल दिया है। दूसरे लोग एक अलग मकसद से गरीबों की उपेक्षा करते हैं। वे काम कर रहे हैं, जैसे कि वे मानते है, मसीह के कारण में कछ योग्य उद्यम बनाने की मांग कर रहे है। उन्हें लगता है कि वे एक महान काम कर रहे है, और वो जरूरतमन्दों और सकटग्रस्त लोगों की अच्छाई पर ध्यान नहीं दे सकते। अपने कथित महान कार्य को आगे

बढ़ाने में वे गरीबों पर अत्याचार कर सकते है। वे उन्हें कड़ी मेहनत और कोशिश कर रहे परिस्थितिथियों में रख सकते हैं, उन्हें उनके अधिकारो से वंचित करेगे या उनकी जरूरतो की उपेक्षा करेगे। फिर भी उन्हें लगता है कि यह सब उचित है क्योंकि वे जैसा सोचते है, मसीह के कारणों को आगे बढ़ाते है। COLHin 298.1

कई लोग किसी भाई या पड़ोसी को प्रेरित प्रतिकूल परिस्थितियों में सघर्ष करने की अनुमति देगे। क्योंकि वे मसीही होने का दावा करते है, उन्हें यह सोचने के लिये प्रेरित किया जा सकता है कि उनके ठंडे स्वार्थ में वे मसीह का प्रतिनधित्व कर रहे है। क्योंकि प्रभु के सेवक उनके साथ सहयोग में नहीं है, ईश्वर का प्रेम, जो उनके साथ है, अपने साथी पुरूषों से काफी हद तक कटे हुये है। और मानव उदय और मानव होठों से प्रशंसा और धन्यवाद का एक राजस्व ईश्वर को वापस करने से रोका जाता है। उनके पवित्र नाम के कारण उनकी महिमा लुट गयी । वह उन आत्माओं को लूटता है जिनके लिये मसीह की मष्त्यु हो गयी हे, आत्मायें जिन्हें वह अंतहीन युगों के माध्यम से अपनी ही उपस्थिति में रहने के लिये अपने राज्य में लाने की लालसा रखता है। COLHin 298.2

दैवीय सत्य दुनिया पर बहुत कम प्रभाव डालता है जब उसे हमारे अभ्यास के माध्यम से बहुत प्रभाव डालना चाहिये । धर्म का एक मात्र पेशा घष्णा करना है, लेकिन इसका वजन बहुत कम है। हम मसीह के अनुयायी होने का दावा कर सकते है। हम परमेश्वर के वचन में प्रत्येक सत्य को मानने का दावा कर सकते है, लेकिन यह हमारे पड़ोसी को तब तक अच्छा नहीं लगेगा जब तक कि हमारा विश्वास हमारे दैनिक जीवन में न हो। हमारा पेशा स्वर्ग जितना ऊचा हो सकता है, लेकिन जब तक हम मसीही नहीं होगे तब तक न तो खुद को और न ही अपने साथी लोगो को बचा पायेगें। एक सही उदाहरण हमारे पेशो की तुलना में दुनिया को लाभ पहुंचाने के लिये अधिक करेगा |भा किसी भी स्वार्थी अभ्यास के द्वारा मयीह के कारण की सेवा नहीं की जा सकती है। उसकी कारण शोषितों और गरीबों का कारण है। उनके पूर्व अनुयायियों के दिलों में मसीह की कोमल सहानुभूति आवश्यकता है-उन लोगों के लिये एक गहरा प्यार, जिनके बारे में उन्हें इतना विश्वास है कि वे अपने उद्धार के लिये अपना जीवन दे देते है। यह आत्माएँ अनमोल रूप से अनमोल है जो किसी अन्य पेशकश की तुलना में ईश्वर को ला सकते है। हर उर्जा को कुछ स्पष्ट रूप से महान काम की ओर मोड़ने के लिये, जब कि हम जरूरतमन्दों की उपेक्षा करते है या अजनबी को उसे दाई और से मोड़ते है, यह एक ऐसी सेवा नहीं है जो उसकी स्वीकृति को पूरा करेगी। COLHin 298.3

पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा आत्मा की पवित्रता मानवता में मसीह के स्वभाव का आरोप है। सुसमाचार धर्म जीवन में मसीह है-एक जीवित, सक्रिय सिद्धान्त । यह चरित्र मसीह की कष्पा है और अच्छे कामों में निहित है। सुसमाचार के सिद्धान्त को व्यवहारिक जीवन के किसी भी विभाग से अलग नहीं किया जा सकता है। मसीही अनुभव और श्रम की प्रत्येक पंक्ति मसीह के जीवन का प्रतिनिधित्व करना है। COLHin 299.1

प्रेम ईश्वरतव का आधार है जो भी पेशा है, किसी भी व्यक्ति को ईश्वर से शुद्ध प्रेम नहीं है जब कि उसे अपने भाई के लिये निःस्वार्थ प्रेम न हो। लेकिन हम दूसरों को प्यार करने की कोशिश करके इस भावना के कब्जे में कभी नहीं आ सकते है। जरूरत है मसीह का प्यार हृदय में लाने की। जब स्वयं को मसीह में मिला लिया जाता है जो प्रेम अनायास प्रकट हो जाता है। मसीही चरित्र की पूर्णता तब प्राप्त होती है जब दूसरों की मदद करने और आशीर्वाद देने की आवेग भीतर से लगातार आता रहता है- जब स्वर्ग की धूप हृदय को भर देती है और प्रतिपदा में प्रकट होती है। COLHin 299.2

यह उस हष्दय के लिये संभव नहीं है जिसमें मसीह प्रेम का निराश्रित होना चाहता है। अगर हम ईश्वर से प्यार करते है, क्योंकि वह हमसे प्यार करते है, तो हम उन सभी से प्यार करेगे जिनके लिये मसीह मर गया। हम मानवता के संपर्क में आये बिना देवत्व के सम्पर्क से नहीं आ सकते। उसके लिये ब्रहामांड के सिंहासन पर बैठता है, देवत्व और मानवता संयुकत है। मसीह के साथ जुड़ा हुआ है हम अपने साथी पुरूषों के साथ प्रेम की श्रष्खला के सुनहरे लिंक से जुड़े हुये है। तब मसीह की दया और करूणा हमारे जीवन में प्रकट होगी। हम जरूरतमन्द और दुर्भाग्य से हमारे पास नहीं आने के लिये इन्जतार नहीं करते। हम दूसरो के संकटों को महसूस करने के लिये लुभाने की आवश्यकता है। COLHin 299.3

यह हमारे लिये उतना ही स्वभाविक होगा जितना की जरूरतमंदो और पीड़ितो के सेवकाई के रूप में मसीह के लिये अच्छा करने के बारे जाना था। COLHin 300.1

जहाँ भी प्रेम और सहानुभूति का आवेग होता है जहाँ भी हष्दय दूसरो को आशीर्वाद और उत्थान करने के लिये पहुंचता है। वहाँ परमेश्वर की पवित्र आत्मा के कार्य करने का पता चलता है। विधर्मियों की गहराई में जिन पुरूषों को वहाँ परमेश्वर के लिखित कानून का ज्ञान नहीं था, जिन्होंने कभी मसीह का नाम भी नहीं सुना है, वे अपने सेवको के प्रति दयालु रहे हैं, अपने स्वयं के जीवन के जोखिम पर उनकी रक्षा करते है। उनके कष्यों में एक दैवीय शक्ति का काम दिखाया गया है। पवित्र आत्मा ने अपनी शिक्षा के विपरीत, अपने स्वभाव के विपरीत अपनो सहानुभूति को तेज करते हुये, प्रभु के दिल में मसीह की कष्पा को आरोपित किया है। “प्रकाश जो दुनिया में आने वाले हर आदमी को प्रकाश देता हैं। (यहून्ना 1:9)। उसकी आत्मा में चमक है और यह प्रकाश, यदि वह अपने ईश्वर के राज्य के लिये अपने पैरों का मार्गदर्शन करेगा। स्वर्ग का गौरव गिरे हुये लोगों को उठाने में है, जो सकंट ग्रस्त लोगों को दिलाया देता है। और जहाँ भी मसीह मानव के दिलों में बसता है, वह उसी तरह प्रगट होगा। जहॉ भी यह कार्य करेगा, मसीह का धर्म आशीर्वाद देगा। यह जहाँ भी काम करता है, वहाँ चमक होती है। COLHin 300.2

राष्ट्रीयता नस्ल या जाति के आधार पर कोई भेद ईश्वर मान्यता प्राप्त नहीं है। वह समस्त मानव जाति का निर्माता है। सभी पुरूष सपष्ट से एक परिवार के है, और सभी उद्धार के माध्यम से एक

है। मसीह विभाजन की हर दीवार को गिराने के लिये आया, मंदिर के हर डिब्बे को खोलने के लिये, कि हर आत्मा को ईश्वर तक मुफ्त पहुँच प्राप्त हो। उसका प्रेम इतना व्यापक इतना गहरा, इतना भरा हुआ है, कि वह हर जगह घुस जाता है। यह शैतान के घेरे से बाहर निकलता है जो गरीब आत्मायें है, जो उसके धोखे से बहक गयी है। यह उन्हें ईश्वर के सिंहासन की पहुंच के भीतर रखता है, सिंहासन वाद के इन्द्रधनुष से घिरा हुआ है। COLHin 300.3

मसीह में न तो यहूदी और न ही यूनानी, बन्धन और न ही मुक्त है। सभी को उनके कीमती खून से नहलाया जाता है। (गलतियॉ 3:28, इफिसियों 2:13)। COLHin 301.1

धार्मिक मान्यता में जो भी अंतर है, पीड़ित मानवता की एक प्रकार सुनी जानी चाहिये और जबाव देना चाहिये। जहाँ धर्म में भिन्नता के कारण भावना की कड़वाहट विद्यमान है, वही व्यक्ति सेवा से बहुत कुछ अच्छा हो सकता है। प्यार करने वाले सेवकाई पूर्वाग्रह को तोड़ेगी और आत्माओं को ईश्वर से जीतेगे। COLHin 301.2

हमें दुखों कठिनाईयों, दूसरो की परेशानियों का अनुमान लगाना चाहिये। हमे उच्च और निम्न अमीर और गरीब दोनो की खुशियों और परवाह में प्रवेश करना चाहिये। "सवतन्त्र रूप से आपको प्राप्त हुआ है" मसीह कहते है "स्वतन्त्र रूप से दे" (मत्ती 10:8) COLHin 301.3

हमारे चारो ओर गरीब, बंधी हुई आत्मायें है जिन्हें सहानुभूति शब्दो और सहायता की आवश्यकता होती है। ऐसी विधवाएं है जिन्हें सहानुभूति और सहायता की आवश्यकता है। ऐसे अनाथ है जिन्हें मसीह ने अपने अनुयायियों पर प्रतिबंध लगा दिया है कि वे ईश्वर से एक विश्वास के रूप में प्राप्त करते हैं अक्सर ये उपेक्षा के साथ पारित हो जाते है। वे बिना चीर-फाड़ करके हर तरह से बदसूरत लग रहे है, अभी तक वे ईश्वर की संपत्ति है। उन्हें एक कीमत के साथ खरीदा गया है, और वे उनकी दृष्टि में उतने ही कीमती है जितने हम है। वे ईश्वर के महान घराने और मसीहो के संस्मरण है क्योंकि उनके भण्डारी उनके लिये "उनकी आत्मायें है। वह कहता है," क्या मुझे आपके हाथ की आवश्यकता होगी। COLHin 301.4

पाप सभी बुराईयों में सबसे बड़ा है और यह पापी पर दया करने और उसकी मदद करने के लिये हमारा है। लेकिन सभी के पास एक ही तरह से नहीं पहुंचा जा सकता है। बहुत से ऐसे है जो अपनी आत्मा की भूख को छिपाते है। एक निविदा शब्द या एक राजा के द्वारा बहुत मदद मिलेगी। ऐसे अन्य लोग है जो अभी तक की सबसे बड़ी जरूरत है वे जानते है कि यह नहीं है। उन्हें आत्मा के भयानक विनाश का एहसास नही है। बहुतात पाप में डूबे हुये है कि उन्होंने शाश्वत वास्तविकताओं की भावना को खो दिया है, ईश्वर के अनुकरण को खो दिया है और वो शायद ही जानते है कि उनके पास आत्माओं को बचाया जाना है यह नहीं। उन्हें न तो ईश्वर पर विश्वास है और न ही मनुष्य में विश्वास है। इनमे से कई को केवल दयालु दया के कार्यो के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। उनकी शारीरिक इच्छाओं को पहले ध्यान रखना चाहिये। उन्हें खिलाना, साफ

करना और शालीनतापूर्वक कपड़े पहनाया जाना चाहिये। जब ये आपके निःस्वार्थ प्रेम में विश्वास करना आसान हो जाता है। COLHin 301.5

कई ऐसे है जो गलत करते है, और जो अपनी शर्म और मूर्खता महसूस करते है। वे अपनी गलतियों और पुतलों को तब तक देखते है जब तक कि वे हताशा से लगभग प्रेरित न हो। ये आत्माये हमारी उपेक्षा के लिये नहीं है। जब किसी को धारा के खिलाफ तैरना होता है तो उसे पीछे ले जाने के लिये पीछे खींचता हैं उसको एक बड़े भाई के हाथ की आवश्यकता जो उसका हाथ पकडकर उसे पानी से बाहर निकाले जैसे पतरस के साथ हुआ था। उससे उम्मीद भरे शब्द ऐसे वचन बोले जो आत्म विश्वास और प्यार जगाये। COLHin 302.1

तेरा भाई, आत्मा में बीमार है, उसे तुम्हारी जरूरत है जैसे तुम्हें अपने भाई के प्यार की जरूरत है। उसे उसी के अनुभव की आवश्यकता है जो उसके जैसा कमजोर हो, जो उसके साथ साहनुभूति रख सके और उसकी मदद कर सके। अपनी कमजोरी का ज्ञान हमे उसकी कड़वी जरूरत में दूसरे की मदद करने के लिये करना चाहिये। जो हमे उस आराम की इच्छा के बिना प्रदान करता है जिसे हम ईश्वर की शान्ति मानते है। COLHin 302.2

यह मसीह के साथ संगति है, एक जीवित उद्धारकर्ता के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क जो मन और हष्दय और आत्मा को सबसे कम प्रकपत पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। एक सर्वशक्तिमान हाथ के पथिक को बताये जो उसे पकड़ लेगा, मसीह में एक असीम मानवता के लिये जो उसे दया देता है। कानून और बल पर विश्वास करना उसके लिये पर्याप्त नहीं है, जिन चीजों में कोई दया नहीं है वे मदद के लिये रोना सुनते है। एक हाथ पकड़ना जरूरी है जो गर्म है, कोमलता से भरे दिल में भरोसा करने के लिये | मन दिव्य शक्ति की उपस्थिति पर लगा कर रखे और प्यार जताते रहे। एक पिता के दिल के बारे में सोचे जो कभी पाप पर शोक करता है, एक पिता के हाथ अभी भी एक आवाज की ओर खिचे हुये है, कह रही है, "उससे मेरी ताकत लो, कि वह मेरे साथ शान्ति बनाये रखे और वह शान्ति बनाये रखेगा। (यशायाह 27:5)। COLHin 302.3

जैसा कि आप इस काम मे संलग्न है, आपके पास मानवीय आंखो से अनदेखी साथी है। स्वर्ग के स्वर्गदूत उस सामरी के पास थे जो घायल अजनबी की देखभाल करता था। स्वर्गीय न्यायालयों के देवदूत उन सभी के साथ खड़े होते है जो अपने साथी लोगो को मंत्रणा करने मे परमेश्वर की सेवा करते हैं। और आपके पास स्वयं मसीह का सहयोग है। वह छुड़ाने वाला है और जैसा कि आप उसकी देख-रेख में काम करते है, आप बड़े परिणाम देखेगे। COLHin 303.1

इस काम में आपकी इमानदारी पर न केवल दूसरो की भलाई, बल्कि आपकी खुद की शाश्वत नियति निर्भर करती है। यीशु उन सभी के उत्थान की मांग कर रहा है, जो स्वयं के साथ सहचर्य के लिये उठाय जायेगे कि हम उसके साथ एक हो सकते है क्योंकि वह एक के साथ एक है। वह हमें अपने स्वार्थ से बाहर निकालने के लिये दुख और विपत्ति के सम्पर्क में आने की अनुमति देता

है, वह हमारे चरित्र की विशषताओं को विकसित करना चाहता है- करूणा, कोमलता और प्रेम। सेवकाई के इस काम को स्वीकार करके हम अपने आप को उसके स्कूल में रखते है, ताकि परमेश्वर की अदालतों के लिये फिट हो। इसे अस्वीकार करके, हम उनके निर्देश को अस्वीकार करते हैं और उनकी उपस्थिति से शाश्वत अलगाव का चयन करते है। COLHin 303.2

अगर तुम मेरे काम को रखना चाहते हो प्रभु घोषणा करता है, मैं तुम्हें इन स्थानों के बीच चलने के लिये जगह दूंगा। यहाँ तक कि उसके सिंहासन को घेरने वाले स्वर्गदूतों के बीच भी। (जर्कयाह 3:3) पष्थ्वी पर उनके काम में स्वर्गीय प्राणियों के साथ सहयोग करके, हम स्वर्ग में उनके साहचर्य की तैयारी कर रहे है। "क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माये नही" (इब्रानियों 1:14) स्वर्ग में स्वर्गदूत उनका स्वागत करेगे, जिन्होंने घरती पर रहते हुये, सेवक बनने के लिये बल्कि सेवा में बने रहने के लिये।" (मत्ती 20:28)। इस धन्य साहचर्य में हम अपने अनन्त आनन्द को सीखेगे। इस प्रशन में लिपटा हुआ है, "मेरा पड़ोसी कौन है?"

अध्याय 28 - अनुग्रह का पुरूस्कार

"यह अध्याय मत्ती 19:16-30, 20:1-16, मरकुस 10:17-31, लूका 18:18-30 पर आधारित है"

ईश्वर की स्वतन्त्र कष्पा का सत्य यहूदियो द्वारा लगभग खो दिया था। रब्बियों ने सिखाया कि ईश्वर का एहसान जरूर हासिल करना चाहिये। धर्मी लोगों का प्रतिफल उन्हें उनके कामो से प्राप्त होने की आशा थी। इस प्रकार उनकी आराधना एक उत्साह भावात्मक भावना द्वारा प्रेरित थी। इस भाना से भी मसीह के शिष्य पूरी तरह से स्वतन्त्र नहीं थे और उद्धारकर्ता ने उन्हें अपनी त्रुटि दिखाने का हर अवसर मांगा। मजदूरों के दष्टान्त देने से ठीक पहले, एह घटना घटी जिसने उनके लिये सही सिद्धान्तों को प्रस्तुत करने का रास्ता खोल दिया। COLHin 305.1

जब वह रास्ते से जा रहा था, एक यवा शासक उसके पास आया और घुटने टेककर, श्रद्धापूर्वक नमस्कार किया। "अच्छा मास्टर" उन्होंने कहा, मैं क्या करू कि मुझे अनन्त जीवन प्राप्त हो। COLHin 305.2

शासक ने मसीह को केवल एक सम्मानित रब्बी के रूप में सम्बोधि त किया था, न कि उसे परमेश्वर के पुत्र समझा। उद्धारकर्ता ने कहा, "तुम मुझे अच्छा क्यो बोल रहे हो, यहाँ कोई भी अच्छा नही है केवल ईश्वर है यदि आप मुझे इस तरह से पहचानते है तो आपको मुझे उनके बेटे और प्रतिनिधि के रूप में प्राप्त करना होगा। COLHin 305.3

"यदि आप जीवन में प्रवेश करना चाहते है। उन्होंने कहा "आज्ञाओं को मानो' ईश्वर का चरित्र उनके नियम में व्यक्त किया गया है और आपके लिये ईश्वर के साथ सद्भाव में होने के लिये, उनके कानून के सिद्धान्तों को आपके हर कार्य का वसन्त होना चाहिये। COLHin 305.4

मनुष्य व्यवस्था के दावों में काम नहीं करता है। अंसदिग्ध भाषा में वह आज्ञाकारिता को शाश्वत जीवन की स्थिति के रूप में प्रस्तुत करता है, वही स्थिति जो आदम के गिरने से पहले आवश्यक थी। ईश्वर से अपेक्षा की जाती है कि वह स्वर्ग में मनुष्य की अपेक्षा किसी भी आत्मा से कम नहीं, पूर्ण आज्ञाकारिता, निष्कलंक धार्मिकता, अनुग्रह की वाचा के तहत आवश्यकता अदन में व्यापक आवश्यकता के रूप में है, ईश्वर की व्यवस्था के साथ सद्भाव, पवित्र, न्यायपूर्ण और अच्छा है। COLHin 306.1

शब्दों में, "आज्ञाओं का पालन करो' युवक ने उत्तर दिया, "कौन सा उनका मानना या कि कुछ औपचारिक उपदेश का मतलब था, लेकिन मसीह सिने पर दिये गये आज्ञाओं के विषय में बोल रहा था। उन्होंने दस आज्ञाओं की बात कर रहे थे। उन्होंने दस आज्ञा की दूसरी तालिका से कई आज्ञाओं का उल्लेख किया, फिर उन सभी उपदेश में कहा, "तुम अपने पड़ोसी से प्यार करो।" COLHin 306.2

युवक ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया, "ये सारी आज्ञायें मैं ने अपने युवावस्था से ही मान रखी है, मुझे में अभी तक क्या कमी है? व्यवस्था की उनकी अवधारण बाहरी और सतही थी, मानव मानक के अनुसार उन्होंने एक निर्दोष चरित्र के संरक्षित किया था। एक हद तक उसका बाहरी जीवन अपराध बोध से मुक्त हो चुका था। उसने वास्तव में सोचा था कि उसकी आज्ञाकारिता बिना किसी दोष के थी। फिर भी उसे एक गुप्त भय था कि आत्मा और ईश्वर के बीच सब ठीक नहीं है। इसने सवाल पूछा, "मुझे में अभी तक क्या कमी है? COLHin 306.3

"अगर तुम परिपूर्ण हो' मसीह ने कहा "जो तुम्हारे पास है सब बेचकर गरीबों में बांट कर मेरे पीछे हो लो। लेकिन जब युवक ने कहते सुना तो वो चला गया दुखी होकर, क्योंकि उसके पास बहुत अधिक धन था। COLHin 306.4

स्वयं का अपराधी व्यवस्था का अपराधी है। यह युवक यीशु को प्रकट करना चाह रहा था और उसने उसे एक परीक्षा दी जो उसके चरित्र में आयेगी। युवक ने आगे कोई आत्म ज्ञान नहीं चाहा। उसने आत्मा में ज्ञान नहीं चाहा। उसने आत्मा में एक मूर्ति को घोषित किया था, दुनिया उसकी ईश्वर थी। उसने आज्ञाओं को निभाने के लिये हॉ जरूर कहा, लेकिन वो उसे सिद्धान्त से निराश था जो उन सभी की आत्मा और जीवन है। उसे परमेश्वर या मनुष्य के लिये सच्चा प्यार नहीं था। यह सब कुछ चाहता था कि वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने योग्य है। आत्मा और सांसारिक लाभ के अपने प्यार में वह स्वर्ग के सिद्धान्तों के साथ समाजस्य से बाहर था। COLHin 306.5

जब वह युवा शासक यीशु के पास आया, तो उसकी इमानदारी ने उद्धारकर्ता का दिल जीत लिया। उसे देखकर "उसके मन में उसके लिये प्यार आया।' इस युवक में उसने देखा कि वह धर्म के प्रचारक के रूप में सेवा कर सकता है। वह इस प्रतिभाशाली और महान यवा को आसानी से प्राप्त कर सकता था जिस प्रकार उसने गरीब मछुआरो को प्राप्त किया था। यदि युवक ने आत्माओं को बचाने के काम के लिये अपनी क्षमता समर्पित की, तो वह मसीह के लिये एक मेहनती और सफल मजदूर बन सकता था। COLHin 307.1

लेकिन उसे पहले शिष्यत की शर्त स्वीकार करनी चाहिये । उसे खुद को ईश्वर के लिये अनारक्षित रूप से देना चाहिये। मुक्तिदाता के आहवान पर यहून्ना, पतरस, मत्ती और उनके साथियों ने "सब कुछ छोड़ दिया, और उठकर उनके पीछे चल दिये।" (लूका 5:28)। युवा शासक के लिये वही अभिषेक आवश्यक था। इससे मसीह ने इससे बड़ा बलिदान नहीं मांगा जो उसका स्वयं का था। "वह धनी था लेकिन स्वयं के लिये वो गरीब हो गया ताकि तुम उसका अनुसरण करने के लिये हो, जहाँ मसीह ने मार्ग का नेतृत्व किया था। COLHin 307.2

_ मसीह ने बहुत देर तक उस व्यक्ति और उसकी आत्मा को देखा। वह उसे पुरूषों को आशीर्वाद देने के दूत के रूप में आगे भेजने की लालसा रखता था। उस स्थान पर जो उसने उसे आत्मसमर्पण के लिये बुलाया था। मसीह ने उसे खुद के साथ सहचर्य के विशेषाधिकार की

पेशकश को। 'मेरे पीछे आओ' उन्होंने कहा इस विशेषाधिकार पतरस, याकूब और यहून्ना द्वारा खुशी के रूप में गिना गया था। युवागण स्वयं प्रंशसा के साथ मसीह की ओर देखते थे। उसका दिल उद्धारकर्ता की ओर खिंच गया। लेकिन वह आत्म बलिदान के उद्धारकर्ता के सिद्धान्त को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं था। उसने अपने धन को यीशु के सामने चुना। वह शाश्वत जीवन चाहता था। लकिन उस आत्मा को प्राप्त नहीं करेगा जो निःस्वार्थ प्रेम करता है, जो अकेला जीवन है, और दुखी मन से वह मसीह से दूर हो गया। COLHin 307.3

जब वह युवक चला गया, यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "वे कितने मुश्किल से धनवान होंगे, वो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे।" इन शब्दों ने शिष्यों को चकित कर दिया। उन्हें स्वर्ग के धन के विषय में सिखाया गया था, सांसारिक शक्ति और धन वे खुद को मसीह के राज्य में प्राप्त करने की आशा करते थे। यदि अमीर राजय में प्रवेश करने में विफल रहे तो बाकी पुरूषों के लिये क्या आशा हो सकती है। COLHin 307.4

"यीशु ने फिर से उत्तर दिया, और उनसे कहा, बच्चों उनके लिये ये कितना कठिन है कि परमेश्वर राज्य में प्रवेश करने के लिये धनवानों के लिये, ऊंट के लिये आसान है सुई के नाके से निकलना लेकिन धर्मी मनुष्य का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। ये देखकर वो अचम्भित हुये, "अब उन्हें एहसास हुआ कि वे स्वयं गम्भीर चेतवनी में शामिल थे। उद्धारकर्ता के शब्दों के प्रकाश, सत्ता और धन के लिये उनक अपनी गुप्त लालसा प्रकट हुई। खुद के लिये गलतफहमी के साथ उन्होंने कहा, फिर किसे बचाया जा सकता है? COLHin 308.1

यीशु ने उन्हें देख कर कहा, "क्योंकि यह पुरूषों के साथ असम्भव है, लेकिन ईश्वर के साथ नहीं, ईश्वर के लिये सभी चीजे सम्भव है। COLHin 308.2

एक आदमी जैसे स्वर्ग में प्रवेश नही कर सकता। उसका धन उसे प्रकाश संतो की विरासत का कोई शीर्षक नहीं देता है। यह केवल मसीह की असीम कृपा के माध्यम से है के माध्यम से है कि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के शहर मे प्रवेश पा सकता है। COLHin 308.3

गरीबो से कम अमीर के लिये पवित्र आत्मा के वचन नहीं बोले जाते है, "तुम अपने नहीं हो, तुम्हें कीमत देकर खरीदा गया है। (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। जब पुरूष यह मानते है तो उनकी संपत्ति को ईश्वर के रूप में उपयोग किये जाने वाले विश्वास के रूप में रखा जायेगा, खोये हुये की बचत के लिये और आराम के लिये पीड़ित और गरीब । उस आदमी के साथ जो असम्भव है, क्योंकि वह दिल से अपने सांसारिक खजाने को जकड़ लेता है। वह आत्मा जो धन दौलत की सेवा में भी बंधी है। वह मानव की जरूरत के रोने के लिये बहरा है। लेकिन ईश्वर के साथ सभी चीजे संभव है। मसीह का प्यार, स्वार्थी दिल पिघल जायेगा और वश में हो जायेगा। अमीर आदमी का नेतत्व किया जायेगा जैसे कि शाऊल फरीसी था, यह कहने के लिये, "मुझे क्या चीजे हासिल हुई, मैं ने मसीह के लिये हानि उठाई। और निसन्देह सभी चीजे को यीशु मसीह के ज्ञान के ओर हानि

समझता हूँ। मसीह के ज्ञान के आगे सभी चीजों को हानि समझता हूँ (फिलिप्पियों 3:8) तब वो किसी भी चीज को अपना नहीं समझेगे। वो उसे मसीह के सेवक के तौर उसके अनुग्रह के द्वारा खुशी प्राप्त करगे, और उसके लिये उसके सेवक तौर पर रहेंगे। COLHin 308.4

पतरस, उद्धारकर्ता के शब्दों में गढ़े हुये गुप्त दोष से रैली करने वाले पहले व्यक्ति थे। उसने और उसके भाईयों ने मसीह के लिये त्याग किया था उस पर सन्तोष किया। देखो उसने कहा, "हम ने सब कुछ छोड़ दिया है और तेरे पीछे हो लिये है। युवा शासक को सशर्त वचन याद करते हुये, "स्वर्ग में तेरे लिये खजाना है। अब उसने पूछा कि उसे और उसके साथियों को उनके बलिदानों के लिये पुरूस्कार के रूप में क्या प्राप्त होना चाहिये? COLHin 309.1

उद्धारकर्ता के जबाव ने उन गैलिलियन मछुआरों के दिलों को रोमाचित कर दिया। इसने उन सम्मानों का चित्रण किया जो उनके उच्चतम संपनो को पूरा करते है। वास्तव मे मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम जो मेरे पीछे हो लिये हो इस उत्थान में, जब मनुष्य का पुत्र अपने गौरव के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम बारह सिंहासन पर बैठोगे, बारह को देखते हुये इजराएल की जन जातियाँ। "और उन्होंने कहा" कोई ऐसा आदमी नही है जिसने अपना चोर, भाई या बहन या पिता या माता या पत्नी या बच्चे या भूमि, मेरी खातिर और सुसमाचार के लिये छोड़े। तो वह सौ गुना प्राप्त करेगा, इस समय चाहे वो घर, भाई-बहने, मातायें और बच्चे और भूमिसताहट के साथ और संसार में अनन्त जीवन पाने के लिये। COLHin 309.2

लेकिन पतरस का सबाल है, "हमारे पास क्या होना चाहिये? ने एक रेखा आत्मा को प्रकट किया है जो मसीह के लिये दूत होने के लिये अयोग्य रूप से गलत तरीके से शिष्यों को डुबो देती है, इसके लिये एक माड़े की भावना थी। जब वे यीशु के प्रेम से आकर्षित हो गये थे, तब वे शिष्य पूर्ण रूप से फरीसीवाद से मुक्त नहीं थे। उन्होंनें अभी भी अपने श्रम के अनुपात में एक इनाम के विषय के विचार के साथ काम किया। उन्होंने आत्मउत्थान और आत्म-शालीनता की भावना को घोषित किया, और तुलनाओं को खुद के बीच बनाया। जब उनमे से कोई भी किसी विशेष में विफल रहा, तो दूसरो ने श्रेष्ठमा की भावनाये व्यक्त की। COLHin 309.3

ऐसा न हो कि चेलो को सुसमाचार के नियमों की दषष्ट खोनी पदे, मसीह से सम्बन्धित एक दष्टान्त है जिसमें परमेश्वर अपने सेवकों के साथ व्यवहार करता है, और जिस भावना से वह उनके लिये श्रम करना चाहता है। COLHin 309.4

"स्वर्ग का राज्य" उन्होंने कहा, "उस आदमी के समान है जो एक गष्हस्थ है जो सुबह-सुबह अपनी दाख की बारी में मजदूरों को नियुक्त करने के लिये निकला था।" वह बाजार के स्थानों में प्रतीक्षा करने के लिये रोजगार करने वाले पुरूषों के लिये प्रथा थी और इसके लिये लोग नौकरो को बाजार में खोजने जाते थे। काम करने वालो को संलग्न करने के लिये अलग-अलग घंटो मे बाहर जाने का प्रतिनिधित्व करने योग्य व्यक्ति का प्रतिनिधित्व किया जाता है। जो जल्द से जल्द

घर पर काम पर रखा जाता है। एक निर्दिष्ट राशि के लिये काम करने के लिये सहमत होते है, जिन लोगों को काम पर रखा जाता है, वे बाद मे गव्हस्वामी के विवेक को छोड़ देते है। COLHin 310.1

जब शाम हुई दाख के बारी ईश्वर ने भंडारी को बनाया कि मजदूरों को बुलाओं और उन्हें उनकी मजदूरी दे दो, जो कि पहलू से लेकर शाम तक । और जब वे आये तो जो ग्यारवे समय के आये उन्हें एक पैसा पर रखा गया था। लेकन जो पहले आया तो उनका मानना था कि उन्हें अधिक प्राप्त करना चाहिये था, इसी प्रकार उन्होंने हर आदमी को एक पैसा दिया।” COLHin 310.2

घर के मालिक के साथ परमेश्वर दाख की बारी में मजदूरों के साथ व्यवहार करना मानव परिवार के साथ परमेश्वर के व्यवहार का प्रतिनिधित्व करता है। यह पुरूषों के बीच प्रचलित रीति -रिवाजों के विपरीत है। सासारिक व्यवसाय में, कार्य की पूर्ति के अनुसार मुवाअजा दिया जाता है। मजदूर को उम्मीद है कि उसे केवल उतना ही भुगतान किया जायेगा जो वह कमाता है, लेकिन दष्टान्त में मसीह अपने राज्य के सिद्धान्तों का चित्रण कर रहा था-एक राज्य इस दुनिया का नहीं। वह किसी भी मानव मानक द्वारा नियंत्रित नहीं है। प्रभु कहते है, “मेरे विचार तुम्हारे विचार नहीं है, न ही तुम्हारे मार्ग मेरे मार्ग है, क्योंकि जैसे आकाश पष्थ्वी ऊंचे है, वैसे ही तुम्हारे मार्ग और मेरे विचार तुम्हारे विचारों से अधिक है। (यशायाह 55:8, 9)। COLHin 310.3

दष्टान्त में पहले मजदूर एक निर्धारित राशि के लिये काम करने के लिये सहमत हुये और उन्हें निर्दिष्ट राशि प्राप्त हुई। इससे ज्यादा कुछ नहीं बाद में काम पर रखने वालो ने मास्टर के वायदे पर विश्वास किया, “जो भी सही होगा, वह आपको प्राप्त होगा। उन्होंने मजदूरी के सम्बन्ध में कोई प्रश्न न पूछकर उन पर अपना विश्वास दिखाया। COLHin 310.4

ये ईश्वर के लिये सभी सच्चे सेवा भाव की भावना है। इस भावना की कमी के माध्यम से कोई जो पहले दिखाई देते है वह अन्त में हो जायेगा। जब कि लोभ इसके पास है, हालांकि पिछले खाते में पहले हो जायेगा। COLHin 311.1

ऐसे कई लोगों ने जिन्होंने खुद को मसीह के लिये दिया है, फिर भी जो अपनी सेवा में कोई बड़ा काम करने या महान बलिदान करने का कोई अवसर नहीं देखते हैं ये इस विचार मे मिल सकते है कि वह जरूरी नहीं कि शहीद का आत्म—सर्पण हो जो कि ईश्वर के लिये सबसे स्वीकार्य हो, यह मिशनरी नहीं हो सकता है, जिसने दैनिक खतरे का सामना किया है और मृत्यु स्वर्ग के रिकार्ड में सबसे अधिक है। मसीही जो अपने निजी जीवन में ऐसे है, दैनकि आत्म—सर्पण में उद्देश्य की इमानदारी में और विचार की शुद्धता में उत्तेजना के तहत नम्रता में, विश्वास और पवित्रता में, निष्ठा में, जो कम से कम घर में एक है जीवन मसीह के प्रतिनिधित्व करता है-ईश्वर की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति मसीह के चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है-ईश्वर की दृषि में ऐसा व्यक्ति विश्व प्रसिद्ध मिशनरी या शहीद से भी अधिक कीमती हो सकता है। COLHin 311.2

ओह, कितने अलग-अलग मानक है, जिनके द्वारा ईश्वर और पुरूष चरित्र को मापते है। ईश्वर ऐसे कई प्रलोभनों को देखता है जिनके खिलाफ दुनिया और यहाँ तक कि दोस्तों के दिल में घर में होने वाले प्रलोभनों का कभी पता नहीं चलता है। वह अपनी कमजोरी को देखते हुये आत्मा की विनम्रता को देखता है। उन्होंने आत्म लड़ाई के साथ कठिन लड़ाई के घंटों का उल्लेख किया है जिसने जीत हासिल की। यह सब ईश्वर और स्वर्गदूत जानते है। उनके लिये स्मरण की एक पुस्तक उनके सामने लिखी गई है जो प्रभु डरते है और उनके नाम पर सोचते है। न हमारी सीख में, न हमारी स्थिति में, न हमारी संख्या में या सौंपी गई प्रतिभाओं में, न कि मनुष्य की इच्छा में, सफलता का रहस्य ढूंढना है। अपनी अक्षमता को महसूस करते हुये हम मसीह का चिंतन कर रहे हैं, और उसके माध्यम से जो पूरी ताकत है, सभी विचार के बारे मे सोचा है। इच्छुक और आज्ञाकारी जीत के बाद जीत हासिल करेगे। और फिर भी हमारी सेवा में कभी या हमारे काम को विनम्र करना, अगर साधारण विश्वास में हम समीह का अनुसरण करते है, तो हम इनाम से निराश नहीं होंगे। जो सबसे बड़ा बुद्धिमान भी नही कमा सकता है, वह सबसे कमजोर और विनम्र हो सकता है। स्वर्ग का सुनहरा द्वार आत्म उत्थान के लिये नहीं खुलता है। यह आत्मा में गर्व करने के लिये नहीं उठाया जाता है। लेकिन चिर स्थायी पोर्टल छोटे बच्चे के थरथराने वाले स्पर्श के लिये व्यापक होंगे। धन्य है उन लोगों पर अनुग्रह की पुर्नावपत्ति जो विश्वास और प्रेम की सादगी में ईश्वर के लिये सदा है। COLHin 311.3

जब गव्हस्वामी आखिरी घंटे में बाजार गया। उसने बेरोजगार को देखा और कहा, “तुम यहाँ पूरे दिन बेकार क्यों खड़े हो ? जबाव था “क्योंकि किसी आदमी में हमे काम पर नही रखा।” बाद में बुलाया जाने वालो में से कोई भी सुबह में नही था, उन्होंने बुलाहट से इन्कार नही किया था। जो पश्चाताप करते है वे पश्चाताप करते है, लेकिन यह दया के लिये पहली बुलाहट के साथ सुरक्षित नहीं है। COLHin 312.1

जब दाख की बारी में मजदूरों को “हर मजदूर को एक मुद्रा मिली जो लोग पहले आये वो नाराज हो गये और उन्होंने बारह घंटे काम नहीं किया? उन्होंने तर्क दिया, क्या यह सही नहीं था कि उन्हें उन लोगों से अधि क प्राप्त करना चाहिये जिन्होंने दिन के समय सुबह जब ठण्डा रहता है, तब उन्होंने एक घंटे काम किया है, लेकिन बाद में जो उन्होंने केवल एक घंटे काम, लेकिन तूने उन्हें हमारे बराबर मजदूरी दी” जिन्होंने दिन के बोझ और गरमी के सहन किया। COLHin 312.2

“मित्र” गव्हस्वामी ने उनमे से एक उत्तर दिया, “मैंने तुम्हारे साथ कुछ गलत नही किया, क्या तुम मेरे साथ एक मुद्रा के लिये सहमत हुये, जो तुम्हारा है वो लो और अपने रास्ते जाओं। जैसे मैं ने तुम्हे दिया आखिरी वाले को भी उतना दूंगा, क्या मेरे लिये ये उचित नहीं कि मैं अपना काम करूं? क्या मेरी आंख बुरी है क्योंकि में अच्छा हूँ। COLHin 312.3

जो अंतिम है वो पहले जायेगें और जो पहला है वो अंतिम हो जायेगा। बहुतों को बुलाया जायेगा, लेकिन थोड़े को चुना जायेगा। COLHin 312.4

दष्टान्त के पहले मजदूर उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपनी सेवाओं के कारण दूसरों के ऊपर वरीयता का दावा करते हैं, जो आत्म सन्तुष्टि की भावना में अपना काम करते है और इसे आत्म निषेध और बलिदान नहीं करते है। हो सकता है कि उन्होंने परमेश्वर की सेवा करने के लिये अपना पूरा जीवन लगा दिया हो। वे कठिनाई, निजी काम और मुकदमें के सहन करने में सबसे आगे रहे है, इसलिये वे खुद का एक बड़े इनाम के हकदार समझते हैं। उन्हें लगता है मसीह के सेवक होने के निजिकरण तुलना में अधिक इनाम। उनके विचार में उनके मजदूरों और बलिदानों ने उन्हें के उपर सम्मान प्राप्त करने का हक दिया है और क्योंकि ये दावा मान्यता प्राप्त नहीं है, वे नाराज है। क्या वे अपने काम को एक प्रेमपूर्ण, विश्वास की भावना के साथ लाते है, वे पहले करते रहेगे, लेकिन उनकी विवादास्पद, शिकायत निपटाने संयुक्त राष्ट्र के समान है और उन्हें अविश्वसनीय साबित करता है ये आत्म उन्नति के लिये उनकी इच्छा हैं। ईश्वर के प्रति उनके अविश्वास और उनकी ईर्ष्या, उनके भाई के प्रति गंभीर भावना को प्रकट करता है। ईश्वर की भलाई और उदारता उनके लिये केवल बड़बड़ाने का एक अवसर है। इस प्रकार वे दिखाते है कि उनकी आत्माओं और ईश्वर के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है। वे मास्टर सेवक की खुशी नहीं जानते है। COLHin 312.5

इस संकीर्ण, आत्म देखभाल की भावना की तुलना में ईश्वर के लिये अधिक आक्रामक कुछ भी नहीं है। वह इन विशेषताओं को प्रकट करने वाले किसी भी व्यक्ति के साथ काम नहीं कर सकता हैं वे अपनी आत्मा के कार्य के प्रति असंवेदनशील है। यहूदियों को पहले ईश्वर की दाख की बारी में बुलाया गया था और इस वजह से वे गर्व और आत्म धर्मी थे। उनकी सेवा के लम्बे वर्षों के लिये उन्हें दसरो की तलना में बड़ा इनाम प्राप्त करने का हकदार माना गया। अन्य लोगों की तुलना में उनके लिये अधिक अंतरगता नहीं थी, क्योंकि अन्य जातियों को परमेश्वर की बातों में स्वयं के साथ समान निजीकरण में भर्ती होना था। COLHin 313.1

मसीह ने उन चेलों को चेतावनी दी जिन्हें पहले उनका अनुसरण करने के लिये कलीसियों का अभिशाप, आत्म धार्मिकता को भावना होगी। पुरूष सोचते होगे कि वे स्वर्ग के राज्य में एक जगह कमाने के दिशा में कुछ कर सकते हैं। वे कल्पना करेगे कि जब उन्होंने कुछ उन्नति की थी, तो प्रभु उनकी सहायता के लिये आयेगें। इस प्रकार यीशु की आत्म और छोटी की बहुतायत हो जायेगी। जिन लोगों ने थोड़ी सी उन्नति की वे बहुत खुश होंगे और खुद को दूसरों से बेहतर समझेगें। वे चापलूसी के लिये उत्सुक होंगे, ईर्ष्या इस खतरे के खिलाफ मसीह अपने बच्चों की रक्षा करना चाहता है। COLHin 313.2

अपने आप में योग्यतओं के सभी घमंड जगह से बाहर है। "बुद्धिमान मनुष्य को अपनी बुद्धि में महिमा मत दो, न तो अपने पराक्रम में, पराक्रमी का गुणगान करो, न धनवान व्यक्ति को अपने धन का वैभव दो, बल्कि उसे इस गौरव को उसकी महिमा को, जो वह मुझे समझता है और मुझे जानता है कि मैं हूँ, प्रभु जो पष्थ्वी में प्रेम, दया, न्याय और धर्मिकता का प्रयोग करते है, इन बातों में मैं प्रभु को प्रसन्न करता है। (यिर्मयाह 9:23, 24) COLHin 314.1

इनाम काम का नहीं है, ऐसा न हो कि किसी कोई भी व्यक्ति घमण्ड करे, लकिन यह अनुग्रह के सभी है। "फिर हम क्या कहेंगे कि अब्राहम हमारे पिता जो मांस से संबधित है, के रूप में पाया गया है। क्योंकि अगर अब्राहम के कामों को न्यायोचित ठहराया जाता है तो वह महिमा के लिये है लेकिन परमेश्वर के सामने नहीं। क्योंकि शास्त्र के अनुसार अब्राहम को ईश्वर माना जाता है। "यह उसके लिये उसका विश्वास है कि अधर्म का न्याय करता है उसका विश्वास धार्मिकता के लिये गिना जाता है। (रोमियों 4:1-5)। इसलिये एक के लिये दूसरे पर गौरव करने या दूसरे के खिलाफ कुढ़ने का कोई अवसर नहीं है। किसी का भी दूसरे के ऊपर निजीकरण नहीं किया जाता है, और न ही कोई पुरूस्कार के अधिकार के रूप में दावा कर सकता है। COLHin 314.2

पहले और आखिरी की महान, शाश्वत इनाम में हिस्सेदार होना चाहिये । और पहले को अंतिम रूप से खुशी से स्वागत करना चाहिये। वह जो दूसरों को इनाम देता है वह भूल जाता है वह खुद अनुग्रह से बचा है। मजदूरों के दृष्टान्त सभी ईर्ष्या और संदेह को डांटते है। सच्चाई में प्रेम आनन्दित होता है और कोई भी ईर्ष्यालु मसीह और उसके स्वयं के अपूर्ण चरित्र की तुलना नहीं करता है। COLHin 314.3

यह दष्टान्त सभी मजदूरों के लिये एक चेतावनी है, हालांकि उनकी सेवा, हालांकि उनके मजदूरों की प्रचुर मात्रा में, कि उनके भाई के लिये प्यार के बिना, ईश्वर के सामने विनम्रता बिना, वे कुछ भी नहीं। स्वयं के प्रवेश में कोई धर्म नहीं है। वह जो अपने उद्देश्य को आत्म-महिमा देता है, वह अपने आप को उस अनुग्रह का निराश्रित पायेगा जो अकेले ही उसे मसीह की सेवा में कुशल बना सकता है। जब भी अभिमान और आत्म-शालीनता भोगी होती है तो काम मे कभी आती है। COLHin 314.4

यह उस समय की लम्बाई नहीं है जब हम श्रम करते हैं लेकिन हमारी इच्छा काम मे निष्ठा है जो इसे ईश्वर को स्वीकार करती है। हमारी सभी सेवा में एक पर्ण आत्म-सम्पर्ण की मांग की जाती है। सबसे छोटा कर्तव्य है इमानदारी और आत्म-विस्मषत, आत्म कामना के साथ छोटा काम ईश्वर की माता बजाय इसके कि स्वयं की खोज में खुद को बर्बाद कर लेते है। वह यह देखना चाहता है कि हम मसीह की आत्मा की कितनी कद्र करते है और मसीह की कितनी समानता हमारे कार्य को प्रकट करती है। वह प्यार और विश्वास से अधिक सम्बन्ध रखता है जिसके साथ हम जितना

करते है उससे अधिक सम्बन्ध रखता है जिसके साथ हम जितना करते है उससे अधिक काम करते हैं। COLHin 315.1

स्वार्थ जब मर चुका होता है, जब वर्चस्त के लिये संघर्ष समाप्त हो जाता है, जब कष्तज्ञता हष्दय को भर देती है, जब प्रेम जीवन को सुगठि त कर देता है, यह केवल तभी है जब मसीह आत्मा मे निवास कर रहा है, और हम ईश्वर के साथ मजदूरों के रूप में पहचाने जाते हैं। COLHin 315.2

। हालांकि अपने श्रम की कोशिश करते हुये, सच्चे श्रमिक इसे आलसीपन नहीं माने। वे खर्च करने क लिये तैयार है, लेकिन यह सब हर्षित काम है, जो दिल से किया जाता है। परमेश्वर में खुशी यीशु मसीह के माध्यम से व्यक्त की जानी जाती है। उनका आनन्द मसीह से पहले नि रित किया गया आनन्द है। "उसकी इच्छा को करने के लिये जिसमे मुझे भेजा है, काम पूरा करने के लिये" | (यहून्ना 4:34) | वे महिमा के ईश्वर के साथ सहयोग में है। यह विचार सभी को मीठा करता है, यह इच्छा को पूरा करता है, यह कुछ भी हो सकता है उसके लिये आत्मा को परेशान करता है। निःस्वार्थ भाव से काम करते हुये, मसीह के कष्टो का शत्रु होने के कारण, उनकी सहानुभूति को साझा करते हुये, और उनके परिश्रम में उनके साथ काम करते हुये, वे उनके आनन्द के ज्वार को निगलने में मदद करते हैं और उनके श्रेष्ठ काम का सम्मान और प्रशंसा करते है। COLHin 315.3

यह ईश्वर के लिये सभी सच्चे सेवाभाव की भावना है। इस भावना की कमी के माध्यम से जो भी प्रथम प्रतीत होता है, वह अंतिम हो जायेगा। जब कि जो इसके पास होगा वो अंतिम हो जायेगा। COLHin 315.4

ऐसे कई लोग है जिन्होंने खुद को मसीह के लिये दे दिया है फिर भी जो अपनी सेवा में कोई बड़ा काम करने या महान बलिदान देने का कोई अवसर नहीं देखते है। ये इस विचार मे मिल सकते है कि वह जरूरी नहीं कि शहीद की आत्म समर्पण ही ईश्वर के लिये सबसे स्वीकार्य हो, यह मिशनरी नहीं हो सकता है जिसने दैनिक खतरे का सामना किया है और मृत्यु स्वर्ग के रिकार्ड में सबसे अधिक है। मसीही जो अपने निजी जीवन मे ऐसा है, दैनिक आत्म समर्पण में उद्देश्य की इमानदारी में और विचार की शुद्धता में, उत्तेजना के तहत नम्रता में, विश्वास और पवित्रता में, निष्ठा में जो काम से कम घर में एक जीवन समीह के चरित्र का प्रतिनिधितव करता है ईश्वर की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति विश्व प्रसिद्ध मिशनरी या शहीद से भी अधिक मूल्यवान हो सकते हैं। COLHin 316.1

ओह, कितने अलग-अलग मानक है, जिनके द्वारा ईश्वर और पुरूष को चरित्र को मापते है। ईश्वर ऐसे कई प्रलोभनो को देखता है जिनके खिलाफ दुनिया और यहां तक कि दोस्तों के दिल में घर में होने वाले प्रलोमनों का कभी पता नहीं चलता है। वह अपनी कमजोरी को देखते हुये आत्मा की विनम्रता को देखता है। एक विचार है, बुराई पर इमानदारी से पश्चाताप। वह उनकी सेवा के

लिये पूरी निष्ठा से देखता है। उन्होंने आत्म-लड़ाई के साथ कठिन लड़ाई के घंटो का उल्लेख किया है जिसने जीत हासिल की। यह सब ईश्वर और स्वर्गदूत जानते है। उनके लिये स्मरण पुस्तक उनके सामने लिखी गयी है, जो कि प्रभु में डरते है और उनके नाम के विषय में सोचते है, न हमारी सीख में, न हमारे स्थिति में, न हमारी संख्या में या सौंप गयी प्रतिभाओं में, नकि मनुष्य की इच्छा में, सफलता का रहस्य ढूंढन में हैं अपनी अक्षमता को महसूस करते हुये हम मसीह का चिंतन कर रहे है, और उसके माध्यम से जो पूरी ताकत है, सभी विचार के बारे में सोचा है, इच्छुक और आज्ञाकारी जीत के बाद हासिल करेगे। COLHin 316.2

और फिर भी हमारी सेवा में भी या हमारे काम को विनम्र करना, अगर साधारण विश्वास में हम मसीह का अनुसरण करते है, तो हम इनाम से निराश नहीं होगें। जो सबसे बड़ा और बुद्धिमान भी नही कमा सकता है, वह सबसे कमजोर और सबसे विनम्र हो सकता है। स्वर्ग का सुनहरा द्वार आत्म-प्रशंसा के लिये नहीं खुलता है। ये आत्मा मे गर्व करने के लिये नहीं उठाया जाता है। लेकिन चिरस्थायी दरवाजे छोटे बच्चे के कपकपनों वाले स्पर्श के लिये व्यापक होंगे। धन्य है उन लोगों पर अनुग्रह की पुर्नाविपत्त जो विश्वास और प्रेम की सादगी में ईश्वर के लिये गढ़े है। COLHin 316.3

अध्याय 29 - दूल्हे से मिलने के लिये

“यह अध्याय मत्ती 25:1-13 पर आधारित है”

मसीह अपने चेलो के साथ जैतून पर्वत पर बैठा है। सूर्य पहाड़ो के पीछे छिप गया है और स्वर्ग को शाम के रंगो के साथ चित्रित क्या गया है, एक घर को शानदार ढंग से सजा हुआ दिखाया गया है जैसे कि कोई उत्सव होने जा रहा है, उद्‍घाटन के लिये प्रकाश की धारायें और कुछ लोग इन्तजार में है, जल्दी ही शादी की बारात दिखने वाली है। पूर्व के कई हिस्सों में शाम को शादी के उत्सव आयोजित किये जाते है। दुल्हा अपनी दुल्हन से मिलने और उसे लाने के लिये आगे बढ़ता है। मशाल की रोशनी में दुल्हन की पार्टी उसके पिता के घर से अपने घर तक जाती है। उस दृश्य में जिस पर, इस दृश्य में यीशु देख रहा है दुल्हन की पार्टी जुलुस में शामिल होने की प्रतीक्षा में है। COLHin 318.1

दुल्हन के घर के पास कुछ महिलायें जिन्होंने खेत के कपड़े पहने हुये, वो धूम रही है। प्रत्येक में एक दीपक और तेल के लिये एक कुप्पी है। सभी उत्सुकता से दुल्ह के आने का इन्तजार में है। समय बीतता जा रहा है, घंटो बीतने के बाद इन्तजार करने वाले थक जाते है और सो जाते है। आधी रात को शोर सुनाई देता है, “दुल्ह आ गया” उससे मिलने के लिये बहार जाओं, जो सो रहे थे वो अचानक उठ जाते है वो जुलुस को रोशनी से सजा हुअ, संगीत के साथ आगे बढ़ता हुआ देखते है। और वो दुल्हे और दुल्हन की आवाजे सुनते है। दस युवतियों ने अपने दियो को ठीक किया, ताकि वो भी जुलुस में शामिल हो सके, लेकिन पांच ने अपने कुप्पियों में तेल नहीं डाला। संकट में वे अपने समझदार साथियों से बिनती करते हुये कहती है, “हमे अपना कुप्पियों में से थोड़ा सा तेल दे दो क्योंकि हमारे दीपक बुझ रहे है, लेकिन प्रतीक्षा कर रही पांच युवतियाँ अपने दियों में तेल भर लिये और अब उनके पास तेल नहीं था।’ ऐसा न हो कि हमारे और आपके पास पर्याप्त तेल न हो, बल्कि उनके पास जाओं जो तेल बेचते है और अपने लिये खरीदो। COLHin 318.2

जब वे खरीदने गये, तो जुलुस आगे बढ़ गया, और उन्हें पीछे छोड़ दिया। पांच दीपको के साथ वो दुल्हन के झुण्ड के साथ घर के द्वार में प्रवेश कर गयी और दरवाजा बन्द हो गया। जब मूर्ख कुवारियां शादी के भोज हॉल में पहुंची तो उन्हें एक अप्रत्याश्चित इन्कार मिला। पूर्व के गुरू ने घोषणा की, “मैं जानता हूँ कि तुम नहीं हो। वे सुनसान सड़क पर अंध रे में खड़े रह गयी।” COLHin 319.1

जैसा कि मसीह दुल्हे के लिये इन्तजार करने वाली पार्टी को देख रहा था, उसने अपने शिष्यों को इन कुवांरियों की कहानी सुनाई, उनके अनुभव से चर्च कलीसिया के अनुभव को दर्शाया गया है जो उनके दूसरे आगमन से पहले ठीक हो जायेगा। COLHin 319.2

देखने वालो दो वर्गो का प्रतिनिधित्व करते है जो अपने ईश्वर की प्रतीक्षा कर रहे है। उन्हें कुंवारी कहा जाता है क्योंकि वे एक शुद्ध विश्वास का दावा करते है। दीयो द्वारा ईश्वर शब्द का प्रतिनिधित्व किया जाता है। भजनहार कहता है, "तेरा वचन मेरे पैरो के लिये दीपक है, और मेरे मार्ग के लिये प्रकाश है।" (भजन संहिता 119:105) । तेल पवित्र आत्मा का प्रतीक है। इस प्रकार आत्मा को जर्कयाह की भविष्यवाणी में दर्शाया गया है। "वह दूत जो मेरे साथ बात करता है, वह फिर से आया' वह कहता है "और मुझे जगाया. एक आदमी के रूप में जो अपनी नींद से जागा है, और मझसे कहा, तू क्या देख रहा है? और मैंने कहा, मैंने देखा है सभी सोने के दीवट और उसके ऊपर, और बांयी और दांयी और एक कटोरा। इसलिये मैंने जबाव दिया, उस स्वर्गदूत से जो मुझसे बात कर रहा था, यह वचन है प्रभु में जरूबाबेल से कहा, न तो शक्ति से, न बल से, बल्कि मेरी आत्मा से, यहोवा यो कहता हैकृकृकृफिर मैं ने उत्तर दिया और उससे कहा, ये दो उदघोषक है, जो पृथ्वी के स्वामी है।" (जर्कयाह 4:1-14)। COLHin 319.3

दो जैतून के पेड़ो से स्वर्ण तेल को दीवट के कटोरे में सुनहेरा पाइप के माध्यम से खाली कर दिया था, और अभयारण्य को रोशनी देने वाले सुनहरे लैम्प में बदल गया । इसलिये पवित्र लोगो से जो परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होते है, उनकी आत्मा को उन मानव वाद्य यत्रों के लिये प्रदान किया जाता है जो उनकी सेवा के लिये पवित्र है। दो उदघोषित का मिशन ईश्वर के लोगो से संवाद करना है कि स्वर्गीय अनुग्रह जो अकेले उनके वचनों का पैरो तक दीपक और पथ को प्रकाश बना देता है। "न शक्ति, न बल से, बल्कि मेरी आत्मा से मेजबानों के प्रभु से प्रार्थना करो।" (जर्कयाह 4:6) COLHin 319.4

दष्टान्त में सभी कुंवारियाँ दुल्हे को मिलने गयी। सभी के पास तेल के लिये दीपक और तेल वाली कुप्पियाँ थी। कुछ समय तक उनके बीच कोई अन्तर नहीं देखा गया। जो कलीसिया के साथ जो मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले रहता है। सभी को शास्त्रों का ज्ञान हैं सभी ने मसीह के दषष्टकोण का संदेश सुना है। और आत्मविश्वास से उसके प्रकट होने की आशा करते है। लेकिन जैसा दष्टान्त में है वैसा ही अब है। प्रतीक्षा के समय में हस्तक्षेप, विश्वास की कोशिश की जाती है और जब, शोर होता है तो आवाज आती है, "देखो दूल्हा आया उसको मिलने को जाओं" बहु तेरे तैयार नही है उनके दियो में तेल नही है वे पवित्र आत्मा के निराश्रित है। COLHin 320.1

परमेश्वर की आत्मा के बिना उनके वचन का ज्ञान नहीं है। सत्य का सिद्धान्त, पवित्र आत्मा द्वारा अस्वीकार्य, आत्मा को तेज नहीं कर सकता हे या परिचित हो सकता है। लेकिन जब तक ईश्वर की आत्मा सत्य को घर में स्थापित नहीं करती, तब तक चरित्र रूपांतरित नहीं होगा। आत्मा के ज्ञान के बिना पुरूष सत्य को त्रुटि से अलग नहीं कर पायेगें, और वे शैतान के कुशल प्रलोभनों के तहत गिरेगे। COLHin 320.2

मूर्ख कुवारियों द्वारा प्रस्तुत वर्ग पांखडी नहीं है। उनके पास सत्य के लिये एक सम्बन्ध है, उन्होंने सत्य की वकालत की है, वे सत्य को मानने वालों के प्रति आकर्षित है, लेकिन उन्होंने खुद को पवित्र आत्मा के काम करने के लिये उतारा नहीं है। वे यीशु जो चट्टान है उस पर गिरे नही है और न ही अपने पुराने स्वभाव को तोड़ने की अनुमति दी है। इस वर्ग का प्रतिनिधित्व पथरीली भूमि के सुनने वालों के लिये दर्शाया गया है वे वचन को तत्परता से प्राप्त करते है लेकिन वे इसके सिद्धान्तों को आत्म स्पष्ट करने में विफल होते है। इसका प्रभाव कम नही हो रहा है। आत्मा मनुष्य के हष्दय पर काम करती है, उसकी इच्छा और उसके अनुसार एक नई प्रकर्षत को आरोपण करती है, लेकिन मूर्ख कुवारी लड़कियों के प्रतिनिधित्व वाले वर्ग को सतही काम के साथ सन्तुष्ट किया गया है। वे ईश्वर को जानती है। उन्होंने उसके साथ साम्य नहीं रखा है, इसलिये वे नहीं जानते है कि कैसे भरोसा करना है, कैसे दिखना है, कैसे जीना है। ईश्वर के लिये उनकी सेवा एक रूप में पतित है। वे तुम्हारे पास आते है, जैसे लोग आते है, और मेरे लोगों के रूप में आपके सामने बैठते है और वे आपके वचन को सुनते है, लेकिन वे उसे नहीं मानेंगे, अपने मुँह से वो बहुत प्यार दिखाते है लेकिन उनके दिल लोभ से भरे है।' (यहेजकेल 33:31)। COLHin 320.3

प्रेरित पौलुस बताता है कि यह उन लोगो की विशेष विशेषता होगी जो मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले रहते हैं। वे कहते है "अंतिम दिनों में खतरनाक समय आयेगा, पुरूषों के लिये, वे स्वयं के प्रेमी होगेंकृ कृईश्वर के प्रेमियों में अधिक सुख के प्रेमी, ईश्वर का एक रूप है, लेकिन उसके बाद सत्ता से इन्कार करते है।" (2 तीमिथियुस 3:1:5, 7)। COLHin 321.1

यह वर्ग है जो संकट के समय में रोते हुये, शांति और सुरक्षा में पाये जाते है। वे अपने दिलों को सुरक्षा में रखते है, और खतरे में नहीं है। जब अपनी सुस्ती से चौके, तो वे अपने भाग्य को खराब करते है और दूसरो को अपनी कमी को पूरा करने के लिये लुभाते है, लेकिन अध्यात्मिक बातों में कोई भी आदमी दूसरे की कमी को पूरा नहीं कर सकता। ईश्वर की कृपा से आत्मा स्वतन्त्र रूप से प्रदान की गई है। सुसमाचार का संदेश दिया है, उसे जो आने वाला है, उसे आने दो। और जो कोई भी उस जीव को दानी स्वतन्त्र रूप से लेने देगा। (प्रकाशितवाक्य 22:17) । लेकिन चरित्र हस्तांतरणीय नहीं है। कोई भी आदमी दूसरे के लिये भावना प्राप्त नही कर सकता। कोई भी मनुष्य दूसरे के चरित्र को नहीं प्रदान कर सकता जो आत्मा के कार्य करने का फल है। "यद्यपि नूह, दानियेल और अय्यूब इसमें ये, जैसा कि मैं ईश्वर को जीवित करता हूँ, वे न तो पुत्र और न ही बेटी का उद्धार करेगे, लेकिन वे अपनी धार्मिकता से अपनी आत्मा को वितरित करेगे। (यहेजकेल 14:20)। COLHin 321.2

यह एक संकट में है कि चरित्र का पता चला हैं जब आधी रात को बयाना की आवाज सुनाई दी, "देखो दूल्हा आता है, तुम उससे मिलने के लिये बाहर जाओ' सोती हुई कुवारियों को उनकी नींद से जगाया गया। यह देखा गया कि किसने इस आयोजन की तैयारी की थी। दोनो दलों को गैर कानूनी लिया गया, लेकिन एक को आपात काल के लिये तैयार किया गया था, और दूसरे को

बिना तैयारी के पाया गया था। तो अब अचानक और अनदेखी आपदा के लिये, कुछ ऐसे है जो आत्मा को मौत के मुंह में लाता है, यह दिखायेगा कि क्या ईश्वर के वादों में कोई वास्तविक विश्वास है। यह दिखायेगा कि अनुग्रह द्वारा आत्मा कायम है। महान अंतिम परीक्षण मानव परीविक्षा के करीब आता है जब आत्मा को आपति की आवश्यकता के लिये बहुत देर हो जायेगी। COLHin 321.3

इस पष्थ्वी के इतिहास में शाम को दस कुंवारियाँ देख रही है। सभी मसीही होने का दावा करती है। सभी के पास एक मुकट है, एक नाम है, एक दीपक है और सभी स्पष्ट रूप से मसीह के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते है लेकिन पांच पहले से ही है। शादी के हॉल के बाहर पांचो आर्यचकित, निराशा पायेगे। अंतिम दिन, कई लोग मसीह के राज्य में प्रवेश करने का दावा करते हुये कहेंगे, "हमने अपनी उपस्थिति में खाया और पिया है। हमारी गलियों में पढ़ाया जाता है।" COLHin 322.1

हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम की भविष्यवाणी नहीं की है? और तेरे नाम में दुष्टात्मायें नहीं निकाली है और तेरे नाम से कई काम किये है। लेकिन जवाब है, "मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं तुम्हे नहीं जानता, दूर हो जाओ मुझसे" (लेका 13:26, मत्ती 7:22, लूका 13:27)। इस जीवन में उन्होंने मसीह के साथ संगति में प्रवेश नहीं किया है, इसलिये वे स्वर्ग की भाषा नहीं जानते, वे इन आनन्द के लिये अजनबी है। "मनुष्य किसी मनुष्य की बातों को जानता है, उस मनुष्य की आत्मा को बचाना है जो उसके अन्दर है यहाँ तक कि ईश्वर की बातों को कोई मनुष्य नही, बल्कि ईश्वर की आत्मा जानती है।" (1 कुरिन्थियों 2:11)। COLHin 322.2

बहुत से शब्द जो कभी नम्बर एक पर पड़े थे, वे कयामत के वे शब्द है "मुझे पता नही तुम कौन हो' आत्मा की संगति, जिसे आपने मामूली किया है, अकेले ही आपको शादी की दावत में खुशी के साथ पैदा कर सकती है। इस दृश्य में आप भाग नहीं ले सकते। यह प्रकाश अंधे आंखो पर पड़ता है और बहरे कानों पर उसकी धुन। इसका प्रेम और आनन्द विश्व-हृदय में आनन्द को कोई राग नहीं जगा सकता था। आप अपने साहचर्य के लिये अपने स्वयं के गवाह द्वारा स्वर्ग से बाहर बन्द है। COLHin 322.3

रोने की आवाज सुनकर हम जागने के लिये ईश्वर से मिलने के लिये तैयार नही हो सकते, "देखो दूल्हा" फिर उन्हें खाली करने के लिये, हमारे खाली दिलो को इकट्ठा करना होगा। हम यहाँ मसीह को अपने जीवन से अलग नही रख सकते, और फिर भी स्वर्ग में उसके साहचर्य के लिये फिट रहे। COLHin 322.4

दष्टान्त में बुद्धिमान कुंवारियों के पास अपनी दियो के साथ उनकी कप्पियों में तेल भी था। रात को देखने से उनकी ज्योति जलती है। इसमें दूल्हे के सम्मान के लिये रोशनी को प्रफुल्लित करने में मदद की । अंधेरे में बाहर चमकते हुये, यह शादी की दावत के लिये, दूल्हे के घर रास्ता

रोशनी करने में मदद करता है। इसलिये तुम मसीह के अनुयायियों को दुनिया के अन्धेरे में प्रकाश डालना है। पवित्र आत्मा के माध्यम से ईश्वर का वचन एक प्रकाश है क्योंकि यह सुनने वाले के जीवन में एक परिवर्तनशील शक्ति बन जाती है। उनके वचनों के सिद्धान्त को उनके दिलों में आरोपित करके पवित्र आत्मा पुरूषों में ईश्वर के गुणो को विकसित करता है। उनकी महिमा का प्रकाश उनका चरित्र उनके अनुयायियों में चमकने दो। इस प्रकार वे परमेश्वर की महिमा का वर्णन करते है, वर-वधू के घर तक जाने के मार्ग को परमेश्वर के नगर को मेम्ने के विवाह स्थल तक ले जाते है। COLHin 323.1

दूल्हे का आना आधी रात को था-सबसे अंधेरा समय। इसलिये मसीह का आना इस धरती के इतिहास के सबसे काले दौर में होगा। नूह और लूत के दिनों में मनुष्य के पुत्र का आगमन से ठीक पहले दुनिया की स्थिति का चित्रण किया गया है। COLHin 323.2

इस समय की ओर संकेत करने वाले शास्त्र घोषणा करते है शैतान पूरी ताकत के साथ और "अधर्म के सभी छल के साथ काम करेगा।' (2 थिस्सलुकियों 2:9, 10) । उसका काम स्पष्ट रूप से तेजी से बढ़ते हुये अंध रे, बहुपक्षीय त्रुटियो, विधर्मियों और इन अंतिम दिनों के भ्रम से प्रकट होती है। न केवल शैतान दुनिया को बन्दी बना रहा है, बल्कि उसके धोखे हमारे प्रभु यीशु मसीह के कुशल चर्ची को छेड़ रहे है। महान धर्म त्यागी आधी रात के रूप में गहरे रंग में विकसित होगी बालो का बोरी के रूप में अमदेय । परमेश्वर के लोगों के लिये यह परीक्षण की रात होगी, रोने की रात होगी, सच्चाई की खातिर जुल्म की रात होगी, लेकिन अंधेरे की रात से ईश्वर की ज्योति चमक उठेगी। COLHin 323.3

वह अंधेरे से प्रकाश को चमकाने का कारण बना है। (2 कुरिन्थियों 4:6)। जब पष्थ्वी बिना रूप में थी, और शून्य थी और अंधेरा गहरा था" ईश्वर की आत्मा पानी के उपर थी" (उत्पत्ति 1:2, 3) इसलिये अध्यात्मिक अंधकार में, परमेश्वर का वचन आगे बढ़ता है। प्रकाश होने दे" अपने लोगों से वह कहता है "उठो चमको, क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आ गया है और प्रभु के तेज उपर चढ़ा हुआ है। (यशयाह 60:1)। COLHin 323.4

देखना शास्त्र कहते है "अंधकार पथ्वी को ढक देगा और लोगो पर घोर अंधकार छाया हुआ है, लेकिन प्रभु तुम पर उदय होगा और उसकी महिमा तुम पर देखी जायेगी। (यशायाह 60:2)। COLHin 324.1

यह ईश्वर की गलतफहमी है कि दुनिया को गुलाम बना रहा है। पुरूष अपने चरित्र का ज्ञान खो रहे हैं । यह गलत समझा गया है और गलत व्याख्या की गई है। जिस समय ईश्वर से एक संदेश घोषित किया जाता है, एक संदेश उसके प्रभाव में और उसकी शक्ति में अब तक रहने वाला है। उनके चरित्र को जाना जाता है। दुनिया के अंधेरे में उसकी महिमा का प्रकाश उसकी अच्छाई, दया और सच्चाई का प्रकाश डाला जाना है। ये यशायाह द्वारा वचनों में उल्लिखित कार्य है, "हे

येरूशेलेम जो सबसे अच्छी खबरे लाता है, अपनी आवाज को ताकत के साथ उठाते है, इसे उठाते है, डरो मत, यहूदा के शहरो से कहो, अपने ईश्वर को निहारे । ईश्वर मजबूत हाथ के साथ आयेगे, उनके लिये उनका शासन होगा। निहारना, उसका इनाम उसके साथ होगा और उसके लिये उसके काम हैं।" (यशायाह 40:9,10) COLHin 324.2

जो दूल्हे के आने की प्रतिक्षा करते है, वे लोगों से कहते है, अपने ईश्वर को निहारे। "दयालु प्रकाश की आखिरी किरणे, दुनिया को दी जाने वाली दया का अंतिम संदेश, उनके प्यार के चरित्र का रहस्योघाटन है, बच्चो के नाम में ईश्वर को अपनी महिमा प्रकट करनी है। COLHin 324.3

अपने स्वयं के जीवन और चरित्र में वे प्रकट करते है कि उनके लिये ईश्वर की कष्पा क्या है। धर्म के सूर्य का प्रकाश कार्यो में आगे बढ़ना है-सत्य और पवित्रता के कार्यो में पिता की महिमा का बखान करने वाला मसीह अपने प्रकाश के रूप में दुनिया में आया। वह पुरूषों के लिये ईश्वर प्रतिनिधित्व करने के लिये आया था और उसके बारे में लिखा है कि उसे "पवित्र आत्मा की शक्ति के साथ" घोषित किया गया है और अच्छा करने के विषय में चला गया। (प्रेरितो के काम 10:38)। नासरत के आराधनालय मे उन्होंने कहा, "प्रभु की आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने गरीबों को सुसमाचार प्रचार करने के लिये मेरा अभिषेक किया, उसने मुझे टूटे हुये को ठीक करने, बन्धुओं को उपेदश देने, और उबारने के लिये भेजा है। अंधे को दषष्ट, उन्हें आजाद करने के लिये, जो प्रभु के स्वीकार्य वर्ष का उपदेश देने के लिये तैयार है।" (लूका 4:18, 19)। यह वह काम या जो उसने अपने शिष्यों को करने के लिये दिया था। मैं दुनिया की रोशनी हूँ" उन्होंने कहा अपने प्रकाश को पुरूषों के सामने चमकने दो, ताकि वे आपकी अच्छाई को देख सके, और अपने पिता की महिमा करें जो स्वर्ग में है" (मत्ती 5:14,16) । COLHin 324.4

यह वह काम है जो नबी यशायाह वर्णन करता है जब वह कहता है, "क्या यह भूखे को रोटी नहीं देता, और गरीबों को तुम्हारे घर पर लाया जाता है, जब तुम नग्न व्यक्ति को देखते हो उसे ढक देते हो।" तुम अपने शरीर से अपने को नहीं छिपाओगे और सुबह के प्रकाश की रोशनी होगी और तुम्हारा स्वास्थ्य तेजी से आगे बढ़ेगा और तुम्हारा धर्म तुम्हारे सामने आयेगा, प्रभु की महिमा तेरा प्रतिफल होगा। (यशायाह 58:7, 8)। COLHin 325.1

इस प्रकार अध्यात्मिक अंधकार की रात में ईश्वर की महिमा उनकी कलीसिया के माध्यम से आगे झुकना और उन शोक को शान्त करना है। हमारे चारों ओर एक दुनिया के दुःख की लहरे सुनाई देती है। हर तरफ जरूरतमंद और परेशान है। यह जीवन की कठिनाईयों और दुखों को दूर करने और नम्र करने में सहायता करने के लिये हमारा है। व्यवहारिक कार्य का केवल उपदेश देने की तुलना में कही अधिक प्रभाव होगा। हमे भूखे को भोजन नग्न को वस्त्र और बेघरो को आश्रय देना है। और हमें इससे अधि COLHin 325.2

क करने के लिये कहा जाता है। आत्मा की इच्छा, केवल मसीह हम में निवास कर रहा है, तो हृदय दिव्य सहानुभूति से भरा होगा। बयाना सील किये गये फव्वारे, मसीह प्यार की अनसुना कर दिया जायेगा। COLHin 325.3

ईश्वर न केवल हमारे उपहार के लिये जरूरमंदो के लिये कहते है, बल्कि हमारे हंसमुख प्रतिज्ञान हमारे आशावादी शब्दों, हमारे दयालु हस्तलिपि के लिये कहते है। COLHin 325.4

जब मसीह ने बीमारो को चंगा किया, तो उन्होंने उन पर हाथ रखा। तो क्या हमें उन लोगों के साथ निकट सम्पर्क में आना चाहिये जिन्हें हम लाभान्वित करना चाहते हैं। COLHin 325.5

ऐसे कई लोग है जिनसे आशाये विदा हो चुकी है। उनके लिये रोशनी वापस लाओ। बहुतों ने हिम्मत की हार ली है उन्हें जयवार के वचन बोले। उनके लिये प्रार्थना करें। ऐसे है जिन्हें जीवन की रोटी चाहिये। उन्हें परमेश्वर के वचन से पढ़े। कई लोग पर एक आत्मा बिमारी है जो न तो सांसारिक काम का काम कर सकती है और न ही चिकित्सक ठीक कर सकते है। इन आत्माओं के लिये प्रार्थना करो, उन्हें यीशु के पास लाओ। उन्हें बताये कि वहॉ गिलाद और चिकित्सक में बाम है। COLHin 325.6

प्रकाश एक आशीर्वाद है, एक सार्वभौमिक आशीर्वाद है जो दुनिया के अपने खजाने की अस्वभाविक, अपवित्र, धवस्त देता है। तो यह धर्म के सूर्य के प्रकाश के साथ है। पूरी पष्थ्वी, जैसे कि यह पाप, और दुख और दर्द के अन्धेरे में लिपटी है, को परमेश्वर के प्रेम के ज्ञान के साथ प्रकाश में लाना है। कोई सम्प्रदाय रैंक या लोगों के वर्ग से स्वर्ग के सिंहासन को बाहर करने के लिये प्रकाश चमक रहा है। COLHin 326.1

आशा और दया के संदेश को धरती के छोर तक ले जाना है। जो भी होगा आगे पहुंच सकता है और ईश्वर की ताकत को पकड़ सकता है और उसके साथ शांति बना सकता है। अब आधी रात के अंधेरे में लिपटने वाले हाथ नहीं है, चमक धर्मी के सूर्य के उज्जवल बीम से गायब हो जाता है और नरक की शक्ति दूर हो जाती हैं। COLHin 326.2

लेकिन कोई भी आदमी ऐसा नही करता है जो उसे खुद नहीं मिला है ईश्वर के काम में मानवता कुछ भी पैदा नही कर सकती है। कोई भी व्यक्ति अपने प्रयास से खुद को ईश्वर के लिये एक हल्का वाहक नहीं बना सकता है यह स्वर्ण नालियों में भारी संदेशवाहक द्वारा खाली किया गया सुनहरा तेल था, जिसे सुनहरे कटोरे से अभयारण्य के लैम्प मे आयोजित किया जाता था, जिससे एक निरंतर उज्जवल और चमकदार रोशनी पैदा होती थी। यह ईश्वर का प्रेम है जो मनुष्य को लगातार हस्तांतरित करता है जो उसे प्रकाश प्रदान करने में सक्षम बनाता है। उन सभी के दिलों में जो विश्वास से ईश्वर के लिये एक जुट होते है, प्यार का सुनहरा तेले स्वतन्त्र रूप से बहता है, अच्छे कामों में फिर से चमकने के लिये ईश्वर के लिये वस्तविक, हादिक सेवा में। COLHin 326.3

पवित्र आत्मा के महान और मापक उपहार में स्वर्ग के सभी संसाध न समाहित है, ईश्वर की ओर से किसी भी प्रतिबन्ध के कारण ऐसा नहीं है कि उनकी कष्पा धन पष्थ्वी पर ईश्वर के हिस्से के लिये प्रवाहित करने के लिये तैयार थे, तो सभी उसकी आत्मा से भर जायेगे। COLHin 326.4

यह एक जीवित माध्यम होने के लिये हर आत्मा का निजीकरण है, जिसके माध्यम से ईश्वर दुनिया को उनकी कष्पा के खजाने, मसीह के बेशुमार धन का संचार करते है। ऐसा कुछ भी नहीं है कि मसीह इतने ऐजेंटो की इच्छा रखता है जो दुनिया की उसकी आत्मा और चरित्र का प्रतिनिधित्व करेगे। कुछ को इसकी आवश्यकता है। सभी स्वर्गीय मध्यम का इन्तजार कर रहे है, जिसके माध्यम से पवित्र तेल को खुशी और मानव दिलों को आशीर्वाद देने के लिये डाला जा सकता है। COLHin 327.1

यीशु ने हर प्रावधान किया है कि उनकी कलीसिया शरीर से रूपांतरित हो जाये, जो दुनिया की रोशनी के साथ रोशन हो, इम्मानुयेल की महिमा का बोध कराये । यह उनका उद्देश्य है कि प्रत्येक मसीही प्रकाश और शांति के अध्यात्मिक वातावरण से घिरा होगा। वह चाहता है कि हम अपने जीवन में उसके अपने आनन्द को प्रकट करें। COLHin 327.2

स्वर्गीय प्रेम के अन्तर्निवास द्वारा आत्मा की अविवेक को दिखाया जायेगा। ईश्वरीय परिपूर्णता अभिमानित मानव ऐजेंट के माध्यम से दूसरो को दिया जायेगा। COLHin 327.3

धार्मिकता के सूर्य ने अपने पंखो में उपचार किया है।" (मलाकी 4:2) इसलिये हर सच्चे शिष्य से जीवन, साहस, मदद और चिकित्सा के लिये प्रभाव को फैलाना है। COLHin 327.4

मसीह के धर्म का मतलब पाप की क्षमा से अधिक है। इसका मतलब है कि हमारे पापों को दूर करना और पवित्र आत्मा के अनुग्रह के साथ शून्य को भरना। इसका अर्थ है दिव्य प्रदीप्ति, का ईश्वर में आनन्दित होना। इसका अर्थ है स्वयं के दिल को खाली करना, और मसीह की स्थायी उपस्थिति के साथ धन्य। जब मसीह आत्मा में राज्य करता है, तो उसमें पवित्रता होती है, पाप से मुक्ति मिलती है। महिमा, पूर्णता, सुसमाचार योजना की पूर्णता जीवन में पूरी होती है। उद्धारकर्ता की स्वीकृति पूर्ण शांति, उत्तम प्रेम, उत्तम आश्वासन की चमक होती है। जीवन में सामने आये यीशु मसीह के चरित्र की सुन्दरता और खुशबु इस बात की गवाही देती है कि उत्तम ईश्वर ने वास्तव में अपने पुत्र को ही उसका उद्धारकर्ता बनाकर दुनिया में भेजा है। मसीह अपने अनुयायियों को चमकाने का प्रयास नहीं करता है। वह कहता है, अपना प्रकाश चमकने दो। यदि आपको ईश्वर की कृपा प्राप्त हुई है, तो प्रकाश आप में है। अवरोध को दूर करे और प्रभु की महिमा प्रकट करे, अंधेरे को भेदने और दूर करने के लिये प्रकाश आगे बढेगा। आप अपने प्रभाव की सीमा के भीतर चमकने में मदद नहीं करते है। COLHin 327.5

मानवता के रूप में अपने स्वयं के गौरव का रहस्योघपटन स्वर्ग को पुरूषों के इतना निकट लायेगा कि आंतरिक मंदिर में सुशोभित होने वाली सुन्दरता, हर आत्मा में देखी जायेगी, जिसमें

उद्धारकर्ता रहता है। एक घर्षणत मसीह की महिमा के द्वारा पुरूषों को बंदी बनाया जायेगा। और कई आत्माओं से प्रशंसा और धन्यवाद की धाराओं में, इस प्रकार ईश्वर को जीत लिया, महिमा महान दाता के वापस वह जायेगी। COLHin 328.1

"उठो चमको, क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आ गया है, और प्रभु की महिमा तुमने है।" (यशायाह 60:11) जो लोग दूल्हे से मिलने जाते है, उनके लिये संदेश दिया गया है। मसीह शक्ति और महान महिमा के साथ आ रहा है। वह उसके साथ सभी पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आ रहा है। जब कि सारा संसार अधंकार में डूबा हुआ है, संतो के हर निवास में प्रकाश होगा। वे स्वयं को पहले प्रकाश को पकड़ लेगे। उनके वैभव से चमकती हुई रोशनी चमक उठेगी और यीशु उद्धाकरर्ता उन सभी की प्रशंसा करेगा, जिन्होंने उसकी सेवा की है। उनकी उपस्थिति में दुष्ट लोग भाग जाते है, मसीह के अनुयायी आनन्दित होगें। मसीह के दूसरे आगमन के समय को देखते हुये, पितृपुरूष अय्यूब ने कहा "जिसे मैं अपने लिये देखूगा और मेरी आंख निहारेगी, न कि कोई अजनबी' (अय्यूब 19:27)। उनके वफादार अनुयायियों के लिये मसीह एक दैनिक साथी और परिचित मित्र रहा है। वे परमेश्वर के साथ निरंतर सम्पर्क में रहते है। उन पर प्रभ की महिमा बढी है। उनमें यीश मसीह के सामने परमेश्वर की महिमा के ज्ञान का प्रकाश परिलक्षित हुआ है। अब वे अपनी महिमा में राजा की चमक और महिमा की अकल्पित किरणों में आनन्दित होते है।। वे स्वर्ग के भोज के लिये तैयार है क्योंकि उनके दिल में स्वर्ग है। COLHin 328.2

उत्थान सिर के साथ, धर्मी के सूर्य के उज्जवल किरणों के साथ उन्हें चमकते हुये, आनन्दित होने के साथ कि उनकी मुक्ति और वे दूल्हे से मिलने के लिये आगे बढ़ते हुये कहते है, "लो यह हमारा ईश्वर है, हमने उसके लिये इन्तजार किया है, और वह हमें बचा लेगा।" (यशायाह 25:9)। COLHin 328.3

और मैं ने सुना है कि यह एक महान भीड़ की आवाज थी, और कई पानी की आवाज के रूप में, और शक्तिशाली गुड़गड़ाहट की आवाज के रूप में, और कहते है अल्लेलुया, ईश्वर, ईश्वर सर्वशक्तिमान है, हमें खुशी और आनन्द दे। उसके लिये सम्मान, मेम्ने की शादी के लिये आ गया है और उसकी पत्नी ने खुद को तैयार कर लिया, और मुझे करने के लिये कहा है, लिखो धन्य है वो जो मेम्ने की शादी के लिये जाता है। वह प्रभुओं का प्रभु है, राजाओं का राजा है,और वे उसके साथ चुने हुये और वफादार है।" (प्रकाशितवाक्य 19:6-9, 17:14)। COLHin 328.4

हम सभी चीजों के अंत की प्रतीक्षा कर रहे हैं

